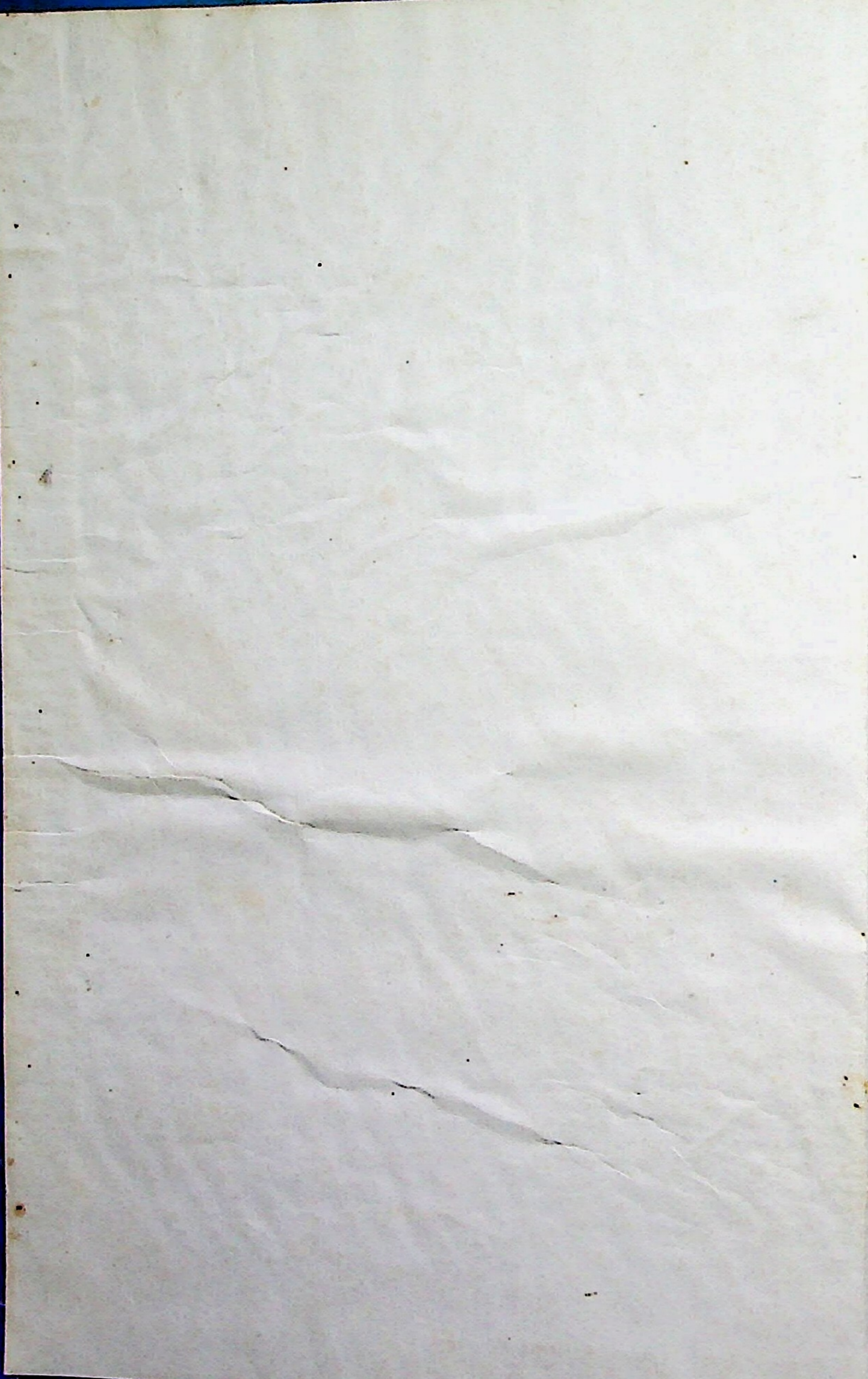
रूपेश

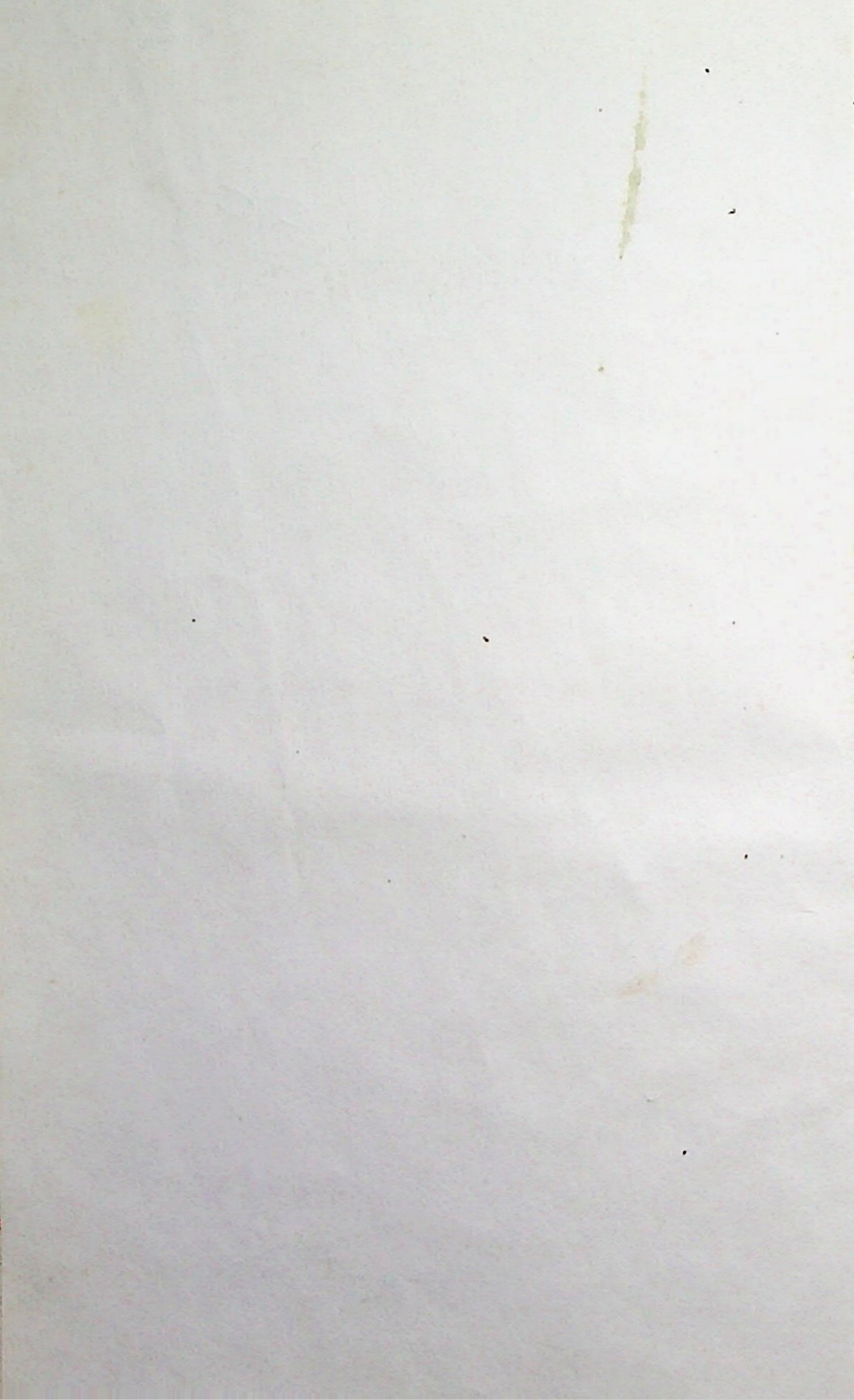
329

सम्पूर्ण हवन विधि

हवन-रहस्यम्







प्रकाशक

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली-वाराणसी

दूरभाष : २३९२५४३, २३९२४७१, २३९३५३८

प्रथम संस्करण -२००९ ई०

मूल्य - 120/- रुपये मात्र

मुद्रक :

भारत प्रेस

कचौड़ीगली, वाराणसी

समर्पित



जिनकी स्मृति ही अब शेष बची है,

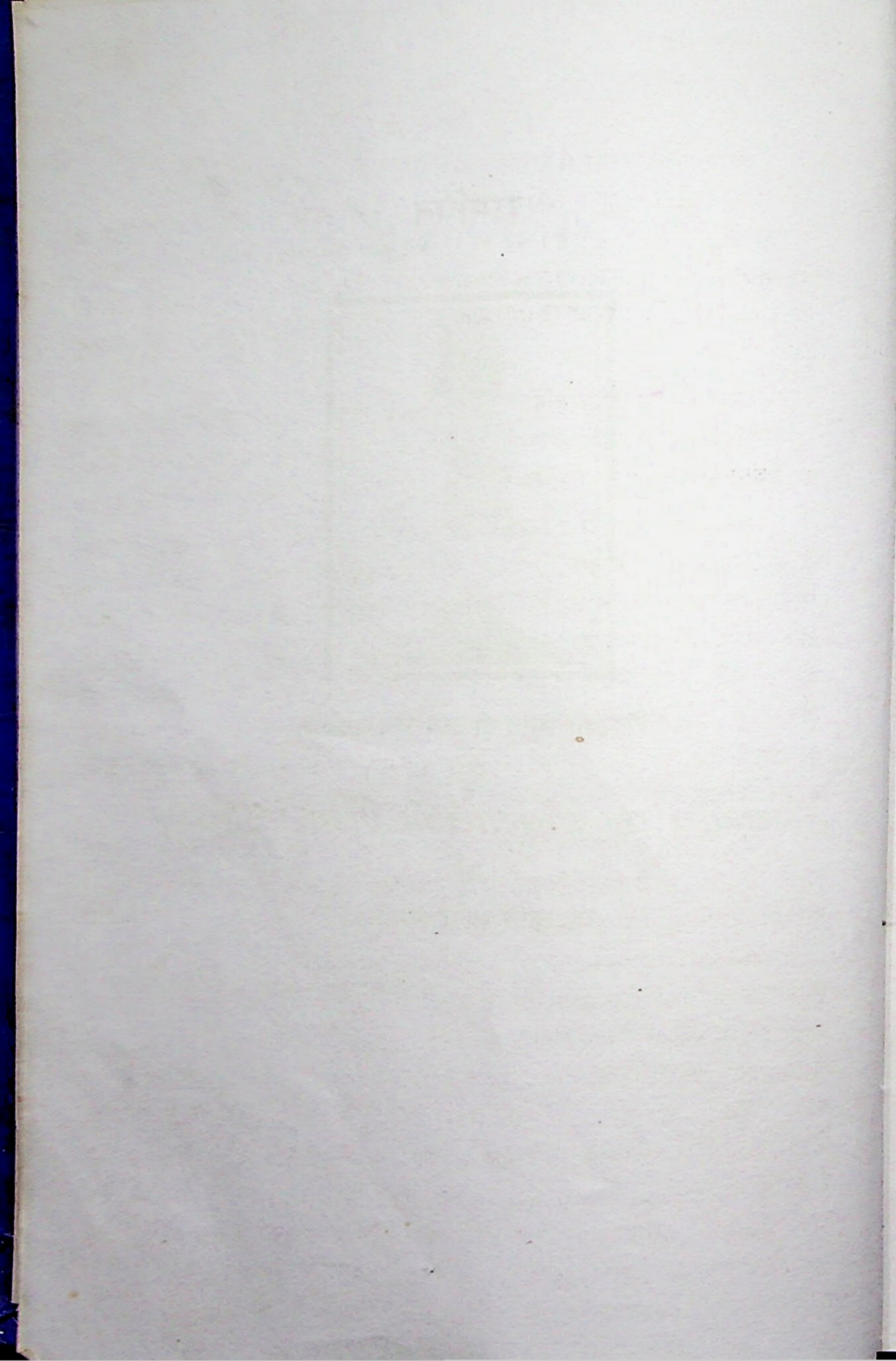
ऐसे

स्वर्गीय पं० बाबूलालजी शर्मा 'कांकर'

को

यह कृति सादर समर्पित।

भावात्क एव—अशोक कुमार गौडः



भूमिका

विश्वकल्याणकारिणी वैदिक संस्कृति के मूल आधार वेद है और वेद यज्ञमय है। जिस कर्म-विशेष में देवता, हवनीय द्रव्य, वेदमन्त्र, ऋत्विक् और दक्षिणा—इन पाँचों का संयोग हो उसे यज्ञ कहते हैं। यज्ञ के दो भेद होते हैं—एक यज्ञ और दूसरा महायज्ञ। जो अपने ऐहिक तथा पारलौकिक कल्याण के लिए पुत्रेष्टियाग और विष्णुयागादि करते हैं, उन्हें 'यज्ञ' कहते हैं और जो विश्वकल्याणार्थ 'पञ्चमहायज्ञ' आदि करते हैं, उन्हें 'महायज्ञ' कहते हैं।

प्रधानतया यज्ञ दो प्रकार के होते हैं— श्रौत और स्मार्त्त। श्रुतिप्रतिपादित यज्ञों को श्रौतयज्ञ और स्मृतिप्रतिपादित यज्ञों को स्मार्तयज्ञ कहते हैं। श्रौतयज्ञ में केवल श्रुतिप्रतिपादित मन्त्रों का प्रयोग होता है और स्मार्तयज्ञ में वैदिक, पौराणिक और तांत्रिक का प्रयोग होता है।

यह भारतवर्ष सर्वदा से 'यज्ञिय देश' कहा जाता है। यहाँ प्राचीनकाल से ही भारत के प्रत्येक प्रान्त, प्रत्येक नगर, प्रत्येक ग्राम और प्रत्येक घर में सर्वदा यज्ञ होते हैं। वैसे भी भारतवर्ष की धार्मिकता और यज्ञ-परम्परा सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। भारतवर्ष की धार्मिकता और यज्ञ-परम्परा से सन्तुष्ट होकर देवगण सर्वदा यहीं निवास करते हैं, इसीलिए भारतवर्ष को 'देवभूमि' कहा गया है। जिस प्रकार श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन कराने से पितर तृप्त और सन्तुष्ट होते हैं, उसी प्रकार यज्ञ की अग्नि में हवनीय द्रव्य द्वारा हवन करने से देवता तृप्त और सन्तुष्ट होते हैं। **'देवतोद्देशेन अग्नौ हविर्द्रव्यत्यागो यागः'** के अनुसार देवता के उद्देश्य अग्नि में हविर्द्रव्य का जो त्याग किया जाता हैं, उसे यज्ञ कहते हैं।

आज के इस कलिकाल में श्रौतयज्ञों का आयोजन पूर्णतः समाप्त हो चुका है। इस समय जो यज्ञ हो रहे हैं वे स्मार्तयज्ञ हैं। यथा—गणपतियाग, विष्णुयाग, रुद्रयाग, लक्ष्मीयाग, दुर्गायाग, सूर्ययाग, नवग्रहयाग और विश्वशान्तियागादि।

सभी प्रकार के यज्ञ सात्त्विक, राजसिक और तामसिक भेद से तीन प्रकार के कहे गये हैं। जो यज्ञ निष्काम भाव से किया जाता है उसे 'सात्त्विक यज्ञ' कहते हैं। जो यज्ञ सकाम अर्थात् किसी फल विशेष की इच्छा से किया जाता है उसे 'राजसिक यज्ञ' कहते हैं। जो यज्ञ शास्त्रों के विरुद्ध किया जाता है उसे 'तामसिक यज्ञ' कहते हैं। इनमें सात्त्विक यज्ञ का स्थान सर्वोत्तम कहा गया है तथा शास्त्रों में सात्त्विक यज्ञ का विशेष फल लिखा है। ऋणत्रय में 'देवऋण' का भी उल्लेख है। देवऋण से मुक्त होने के लिए तैत्तिरीय श्रुति में स्पष्ट लिखा है कि यज्ञों के द्वारा ही देवऋण से मुक्ति प्राप्त होती है, क्योंकि श्रुति-स्मृति ग्रन्थों में और उपनिषदों में यज्ञ को मानव का प्रधान धर्म कहा गया है। जो लोग यज्ञ के वास्तविक रहस्य और महत्त्व को न समझकर यज्ञ के प्रति श्रद्धा नहीं रखते या सामर्थ्यवान् होते हुए भी यज्ञ नहीं करवाते, वे नष्ट हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि यज्ञ न करने वाले पुरुष

विषय	पृष्ठ सं.
प्रधानपीठादिदानसङ्कल्पः	२१३
अथाभिषेकः	२१४
घृतच्छायापात्रदानम्	२१६
क्षमापनम्	२१६
विसर्जनम्	२१६
विसर्जनमन्त्राः	२१७
कर्तृरक्षाबन्धनमन्त्रः	२१७
कर्तृपत्नीरक्षाबन्धनमन्त्रः	२१७
कर्तृतिलककरणम्	२१८
कर्त्रेआशीर्वादमन्त्राः	२१८
कर्तृपत्न्या आशीर्वादमन्त्राः	२१८
द्वितीयः परिच्छेदः	
चतुरस्रकुण्डनिर्माण	२१९
योनिकुण्डनिर्माण	२१९
अर्धचन्द्रकुण्डनिर्माण	२२०
त्रिकोणकुण्डनिर्माण	२२०
वृत्तकुण्डनिर्माण	२२१
विषमषडस्रकुण्डनिर्माण	२२१
समषडस्रकुण्डनिर्माण	२२१
पद्मकुण्डनिर्माण	२२२
विषमअष्टास्रकुण्डनिर्माण	२२२
समअष्टास्रकुण्डनिर्माण	२२३
शतमुखकुण्डनिर्माण	२२४
सर्वतोभद्रचक्रम्	२२५
एकलिङ्गतोभद्रचक्रम्	२२६
चतुर्लिंगतोभद्रचक्रम्	२२७
अष्टलिंगतोभद्रचक्रम्	२२८
हरिहरात्मकमण्डलचक्रम्	२२९
योगिनीचक्रम्	२३०
क्षेत्रपालचक्रम्	२३१
वारुणमण्डलचक्रम्	२३२
कामनापरक कुण्डों का निर्माण	२३३
यज्ञमण्डपविषये विशेषविचारः	२३५
मण्डपपूजनमन्त्राः	२३६
आहुतिविषये विशेषविचार	२३८
रुद्रयज्ञ की आरती	२४१
विष्णुयज्ञ की आरती	२४२
लक्ष्मीयज्ञ की आरती	२४३
गणेशयज्ञ की आरती	२४४
श्रीरामयज्ञ की आरती	२४४
स्मार्तयज्ञहवनसामग्री	२४५
स्मार्तयज्ञ-सामग्री	२४७

॥ इति विषयानुक्रमणिका ॥

प्रथमः परिच्छेदः

सम्पूर्णहवनविधिः

कर्ता अपनी धर्मपत्नी के संग हवनकुण्ड के समीप अथवा स्थण्डिल के समीप आकर आसन पर बैठे और कुशा के द्वारा जल लेकर अपना और हवन सामग्री का प्रोक्षण करे, तदुपरान्त ब्राह्मण निम्न मंत्रों का उच्चारण करके स्वस्तिवाचन करें।

स्वस्तिवाचनम्

हरिः ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥ १॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानार्ठ० रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानार्ठ० सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भग मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणर्ठ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह॥ ७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ ॐ शान्तिः सुशान्तिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥ १२॥

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणी-हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ माता-पितृचरण कमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। ॐ गुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय ॐ महागणाधि-पतये नमः।

पौराणिकश्लोकाः

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १ ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ २ ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३ ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ४ ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५ ॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य समप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ६ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ ७ ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥ ८ ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ ९ ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ १०॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ ११॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ १२ ॥
स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥ १३ ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनः॥ १४ ॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥ १५ ॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्मार्थसिद्धये॥ १६ ॥

हवन संकल्पः

कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अमुकयाग-कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं हवनादिकर्म करिष्ये तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशादिदेवानां लब्धोपचारैः पूजनं करिष्ये।

गणेशादि देवताओं की यथोपचारों से पूजा करवाके आचार्य सहित ब्राह्मण पुण्याहवाचन करें, तदुपरान्त आचार्य और ब्राह्मणों का कर्ता निम्न संकल्प का उच्चारण करके एकतन्त्र से वरण करें—

कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे

अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगें अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् अमुकयागहवनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानानामगोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणो आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।

अग्निस्थापनम्

ब्रह्मा के द्वारा कुण्ड में पंचभूसंस्कार किये जाने के उपरान्त कर्ता और उसकी पत्नी कुंण्ड के पश्चिमभाग में पूर्वदिशा की ओर मुख करके आसन पर बैठे, आचार्य कुण्ड का पूजन निम्न क्रम द्वारा कर्ता से करावें।

सर्वप्रथम प्रथम कुण्ड के ऊपर वाली मेखला में अक्षतपुंज पर सुपाड़ी रखवाकर निम्न मन्त्र का आचार्य उच्चारण करें—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाꣳ सुरे स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ततो मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायां ब्रह्माणं पूजयेत्—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

तत अधोमेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायां रुद्रं पूजयेत्—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि॥

ततो योन्यां रक्तवर्णालङ्कृतायां गौरीं पूजयेत्—ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि॥

कण्ठे—ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वनि तन्मसि॥ ॐ कण्ठे नमः कण्ठमावाहयामि स्थापयामि॥

नाभिम्—ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः॥ ॐ नाभ्यै नमः नाभिमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्द्धनेन्त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

कर्ता प्राङ्मुख होकर आसन पर बैठे, आचमन एवं प्राणायाम करे, तदुपरान्त कर्ता के दायें हाथ में जल, अक्षत एवं द्रव्य रखवाकर आचार्य निम्न संकल्प करावें—**देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्मिन् सनवग्रहमख अमुकयाग-हवनकर्मणि पंचभूसंस्कारपूर्वकं अग्निस्थापनं करिष्ये।**

आवाहितदेवताओं का कर्ता से पूजन करवाके कुण्ड में सुवर्णखण्ड छोड़वा दें और कुण्ड को एक वस्त्र से ढक दें, पुनः आचार्य कर्ता को अरणी देते हुए यह वाक्य कहें—**स्मार्ताग्निसाधनभूते योनिरूपे इमे अरणी युवाभ्यां प्रतिगृह्यताम्। इयमधरा। इयमुत्तरा॥ ततो कर्ता—तौ स्मार्ताग्निसाधनभूते इमे अरणी आवाभ्यां परिगृहाण॥ ततो ब्रह्मा—इदं चात्र, इदमोवलीं इदं नेत्रम्। इमानि स्रुवादिनी पात्राणि प्रतिगृहाण। ततो कर्ता—इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृह्णानि।**

कर्ता उपरोक्त पात्रों को ब्रह्मा से लेकर इनमें से अधर अरणी अपनी पत्नी को दें, कर्ता पत्नी अधर अरणी को अपनी गोद में रखे, फिर कर्ता व उसकी धर्मपत्नी इन अरणियों का पूजन करें। आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके कर्ता और उसकी धर्मपत्नी से अग्निदेवता का ध्यान करावें—

सप्तहस्तश्चतुःशृङ्गः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः।
त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः॥
मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥
शिखाभिर्दीप्यमानाभिरूर्ध्वगाभिस्तु संयुतः।
स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधां तथा।
बिभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्नं स्रुचं स्रुवम्।
तोमरं व्यजनं वामे घृतपात्रं च धारयन्॥
आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो हुताशनः।

अग्नेर्ध्यानमन्त्रः

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभोरोरवीतिमहोदेवो मर्त्याँऽआविवेश॥

अधरा अरणी को कम्बल व मृगचर्म पर रखकर ओवली में रस्सी को लपेटकर कर्ता की पत्नी उसे चलावें व कर्ता ऊपर से जोर देकर मन्था को दबाये रखें। जब तक अग्नि प्रज्वलित न हो, तब तक अग्निमन्थन करते रहें। यदि वे दोनों थक जाये और अग्नि प्रज्वलित न हो, उस अवस्था में हवनस्थल से किसी ब्राह्मण के द्वारा अग्निमन्थनकर्म करवाना चाहिए। यह क्रम तब तक होता रहेगा, जब तक कि अग्नि प्रकट न हो जाय। अग्निमन्थन प्रारम्भ होते ही आचार्य और ब्राह्मण आगे दिये गये अग्निस्थान के मन्त्रों का उच्चारण करते रहें।

अग्निस्थापनमन्त्राः

समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या। सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आभाहि प्रदिशश्चतस्रः॥ १॥ सं चेद्ध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय। मा च रिषदुपसत्ता ते अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये॥ २॥ त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवा नः। सपत्नहा नो अभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन्॥ ३॥ इहैवाग्ने अधि धारया रयिं मा त्वा निक्रन्पूर्वचितो निकारिणः। क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः॥ ४॥ क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सर्ठ०रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व। सजातानां मध्यमस्था एधि राज्ञामग्ने विहंव्यो दीदिहीह॥ ५॥ अति निहो अति स्त्रिधोऽत्यचित्तिमत्यरतिमग्ने। विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वा- थास्मभ्यर्ठ० सहवीरार्ठ० रयिं दाः॥ ६॥ अनाधृष्यो जातवेदा अनिष्टृतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह। विश्वा आशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्भियः शिवेभिरद्य परिपाहि नो वृधे॥ ७॥ बृहस्पते सवितर्बोधयैनर्ठ० सर्ठ०शितं चित्संतरार्ठ० सर्ठ०शिशाधि। वर्धयैनं महते सौभगाय विश्व एनमनुमदन्तु देवाः॥ ८॥ अमुत्रभूयादध यद्यमस्य बृहस्पते अभिशस्तेरमुञ्चः। प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः॥ ९॥ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ १०॥ ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्त्यूर्ध्वा शुक्रा शोचीर्ठ०ष्यग्नेः। द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः॥ ११॥ तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः। पथो अनक्तु मध्वा घृतेन॥ १२॥ मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराशर्ठ०सो अग्ने। सुकृद्देवः सविता विश्ववारः॥ १३॥ अच्छायमेति शवसा घृतेनेडानो वह्निर्नमसा। अग्निर्ठ० स्रुचो अध्वरेषु प्रत्यसु॥ १४॥ स यक्षदस्य महिमानमग्नेः स ई मन्द्रा सुप्रयसः। वसुश्चेतिष्ठो वसुधातमश्च॥ १५॥ द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः। उरुव्यचसो धा पत्यमानाः॥ १६॥ ते अस्य योषणे दिव्ये न योना उषासानक्ता इमं यज्ञमवतामध्वरं नः॥ १७॥ दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं

नोऽग्नेर्जिह्वामभिगृणीतम्। कृणुतं नः स्विष्टिम्॥ १८॥ तिस्रो देवीर्बर्हिरेदर्ठ० सदन्त्विडा सरस्वती भारती। मही गृणाना॥ १९॥ तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु त्वष्टा सुवीर्यम्। रायस्पोषं विष्यतु नाभिमस्मे॥ २०॥ वनस्पतेऽवसृजा रराणस्त्मना देवेषु। अग्निर्हव्यर्ठ० शमिता सूदयाति॥ २१॥ अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद इन्द्राय हव्यम्। विश्वेदेवा हविरिदं जुषन्ताम्॥ २२॥ पीवोअन्ना रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः। ते वायवे समनसो वितस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः॥ २३॥ राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणा धाति देवम्। अध वायुं नियुतः सश्चतः स्वा उत श्वेतं वसुधिती निरेके॥ २४॥ आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानार्ठ० समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २५॥ यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २६॥ प्र ययाभिर्यासि दाश्वार्ठ०समच्छा नियुद्भिर्वायविष्टये दुरोणे। नि रौ रयिर्ठ० सुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्वयं च राधः॥ २७॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ २८॥ नियुत्वान्वायवागह्ययर्ठ० शुक्रोअयामि ते। गन्तासि सुन्वतो गृहम्॥ २९॥ वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता॥ ३०॥ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः॥ ३१॥ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥ ३२॥ एकया च दशभिश्च स्वभूते दाभ्यामिष्टये विर्ठ०शती च। तिसृभिश्च वहसे त्रिर्ठ०शता च नियुद्भिर्वायविह ता विमुञ्च॥ ३३॥ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवार्ठ० स्यावृणीमहे॥ ३४॥ अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥ ३५॥ न त्वावाँ२।। अन्यो द्विव्ये न न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते। अश्वायनतो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे॥ ३६॥ त्वमिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः॥ ३७॥ स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः। गामश्वर्ठ० रथ्यमिन्द्र संकिर सत्रा वाजं न जिग्युषे॥ ३८॥ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयाऽवृता॥ ३९॥ कस्त्वा सत्यो मदानां मर्ठ०हिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥ ४०॥ अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं भवास्यूतये॥ ४१॥ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं

जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥ ४२॥ पाहि नो अग्न एकया पाह्युत द्वितीयया। पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो॥ ४३॥ ऊर्जो नपातर्ठ० स हिनाऽयमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये। भुवद्वजेष्ववविता भुवद्वृध उत त्राता तनूनाम्॥ ४४॥ संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदात्सरोऽसीद्वसरोऽसि वत्सरोऽसि। उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्तार्ठ० संवत्सरस्ते कल्पतात्। प्रेत्या एत्यै संचाञ्च प्र च सारय। सुपुर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवः सीद॥ ४५॥

अग्निदेवता के प्रकट होने पर एक थाली में नारियल की जटा, रूई व कपूर में प्रज्वलित अग्नि को रखकर उनका जयघोष करते हुए विशेष रूप से उस अग्नि को प्रज्वलित कर लें। तदुपरान्त कुण्ड में गोहरी और लकड़ी के छिलकों में उस अग्नि को इस मन्त्र का उच्चारण करके स्थापित करें—**ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह।**

अब कर्ता संक्षिप्त पुण्याहवाचन एवं गोदानपूर्वक ब्राह्मणों को दक्षिणा दें। पीतल या काँसे की थाली में द्रव्य, अक्षत छोड़े और अग्नि की रक्षा के हेतु वेदी पर लकड़ी रख दें, तथा कर्ता के हाथ में अक्षत देकर निम्न श्लोकों द्वारा अग्नि का आवाहन करावें—

रक्त माल्याम्बरधरं रक्त पद्मासन स्थितम्।
स्वाहा स्वधा वषट्कारै रङ्कितं मेष वाहनम्॥
शतं मंगलकं रौद्रं वह्निमावाहयाम्यहम्।
त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिर मितद्युते।
आगच्छ भगवन्नग्ने वेद्यामस्मिन् सन्निधो भव॥

ग्रहादिस्थापनम्

कर्ता जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् अमुकयाग-हवनकर्मणि सूर्यादिनवग्रहाणामधिदेवता-प्रत्यधि-देवता-पञ्चलोकपाल-दशदिक्पालानां चावाहनं स्थापनं च पूजनं करिष्ये।

नवग्रहस्थापनम्—आचार्य ईशानकोण की ओर पीढ़े पर सफेद वस्त्र बिछाकर नवग्रहमण्डल का निर्माण कर सूर्यादिनवग्रहदेवताओं के निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों के द्वारा उनका आवाहन व स्थापन कर्ता से करावें-

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

दधि-शङ्ख-तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावहयाम्यहम्॥

ॐ इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमुस्यै विश· एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाꣳ रेताꣳ सि जिन्वति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छेह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रुतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो मृतं मधु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु: नः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनिश्चरमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोद्भव पैठीनसिगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

पालाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्रे धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

अधिदेवतास्थापनम्

नवग्रहों के आवाहन व स्थापन के पश्चात् आचार्य निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए अधिदेवताओं का स्थापन कर्ता से करावें—

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम्।
आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम्॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीय मा ऽमृतात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्देहागच्छ इह तिष्ठ ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः

पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिवपतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

धर्मराजसभासंस्थं कृता-ऽकृत-विवेकिनम्।
आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम्

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्तेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

आचार्य ग्रहों के बायीं ओर प्रत्यधिदेवताओं का आवाहन व स्थापन आगे दिए हुए श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए कर्ता से करावें—

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२। आसादयादिह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकरा शुभाः।
औषध्याप्यायनकरा अपामावाहयाम्यहम्॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अप इहाऽऽगच्छत इह तिष्ठत ॐ अद्भ्यो नमः, अपआवाहयामि स्थापयामि॥ २॥

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वी इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पृथिव्यै नमः, पृथिवी-मावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

खड्गचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम्।
किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा॑ꣳसुरे स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञःपुर एतु सोमः। देवसेना-नामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नानाऽलङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छेह तिष्ठ ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणी-मावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतयजमानरं सर्वेषां च पितामहम्॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सर्पेभ्यो नमः, सर्पाना-मावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माण-मावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

पंचलोकपालस्थापनम्

प्रत्यधिदेवताओं के स्थापन के पश्चात् आचार्य विनायक आदि पंचलोकपाल, वास्तोष्पति तथा क्षेत्रपाल का आवाहन व स्थापन निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए कर्ता से करावें—

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छेह तिष्ठ ॐ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्॥

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायु-मावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्॥

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छेह तिष्ठ ॐ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छतां इह तिष्ठतां ॐ अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

वास्तोष्पतिं विदिक्कार्यं भूशय्याभिरतं प्रभुम्।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम्॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। ऐमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये इहागच्छेह तिष्ठ ॐ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

दशदिक्पालस्थापनम्

आचार्य ग्रहमण्डल के बाहर पूर्वदिशा से प्रदक्षिण क्रम द्वारा दशदिक्पालों का आवाहन व स्थापन निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करके कर्ता से करावें—

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिद्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्श्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्नि-मावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

सर्वप्रताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्म-दिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ निर्ऋतये नमः, निर्ऋति-मावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशं जलेशं यादशां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वरुणाय नमः, वरुण-मावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्॥

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमेहागच्छेह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानेहागच्छेह तिष्ठ ॐ ईशानाय नमः, ईशान-मावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शꣳस सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥

पूर्वेशानयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तियजमानरं मण्डले स्थापयाम्यहम्॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तेहागच्छेह तिष्ठ ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

निम्न श्लोक और मन्त्र से अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करे—

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन्॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं। य्यज्ञठ॰ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

आचार्य निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से प्रार्थना करावें—

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु॥

ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्जठ॰ समग्रभमुपयामगृहीतो ऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टैगृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्॥

असङ्ख्यात रुद्रकलश स्थापनं पूजनं च

तदनन्तरं ग्रहस्येशानदिग्भागे कलशस्थापनविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य, कलशे वरुणमसंख्यातरुद्रांश्चाऽऽवाह्य पूजयेत्। तद्यथा—ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषाठ॰ सहस्रयोजने ऽवधन्वानितन्मसि॥ ॐ असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः असङ्ख्यातरुद्रानामावाहयामि स्थापयामि। ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं। य्यज्ञठ॰ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य 'ॐ असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः' इति लब्धोपचारेण सम्पूजयेत्।

केवलं नामाऽनुक्रमेण योगिनीस्थापनम्

आचार्य एक हाथ चौड़ी वेदी पर परिखायुक्त वेदी पर लालवस्त्र से वेदी को ढककर उस पर नौ-नौ रेखाएँ पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण की ओर देवें। पुनः चौसठ खानों में चतुष्ठीपद योगिनी के बनेंगे, जिनमें रंगीन अक्षत भर कर योगिनी का अवाहन होगा, इनमें कुछ लोग त्रिकोण आकृति का भी निर्माण करते हैं। स्वस्तिवाचन मंत्रों की आवृति से मध्य में तीन कलश स्थापित कर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती का आवाहन कर पूजन करें, योगिनीवेदी के समीप बैठकर आचार्य निम्न संकल्प को कर्ता से करावें—

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्मिन् अमुकयागहवनकर्मणि महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीपूजनपूर्वकदिव्यादि चतुः षष्टियोगिनीनां स्थापनं [illegible] करिष्ये।

उपरोक्त संकल्प के पश्चात् महाकाली की प्रतिमा योगिनी की प्रतिमा में '**ॐ अश्मन्नूर्जम्०**' इस वाक्य के द्वारा अग्न्युत्तारण करके प्रतिमा को यथास्थान स्थापित कर आवाहनादि करें—

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ १॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ २॥ ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ३॥

ॐ गजाननायै नमः गजाननामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ सिंहमुख्यै नमः सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ गृध्रास्यायै नमः गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ काकतुण्डिकायै नमः काकतुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥ ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥ ॐ हयग्रीवायै नमः हयग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥ ॐ वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥ ॐ शरभाननायै नमः शरभाननामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥ ॐ उलूकिकायै नमः उलूकिकामावाहयामि

स्थापयामि ॥ ९ ॥ ॐ शिवारावायै नमः शिवारावामावाहयामि स्थापयामि ॥ १० ॥ ॐ मयूरायै नमः मयूरामावाहयामि स्थापयामि ॥ ११ ॥ ॐ विकटाननायै नमः विकटाननामावाहयामि स्थापयामि ॥ १२ ॥ ॐ अष्टवक्त्रायै नमः अष्टवक्त्रामावाहयामि स्थापयामि ॥ १३ ॥ ॐ कोटराक्ष्यै नमः कोटराक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ १४ ॥ ॐ कुब्जायै नमः कुब्जामावाहयामि स्थापयामि ॥ १५ ॥ ॐ विकटलोचनायै नमः विकटलोचनामावाहयामि स्थापयामि ॥ १६ ॥ ॐ शुष्कोदर्यै नमः शुष्कोदरीमावाहयामि स्थापयामि ॥ १७ ॥ ॐ ललज्जिह्वायै नमः ललज्जिह्वामावाहयामि स्थापयामि ॥ १८ ॥ ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः श्वदंष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि ॥ १९ ॥ ॐ वानराननायै नमः वानराननामावाहयामि स्थापयामि ॥ २० ॥ ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः ऋक्षाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २१ ॥ ॐ केकराक्ष्यै नमः केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २२ ॥ ॐ बृहत्तुण्डायै नमः बृहत्तुण्डामावाहयामि स्थापयामि ॥ २३ ॥ ॐ सुरप्रियायै नमः सुरप्रियामावाहयामि स्थापयामि ॥ २४ ॥ ॐ कपालहस्तायै नमः कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि ॥ २५ ॥ ॐ रक्ताक्ष्यै नमः रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २६ ॥ ॐ शुष्क्यै नमः शुष्कीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २७ ॥ ॐ श्येन्यै नमः शेनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २८ ॥ ॐ कपोतिकायै नमः कपोतिकामावाहयामि स्थापयामि ॥ २९ ॥ ॐ पाशहस्तायै नमः पाशहस्तामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३० ॥ ॐ दण्डहस्तायै नमः दण्डहस्तमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३१ ॥ ॐ प्रचण्डायै नमः प्रचण्डामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३२ ॥ ॐ चण्डविक्रमायै नमः चण्डविक्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३३ ॥ ॐ शिशुघ्न्यै नमः शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३४ ॥ ॐ पापहन्त्र्यै नमः पाहन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३५ ॥ ॐ काल्यै नमः कालीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३६ ॥ ॐ रुधिरपायिन्यै नमः रुधिरपायिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३७ ॥ ॐ वसाधयायै नमः वसाधयामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३८ ॥ ॐ गर्भभक्षायै नमः गर्भक्षामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३९ ॥ ॐ शवहस्तायै नमः शवहस्तामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४० ॥ ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः आन्त्रमालिनीमावाहयामि

स्थापयामि ॥ ४१ ॥ ॐ स्थूलकेश्यै नमः स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४२ ॥ ॐ बृहत् कुक्ष्यै नमः बृहत्कुक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४३ ॥ ॐ सर्पास्यायै नमः सर्पास्यामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४४ ॥ ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४५ ॥ ॐ दन्तशूककरायै नमः दन्तशूककरामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४६ ॥ ॐ क्रौञ्च्यै नमः क्रौञ्चीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४७ ॥ ॐ मृगशीर्षायै नमः मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४८ ॥ ॐ वृषवाहिन्यै नमः वृषवाहिनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥ ॐ व्यात्तास्यायै नमः व्यात्तास्यामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५० ॥ ॐ धूमविश्वासायै नमः धूमविश्वासामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५१ ॥ ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशमा० स्थापयामि ॥ ५२ ॥ ॐ तापिन्यै नमः तापिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५३ ॥ ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५४ ॥ ॐ कोटर्यै नमः कोटरीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५५ ॥ ॐ स्थूलनासिकायै नमः स्थूलनासिकामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५६ ॥ ॐ विद्युतप्रभायै नमः विद्युतप्रभामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५७ ॥ ॐ बलाकास्यायै नमः बलाकास्यामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५८ ॥ ॐ मार्जार्यै नमः मार्जारीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५९ ॥ ॐ कटपूतनायै नमः कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६० ॥ ॐ अट्टाट्टहासायै नमः अट्टाट्टहासामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६१ ॥ ॐ कामाक्ष्यै नमः कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६२ ॥ ॐ मृगाक्ष्यै नमः मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६३ ॥ ॐ मृगलोचनायै नमः मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६४ ॥

हरिः ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ ॥

आचार्य निम्न श्लोक द्वारा कर्ता से प्रार्थना करावें—

ॐ सम्पूजिता मयादेव्यो योगिन्यः सगणाः शुभा।
मम यज्ञन्तु निर्विघ्नं कुर्वन्तु गणक्षेत्रपैः ॥

ततः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः दिव्यादिचतुः षष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु। ततः षोडशोपचारैः पूजयेत्।

केवलं नामाऽनुक्रमेण क्षेत्रपालस्थापनम्

आचार्य वायव्यकोण में सफेद वस्त्र से ढकी हुई पीठ पर चारों ओर रेखाओं को लगाकर मध्य में पूर्वदिशा से पश्चिमदिशा, उत्तरदिशा से दक्षिण दिशा में दो-दो रेखाएं बनावें, नवग्रह के तुल्य नौ कोष्ठकों का निर्माण करके पूर्वदिशा में छः षट्दल और उत्तरदिशा व ईशानकोण के मध्य के कोष्ठों में सप्तदल का निर्माण करें, पुनः कर्ता अपनी पत्नी के साथ आसन पर बैठकर आचमन और प्राणायाम करे। तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प कर्ता से करावें—

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ स्मृत्वा, अस्मिन् अमुकयागहवनकर्मणि क्षेत्रपालपूजनं करिष्ये।

आचार्य क्षेत्रपाल का स्थापन एवं पूजन निम्न नाम वाक्यों का उच्चारण करते हुए कर्ता से करावें—

ॐ अजराय नमः अजरमावाहयामि स्थापयामि॥ १ ॥ ॐ व्यापकाय नमः व्यापकमावाहयामि स्थापयामि॥ २ ॥ ॐ इन्द्रचौराय नमः इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३ ॥ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः इन्द्रमूर्तिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४ ॥ ॐ उक्ष्णे नमः उक्षाणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥ ॐ कूष्माण्डाय नमः कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि॥ ६ ॥ ॐ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ७ ॥ ॐ वटुकाय नमः वटुकमावाहयामि स्थापयामि॥ ८ ॥ ॐ विमुक्ताय नमः विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ९ ॥ ॐ लिप्तकाय नमः लिप्तकमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥ ॐ लीलालोकाय नमः लीलालोकमावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥ ॐ एकदंष्ट्राय नमः एकादंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥ ॐ ऐरावताय नमः ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि॥ १३॥ ॐ ओषधीघ्नाय नमः ओषधीघ्नमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥ ॐ बन्धनाय नमः बन्धनमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥ ॐ दिव्यकरणाय नमः दिव्यकरणमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥ ॐ कम्बलाय नमः कम्बलमावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥ ॐ भीषणाय नमः भीषणमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥ ॐ गवयाय नमः गववमावाहयामि स्थापयामि ॥ १९॥ ॐ घण्टाय नमः

घण्टामावाहयामि स्थापयामि ॥ २० ॥ ॐ व्यालाय नमः व्यालमावाहयामि स्थापयामि ॥ २१ ॥ ॐ अंशवे नमः अंशुमावाहयामि स्थापयामि ॥ २२ ॥ ॐ चन्द्रवारुणाय नमः चन्द्रवारुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ २३ ॥ ॐ घटाटोपाय नमः घटाटोपमावाहयामि स्थापयामि ॥ २४ ॥ ॐ जटिलाय नमः जटिलमावाहयामि स्थापयामि ॥ २५ ॥ ॐ क्रतवे नमः क्रतु मावाहयामि स्थापयामि ॥ २६ ॥ ॐ घण्टेश्वराय नमः घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि ॥ २७ ॥ ॐ विटकाय नमः विटकमावाहयामि स्थापयामि ॥ २८ ॥ ॐ मणिमानाय नमः मणिमानमावाहयामि स्थापयामि ॥ २९ ॥ ॐ गणवन्धाय नमः गणवन्धमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३० ॥ ॐ मुण्डाय नमः मुण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३१ ॥ ॐ वर्वूकराय नमः वर्वूकरमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३२ ॥ ॐ सुधापाय नमः सुधापमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३३ ॥ ॐ वैनाय नमः वैनमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३४ ॥ ॐ पवनाय नमः पवनमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३५ ॥ ॐ ढुण्ढकरणाय नमः ढुण्ढकरणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३६ ॥ ॐ स्थविराय नमः स्थविरमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३७ ॥ ॐ दन्तुर नमः दन्तुरामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३८ ॥ ॐ धनदाय नमः धनदमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३९ ॥ ॐ नागकर्णाय नमः नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४० ॥ ॐ महाबलाय नमः महाबलमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४१ ॥ ॐ फेत्काराय नमः फेत्कारमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४२ ॥ ॐ वीरकाय नमः वीरकमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४३ ॥ ॐ सिंहाय नमः सिंहमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४४ ॥ ॐ मृगाय नमः मृगमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४५ ॥ ॐ यक्षाय नमः यक्षमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४६ ॥ ॐ मेघवाहनाय नमः मेघवाहनमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४७ ॥ ॐ तीक्ष्णाय नमः तीक्ष्णमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४८ ॥ ॐ अमलाय नमः अमलमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥ ॐ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५० ॥

ततः—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दं धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ ॥ इति अजरादिक्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। ततः षोडशोप-चारैः पूजयेत्।

कुशकण्डिकाकरणम्

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। 'यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव' इति यजमानः। 'भवामि' इति ब्रह्मा वदेत्। ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। तद्यथा— प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्। ईशानादिपूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। तद्यथा—ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय। आग्नेयादीशानान्तम् उदगग्रैर्वा। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं प्रागग्रैः, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्, उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथावृत्तिः।

पात्रासादनम्—ततः पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा—त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय। पवित्रछेदनक्रमः— ततो द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः, प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं, पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्दिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणीर्निधाय। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणो दक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोपस्पर्शः। अर्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतोमूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य। प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम्। सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधानम्। आज्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यास्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्। आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशानादाय। उत्तिष्ठन् समिधोऽभ्यादाय, घृताक्ताः

समिधस्तिस्त्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्। इतरथावृत्तिः। ततः पवित्रे प्रणीतासु निधाय दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्ध उपयमनकुशसहितं प्रसारिताङ्गुलि हस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गुल त्यक्त्वा शङ्खसनिभमुद्रया स्त्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौ वायव्य कोणादारभ्याग्निकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्तघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्त्रुवेण तुष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात्। नात्र स्वाहाकारः। इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्तव्यः। होमत्यागानन्तरं स्त्रुवावशिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः। ततो निर्ऋतिकोणादारभ्येशानकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा—ॐ इन्द्राय स्वाहा इति जुहुयात्। 'इदमिन्द्राय न मम' इति त्यजेत्। तत उत्तरपूर्वार्द्धे—ॐ अग्नये स्वाहा-इदमग्नये न मम इति हुत्वा दक्षिणपूर्वार्द्धे—ॐ सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय न मम इति जुहुयात्।

संकल्प—अस्मिन् अमुकयागहवनकर्मणि इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथा दैवतानि सन्तु॥

वराहुतिः

गणेशाम्बिकाहोममन्त्राः

शास्त्रों के मतानुसार किसी भी स्मार्त यज्ञ में जब हवन का क्रम प्रारम्भ होता है, तब आचार्य का प्रथम कर्तव्य है कि वह कर्ता से 'ॐ गणानां त्वा०' और 'ॐ अम्बेऽअम्बिके०' का उच्चारण करते हुए हवनकुण्ड में इनके लिए एक-एक आहुति घृत द्वारा स्त्रुवे से प्रदान करावें।

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधीपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

ग्रहादिहवनम्

अर्कम्—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् सूर्याय स्वाहा॥ १॥

पलाशम्—ॐ इमं देवाऽअसपत्नर्ठ० सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममपुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा सोमाय स्वाहा॥ २॥

खदिरम्—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति भौमाय स्वाहा॥ ३॥

अपामार्गम्—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत बुधाय स्वाहा॥ ४॥

अश्वत्थम्—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीद-यच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् बृहस्पतये स्वाहा॥ ५॥

उदुम्बरम्—ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु शुक्राय स्वाहा॥ ६॥

शमीम्—ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः शनैश्चराय स्वाहा॥ ७॥

दूर्वाम्—ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता राहवे स्वाहा॥ ८॥

दर्भम्—ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिर-जायथाः केतुवे स्वाहा॥ ९॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्न-मृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात् ईश्वराय स्वाहा॥ १०॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णनिषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म इषाण उमायै स्वाहा॥ ११॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्ये नस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुयं महि जातं ते ऽअर्वन् स्कन्दाय स्वाहा॥ १२॥

ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्धुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा विष्णवे स्वाहा॥ १३॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति-व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ब्रह्मणे स्वाहा॥ १४॥

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूर्ठ०२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः इन्द्राय स्वाहा॥ १५॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे यमाय स्वाहा॥ १६॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः कालाय स्वाहा॥ १७॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय चित्रगुप्ताय स्वाहा॥ १८॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२॥ आसादयादिह अग्नये स्वाहा॥ १९॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे अद्भ्यो स्वाहा॥ २०॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः पृथिव्यै स्वाहा॥ २१॥

ॐ तद्विष्णोः परमं पदꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् विष्णवे स्वाहा॥ २२॥

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेना-नामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् इन्द्राय स्वाहा॥ २३॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व इन्द्राण्यै स्वाहा॥ २४॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् प्रजापतये स्वाहा॥ २५॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः सर्पेभ्यो स्वाहा॥ २६॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ब्रह्मणे स्वाहा॥ २७॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् गणपतये स्वाहा॥ २८॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् दुर्गायै स्वाहा॥ २९॥

ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये वायवे स्वाहा॥ ३०॥

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः आकाशाय स्वाहा॥ ३१॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम् अश्विनौ स्वाहा॥ ३२॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे वास्तोष्पतये स्वाहा॥ ३३॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः क्षेत्राधिपतये स्वाहा॥ ३४॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः इन्द्राय स्वाहा॥ ३५॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते अग्नये स्वाहा॥ ३६॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे यमाय स्वाहा॥ ३७॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्म-दिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु निर्ऋतये स्वाहा॥ ३८॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः वरुणाय स्वाहा॥ ३९॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः वायवे स्वाहा॥ ४०॥

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमाहि सोमाय स्वाहा॥ ४१॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ईशानाय स्वाहा॥ ४२॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः ब्रह्मणे स्वाहा॥ ४३॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः अनन्ताय स्वाहा॥ ४४॥

गणपतियागन्यासः

विनियोगः—आ तू न इत्यष्टमृचात्मकस्य गणपतिसूक्तस्य वामदेव-नृमेघ-कुत्सभरद्वाज-वसिष्ठ-पुरुमीढाजमीढदक्षा ऋषयः, प्रथमा गायत्री, द्वितीय-तृतीये पत्थ्याबृहतीसतोबृहत्यौ, चतुर्थी त्रिष्टुप्, पञ्चमी जगती, षष्ठी त्रिष्टुप् सप्तम्यष्टम्यौ गायत्र्यौ, आद्यास्तिस्त्र ऐन्द्र्यः, चतुर्थ्यादित्या, पञ्चमी सावित्री, षष्ठी वायवी, सप्तमी ऐन्द्री, अष्टमी मैत्रावरुणी सर्वासां न्यासे होमे च विनियोगः।

ॐ आ तु न ऽइन्द्र०—शिरसि। अस्माकमर्द्धमा०—शिखायाम्। महान् महीभिरूतिभिः०—वामभुजे। त्वमिन्द्र प्रतूर्त्तिषु०—दक्षिणभुजे। अभि विश्वा ऽआंस स्पृधः०—वामनेत्रे। अशस्तिहा जनिता०—दक्षिणनेत्रे। त्व तूर्य तरुष्यतः०—भ्रूमध्ये। अनु ते शुष्मन्तुरयन्तमीयतुः०—मुखे। क्षोणी शिशुन्न मातरा०—जिह्वायाम्। विश्वास्ते स्पृधः०—ग्रीवाणाम्। वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि०—हृदि। यज्ञो देवानां प्रत्येति०—वक्षसि। आदित्यासो भवता मृडयन्तः०—वामबाहौ। आ वोऽर्वाची०—दक्षिणबाहौ। अहोश्चिद्या वरिवो वित्तरासत्०—उदरे। अदब्धेभिः सवितः०—लिङ्गे। शिवेभिरद्य परि पाहि०—वाम-कट्याम्। हिरण्यजिह्वः सुविताय०—दक्षिणकट्याम्। रक्षा माकिर्न्नो०स०—नितम्बे। प्र वीरया सुचयो०—गुह्ये। अध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः०—वामपादे। वह वायो नियुतो याह्यच्छा०—दक्षिणपादे। पिबा सुतस्यान्धसो०—जान्वोः। गाव ऽउपावतावतम्०—वामजङ्घायाम्। मही यज्ञस्य रप्सुदा०—दक्षिण-जङ्घायाम्। उभा कर्ण्णा०—नाभौ। काव्ययो-राजानेषु०—ललाटे। कृत्वा दक्षस्य दुरोणे०—स्तनयोः। रिशादसा सघस्थ०—सर्वाङ्गेषु।

ध्यानम्

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

गणपतियागस्वाहाकारमन्त्राः

गणपतियाग में निम्न मन्त्रों द्वारा एक लाख आहुति होती है। पूर्णाहुति के दिन गणपतिसहस्रनामावली से हवन करने का विधान है। गणपतियाग आठ दिनों में सम्पन्न होता है।

ॐ आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमागहि। महान्महीभिरूतिभिः स्वाहा॥ १॥

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः। अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः स्वाहा॥ २॥

अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा। विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि स्वाहा॥ ३॥

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आवोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादर्ठ०होश्चिद्या वरिवोवित्तरासत्। आदित्येभ्यस्त्वा स्वाहा॥ ४॥

अदब्धेभिः सवितः पायुरभिष्ट्वर्ठ० शिवेभिरद्य परिपाहि नो गयम्। हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघशर्ठ०स ईशत स्वाहा॥ ५॥

प्र वीरया सुचयो दद्रिरे वामध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः। वह वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय स्वाहा॥ ६॥

गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया स्वाहा॥ ७॥

काव्ययोराजानेषु क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे। रिशादसा सधस्थ आ स्वाहा॥ ८॥

गणपतिसहस्रनामावल्या हवनम्

१. ॐ गणेश्वराय स्वाहा। २. ॐ गणक्रीडाय स्वाहा। ३. ॐ गणनाथाय स्वाहा। ४. ॐ गणाधिपाय स्वाहा। ५. ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा। ६. ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा। ७. ॐ गजवक्त्राय स्वाहा। ८. ॐ महोदराय स्वाहा। ९. ॐ लम्बोदराय स्वाहा। १०. ॐ धूम्रवर्णाय स्वाहा। ११. ॐ विकटाय स्वाहा। १२. ॐ विघ्ननायकाय स्वाहा। १३. ॐ सुमुखाय स्वाहा। १४. ॐ दुर्मुखाय स्वाहा। १५. ॐ बुद्धाय स्वाहा। १६. ॐ विघ्नराजाय स्वाहा। १७. ॐ गजाननाय स्वाहा। १८. ॐ भामाय स्वाहा। १९. ॐ प्रमोदाय स्वाहा। २०. ॐ आमोदाय स्वाहा। २१. ॐ सुरानन्दाय स्वाहा। २२. ॐ मदोत्कटाय स्वाहा। २३. ॐ हेरम्बाय स्वाहा। २४. ॐ शम्बराय स्वाहा। २५. ॐ शम्भवे स्वाहा। २६. ॐ लम्बकर्णाय स्वाहा।

२७. ॐ महाबलाय स्वाहा। २८. ॐ नन्दनाय स्वाहा। २९. ॐ अलम्पटाय स्वाहा। ३०. ॐ अभीरवे स्वाहा। ३१. ॐ मेघनादाय स्वाहा। ३२. ॐ गणञ्जयाय स्वाहा। ३३. ॐ विनायकाय स्वाहा। ३४. ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा। ३५. ॐ धीरशूद्राय स्वाहा। ३६. ॐ वरप्रदाय स्वाहा। ३७. ॐ महागणपतये स्वाहा। ३८. ॐ बुद्धिप्रियाय स्वाहा। ३९. ॐ क्षिप्रप्रसाद-नाय स्वाहा। ४०. ॐ रुद्रप्रियाय स्वाहा। ४१. ॐ गणाध्यक्षाय स्वाहा। ४२. ॐ उमापुत्राय स्वाहा। ४३. ॐ अघनाशनाय स्वाहा। ४४. ॐ कुमारगुरवे स्वाहा। ४५. ॐ ईशानपुत्राय स्वाहा। ४६. ॐ मूषकवाहनाय स्वाहा। ४७. ॐ सिद्धिप्रियाय स्वाहा। ४८. ॐ सिद्धिपतये स्वाहा। ४९. ॐ सिद्धाय स्वाहा। ५०. ॐ सिद्धिविनायकाय स्वाहा। ५१. ॐ अविघ्नाय स्वाहा। ५२. ॐ तुम्बुरवे स्वाहा। ५३. ॐ सिंहवाहनाय स्वाहा। ५४. ॐ मोहिनीप्रियाय स्वाहा। ५५. ॐ कटङ्कटाय स्वाहा। ५६. ॐ राजपुत्राय स्वाहा। ५७. ॐ शालकाय स्वाहा। ५८. ॐ सम्मिताय स्वाहा। ५९. ॐ अमिताय स्वाहा। ६०. ॐ कूष्माण्डसामसम्भूतये स्वाहा। ६१. ॐ दुर्जयाय स्वाहा। ६२. ॐ धूर्जयाय स्वाहा। ६३. ॐ जयाय स्वाहा। ६४. ॐ भूपतये स्वाहा। ६५. ॐ भुवनपतये स्वाहा। ६६. ॐ भूताना-म्पतये स्वाहा। ६७. ॐ अव्ययाय स्वाहा। ६८. ॐ विश्वकर्त्रे स्वाहा। ६९. ॐ विश्वमुखाय स्वाहा। ७०. ॐ विश्वरूपाय स्वाहा। ७१. ॐ निधये स्वाहा। ७२. ॐ घृणये स्वाहा। ७३. ॐ कवये स्वाहा। ७४. ॐ कवीना-मृषभाय स्वाहा। ७५. ॐ ब्रह्मर्णापतये स्वाहा। ७६. ॐ ब्रह्मणस्पतये स्वाहा। ७७. ॐ ज्येष्ठराजाय स्वाहा। ७८. ॐ निधिपतये स्वाहा। ७९. ॐ निधिप्रियपतिप्रियाय स्वाहा। ८०. ॐ हिरण्यमयपुरान्तस्थाय स्वाहा। ८१. ॐ सूर्यमण्डलमध्यगाय स्वाहा। ८२. ॐ कराहतिध्वस्तसिन्धु-सलिलाय स्वाहा। ८३. ॐ पूषदन्तभिदे स्वाहा। ८४. ॐ उमाङ्कवेलि-कुतुकिने स्वाहा। ८५. ॐ मुक्तिदाय स्वाहा। ८६. ॐ कुलपालनाय स्वाहा। ८७. ॐ किरीटिने स्वाहा। ८८. ॐ कुण्डलिने स्वाहा। ८९. ॐ हारिणे स्वाहा। ९०. ॐ वनमालिने स्वाहा। ९१. ॐ मनोमयाय स्वाहा। ९२. ॐ वैमुख्यहतदैत्यश्रिये स्वाहा। ९३. ॐ पादाहतिजितक्षितये स्वाहा। ९४. ॐ सद्योजातस्वर्णमुञ्जमेखलिने स्वाहा। ९५. ॐ दुर्निमित्तहृते स्वाहा। ९६. ॐ दुःस्वप्नहृते स्वाहा। ९७. ॐ प्रसहनाय स्वाहा। ९८. ॐ गुणिने स्वाहा। ९९. ॐ नादप्रतिष्ठिताय स्वाहा। १००. ॐ सुरूपाय स्वाहा। १०१. ॐ

सर्वनेत्राधिवासाय स्वाहा। १०२. ॐ वीरासनाथयाय स्वाहा। १०३. ॐ पीताम्बराय स्वाहा। १०४. ॐ खण्डरदाय स्वाहा। १०५. ॐ खण्डेन्दु-कृतशेखराय स्वाहा। १०६. ॐ चित्राङ्कश्यामदर्शनाय स्वाहा। १०७. ॐ भालचन्द्राय स्वाहा। १०८. ॐ चतुर्भुजाय स्वाहा। १०९. ॐ योगाधिपाय स्वाहा। ११०. ॐ तारकस्थाय स्वाहा। १११. ॐ पुरुषाय स्वाहा। ११२. ॐ गजगर्णकाय स्वाहा। ११३. ॐ गणाधिराजाय स्वाहा। ११४. ॐ विजयस्थिराय स्वाहा। ११५. ॐ गजपतिध्वजिने स्वाहा। ११६. ॐ देवदेवाय स्वाहा। ११७. ॐ स्मरप्राणदीपकाय स्वाहा। ११८. ॐ वायुकीलकाय स्वाहा। ११९. ॐ विपश्चिद्वरदाय स्वाहा। १२०. ॐ नादोन्नादभिन्नबलाहकाय स्वाहा। १२१. ॐ वराहरदनाय स्वाहा। १२२. ॐ मृत्युञ्जयाय स्वाहा। १२३. ॐ व्याघ्राजिनाम्बराय स्वाहा। १२४. ॐ इच्छाशक्तिधराय स्वाहा। १२५. ॐ देवत्रात्रे स्वाहा। १२६. ॐ दैत्यविमर्दनाय स्वाहा। १२७. ॐ शम्भुवक्त्रोद्भवाय स्वाहा। १२८. ॐ शम्भुकापघ्ने स्वाहा। १२९. ॐ शम्भुहास्यभुवे स्वाहा। १३०. ॐ शम्भुतेजसे स्वाहा। १३१. ॐ शिवाशीवहारिणे स्वाहा। १३२. ॐ गौरी-सुखावहाय स्वाहा। १३३. ॐ उमाङ्गमलजाय स्वाहा। १३४. ॐ गौरी-तेजोभुवे स्वाहा। १३५. ॐ स्वर्धुनीभवाय स्वाहा। १३६. ॐ यज्ञकायाय स्वाहा। १३७. ॐ महानादाय स्वाहा। १३८. ॐ गिरिवर्ष्मणे स्वाहा। १३९. ॐ शुभाननाय स्वाहा। १४०. ॐ सर्वात्मने स्वाहा। १४१. ॐ सर्वदेवात्मने स्वाहा। १४२. ॐ ब्रह्ममूर्ध्ने स्वाहा। १४३. ॐ ककुपश्रुतये स्वाहा। १४४. ॐ ब्रह्माण्डकुम्भाय स्वाहा। १४५. ॐ विद्व्योममालाय स्वाहा। १४६. ॐ सत्यशिरोरुहाय स्वाहा। १४७. ॐ जगज्जन्मलयोन्मेष-निमेषाय स्वाहा। १४८. ॐ अग्न्यर्कसोमदृशै स्वाहा। १४९. ॐ गिरिन्द्रै-करदाय स्वाहा। १५०. ॐ धर्माधर्मोष्ठाय स्वाहा। १५१. ॐ सामबृहिताय स्वाहा। १५२. ॐ ब्रह्मक्षदशनाय स्वाहा। १५३. ॐ वाणीजिह्वाय स्वाहा। १५४. ॐ वासवनासिकाय स्वाहा। १५५. ॐ कुलाचलांसाय स्वाहा। १५६. ॐ सोमार्कघण्टाय स्वाहा। १५७. ॐ रुद्रशिरोधराय स्वाहा। १५८. ॐ नदीनदभुजाय स्वाहा। १५९. ॐ सर्पांगुलीकाय स्वाहा। १६०. ॐ तारकानखाय स्वाहा। १६१. ॐ भ्रूमध्यसंस्थितकराय स्वाहा। १६२. ॐ ब्रह्मविद्यामदोत्कटाय स्वाहा। १६३. ॐ व्योमनाभये स्वाहा। १६४. ॐ श्रीहृदयाय स्वाहा। १६५. ॐ मेरुपृष्ठाय स्वाहा। १६६. ॐ

अर्णवोदराय स्वाहा। १६७. ॐ कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षः। किन्नरमानुषाय स्वाहा। १६८. ॐ पृथ्वीकटये स्वाहा। १६९. ॐ सृष्टिभिङ्गाय स्वाहा। १७०. ॐ शैलीरवे स्वाहा। १७१. ॐ दस्रजानुकाय स्वाहा। १७२. ॐ पातालजङ्घाय स्वाहा। १७३. ॐ मुनिपदे स्वाहा। १७४. ॐ कालागुंष्ठाय स्वाहा। १७५. ॐ त्रयीतनवे स्वाहा। १७६. ॐ ज्योतिर्मण्डललाङ्गलाय स्वाहा। १७७. ॐ हृदयालाननिश्चलाय स्वाहा। १७८. ॐ हृत्पद्मकर्णिका-शालिवियतकलिसरोवराय स्वाहा। १७९. ॐ सद्भक्तध्याननिगडाय स्वाहा। १८०. ॐ पूजावारीनिवारिताय स्वाहा। १८१. ॐ प्रतापिने स्वाहा। १८२. ॐ कश्यपसुताय स्वाहा। १८३. ॐ गणपाय स्वाहा। १८४. ॐ विष्टपिने स्वाहा। १८५. ॐ बलिने स्वाहा। १८६. ॐ यशस्विने स्वाहा। १८७. ॐ धार्मिकाय स्वाहा। १८८. ॐ स्योजसे स्वाहा। १८९. ॐ प्रथमाय स्वाहा। १९०. ॐ प्रथमेश्वराय स्वाहा। १९१. ॐ चिन्तामणि-द्वीपपतये स्वाहा। १९२. ॐ कल्पद्रुमवनालयाय स्वाहा। १९३. ॐ रत्नमण्डपमध्यस्थाय स्वाहा। १९४. ॐ रत्नसिंहासनाश्रयाय स्वाहा। १९५. ॐ तीव्राशिरोघृतपदाय स्वाहा। १९६. ॐ ज्वांलिनीमौलिलालिताय स्वाहा। १९७. ॐ नन्दानन्दितपीठश्रिये स्वाहा। १९८. ॐ भोगदाभूषिता-सनाय स्वाहा। १९९. ॐ सकामदायिनी स्वाहा। २००. ॐ स्फुरदुग्रासना-श्रयाय स्वाहा। २०१. ॐ तेजोवतीशिरोरत्नाय स्वाहा। २०२. ॐ सत्यानित्यावर्तसिताय स्वाहा। २०३. ॐ सविघ्ननाशिनीपीठाय स्वाहा। २०४. ॐ सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयाय स्वाहा। २०५. ॐ लिपिपद्मासनाधाराय स्वाहा। २०६. ॐ वह्निधामत्रयाश्रयाय स्वाहा। २०७. ॐ उन्नतप्रपदाय स्वाहा। २०८. ॐ गूढगुल्फान स्वाहा। २०९. ॐ सवृतपार्ष्णिकाय स्वाहा। २१०. ॐ पीनजंघाय स्वाहा। २११. ॐ शिलष्टजानवे स्वाहा। २१२. ॐ स्थूलोरवे स्वाहा। २१३. ॐ प्रोन्नमत्कटये स्वाहा। २१४. ॐ निम्ननाभये स्वाहा। २१५. ॐ स्थूलकुक्षये स्वाहा। २१६. ॐ पीनवक्षसे स्वाहा। २१७. ॐ बृहद्भुजाय स्वाहा। २१८. ॐ पीनस्कन्धाय स्वाहा। २१९. ॐ कम्बुकण्ठाय स्वाहा। २२०. ॐ लम्बोष्ठाय स्वाहा। २२१. ॐ लम्बनासि-काय स्वाहा। २२२. ॐ भग्नवामरदाय स्वाहा। २२३. ॐ तुङ्गसव्यदन्ताय स्वाहा। २२४. ॐ महाहनवे स्वाहा। २२५. ॐ ह्रस्वनेत्रत्रयाय स्वाहा। २२६. ॐ शूर्पकर्णाय स्वाहा। २२७. ॐ निबिडमस्तकाय स्वाहा। २२८. ॐ स्तबकाकारकुम्भाग्राय स्वाहा। २२९. ॐ रत्नमौलये स्वाहा।

२३०. ॐ निरङ्कुशाय स्वाहा। २३१. ॐ सर्पहारकटिसूत्राय स्वाहा। २३२. ॐ सर्पयज्ञोपवीतवते स्वाहा। २३३. ॐ सर्पकोटीरकटकाय स्वाहा। २३४. ॐ सर्पग्रैवेयकाङ्गदाय स्वाहा। २३५. ॐ सर्पकक्ष्योदराबन्धाय स्वाहा। २३६. ॐ सर्पराजोत्तरीयकाय स्वाहा। २३७. ॐ रक्ताय स्वाहा। २३८. ॐ रक्ताम्बरधराय स्वाहा। २३९. ॐ रक्तमाल्यबिभूषणाय स्वाहा। २४०. ॐ रक्तेक्षणाय स्वाहा। २४१. ॐ रक्तकराय स्वाहा। २४२. ॐ रक्तताल्वोष्ठपल्लवाय स्वाहा। २४३. ॐ श्वेताय स्वाहा। २४४. ॐ श्वेताम्बधराय स्वाहा। २४५. ॐ श्वेतमाल्यविभूषणाय स्वाहा। २४६. ॐ श्वेतातपत्ररुचिराय स्वाहा। २४७. ॐ श्वेतचामरवीजिताय स्वाहा। २४८. ॐ सवावयवसम्पूर्णसर्वलक्षणलक्षिताय स्वाहा। २४९. ॐ सर्वाभरणशोभाढ्याय स्वाहा। २५०. ॐ सर्वशोभासमन्विताय स्वाहा। २५१. ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्याय स्वाहा। २५२. ॐ सर्वकारणकारणाय स्वाहा। २५३. ॐ सर्वदैककराय स्वाहा। २५४. ॐ शार्ङ्गिणे स्वाहा। २५५. ॐ बीजापूरिणे स्वाहा। २५६. ॐ गदाधराय स्वाहा। २५७. ॐ ईक्षुचापधराय स्वाहा। २५८. ॐ शूलिने स्वाहा। २५९. ॐ चक्रपाणये स्वाहा। २६०. ॐ सरोजभृते स्वाहा। २६१. ॐ पाशिने स्वाहा। २६२. ॐ धृतोत्पलाय स्वाहा। २६३. ॐ शालीमञ्जरीभृते स्वाहा। २६४. ॐ स्वदन्तभृते स्वाहा। २६५. ॐ कल्पवल्लीधराय स्वाहा। २६६. ॐ विश्वाभयदैककराय स्वाहा। २६७. ॐ वशिने स्वाहा। २६८. ॐ अक्षमालाधराय स्वाहा। २६९. ॐ ज्ञानमुद्रावते स्वाहा। २७०. ॐ मुद्गरायुधाय स्वाहा। २७१. ॐ पूर्णपात्रिणे स्वाहा। २७२. ॐ कम्बुधराय स्वाहा। २७३. ॐ विधृतालिसमुद्गकाय स्वाहा। २७४. ॐ मातुलिङ्गधराय स्वाहा। २७५. ॐ चूतकलिकाभृते स्वाहा। २७६. ॐ कुठारवते स्वाहा। २७७. ॐ पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकाय स्वाहा। २७८. ॐ भारतीसुन्दरीनाथाय स्वाहा। २७९. ॐ विनायकरतिप्रियाय स्वाहा। २८०. ॐ महालक्ष्मीप्रियतमाय स्वाहा। २८१. ॐ सिद्धलक्ष्मीमनोरमाय स्वाहा। २८२. ॐ रमारमेशपूर्वाङ्गाय स्वाहा। २८३. ॐ दक्षिणोमामहेश्वराय स्वाहा। २८४. ॐ महीवराहवामाङ्गाय स्वाहा। २८५. ॐ रतिकन्दर्पपश्चिमाय स्वाहा। २८६. ॐ आमोदप्रमोदजननाय स्वाहा। २८७. ॐ सप्रमोदप्रमोदनाय स्वाहा। २८८. ॐ समेधितसमृद्धिश्रिये स्वाहा। २८९. ॐ ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकाय स्वाहा। २९०. ॐ दत्तसौमुख्यसुमुखाय स्वाहा। २९१. ॐ

कान्तिन्दलिताश्रयाय स्वाहा। २९२. ॐ मदनावत्याश्रितांघ्रये स्वाहा। २९३. ॐ कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखाय स्वाहा। २९४. ॐ विघ्नसम्पल्लवोपघ्नाय स्वाहा। २९५. ॐ सेवोन्निद्रमदद्रवाय स्वाहा। २९६. ॐ विघ्नकृन्निघ्न-चरणाय स्वाहा। २९७. ॐ द्राविणीशक्तिसत्कृताय स्वाहा। २९८. ॐ तीव्राप्रसन्ननयनाय स्वाहा। २९९. ॐ ज्वालिनीपालितैकदृशै स्वाहा। ३००. ॐ मोहिनीमोहनाय स्वाहा। ३०१. ॐ भोगदायिनीकान्तिमण्डिताय स्वाहा। ३०२. ॐ कामिनीकान्तवक्त्रश्रिय स्वाहा। ३०३. ॐ अधिष्ठित-वसुन्धराय स्वाहा। ३०४. ॐ वसुन्धरामदोन्नद्धमहाशङ्खनिधिप्रभवे स्वाहा। ३०५. ॐ नमद्वसुमतीमौलिमहापद्मनिधिप्रभवे स्वाहा। ३०६. ॐ सर्वसद्गुरु-संसेव्याय स्वाहा। ३०७. ॐ शोचिष्केशहृदाश्रयाय स्वाहा। ३०८. ॐ ईशानमूर्ध्ने स्वाहा। ३०९. ॐ देवेन्द्रशिखाय स्वाहा। ३१०. ॐ पवननन्दनाय स्वाहा। ३११. ॐ अग्रप्रत्यग्रनयनाय स्वाहा। ३१२. ॐ दिव्यास्त्राणांप्रयोगविदे स्वाहा। ३१३. ॐ ऐरावतादिसर्वाशावारणा-वरणप्रियाय स्वाहा। ३१४. ॐ वज्राद्यस्त्रपरीवाराय स्वाहा। ३१५. ॐ गणचण्डसमाश्रयाय स्वाहा। ३१६. ॐ जयाजयपरीवाराय स्वाहा। ३१७. ॐ विजयाविजयावहाय स्वाहा। ३१८. ॐ अजितार्चितापादाब्जाय स्वाहा। ३१९. ॐ नित्यानित्यावतंसिताय स्वाहा। ३२०. ॐ विलसिनी-कृतोल्लासाय स्वाहा। ३२१. ॐ शौण्डीसौन्दर्यमण्डिताय स्वाहा। ३२२. ॐ अनन्तान्तसुखदाय स्वाहा। ३२३. ॐ सुमङ्गलसुमङ्गलाय स्वाहा। ३२४. ॐ इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिनिषेविताय स्वाहा। ३२५. ॐ सुभगासंश्रितपदाय स्वाहा। ३२६. ॐ ललितालल्तिताश्रवाय स्वाहा। ३२७. ॐ कामिनीकामनाय स्वाहा। ३२८. ॐ काममालिनी-केलिलालिताय स्वाहा। ३२९. ॐ सरस्वत्याश्रयाय स्वाहा। ३३०. ॐ गौरीनन्दनाय स्वाहा। ३३१. ॐ श्रीनिकेतनाय स्वाहा। ३३२. ॐ गुरुगुप्तपदाय स्वाहा। ३३३. ॐ वाचासिद्धाय स्वाहा। ३३४. ॐ वागीश्वरीपतये स्वाहा। ३३५. ॐ नलिनीकामुकाय स्वाहा। ३३६. ॐ वामारामाय स्वाहा। ३३७. ॐ ज्येष्ठामनोरमाय स्वाहा। ३३८. ॐ रौद्रीमुद्रितपादाब्जाय स्वाहा। ३३९. ॐ हुं बीजाय स्वाहा। ३४०. ॐ तुङ्गशक्तिकाय स्वाहा। ३४१. ॐ विश्वादिजननत्राणाय स्वाहा। ३४२. ॐ स्वाहाशक्तये स्वाहा। ३४३. ॐ सकीलकाय स्वाहा। ३४४. ॐ अमृताब्धिकृतावासाय स्वाहा। ३४५. ॐ मदघूर्णितलोचनाय स्वाहा।

३४६. ॐ उच्छिष्टगणाय स्वाहा। ३४७. ॐ उच्छिष्टगणेशाय स्वाहा। ३४८. ॐ गणनायकाय स्वाहा। ३४९. ॐ सार्वकालिकसंसिद्धये स्वाहा। ३५०. ॐ नित्यशैवाय स्वाहा। ३५१. ॐ दिगम्बराय स्वाहा। ३५२. ॐ अनपायाय स्वाहा। ३५३. ॐ अनन्तदृष्टये स्वाहा। ३५४. ॐ अप्रमेयाय स्वाहा। ३५५. ॐ अजरामराय स्वाहा। ३५६. ॐ अनाविलाय स्वाहा। ३५७. ॐ अप्रतिरथाय स्वाहा। ३५८. ॐ अह्यच्युताय स्वाहा। ३५९. ॐ अमृताय स्वाहा। ३६०. ॐ अक्षराय स्वाहा। ३६१. ॐ अप्रतर्क्याय स्वाहा। ३६२. ॐ अक्षयाय स्वाहा। ३६३. ॐ अजय्याय स्वाहा। ३६४. ॐ अनाधाराय स्वाहा। ३६५. ॐ अनामयाय स्वाहा। ३६६. ॐ अमलाय स्वाहा। ३६७. ॐ अमोघसिद्धये स्वाहा। ३६८. ॐ अद्वैताय स्वाहा। ३६९. ॐ अघोराय स्वाहा। ३७०. ॐ अप्रमिताननाय स्वाहा। ३७१. ॐ अनाकाराय स्वाहा। ३७२. ॐ अब्धिभूम्यग्निबलघ्नाय स्वाहा। ३७३. ॐ अव्यक्तलक्षणाय स्वाहा। ३७४. ॐ आधारपीठाय स्वाहा। ३७५. ॐ आधाराय स्वाहा। ३७६. ॐ आधाराधेयवर्जिताय स्वाहा। ३७७. ॐ आखुकेतनाय स्वाहा। ३७८. ॐ आशापूरकाय स्वाहा। ३७९. ॐ आखुमहारथाय स्वाहा। ३८०. ॐ इक्षुसागरमध्यस्थाय स्वाहा। ३८१. ॐ इक्षुभक्षणलालसाय स्वाहा। ३८२. ॐ इक्षुचापातिरेकश्रिये स्वाहा। ३८३. ॐ इक्षुचापनिषेविताय स्वाहा। ३८४. ॐ इन्द्रगोपसमानश्रिये स्वाहा। ३८५. ॐ इन्द्रनीलसमद्युतये स्वाहा। ३८६. ॐ इन्दीवरदल-श्यामाय स्वाहा। ३८७. ॐ इन्दुमण्डलनिर्मलाय स्वाहा। ३८८. ॐ इध्मप्रियाय स्वाहा। ३८९. ॐ इडाभागाय स्वाहा। ३९०. ॐ इडाधाम्ने स्वाहा। ३९१. ॐ इन्दिराप्रियाय स्वाहा। ३९२. ॐ इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसिने स्वाहा। ३९३. ॐ इतिकर्तव्यतेप्सिताय स्वाहा। ३९४. ॐ ईशानमौलये स्वाहा। ३९५. ॐ ईशानाय स्वाहा। ३९६. ॐ ईशानसुताय स्वाहा। ३९७. ॐ ईतिघ्ने स्वाहा। ३९८. ॐ ईषणात्रयकल्पान्ताय स्वाहा। ३९९. ॐ ईहामात्रविवर्जिताय स्वाहा। ४००. ॐ उपेन्द्राय स्वाहा। ४०१. ॐ उडुभृन्मौलये स्वाहा। ४०२. ॐ उण्डेरकबलिप्रियाय स्वाहा। ४०३. ॐ उन्नताननाय स्वाहा। ४०४. ॐ उत्तङ्गाय स्वाहा। ४०५. ॐ उदारत्रिदशाग्रण्यै स्वाहा। ४०६. ॐ ऊर्जस्वते स्वाहा। ४०७. ॐ ऊष्मलमदाय स्वाहा। ४०८. ॐ ऊहापोहदुरासदाय स्वाहा। ४०९. ॐ ऋग्यजुः सामसम्भूतये स्वाहा। ४१०. ॐ ऋद्धिसिद्धिप्रदीपकाय स्वाहा।

४११. ॐ ऋजुचित्तैकसलभाय स्वाहा। ४१२. ॐ ऋणत्रयविमोचकाय स्वाहा। ४१३. ॐ लुप्तविघ्नायस्वभक्तानां स्वाहा। ४१४. ॐ लुप्तशक्तये-सुरद्विषां स्वाहा। ४१५. ॐ लुप्ताश्रियेविमुखार्चानां स्वाहा। ४१६. ॐ लूताविस्फोटनाशनाय स्वाहा। ४१७. ॐ एकारपीठमध्यस्थाय स्वाहा। ४१८. ॐ एकपादकृतासनाय स्वाहा। ४१९. ॐ एजिताखिलदैत्यश्रिये स्वाहा। ४२०. ॐ एधिताखिलसंश्रयाय स्वाहा। ४२१. ॐ ऐश्वर्यनिधये स्वाहा। ४२२. ॐ ऐश्वर्याय स्वाहा। ४२३. ॐ ऐहिकामुष्मिकप्रदाय स्वाहा। ४२४. ॐ ऐरम्मदसमोन्मेषाय स्वाहा। ४२५. ॐ ऐरावतनिभाननाय स्वाहा। ४२६. ॐ ओङ्कारवाच्य स्वाहा। ४२७. ॐ ओङ्काराय स्वाहा। ४२८. ॐ ओजस्वते स्वाहा। ४२९. ॐ ओषधीपतये स्वाहा। ४३०. ॐ औदार्यनिधये स्वाहा। ४३१. ॐ औद्धत्यधुर्याय स्वाहा। ४३२. ॐ औन्नत्यनिस्वनाय स्वाहा। ४३३. ॐ अंकुशायसुरनागानां स्वाहा। ४३४. ॐ अंकुशायसुर-विद्विषां स्वाहा। ४३५. ॐ अः समस्तविसर्गान्तपदेषुपरिकीर्तिताय स्वाहा। ४३६. ॐ कमण्डलुधराय स्वाहा। ४३७. ॐ कल्पाय स्वाहा। ४३८. ॐ कपर्दिने स्वाहा। ४३९. ॐ कलभाननाय स्वाहा। ४४०. ॐ कर्मसाक्षिणे स्वाहा। ४४१. ॐ कर्मकर्त्रे स्वाहा। ४४२. ॐ कमाकर्मफलप्रदाय स्वाहा। ४४३. ॐ कदम्बगोलकाकाराय स्वाहा। ४४४. ॐ कूष्माण्डगणनायकाय स्वाहा। ४४५. ॐ कारुण्यदेहाय स्वाहा। ४४६. ॐ कपिलाय स्वाहा। ४४७. ॐ कथकाय स्वाहा। ४४८. ॐ कटिसूत्रभृते स्वाहा। ४४९. ॐ खर्वाय स्वाहा। ४५०. ॐ खड्गप्रियाय स्वाहा। ४५१. ॐ खड्गखान्तान्त-स्थाय स्वाहा। ४५२. ॐ खनिर्मलाय स्वाहा। ४५३. ॐ खल्वाटशृंग-निलयाय स्वाहा। ४५४. ॐ खट्वांगिने स्वाहा। ४५५. ॐ खदुरासदाय स्वाहा। ४५६. ॐ गुणाढ्याय स्वाहा। ४५७. ॐ गहनाय स्वाहा। ४५८. ॐ गस्थाय स्वाहा। ४५९. ॐ गद्यपद्यसुंधार्णवाय स्वाहा। ४६०. ॐ गद्यगान-प्रियाय स्वाहा। ४६१. ॐ गर्जाय स्वाहा। ४६२. ॐ गीतगीर्वाणपूर्वजाय स्वाहा। ४६३. ॐ गुह्याचाराताय स्वाहा। ४६४. ॐ गुह्याय स्वाहा। ४६५. ॐ गुह्यागमनिरूपिताया स्वाहा। ४६६. ॐ गुहाशायाय स्वाहा। ४६७. ॐ गुहाब्धिस्थाय स्वाहा। ४६८. ॐ गुरुगम्याय स्वाहा। ४६९. ॐ गुरोगुरवे स्वाहा। ४७०. ॐ घण्टाघर्घरिकामालिने स्वाहा। ४७१. ॐ घटकुम्भाय स्वाहा। ४७२. ॐ घटोदराय स्वाहा। ४७३. ॐ चण्डाय स्वाहा। ४७४. ॐ चण्डेश्वरसुहृदे स्वाहा। ४७५. ॐ चण्डीशाय स्वाहा।

४७६. ॐ चण्डविक्रमाय स्वाहा। ४७७. ॐ चराचरपतये स्वाहा। ४७८. ॐ चिन्तामणिचवर्वणलालसाय स्वाहा। ४७९. ॐ छन्दसे स्वाहा। ४८०. ॐ छन्दोवपुषे स्वाहा। ४८१. ॐ छन्दोदुर्लक्ष्याय स्वाहा। ४८२. ॐ छन्दावग्रहाय स्वाहा। ४८३. ॐ गजद्योनयो स्वाहा। ४८४. ॐ जगत्साक्षिणे स्वाहा। ४८५. ॐ जगदीशाय स्वाहा। ४८६. ॐ जगन्मयाय स्वाहा। ४८७. ॐ जपाय स्वाहा। ४८८. ॐ जपपराय स्वाहा। ४८९. ॐ जप्याय स्वाहा। ४९०. ॐ जिह्वासिहासनप्रभवे स्वाहा। ४९१. ॐ झलत्झल्लोल्ल-सद्दानझङ्कारिभ्रमराकुलाय स्वाहा। ४९२. ॐ टङ्कारस्फारसंरावाय स्वाहा। ४९३. ॐ टङ्करिमणिनूपुराय स्वाहा। ४९४. ॐ ठद्वयीपल्लवान्तनमः मन्त्रैकसिद्धिदाय स्वाहा। ४९५. ॐ डिण्डिमुण्डाय स्वाहा। ४९६. ॐ डाकिनीशाय स्वाहा। ४९७. ॐ डामराय स्वाहा। ४९८. ॐ डिण्डिम-प्रियाय स्वाहा। ४९९. ॐ ढक्कानिनादमुदिताय स्वाहा। ५००. ॐ ढौकाय स्वाहा। ५०१. ॐ ढुण्ढिविनायकाय स्वाहा। ५०२. ॐ तत्त्वाय स्वाहा। ५०३. ॐ तत्त्वंपदनिरूपिताय स्वाहा। ५०४. ॐ तारकान्तरसंस्थानाय स्वाहा। ५०५. ॐ तारकाय स्वाहा। ५०६. ॐ तारकान्तकायय स्वाहा। ५०७. ॐ स्थाणवे स्वाहा। ५०८. ॐ स्थाणुप्रियाय स्वाहा। ५०९. ॐ स्थात्रे स्वाहा। ५१०. ॐ स्थावराय जंगमाय स्वाहा। ५११. ॐ दक्षयज्ञ-प्रमथनाय स्वाहा। ५१२. ॐ दात्रे स्वाहा। ५१३. ॐ दानवमहोनाय स्वाहा। ५१४. ॐ दयावते स्वाहा। ५१५. ॐ दिव्यविभवाय स्वाहा। ५१६. ॐ दण्डभृते स्वाहा। ५१७. ॐ दण्डनायकाय स्वाहा। ५१८. ॐ दन्तप्रभिन्ना-भ्रमालाय स्वाहा। ५१९. ॐ दैत्यवारणदारणाय स्वाहा। ५२०. ॐ दंष्ट्रालग्नद्विपघटाय स्वाहा। ५२१. ॐ देवार्थनृगजाकृतये स्वाहा। ५२२. ॐ धनधान्यपतये स्वाहा। ५२३. ॐ धन्याय स्वाहा। ५२४. ॐ धनदाय स्वाहा। ५२५. ॐ धरणीधराय स्वाहा। ५२६. ॐ ध्यानैकप्रकटाय स्वाहा। ५२७. ॐ ध्येयाय स्वाहा। ५२८. ॐ ध्यानाय स्वाहा। ५२९. ॐ ध्यानपरायणाय स्वाहा। ५३०. ॐ नन्द्याय स्वाहा। ५३१. ॐ नन्दिप्रियाय स्वाहा। ५३२. ॐ नादाय स्वाहा। ५३३. ॐ नादमध्यप्रतिष्ठिताय स्वाहा। ५३४. ॐ निष्कलाय स्वाहा। ५३५. ॐ निर्मलाय स्वाहा। ५३६. ॐ नित्याय स्वाहा। ५३७. ॐ नित्यानित्याय स्वाहा। ५३८. ॐ निरामयाय स्वाहा। ५३९. ॐ परस्मै व्योम्ने स्वाहा। ५४०. ॐ परस्मै धाम्ने स्वाहा। ५४१. ॐ परमात्मने स्वाहा। ५४२. ॐ परमैस्पदाय स्वाहा। ५४३. ॐ

परात्पराय स्वाहा। ५४४. ॐ पशुपतये स्वाहा। ५४५. ॐ पशुपाश-विमोचकाय स्वाहा। ५४६. ॐ पूर्णानन्दाय स्वाहा। ५४७. ॐ परानन्दाय स्वाहा। ५४८. ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय स्वाहा। ५४९. ॐ पद्मप्रसन्ननयनाय स्वाहा। ५५०. ॐ प्रणताज्ञानमोचनाय स्वाहा। ५५१. ॐ प्रमाण-प्रत्यातीताय स्वाहा। ५५२. ॐ प्रणतार्तिनिवारणाय स्वाहा। ५५३. ॐ फलहस्ताय स्वाहा। ५५४. ॐ फणिपतये स्वाहा। ५५५. ॐ फेत्काराय स्वाहा। ५५६. ॐ फाणितप्रियाय स्वाहा। ५५७. ॐ बाणार्चिताङ्घ्रि-युगलाय स्वाहा। ५५८. ॐ बालकेकिलकुतूहलिने स्वाहा। ५५९. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ५६०. ॐ ब्रह्मार्चितपदाय स्वाहा। ५६१. ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा। ५६२. ॐ बृहस्पये स्वाहा। ५६३. ॐ बृहत्तमाय स्वाहा। ५६४. ॐ ब्रह्मपराय स्वाहा। ५६५. ॐ ब्रह्मण्याय स्वाहा। ५६६. ॐ ब्रह्मवित्प्रियाय स्वाहा। ५६७. ॐ बृहन्नादाग्र्यचीत्काराय स्वाहा। ५६८. ॐ ब्रह्माण्डा-वलिमेखलाय स्वाहा। ५६९. ॐ भूक्षेपदत्तलक्ष्मीकाय स्वाहा। ५७०. ॐ भर्गाय स्वाहा। ५७१. ॐ भद्राय स्वाहा। ५७२. ॐ भयापहाय स्वाहा। ५७३. ॐ भगवते स्वाहा। ५७४. ॐ भक्तिसुलभाय स्वाहा। ५७५. ॐ भूतिदाय स्वाहा। ५७६. ॐ भूतिभूषणाय स्वाहा। ५७७. ॐ भव्याय स्वाहा। ५७८. ॐ भूतालयाय स्वाहा। ५७९. ॐ भोगदात्रे स्वाहा। ५८०. ॐ भ्रूमध्यगोचराय स्वाहा। ५८१. ॐ मन्त्राय स्वाहा। ५८२. ॐ मन्त्रपतये स्वाहा। ५८३. ॐ मन्त्रिणे स्वाहा। ५८४. ॐ मदमत्तमनोरमाय स्वाहा। ५८५. ॐ मेखलावते स्वाहा। ५८६. ॐ मन्दगतये स्वाहा। ५८७. ॐ मतिमत्कमलेक्षणाय स्वाहा। ५८८. ॐ महाबलाय स्वाहा। ५८९. ॐ महावीर्याय स्वाहा। ५९०. ॐ महाप्राणाय स्वाहा। ५९१. ॐ महामनसे स्वाहा। ५९२. ॐ यज्ञाय स्वाहा। ५९३. ॐ यज्ञपतये स्वाहा। ५९४. ॐ यज्ञगोप्त्रे स्वाहा। ५९५. ॐ यज्ञफलप्रदाय स्वाहा। ५९६. ॐ यशस्कराय स्वाहा। ५९७. ॐ योगगम्याय स्वाहा। ५९८. ॐ याज्ञिकाय स्वाहा। ५९९. ॐ याजकप्रियाय स्वाहा। ६००. ॐ रसाय स्वाहा। ६०१. ॐ रसप्रियाय स्वाहा। ६०२. ॐ रस्याय स्वाहा। ६०३. ॐ रञ्जकाय स्वाहा। ६०४. ॐ रावणार्चिताय स्वाहा। ६०५. ॐ रक्षोरक्षा-कराय स्वाहा। ६०६. ॐ रत्नगर्भाय स्वाहा। ६०७. ॐ राज्यसुखप्रदाय स्वाहा। ६०८. ॐ लक्षाय स्वाहा। ६०९. ॐ लक्ष्यप्रदाय स्वाहा। ६१०. ॐ लक्ष्याय स्वाहा। ६११. ॐ लयस्थाय स्वाहा। ६१२. ॐ

लड्डुकप्रियाय स्वाहा। ६१३. ॐ लानप्रियाय स्वाहा। ६१४. ॐ लास्यपराय स्वाहा। ६१५. ॐ लाभकृल्लोकविश्रुताय स्वाहा। ६१६. ॐ वरेण्याय स्वाहा। ६१७. ॐ वह्निवदनाय स्वाहा। ६१८. ॐ वन्द्याय स्वाहा। ६१९. ॐ वेदान्तगोचराय स्वाहा। ६२०. ॐ विकर्त्रे स्वाहा। ६२१. ॐ विश्वंतश्चक्षुषे स्वाहा। ६२२. ॐ विधात्रे स्वाहा। ६२३. ॐ विश्वतोमुखाय स्वाहा। ६२४. ॐ वामदेवाय स्वाहा। ६२५. ॐ विश्वनेत्रे स्वाहा। ६२६. ॐ वज्रिवज्रनिवारणाय स्वाहा। ६२७. ॐ विश्वबन्धन-विष्कम्भाधाराय स्वाहा। ६२८. ॐ विश्वेश्वरप्रभवे स्वाहा। ६२९. ॐ शब्दब्रह्मणे स्वाहा। ६३०. ॐ शमप्राप्याय स्वाहा। ६३१. ॐ शम्भुशक्ति-गणेश्वराय स्वाहा। ६३२. ॐ शास्त्रे स्वाहा। ६३३. ॐ शिखाग्रनिलयाय स्वाहा। ६३४. ॐ शरण्याय स्वाहा। ६३५. ॐ शिखरीश्वराय स्वाहा। ६३६. ॐ षड्ऋतुकुसुमस्त्रग्विणे स्वाहा। ६३७. ॐ षडाधाराय स्वाहा। ६३८. ॐ षडक्षराय स्वाहा। ६३९. ॐ संसारवैद्याय स्वाहा। ६४०. ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा। ६४१. ॐ सर्वभेषजभेषजा स्वाहा। ६४२. ॐ सृष्टि-स्थितिलयक्रीडाय स्वाहा। ६४३. ॐ सुरकुञ्जरभेदनाय स्वाहा। ६४४. ॐ सिन्दूरितमहाकुम्भाय स्वाहा। ६४५. ॐ सदसद्व्यक्तिदायकाय स्वाहा। ६४६. ॐ साक्षिणे स्वाहा। ६४७. ॐ समुद्रमथनाय स्वाहा। ६४८. ॐ स्वसंवेद्याय स्वाहा। ६४९. ॐ स्वदक्षिणाय स्वाहा। ६५०. ॐ स्वतन्त्राय स्वाहा। ६५१. ॐ सत्यसङ्कल्पाय स्वाहा। ६५२. ॐ सामगानरताय स्वाहा। ६५३. ॐ सुखिने स्वाहा। ६५४. ॐ हंसाय स्वाहा। ६५५. ॐ हस्ति-पिशाचीशाय स्वाहा। ६५६. ॐ हवनाय स्वाहा। ६५७. ॐ हव्यकव्यभुजे स्वाहा। ६५८. ॐ हव्याय स्वाहा। ६५९. ॐ हुतप्रियाय स्वाहा। ६६०. ॐ हर्षाय स्वाहा। ६६१. ॐ हृल्लेखामन्त्रमध्यगाय स्वाहा। ६६२. ॐ क्षेत्राधिपाय स्वाहा। ६६३. ॐ क्षमाभर्त्रे स्वाहा। ६६४. ॐ क्षमापरपराय-णाय स्वाहा। ६६५. ॐ क्षिप्रक्षेमकराय स्वाहा। ६६६. ॐ क्षेमानन्दाय स्वाहा। ६६७. ॐ क्षोणीसुरद्रुमाय स्वाहा। ६६८. ॐ धर्मप्रदाय स्वाहा। ६६९. ॐ अर्थदाय स्वाहा। ६७०. ॐ कामदात्रे स्वाहा। ६७१. ॐ सौभाग्यवर्धनाय स्वाहा। ६७२. ॐ विद्याप्रदाय स्वाहा। ६७३. ॐ विभवदाय स्वाहा। ६७४. ॐ भुक्तिमुक्तिफलप्रदाय स्वाहा। ६७५. ॐ अभिरूप्यकराय स्वाहा। ६७६. ॐ वीरश्रीप्रदाय स्वाहा। ६७७. ॐ विजयप्रदाय स्वाहा। ६७८. ॐ सर्ववश्यकराय स्वाहा। ६७९. ॐ

गर्भदोषघ्ने स्वाहा। ६८०. ॐ पुत्रपौत्रदाय स्वाहा। ६८१. ॐ मेघादाय स्वाहा। ६८२. ॐ कीर्तिदाय स्वाहा। ६८३. ॐ शोकहारिणो स्वाहा। ६८४. ॐ दौर्भाग्यनाशनाय स्वाहा। ६८५. ॐ प्रतिवादिमुखस्तम्भाय स्वाहा। ६८६. ॐ रुष्टचित्तप्रसादनाय स्वाहा। ६८७. ॐ पराभिचार-शमनाय स्वाहा। ६८८. ॐ दुःखभञ्जनकारकाय स्वाहा। ६८९. ॐ लवाय स्वाहा। ६९०. ॐ त्रुट्यै स्वाहा। ६९१. ॐ कलायै स्वाहा। ६९२. ॐ काष्ठायै स्वाहा। ६९३. ॐ निमेषाय स्वाहा। ६९४. ॐ तत्पराय स्वाहा। ६९५. ॐ क्षणाय स्वाहा। ६९६. ॐ घट्यै स्वाहा। ६९७. ॐ मुहूर्ताय स्वाहा। ६९८. ॐ प्रहराय स्वाहा। ६९९. ॐ दिवा स्वाहा। ७००. ॐ नक्तं स्वाहा। ७०१. ॐ अहर्निशं स्वाहा। ७०२. ॐ पक्षाय स्वाहा। ७०३. ॐ मासाय स्वाहा। ७०४. ॐ अयनाय स्वाहा। ७०५. ॐ वर्षाय स्वाहा। ७०६. ॐ युगाय स्वाहा। ७०७. ॐ कल्पाय स्वाहा। ७०८. ॐ महालयाय स्वाहा। ७०९. ॐ राशये स्वाहा। ७१०. ॐ तारायै स्वाहा। ७११. ॐ तिथये स्वाहा। ७१२. ॐ योगाय स्वाहा। ७१३. ॐ वाराय स्वाहा। ७१४. ॐ करणाय स्वाहा। ७१५. ॐ अशंकाय स्वाहा। ७१६. ॐ लग्नाय स्वाहा। ७१७. ॐ हीरायै स्वाहा। ७१८. ॐ कालचक्राय स्वाहा। ७१९. ॐ मेरवे स्वाहा। ७२०. ॐ सप्तर्षिभ्यो स्वाहा। ७२१. ॐ ध्रुवाय स्वाहा। ७२२. ॐ राहवे स्वाहा। ७२३. ॐ मन्दाय स्वाहा। ७२४. ॐ कवये स्वाहा। ७२५. ॐ जीवाय स्वाहा। ७२६. ॐ बुधाय स्वाहा। ७२७. ॐ भौमाय स्वाहा। ७२८. ॐ शशिने स्वाहा। ७२९. ॐ रवये स्वाहा। ७३०. ॐ कालाय स्वाहा। ७३१. ॐ सृष्टये स्वाहा। ७३२. ॐ स्थितये स्वाहा। ७३३. ॐ विश्वस्मै स्थावरायजंगमाय स्वाहा। ७३४. ॐ भुवे स्वाहा। ७३५. ॐ अद्भ्यो स्वाहा। ७३६. ॐ अग्ने स्वाहा। ७३७. ॐ मरुते स्वाहा। ७३८. ॐ व्योम्ने स्वाहा। ७३९. ॐ अहङ्कृतये स्वाहा। ७४०. ॐ प्रकृत्यै स्वाहा। ७४१. ॐ पुसे स्वाहा। ७४२. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ७४३. ॐ विष्णवे स्वाहा। ७४४. ॐ शिवाय स्वाहा। ७४५. ॐ रुद्राय स्वाहा। ७४६. ॐ ईशाय स्वाहा। ७४७. ॐ शक्त्यै स्वाहा। ७४८. ॐ सदाशिवाय स्वाहा। ७४९. ॐ त्रिदशेभ्यो स्वाहा। ७५०. ॐ पितृभ्यो स्वाहा। ७५१. ॐ सिद्धेभ्यो स्वाहा। ७५२. ॐ यक्षेभ्यो स्वाहा। ७५३. ॐ रक्षोभ्ये स्वाहा। ७५४. ॐ किन्नरेभ्यो स्वाहा। ७५५. ॐ साध्येभ्यो स्वाहा। ७५६. ॐ विद्याधरेभ्यो स्वाहा। ७५७. ॐ भूतेभ्यो स्वाहा। ७५८. ॐ

मनुष्योभ्यो स्वाहा। ७५९. ॐ पशुभ्यो स्वाहा। ७६०. ॐ खगेभ्यो स्वाहा। ७६१. ॐ समुद्रेभ्यो स्वाहा। ७६२. ॐ सरिद्भ्या स्वाहा। ७६३. ॐ शैलेभ्यो स्वाहा। ७६४. ॐ भूताय स्वाहा। ७६५. ॐ भव्याय स्वाहा। ७६६. ॐ भवाद्भवाय स्वाहा। ७६७. ॐ साङ्ख्याय स्वाहा। ७६८. ॐ पातञ्जलाय स्वाहा। ७६९. ॐ योगाय स्वाहा। ७७०. ॐ पुराणेभ्यो स्वाहा। ७७१. ॐ श्रुतये स्वाहा। ७७२. ॐ स्मृतये स्वाहा। ७७३. ॐ वेदाङ्गेभ्यो स्वाहा। ७७४. ॐ सदाचाराय स्वाहा। ७७५. ॐ मीमांसायै स्वाहा। ७७६. ॐ न्यायविस्तराय स्वाहा। ७७७. ॐ आयुर्वेदाय स्वाहा। ७७८. ॐ धनुर्वेदाय स्वाहा। ७७९. ॐ गान्धर्वाय स्वाहा। ७८०. ॐ काव्य-नाटकाय स्वाहा। ७८१. ॐ वैखानसाय स्वाहा। ७८२. ॐ भागवताय स्वाहा। ७८३. ॐ सात्वताय स्वाहा। ७८४. ॐ पाञ्चरात्रकाय स्वाहा। ७८५. ॐ शैवाय स्वाहा। ७८६. ॐ पाशुपताय स्वाहा। ७८७. ॐ कालमुखाय स्वाहा। ७८८. ॐ भैरवशासनाय स्वाहा। ७८९. ॐ शाक्ताय स्वाहा। ७९०. ॐ वैनायकाय स्वाहा। ७९१. ॐ सौराय स्वाहा। ७९२. ॐ जैताय स्वाहा। ७९३. ॐ आर्हतसंहितायै स्वाहा। ७९४. ॐ सते स्वाहा। ७९५. ॐ असते स्वाहा। ७९६. ॐ व्यक्ताय स्वाहा। ७९७. ॐ अव्यक्ताय स्वाहा। ७९८. ॐ चेतनाय स्वाहा। ७९९. ॐ अचेताय स्वाहा। ८००. ॐ बन्धाय स्वाहा। ८०१. ॐ मोक्षाय स्वाहा। ८०२. ॐ सुखाय स्वाहा। ८०३. ॐ भोगाय स्वाहा। ८०४. ॐ अयोगाय स्वाहा। ८०५. ॐ सत्याय स्वाहा। ८०६. ॐ अणवे स्वाहा। ८०७. ॐ महते स्वाहा। ८०८. ॐ स्वस्ति स्वाहा। ८०९. ॐ हुँ स्वाहा। ८१०. ॐ फण्णमः स्वाहा। ८११. ॐ स्वधा स्वाहा। ८१२. ॐ स्वाहा स्वाहा। ८१३. ॐ श्रौषण्णमः स्वाहा। ८१४. ॐ वौषण्णमः स्वाहा। ८१५. ॐ वषण्णमः स्वाहा। ८१६. ॐ नमो स्वाहा। ८१७. ॐ ज्ञानाय स्वाहा। ८१८. ॐ विज्ञानाय स्वाहा। ८१९. ॐ आनन्दाय स्वाहा। ८२०. ॐ बोधाय स्वाहा। ८२१. ॐ संविदे स्वाहा। ८२२. ॐ शमीय स्वाहा। ८२३. ॐ यमाय स्वाहा। ८२४. ॐ एकस्मै स्वाहा। ८२५. ॐ एकाक्षराधाराय स्वाहा। ८२६. ॐ एकारक्षपरायणाय स्वाहा। ८२७. ॐ एकाग्रधिये स्वाहा। ८२८. ॐ एकवीराय स्वाहा। ८२९. ॐ एकानेकस्वरूपधृषे स्वाहा। ८३०. ॐ द्विरूपाय स्वाहा। ८३१. ॐ द्विभुजाय स्वाहा। ८३२. ॐ द्व्यक्षाय स्वाहा। ८३३. ॐ द्विरदाय स्वाहा। ८३४. ॐ द्विपरक्षकाय स्वाहा। ८३५. ॐ द्वैमातुराय स्वाहा।

८३६. ॐ द्विवदनाय स्वाहा। ८३७. ॐ द्वन्द्वातीताय स्वाहा। ८३८. ॐ द्वयानिगाय स्वाहा। ८३९. ॐ त्रिधाम्ने स्वाहा। ८४०. ॐ त्रिकराय स्वाहा। ८४१. ॐ त्रेतात्रिवर्गफलदायकाय स्वाहा। ८४२. ॐ त्रिगुणात्मने स्वाहा। ८४३. ॐ त्रिलोकादये स्वाहा। ८४४. ॐ त्रिशक्तीशाय स्वाहा। ८४५. ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा। ८४६. ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा। ८४७. ॐ चतुर्दन्ताय स्वाहा। ८४८. ॐ चतुरात्मने स्वाहा। ८४९. ॐ चतुर्मुखाय स्वाहा। ८५०. ॐ चतुर्विधोपायमयाय स्वाहा। ८५१. ॐ चतुवर्णाश्रमाश्रयाय स्वाहा। ८५२. ॐ चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्तिप्रवर्तकाय स्वाहा। ८५३. ॐ चतुर्थीपूजनप्रीताय स्वाहा। ८५४. ॐ चतुर्थीतिथिसम्भवाय स्वाहा। ८५५. ॐ पञ्चाक्षरात्मने स्वाहा। ८५६. ॐ पञ्चात्मने स्वाहा। ८५७. ॐ पञ्चास्याय स्वाहा। ८५८. ॐ पञ्चकृत्यकृते स्वाहा। ८५९. ॐ पञ्चाधाराय स्वाहा। ८६०. ॐ पञ्चवर्णाय स्वाहा। ८६१. ॐ पञ्चाक्षर-परायणाय स्वाहा। ८६२. ॐ पञ्चतालाय स्वाहा। ८६३. ॐ पञ्चकराय स्वाहा। ८६४. ॐ पञ्चप्रणवभाविताय स्वाहा। ८६५. ॐ पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तये स्वाहा। ८६६. ॐ पञ्चावरणवारिताय स्वाहा। ८६७. ॐ पञ्चयप्रियाय स्वाहा। ८६८. ॐ पञ्चबाणाय स्वाहा। ८६९. ॐ पञ्चशिवात्मकाय स्वाहा। ८७०. ॐ षट्कोणपीठाय स्वाहा। ८७१. ॐ षट्चक्राधाम्ने स्वाहा। ८७२. ॐ षड्ग्रन्थिभेदकाय स्वाहा। ८७३. ॐ षड्ध्वध्वान्तविध्वंसिने स्वाहा। ८७४. ॐ षडंगुलमहाह्रदाय स्वाहा। ८७५. ॐ षण्मुखाय स्वाहा। ८७६. ॐ षण्मुखभ्रात्रे स्वाहा। ८७७. ॐ षट्शक्तिपरिवारिताय स्वाहा। ८७८. ॐ षड्वैरिवर्गविध्वंसिने स्वाहा। ८७९. ॐ षडूर्मिभयभञ्जनाय स्वाहा। ८८०. ॐ षट्तर्कदूराय स्वाहा। ८८१. ॐ षट्कर्मनिरताय स्वाहा। ८८२. ॐ षड्साश्रयाय स्वाहा। ८८३. ॐ सप्तपातालचरणाय स्वाहा। ८८४. ॐ सप्तद्वीपोरुमण्डलाय स्वाहा। ८८५. ॐ सप्तस्वर्लोकमुकुटाय स्वाहा। ८८६. ॐ सप्तसप्तिवरप्रदाय स्वाहा। ८८७. ॐ सप्ताङ्गराज्य-सुखदाय स्वाहा। ८८८. ॐ सप्तर्षिगणमण्डिताय स्वाहा। ८८९. ॐ सप्त-च्छन्दोनिधये स्वाहा। ८९०. ॐ सप्तहोत्रे स्वाहा। ८९१. ॐ सप्तस्वराश्रयाय स्वाहा। ८९२. ॐ सप्ताब्धिकेलिकासाराय स्वाहा। ८९३. ॐ सप्तमातृ-निषेविताय स्वाहा। ८९४. ॐ सप्तच्छन्दोमोदमदाय स्वाहा। ८९५. ॐ सप्तच्छन्दोमखप्रभवे स्वाहा। ८९६. ॐ अष्टमूर्तिध्येयमूर्तये स्वाहा। ८९७. ॐ अष्टप्रकृतिकारणाय स्वाहा। ८९८. ॐ अष्टाङ्गयोगफलभुवे

स्वाहा। ८९९. ॐ अष्टपत्राम्बुजासनाय स्वाहा। ९००. ॐ अष्टशक्तिसमृद्धश्रिये स्वाहा। ९०१. ॐ अष्टैश्वर्यप्रदायकाय स्वाहा। ९०२. ॐ अष्टपीठोपपीठश्रिये स्वाहा। ९०३. ॐ अष्टमातृसमावृताय स्वाहा। ९०४. ॐ अष्टभैरवसेव्याय स्वाहा। ९०५. ॐ अष्टवसुवन्द्याय स्वाहा। ९०६. ॐ अष्टमूर्तिभृते स्वाहा। ९०७. ॐ अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तये स्वाहा। ९०८. ॐ अष्टद्रव्यहविः प्रियाय स्वाहा। ९०९. ॐ नवनागासनाध्यासिने स्वाहा। ९१०. ॐ नवनिध्यनुशासित्रे स्वाहा। ९११. ॐ नवद्वारपुराधाराय स्वाहा। ९१२. ॐ नवधारनिकेतनाय स्वाहा। ९१३. ॐ नवनारायणस्तुत्याय स्वाहा। ९१४. ॐ नवदुर्गानिषेविताय स्वाहा। ९१५. ॐ नवनाथमहानाथाय स्वाहा। ९१६. ॐ नवनागविभूषणाय स्वाहा। ९१७. ॐ नवरत्नविचित्राङ्गाय स्वाहा। ९१८. ॐ नवशक्तिशिरोघृताय स्वाहा। ९१९. ॐ दशात्मकाय स्वाहा। ९२०. ॐ दशभुजाय स्वाहा। ९२१. ॐ दशदिक्पतिवन्दिताय स्वाहा। ९२२. ॐ दशाध्यायाय स्वाहा। ९२३. ॐ दशप्राणाय स्वाहा। ९२४. ॐ दशेन्द्रियनियामकाम स्वाहा। ९२५. ॐ दशाक्षरमहामन्त्राय स्वाहा। ९२६. ॐ दशाशाव्यापिविग्रहाय स्वाहा। ९२७. ॐ एकादशादिभीरुद्रैस्तुताय स्वाहा। ९२८. ॐ एकादशाक्षराय स्वाहा। ९२९. ॐ द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डाय स्वाहा। ९३०. ॐ द्वादशान्तनिकेतनाय स्वाहा। ९३१. ॐ त्रयोदशभिदाभिन्नविश्वेदेवाधिदैवताय स्वाहा। ९३२. ॐ चतुर्दशेन्द्रवरदाय स्वाहा। ९३३. ॐ चतुर्दशमनुप्रभवे स्वाहा। ९३४. ॐ चतुर्दशादिविद्याढ्याय स्वाहा। ९३५. ॐ चतुर्दशजगत्प्रभवे स्वाहा। ९३६. ॐ सामपञ्चदशाय स्वाहा। ९३७. ॐ पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलाय स्वाहा। ९३८. ॐ षोडशाधारनिलयाय स्वाहा। ९३९. ॐ षोडशस्वरमातृकाय स्वाहा। ९४०. ॐ षोडशान्तपदावासाय स्वाहा। ९४१. ॐ षोडशेन्दुकलात्मकाय स्वाहा। ९४२. ॐ कलासप्तदश्यै स्वाहा। ९४३. ॐ सप्तदशाय स्वाहा। ९४४. ॐ सप्तदशाक्षराय स्वाहा। ९४५. ॐ अष्टादशद्वीपपतये स्वाहा। ९४६. ॐ अष्टादशपुराणकृते स्वाहा। ९४७. ॐ अष्टादशौषधीसृष्टये स्वाहा। ९४८. ॐ अष्टादशविधिस्मृताय स्वाहा। ९४९. ॐ अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविदाय स्वाहा। ९५०. ॐ एकविंशायपुंसे स्वाहा। ९५१. ॐ एकविंशत्यङ्गलिपल्लवाय स्वाहा। ९५२. ॐ चतुर्विंशतितत्त्वात्मने स्वाहा। ९५३. ॐ पञ्चविंशाख्यपूरुषाय स्वाहा। ९५४. ॐ सप्तविंशतितारेशाय स्वाहा। ९५५. ॐ

सप्तविंशतियोगकृते स्वाहा। ९५६. ॐ द्वात्रिंशत्भैरवाधीशाय स्वाहा। ९५७. ॐ चतुस्त्रिंशन्महाह्रदाय स्वाहा। ९५८. ॐ षट्त्रिंशत्तत्त्वसम्भूतये स्वाहा। ९५९. ॐ अष्टात्रिंशत्कलातनवे स्वाहा। ९६०. ॐ नमदेकोन-पञ्चाशन्मरुद्वर्गनिर्गलाय स्वाहा। ९६१. ॐ पञ्चाशदक्षरश्रेण्यै स्वाहा। ९६२. ॐ पञ्चाशद्रुद्रविग्रहाय स्वाहा। ९६३. ॐ पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशाय स्वाहा। ९६४. ॐ पञ्चाशन्मातृकालयाय स्वाहा। ९६५. ॐ द्विपञ्चाशद्वपुः श्रेण्यै स्वाहा। ९६६. ॐ त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयाय स्वाहा। ९६७. ॐ चतुःषष्ट्यर्णनिर्णेत्रे स्वाहा। ९६८. ॐ चतुःषष्टिकलानिधये स्वाहा। ९६९. ॐ चतुःषष्टिमहासिद्धयोगिनीवृन्दवन्दिताय स्वाहा। ९७०. ॐ अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरवभावनाय स्वाहा। ९७१. ॐ चतुर्नवतिमन्त्रात्मने स्वाहा। ९७२. ॐ षण्णवत्यधिकप्रभपवे स्वाहा। ९७३. ॐ शतानन्दाय स्वाहा। ९७४. ॐ शतधृतये स्वाहा। ९७५. ॐ शतपत्रायतेक्षणाय स्वाहा। ९७६. ॐ शतानीकाय स्वाहा। ९७७. ॐ शतमखाय स्वाहा। ९७८. ॐ शतधारावरायुधाय स्वाहा। ९७९. ॐ सहस्त्रपत्रनिलयाय स्वाहा। ९८०. ॐ सहस्त्रफणभूषणाय स्वाहा। ९८१. ॐ सहस्त्रशीर्ष्णेपुरुषाय स्वाहा। ९८२. ॐ सहस्त्राक्षाय स्वाहा। ९८३. ॐ सहस्त्रपदे स्वाहा। ९८४. ॐ सहस्त्रनामसंस्तुत्याय स्वाहा। ९८५. ॐ सहस्त्राक्षबलापहाय स्वाहा। ९८६. ॐ दशसाहस्त्रफलभृत्फणिराजकृतासनाय स्वाहा। ९८७. ॐ अष्टाशीतिसहस्त्राद्यमहर्षिस्तोत्रयन्त्रिताय स्वाहा। ९८८. ॐ लक्षाधीशप्रिया-धाराय स्वाहा। ९८९. ॐ लक्षाधारमनोमयाय स्वाहा। ९९०. ॐ चतुर्लक्ष-जपप्रीताय स्वाहा। ९९१. ॐ चतुर्लक्षप्रकाशिताय स्वाहा। ९९२. ॐ चतुरशीतिलक्षाणांजीवानांदेहसंस्थिताय स्वाहा। ९९३. ॐ कोटिसूर्य-प्रतीकाशाय स्वाहा। ९९४. ॐ कोटिचन्द्रांशुनिर्मलाय स्वाहा। ९९५. ॐ शिवाभवाध्युष्टकोटिविनायकधुरन्धराय स्वाहा। ९९६. ॐ सप्तकोटि-महामन्त्रमंत्रितावयवद्युतये स्वाहा। ९९७. ॐ त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणी-प्रणतपादुकाय स्वाहा। ९९८. ॐ अनन्तनाम्ने स्वाहा। ९९९. ॐ अनन्त-श्रिये स्वाहा। १०००. ॐ अनन्तानन्तसौख्यदाय स्वाहा।

विष्णुयागन्यासः

विनियोगः—सहस्रशीर्षेत्यादिषोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायण ऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप्छन्दः यज्ञेन यज्ञमित्यस्य त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं नारायणपुरुषो देवता, न्यासे हवने च विनियोगः।

१. ॐ सहस्रशीर्षा०-वामकरे। २. ॐ पुरुष ऽएव०-दक्षिणकरे। ३. ॐ एतावानस्य०-वामपादे। ४. ॐ त्रिपादूर्ध्व०-दक्षिणपादे। ५. ॐ ततो विराडजायत०-वामजानौ। ६. ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः०-दक्षिणजानौ। ७. ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः०-वामकट्याम्। ८. ॐ तस्मादश्वा०-दक्षिणकट्याम्। ९. ॐ तं यज्ञं बर्हिषि०-नाभौ। १०. ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः०-हृदये। ११. ॐ ब्राह्मणोऽस्य०-वामबाहौ १२. ॐ चन्द्रमा मनसः०-दक्षिणबाहौ। १३. ॐ नाभ्या ऽआसीदन्त०-कण्ठे। १४. ॐ यत्पुरुषेण हविषा०-मुखे। १५. ॐ सप्तास्यासन्०-अक्ष्णोः। १६. ॐ यज्ञेन यज्ञम्-मूर्ध्नि।

पुनः—१. ब्राह्मणोऽस्य०-हृदयाय नमः। २. चन्द्रमा मनसः०- शिरसे स्वाहा। ३. नाभ्या ऽआसीदन्त०-कवचाय हुम्। ४. यत्पुरुषेण हविषा०-नेत्रत्रयाय वौषट्। ५. सप्तास्यासन्०-शिखायै वषट्। ६. यज्ञेन यज्ञम्०-अस्त्राय फट्।

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥ १॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥ २॥

विष्णुयागस्वाहाकारमन्त्राः

विष्णुयाग तीन प्रकार का होता है। विष्णु, महाविष्णु और अतिविष्णु। विष्णुयाग पाँच, सात, आठ या नौ दिन में सम्पन्न होता है। महाविष्णुयाग नौ दिन में सम्पन्न होता है। अतिविष्णुयाग नौ दिन अथवा ग्यारह दिन में सम्पन्न होता है। विष्णुयाग में एक लाख साठ हजार आहुति होती है। महाविष्णुयाग में तीन लाख बीस हजार आहुति होती है। अति विष्णुयाग में चार लाख अस्सी हजार आहुति होती है। सभी आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से ही होती है।

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमिर्ठं० सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् विष्णवे स्वाहा॥ १॥ पुरुष एवेदर्ठं० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति विष्णवे स्वाहा॥ २॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः। पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि विष्णवे स्वाहा॥ ३॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि विष्णवे स्वाहा॥ ४॥ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः विष्णवे स्वाहा॥ ५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये विष्णवे स्वाहा॥ ६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्ठं०सि जज्ञिरे तस्माद्य-जुस्तस्मादजायत विष्णवे स्वाहा॥ ७॥ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः विष्णवे स्वाहा॥ ८॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये विष्णवे स्वाहा॥ ९॥ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते विष्णवे स्वाहा॥ १०॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठं० शूद्रोऽ अजायत विष्णवे स्वाहा॥ ११॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत विष्णवे स्वाहा॥ १२॥ नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठं० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ अकल्पयन् विष्णवे स्वाहा॥ १३॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः विष्णवे स्वाहा॥ १४॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् विष्णवे स्वाहा॥ १५॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः विष्णवे स्वाहा॥ १६॥

विष्णुसहस्त्रनामावल्या हवनम्

१. ॐ विश्वस्मै स्वाहा। २. ॐ विष्णवे स्वाहा। ३. ॐ वषट्काराय स्वाहा। ४. ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे स्वाहा। ५. ॐ भूतकृते स्वाहा। ६. ॐ भूतभृते स्वाहा। ७. ॐ भावाय स्वाहा। ८. ॐ भूतात्मने स्वाहा। ९. ॐ भूतभावनाय स्वाहा। १०. ॐ पूतात्मने स्वाहा। ११. ॐ परमात्मने स्वाहा। १२. ॐ मुक्तानां परमागतये स्वाहा। १३. ॐ अव्ययाय स्वाहा। १४. ॐ पुरुषाय स्वाहा। १५. ॐ साक्षिणे स्वाहा। १६. ॐ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा। १७. ॐ अक्षराय स्वाहा। १८. ॐ योगाय स्वाहा। १९. ॐ योगविदां नेत्रे स्वाहा। २०. ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय स्वाहा। २१. ॐ नारसिंहवपुषे स्वाहा। २२. ॐ श्रीमते स्वाहा। २३. ॐ केशवाय स्वाहा। २४. ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा। २५. ॐ सर्वस्मै स्वाहा। २६. ॐ शर्वाय स्वाहा। २७. ॐ शिवाय स्वाहा। २८. ॐ स्थाणवे स्वाहा। २९. ॐ भूतादये स्वाहा। ३०. ॐ अव्ययनिधये स्वाहा। ३१. ॐ सम्भवाय स्वाहा। ३२. ॐ भावनाय स्वाहा। ३३. ॐ भर्त्रे स्वाहा। ३४. ॐ प्रभवाय स्वाहा। ३५. ॐ प्रभवे स्वाहा। ३६. ॐ ईश्वराय स्वाहा। ३७. ॐ स्वयम्भुवे स्वाहा। ३८. ॐ शम्भवे स्वाहा। ३९. ॐ आदित्याय स्वाहा। ४०. ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहा। ४१. ॐ महास्वनाय स्वाहा। ४२. ॐ अनादिनिधनाय स्वाहा। ४३. ॐ धात्रे स्वाहा। ४४. ॐ विधात्रे स्वाहा। ४५. ॐ धातुरुत्तमाय स्वाहा। ४६. ॐ अप्रमेयाय स्वाहा। ४७. ॐ हृषीकेशाय स्वाहा। ४८. ॐ पद्मनाभाय स्वाहा। ४९. ॐ अमर-प्रभवे स्वाहा। ५०. ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा। ५१. ॐ मनवे स्वाहा। ५२. ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा। ५३. ॐ स्थविष्ठाय स्वाहा। ५४. ॐ स्थविरोध्रुवाय स्वाहा। ५५. ॐ अग्राह्याय स्वाहा। ५६. ॐ शाश्वताय स्वाहा। ५७. ॐ कृष्णाय स्वाहा। ५८. ॐ लोहिताक्षाय स्वाहा। ५९. ॐ प्रतर्दनाय स्वाहा। ६०. ॐ प्रभूताय स्वाहा। ६१. ॐ त्रिककुब्धाम्ने स्वाहा। ६२. ॐ पवित्राय स्वाहा। ६३. ॐ मङ्गलपराय स्वाहा। ६४. ॐ ईशानाय स्वाहा। ६५. ॐ प्राणदाय स्वाहा। ६६. ॐ प्राणाय स्वाहा। ६७. ॐ ज्येष्ठाय स्वाहा। ६८. ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा। ६९. ॐ प्रजापतये स्वाहा। ७०. ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा। ७१. ॐ भूगर्भाय स्वाहा। ७२. ॐ माधवाय स्वाहा। ७३. ॐ मधुसूदनाय स्वाहा। ७४. ॐ ईश्वराय स्वाहा। ७५. ॐ विक्रमिणे स्वाहा। ७६. ॐ धन्विने स्वाहा। ७७. ॐ मेधाविने स्वाहा। ७८. ॐ विक्रमाय स्वाहा। ७९. ॐ

क्रमाय स्वाहा। ८०. ॐ अनुत्तमाय स्वाहा। ८१. ॐ दुराधर्षाय स्वाहा ८२. ॐ कृतज्ञाय स्वाहा। ८३. ॐ कृतये स्वाहा। ८४. ॐ आत्मवते नमः ८५. ॐ सुरेशाय स्वाहा। ८६. ॐ शरणाय स्वाहा। ८७. ॐ शर्मणे स्वाहा ८८. ॐ विश्वरेतसे स्वाहा। ८९. ॐ प्रजाभवाय स्वाहा। ९०. ॐ अह्नये स्वाहा। ९१. ॐ संवत्सराय स्वाहा। ९२. ॐ व्यालाय स्वाहा। ९३. ॐ प्रत्ययाय स्वाहा। ९४. ॐ सर्वदर्शनाय स्वाहा। ९५. ॐ अजाय स्वाहा ९६. ॐ सर्वेश्वराय स्वाहा। ९७. ॐ सिद्धाय स्वाहा। ९८. ॐ सिद्धये स्वाहा। ९९. ॐ सर्वादये स्वाहा। १००. ॐ अच्युताय स्वाहा। १०१. ॐ वृषाकपये स्वाहा। १०२. ॐ अमेयात्मने स्वाहा। १०३. ॐ सर्वयोग-विनिःसृताय स्वाहा। १०४. ॐ वसवे स्वाहा। १०५. ॐ वसुमनसे स्वाहा १०६. ॐ सत्याय स्वाहा। १०७. ॐ समात्मने स्वाहा। १०८. ॐ सम्मिताय स्वाहा। १०९. ॐ समाय स्वाहा। ११०. ॐ अमोघाय स्वाहा। १११. ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा। ११२. ॐ वृषकर्मणे स्वाहा। ११३. ॐ वृषाकृतये स्वाहा। ११४. ॐ रुद्राय स्वाहा। ११५. ॐ बहुशिरसे स्वाहा। ११६. ॐ बभ्रवे स्वाहा। ११७. ॐ विश्वयोनये स्वाहा। ११८. ॐ शुचिश्रवसे स्वाहा। ११९. ॐ अमृताय स्वाहा। १२०. ॐ शाश्वतस्थाणवे स्वाहा। १२१. ॐ वरारोहाय स्वाहा। १२२. ॐ महातपसे स्वाहा। १२३. ॐ सर्वगाय स्वाहा। १२४. ॐ सर्वविद्भानवे स्वाहा। १२५. ॐ विष्वक्सेनाय स्वाहा। १२६. ॐ जनार्दनाय स्वाहा। १२७. ॐ वेदाय स्वाहा। १२८. ॐ वेदविदे स्वाहा। १२९. ॐ अव्यङ्गाय स्वाहा। १३०. ॐ वेदाङ्गाय स्वाहा। १३१. ॐ वेदविदे स्वाहा। १३२. ॐ कवये स्वाहा। १३३. ॐ लोकाध्यक्षाय स्वाहा। १३४. ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा। १३५. ॐ धर्माध्यक्षाय स्वाहा। १३६. ॐ कृताकृताय स्वाहा। १३७. ॐ चतुरात्मने स्वाहा। १३८. ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा। १३९. ॐ चतुर्दंष्ट्राय स्वाहा। १४०. ॐ चतुर्भुजाय स्वाहा। १४१. ॐ भ्राजिष्णवे स्वाहा। १४२. ॐ भोजनाय स्वाहा। १४३. ॐ भोक्त्रे स्वाहा। १४४. ॐ सहिष्णवे स्वाहा। १४५. ॐ जगदादिजाय स्वाहा। १४६. ॐ अनघाय स्वाहा। १४७. ॐ विजयाय स्वाहा। १४८. ॐ जेत्रे स्वाहा। १४९. ॐ विश्वयोनये स्वाहा। १५०. ॐ पुनर्वसवे स्वाहा। १५१. ॐ उपेन्द्राय स्वाहा। १५२. ॐ वामनाय स्वाहा। १५३. ॐ प्रांशवे स्वाहा। १५४. ॐ अमोघाय स्वाहा।

१५५. ॐ शुचये स्वाहा। १५६. ॐ ऊर्जिताय स्वाहा। १५७. ॐ अतीन्द्राय स्वाहा। १५८. ॐ संग्रहाय स्वाहा। १५९. ॐ सर्गाय स्वाहा। १६०. ॐ घृतात्मने स्वाहा। १६१. ॐ नियमाय स्वाहा। १६२. ॐ यमाय स्वाहा। १६३. ॐ वेद्याय स्वाहा। १६४. ॐ वैद्याय स्वाहा। १६५. ॐ सदायोगिने स्वाहा। १६६. ॐ वीरघ्ने स्वाहा। १६७. ॐ माधवाय स्वाहा। १६८. ॐ मधवे स्वाहा। १६९. ॐ अतीन्द्रियाय स्वाहा। १७०. ॐ महामायाय स्वाहा। १७१. ॐ महोत्साहाय स्वाहा। १७२. ॐ महाबलाय स्वाहा। १७३. ॐ महाबुद्धये स्वाहा। १७४. ॐ महावीर्याय स्वाहा। १७५. ॐ महाशक्तये स्वाहा। १७६. ॐ महाद्युतये स्वाहा। १७७. ॐ अनिर्देश्यवपुषे स्वाहा। १७८. ॐ श्रीमते स्वाहा। १७९. ॐ अमेयात्मने स्वाहा। १८०. ॐ महाद्रिधृषे स्वाहा। १८१. ॐ महेष्वासाय स्वाहा। १८२. ॐ महीभर्त्रे स्वाहा। १८३. ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा। १८४. ॐ सताङ्गतये स्वाहा। १८५. ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा। १८६. ॐ सुरानन्दाय स्वाहा। १८७. ॐ गोविन्दाय स्वाहा। १८८. ॐ गोविदाम्पतये स्वाहा। १८९. ॐ मरीचये स्वाहा। १९०. ॐ दमनाय स्वाहा। १९१. ॐ हंसाय स्वाहा। १९२. ॐ सुपर्णाय स्वाहा। १९३. ॐ भुजगोत्तमाय स्वाहा। १९४. ॐ हिरण्यनाभाय स्वाहा। १९५. ॐ सुतपसे स्वाहा। १९६. ॐ पद्मनाभाय स्वाहा। १९७. ॐ प्रजापतये स्वाहा। १९८. ॐ अमृत्यवे स्वाहा। १९९. ॐ सर्वदृशे स्वाहा। २००. ॐ सिंहाय स्वाहा। २०१. ॐ सन्धात्रे स्वाहा। २०२. ॐ सन्धिमते स्वाहा। २०३. ॐ स्थिराय स्वाहा। २०४. ॐ अजाय स्वाहा। २०५. ॐ दुर्मर्षणाय स्वाहा। २०६. ॐ शास्त्रे स्वाहा। २०७. ॐ विश्रुतात्मने स्वाहा। २०८. ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा। २०९. ॐ गुरवे स्वाहा। २१०. ॐ गुरुतमाय स्वाहा। २११. ॐ धाम्ने स्वाहा। २१२. ॐ सत्याय स्वाहा। २१३. ॐ सत्यपराक्रमाय स्वाहा। २१४. ॐ निमिषाय स्वाहा। २१५. ॐ अनिमिषाय स्वाहा। २१६. ॐ स्त्रग्विणे स्वाहा। २१७. ॐ वाचस्पतिरुदारधिये स्वाहा। २१८. ॐ अग्रण्ये स्वाहा। २१९. ॐ ग्रामण्ये स्वाहा। २२०. ॐ श्रीमते स्वाहा। २२१. ॐ न्यायाय स्वाहा। २२२. ॐ नेत्रे स्वाहा। २२३. ॐ समीरणाय स्वाहा। २२४. ॐ सहस्त्रमूर्ध्ने स्वाहा। २२५. ॐ विश्वात्मने स्वाहा। २२६. ॐ सहस्त्राक्षाय स्वाहा। २२७. ॐ सहस्त्रपदे स्वाहा। २२८. ॐ आवर्त्तनाय स्वाहा। २२९. ॐ निवृत्तात्मने

स्वाहा। २३०. ॐ संवृताय स्वाहा। २३१. ॐ सम्प्रमर्दनाय स्वाहा। २३२. ॐ अहः संवतकाय स्वाहा। २३३. ॐ वह्ने स्वाहा। २३४. ॐ अनिलाय स्वाहा। २३५. ॐ धरणीधराय स्वाहा। २३६. ॐ सुप्रसादाय स्वाहा। २३७. ॐ प्रसन्नात्मने स्वाहा। २३८. ॐ विश्वभृषे स्वाहा। २३९. ॐ विश्वभुजे स्वाहा। २४०. ॐ विभवे स्वाहा। २४१. ॐ सत्कर्त्रे स्वाहा। २४२. ॐ सत्कृताय स्वाहा। २४३. ॐ साधवे स्वाहा। २४४. ॐ जह्नवे स्वाहा। २४५. ॐ नारायणाय स्वाहा। २४६. ॐ नराय स्वाहा। २४७. ॐ असंख्येयाय स्वाहा। २४८. ॐ अप्रमेयात्मने स्वाहा। २४९. ॐ विशिष्टाय स्वाहा। २५०. ॐ शिष्टकृते स्वाहा। २५१. ॐ शुचये स्वाहा। २५२. ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा। २५३. ॐ सिद्धसङ्कल्पाय स्वाहा। २५४. ॐ सिद्धिदाय स्वाहा। २५५. ॐ सिद्धिसाधनाय स्वाहा। २५६. ॐ वृषाहिणे स्वाहा। २५७. ॐ वृषभाय स्वाहा। २५८. ॐ विष्णवे स्वाहा। २५९. ॐ वृषपर्वणे स्वाहा। २६०. ॐ वृषोदराय स्वाहा। २६१. ॐ वर्द्धनाय स्वाहा। २६२. ॐ वर्द्धमानाय स्वाहा। २६३. ॐ विविक्ताय स्वाहा। २६४. ॐ स्तुतिसागराय स्वाहा। २६५. ॐ सुभुजाय स्वाहा। २६६. ॐ दुर्धराय स्वाहा। २६७. ॐ वाग्मिने स्वाहा। २६८. ॐ महेन्द्राय स्वाहा। २६९. ॐ वसुदाय स्वाहा। २७०. ॐ वसवे स्वाहा। २७१. ॐ नैकरूपाय स्वाहा। २७२. ॐ बृहद्रूपाय स्वाहा। २७३. ॐ शिपिविष्टाय स्वाहा। २७४. ॐ प्रकाशनाय स्वाहा। २७५. ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय स्वाहा। २७६. ॐ प्रकाशात्मने स्वाहा। २७७. ॐ प्रतापनाय स्वाहा। २७८. ॐ ऋद्धाय स्वाहा। २७९. ॐ स्पष्टाक्षराय स्वाहा। २८०. ॐ मन्त्राय स्वाहा। २८१. ॐ चन्द्रांशवे स्वाहा। २८२. ॐ भास्करद्युतये स्वाहा। २८३. ॐ अमृतांशूद्भवाय स्वाहा। २८४. ॐ भानवे स्वाहा। २८५. ॐ शशिविन्दवे स्वाहा। २८६. ॐ सुरेश्वराय स्वाहा। २८७. ॐ औषधाय स्वाहा। २८८. ॐ जगतःसेतवे स्वाहा। २८९. ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय स्वाहा। २९०. ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय स्वाहा। २९१. ॐ पवनाय स्वाहा। २९२. ॐ पावनाय स्वाहा। २९३. ॐ अनलाय स्वाहा। २९४. ॐ कामघ्ने स्वाहा। २९५. ॐ कामकृते स्वाहा। २९६. ॐ कान्ताय स्वाहा। २९७. ॐ कामाय स्वाहा। २९८. ॐ कामप्रदाय स्वाहा। २९९. ॐ प्रभवे स्वाहा। ३००. ॐ युगादिकृते स्वाहा। ३०१. ॐ युगावर्त्ताय स्वाहा। ३०२. ॐ

नैकमायाय स्वाहा। ३०३. ॐ महाशनाय स्वाहा। ३०४. ॐ अदृश्याय स्वाहा। ३०५. ॐ अव्यक्तरूपाय स्वाहा। ३०६. ॐ सहस्त्रजिते स्वाहा। ३०७. ॐ अनन्तजिते स्वाहा। ३०८. ॐ इष्टाय स्वाहा। ३०९. ॐ विशिष्टाय स्वाहा। ३१०. ॐ शिष्टेष्टाय स्वाहा। ३११. ॐ शिखण्डिने स्वाहा। ३१२. ॐ नहुषाय स्वाहा। ३१३. ॐ वृषाय स्वाहा। ३१४. ॐ क्रोधघ्ने स्वाहा। ३१५. ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे स्वाहा। ३१६. ॐ विश्वबाहवे स्वाहा। ३१७. ॐ महीधराय स्वाहा। ३१८. ॐ अच्युताय स्वाहा। ३१९. ॐ प्रथिताय स्वाहा। ३२०. ॐ प्राणाय स्वाहा। ३२१. ॐ प्राणदाय स्वाहा। ३२२. ॐ वासवानुजाय स्वाहा। ३२३. ॐ अपांनिधये स्वाहा। ३२४. ॐ अधिष्ठानाय स्वाहा। ३२५. ॐ अप्रमत्ताय स्वाहा। ३२६. ॐ प्रतिष्ठिताय स्वाहा। ३२७. ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ३२८. ॐ स्कन्दधराय स्वाहा। ३२९. ॐ धुर्याय स्वाहा। ३३०. ॐ वरदाय स्वाहा। ३३१. ॐ वायुवाहनाय स्वाहा। ३३२. ॐ वासुदेवाय स्वाहा। ३३३. ॐ बृहद् भानवे स्वाहा। ३३४. ॐ आदिदेवाय स्वाहा। ३३५. ॐ पुरन्दराय स्वाहा। ३३६. ॐ अशोकाय स्वाहा। ३३७. ॐ तारणाय स्वाहा। ३३८. ॐ ताराय स्वाहा। ३३९. ॐ शूराय स्वाहा। ३४०. ॐ शौरये स्वाहा। ३४१. ॐ जनेश्वराय स्वाहा। ३४२. ॐ अनुकूलाय स्वाहा। ३४३. ॐ शतावर्त्ताय स्वाहा। ३४४. ॐ पद्मिने स्वाहा। ३४५. ॐ पद्मनिभेक्षणाय स्वाहा। ३४६. ॐ पद्मनाभाय स्वाहा। ३४७. ॐ अरविन्दाक्षाय स्वाहा। ३४८. ॐ पद्मगर्भाय स्वाहा। ३४९. ॐ शरीरभृते स्वाहा। ३५०. ॐ महर्द्धये स्वाहा। ३५१. ॐ ऋद्धाय स्वाहा। ३५२. ॐ वृद्धात्मने स्वाहा। ३५३. ॐ महाक्षाय स्वाहा। ३५४. ॐ गरुडध्वजाय स्वाहा। ३५५. ॐ अतुलाय स्वाहा। ३५६. ॐ शरभाय स्वाहा। ३५७. ॐ भीमाय स्वाहा। ३५८. ॐ समयज्ञाय स्वाहा। ३५९. ॐ हविर्हरये स्वाहा। ३६०. ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय स्वाहा। ३६१. ॐ लक्ष्मीवते स्वाहा। ३६२. ॐ समितिञ्जयाय स्वाहा। ३६३. ॐ विक्षराय स्वाहा। ३६४. ॐ रोहिताय स्वाहा। ३६५. ॐ मार्गाय स्वाहा। ३६६. ॐ हेतवे स्वाहा। ३६७. ॐ दामोदराय स्वाहा। ३६८. ॐ सहाय स्वाहा। ३६९. ॐ महीधराय स्वाहा। ३७०. ॐ महाभागाय स्वाहा। ३७१. ॐ वेगवते स्वाहा। ३७२. ॐ अमिताशनाय स्वाहा। ३७३. ॐ उद्भवाय स्वाहा। ३७४. ॐ

क्षोभणाय स्वाहा। ३७५. ॐ देवाय स्वाहा। ३७६. ॐ श्रीगर्भाय स्वाहा। ३७७. ॐ परमेश्वराय स्वाहा। ३७८. ॐ करणाय स्वाहा। ३७९. ॐ कारणाय स्वाहा। ३८०. ॐ कर्त्रे स्वाहा। ३८१. ॐ विकर्त्रे स्वाहा। ३८२. ॐ गहनाय स्वाहा। ३८३. ॐ गुहाय स्वाहा। ३८४. ॐ व्यवसाय स्वाहा। ३८५. ॐ व्यवस्थानाय स्वाहा। ३८६. ॐ संस्थानाय स्वाहा। ३८७. ॐ स्थानदाय स्वाहा। ३८८. ॐ ध्रुवाय स्वाहा। ३८९. ॐ परर्द्धये स्वाहा। ३९०. ॐ परमस्पष्टाय स्वाहा। ३९१. ॐ तुष्टाय स्वाहा। ३९२. ॐ पुष्टाय स्वाहा। ३९३. ॐ शुभेक्षणाय स्वाहा। ३९४. ॐ रामाय स्वाहा। ३९५. ॐ विरामाय स्वाहा। ३९६. ॐ विरजसे स्वाहा। ३९७. ॐ मार्गाय स्वाहा। ३९८. ॐ नेयाय स्वाहा। ३९९. ॐ नाथाय स्वाहा। ४००. ॐ अनयाय स्वाहा। ४०१. ॐ वीराय स्वाहा। ४०२. ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय स्वाहा। ४०३. ॐ धर्माय स्वाहा। ४०४. ॐ धर्मविदुत्तमाय स्वाहा। ४०५. ॐ वैकुण्ठाय स्वाहा। ४०६. ॐ पुरुषाय स्वाहा। ४०७. ॐ प्राणाय स्वाहा। ४०८. ॐ प्राणदाय स्वाहा। ४०९. ॐ प्रणवाय स्वाहा। ४१०. ॐ पृथवे स्वाहा। ४११. ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा। ४१२. ॐ शत्रुघ्नाय स्वाहा। ४१३. ॐ व्याप्ताय स्वाहा। ४१४. ॐ वायवे स्वाहा। ४१५. ॐ अधोक्षजाय स्वाहा। ४१६. ॐ ऋतवे स्वाहा। ४१७. ॐ सुदर्शनाय स्वाहा। ४१८. ॐ कालाय स्वाहा। ४१९. ॐ परमेष्ठिने स्वाहा। ४२०. ॐ परिग्रहाय स्वाहा। ४२१. ॐ उग्राय स्वाहा। ४२२. ॐ संवत्सराय स्वाहा। ४२३. ॐ दक्षाय स्वाहा। ४२४. ॐ विश्रामाय स्वाहा। ४२५. ॐ विश्वदक्षिणाय स्वाहा। ४२६. ॐ विस्ताराय स्वाहा। ४२७. ॐ स्थावरस्थाणवे स्वाहा। ४२८. ॐ प्रमाणाय स्वाहा। ४२९. ॐ बीज-मव्ययाय स्वाहा। ४३०. ॐ अर्थाय स्वाहा। ४३१. ॐ अनर्थाय स्वाहा। ४३२. ॐ महाकोशाय स्वाहा। ४३३. ॐ महाभोगाय स्वाहा। ४३४. ॐ महाधनाय स्वाहा। ४३५. ॐ अनिर्विण्णाय स्वाहा। ४३६. ॐ स्थविष्ठाय स्वाहा। ४३७. ॐ अभुवे स्वाहा। ४३८. ॐ धर्मयूपाय स्वाहा। ४३९. ॐ महामखाय स्वाहा। ४४०. ॐ नक्षत्रनेमिने स्वाहा। ४४१. ॐ नक्षत्रिणे स्वाहा। ४४२. ॐ क्षमाय स्वाहा। ४४३. ॐ क्षामाय स्वाहा। ४४४. ॐ समीहनाय स्वाहा। ४४५. ॐ यज्ञाय स्वाहा। ४४६. ॐ ईज्याय स्वाहा। ४४७. ॐ महेज्याय स्वाहा। ४४८. ॐ क्रतवे स्वाहा। ४४९. ॐ सत्राय

स्वाहा। ४५०. ॐ सताङ्गतये स्वाहा। ४५१. ॐ सर्वदर्शिने स्वाहा ४५२. ॐ विमुक्तात्मने स्वाहा। ४५३. ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा। ४५४. ॐ ज्ञानमुत्तमाय स्वाहा। ४५५. ॐ सुव्रताय स्वाहा। ४५६. ॐ सुमुखाय स्वाहा। ४५७. ॐ सूक्ष्माय स्वाहा। ४५८. ॐ सुघोषाय स्वाहा। ४५९. ॐ सुखदाय स्वाहा। ४६०. ॐ सुहृदे स्वाहा। ४६१. ॐ मनोहराय स्वाहा। ४६२. ॐ जितक्रोधाय स्वाहा। ४६३. ॐ वारबाहवे स्वाहा। ४६४. ॐ विदारणाय स्वाहा। ४६५. ॐ स्वापनाय स्वाहा। ४६६. ॐ स्ववशाय स्वाहा। ४६७. ॐ व्यापिने स्वाहा। ४६८. ॐ नैकात्मने स्वाहा। ४६९. ॐ नैककर्मकृते स्वाहा। ४७०. ॐ वत्सराय स्वाहा। ४७१. ॐ वत्सलाय स्वाहा। ४७२. ॐ वत्सिने स्वाहा। ४७३. ॐ रत्नागर्भाय स्वाहा। ४७४. ॐ धनेश्वराय स्वाहा। ४७५. ॐ धर्मगुप्तये स्वाहा। ४७६. ॐ धर्मकृते स्वाहा। ४७७. ॐ धर्मिणे स्वाहा। ४७८. ॐ सते स्वाहा। ४७९. ॐ असते स्वाहा। ४८०. ॐ क्षराय स्वाहा। ४८१. ॐ अक्षराय स्वाहा। ४८२. ॐ अविज्ञात्रे स्वाहा। ४८३. ॐ सहस्त्रांशवे स्वाहा। ४८४. ॐ विधात्रे स्वाहा। ४८५. ॐ कृतलक्षणाय स्वाहा। ४८६. ॐ गभस्तिनेमये स्वाहा। ४८७. ॐ सत्त्वस्थाय स्वाहा। ४८८. ॐ सिंहाय स्वाहा। ४८९. ॐ भूतमहेश्वराय स्वाहा। ४९०. ॐ आदिदेवाय स्वाहा। ४९१. ॐ महादेवाय स्वाहा। ४९२. ॐ देवेशाय स्वाहा। ४९३. ॐ देवभृद्गुरवे स्वाहा। ४९४. ॐ उत्तराय स्वाहा। ४९५. ॐ गोपतये स्वाहा। ४९६. ॐ गोप्त्रे स्वाहा। ४९७. ॐ ज्ञानगम्याय स्वाहा। ४९८. ॐ पुरातनाय स्वाहा। ४९९. ॐ शरीरभूतभृते स्वाहा। ५००. ॐ भोक्त्रे स्वाहा। ५०१. ॐ कपीन्द्राय स्वाहा। ५०२. ॐ भूरिदक्षिणाय स्वाहा। ५०३. ॐ सोमपाय स्वाहा। ५०४. ॐ अमृतपाय स्वाहा। ५०५. ॐ सोमाय स्वाहा। ५०६. ॐ पुरुजिते स्वाहा। ५०७. ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा। ५०८. ॐ विनयाय स्वाहा। ५०९. ॐ जयाय स्वाहा। ५१०. ॐ सत्यसन्धाय स्वाहा। ५११. ॐ दाशार्हाय स्वाहा। ५१२. ॐ सात्त्वतं पतये स्वाहा। ५१३. ॐ जीवाय स्वाहा। ५१४. ॐ विनयितासाक्षिणे स्वाहा। ५१५. ॐ मुकुन्दाय स्वाहा। ५१६. ॐ अमितविक्रमाय स्वाहा। ५१७. ॐ अम्भोनिधये स्वाहा। ५१८. ॐ अनन्तात्मने स्वाहा। ५१९. ॐ महोदधिशयाय स्वाहा। ५२०. ॐ अन्तकाय स्वाहा। ५२१. ॐ अजाय स्वाहा। ५२२. ॐ महार्हाय स्वाहा। ५२३. ॐ स्वाभाव्याय स्वाहा।

५२४. ॐ जितामित्राय स्वाहा। ५२५. ॐ प्रमोदनाय स्वाहा। ५२६. ॐ आनन्दाय स्वाहा। ५२७. ॐ नन्दनाय स्वाहा। ५२८. ॐ नन्दाय स्वाहा। ५२९. ॐ सत्यधर्मिणो स्वाहा। ५३०. ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा। ५३१. ॐ महर्षिकपिलाचार्याय स्वाहा। ५३२. ॐ कृतज्ञाय स्वाहा। ५३३. ॐ मेदिनीपतये स्वाहा। ५३४. ॐ त्रिपदाय स्वाहा। ५३५. ॐ त्रिदशाध्यक्षाय स्वाहा। ५३६. ॐ महाशृङ्गाय स्वाहा। ५३७. ॐ कृतान्तकृते स्वाहा। ५३८. ॐ महावराहाय स्वाहा। ५३९. ॐ गोविन्दाय स्वाहा। ५४०. ॐ सुषेणाय स्वाहा। ५४१. ॐ कनकाङ्गदिने स्वाहा। ५४२. ॐ गुह्याय स्वाहा। ५४३. ॐ गम्भीराय स्वाहा। ५४४. ॐ गहनाय स्वाहा। ५४५. ॐ गुप्ताय स्वाहा। ५४६. ॐ चक्रगदाधराय स्वाहा। ५४७. ॐ वेधसे स्वाहा। ५४८. ॐ स्वाङ्गाय स्वाहा। ५४९. ॐ अजिताय स्वाहा। ५५०. ॐ कृष्णाय स्वाहा। ५५१. ॐ दृढाय स्वाहा। ५५२. ॐ सङ्कर्षणाय स्वाहा। ५५३. ॐ वरुणाय स्वाहा। ५५४. ॐ वारुणाय स्वाहा। ५५५. ॐ वृक्षाय स्वाहा। ५५६. ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहा। ५५७. ॐ महामनसे स्वाहा। ५५८. ॐ भगवते स्वाहा। ५५९. ॐ भगघ्ने स्वाहा। ५६०. ॐ आनन्दिने स्वाहा। ५६१. ॐ वनमालिने स्वाहा। ५६२. ॐ हलायुधाय स्वाहा। ५६३. ॐ आदित्याय स्वाहा। ५६४. ॐ ज्योतिरादित्याय स्वाहा। ५६५. ॐ सहिष्णवे स्वाहा। ५६६. ॐ गतिसत्तमाय स्वाहा। ५६७. ॐ सुधन्वने स्वाहा। ५६८. ॐ खण्डपरशवे स्वाहा। ५६९. ॐ दारुणाय स्वाहा। ५७०. ॐ द्रविणप्रदाय स्वाहा। ५७१. ॐ दिवस्पृशे स्वाहा। ५७२. ॐ सर्वदृग्व्यासाय स्वाहा। ५७३. ॐ वाचस्पतये स्वाहा। ५७४. ॐ त्रिसाम्ने स्वाहा। ५७५. ॐ सामगाय स्वाहा। ५७६. ॐ साम्ने स्वाहा। ५७७. ॐ निर्वाणाय स्वाहा। ५७८. ॐ भेषजाय स्वाहा। ५७९. ॐ भिषजे स्वाहा। ५८०. ॐ संन्यासकृते स्वाहा। ५८१. ॐ शमाय स्वाहा। ५८२. ॐ शान्ताय स्वाहा। ५८३. ॐ निष्ठायै स्वाहा। ५८४. ॐ शान्त्यै स्वाहा। ५८५. ॐ परायणाय स्वाहा। ५८६. ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा। ५८७. ॐ शान्तिदाय स्वाहा। ५८८. ॐ स्रष्ट्रे स्वाहा। ५८९. ॐ कुमुदाय स्वाहा। ५९०. ॐ कुवलेशयाय स्वाहा। ५९१. ॐ गोहिताय स्वाहा। ५९२. ॐ गोपतये स्वाहा। ५९३. ॐ गोप्त्रे स्वाहा। ५९४. ॐ वृषभाक्षाय स्वाहा। ५९५. ॐ वृषप्रियाय स्वाहा। ५९६. ॐ अनिवर्तिने स्वाहा।

५९७. ॐ निवृत्तात्मने स्वाहा। ५९८. ॐ संक्षेप्त्रे स्वाहा। ५९९. ॐ क्षेमकृते स्वाहा। ६००. ॐ शिवाय स्वाहा। ६०१. ॐ श्रीवत्सवक्षसे स्वाहा। ६०२. ॐ श्रीवासाय स्वाहा। ६०३. ॐ श्रीपतये स्वाहा। ६०४. ॐ श्रीमतां वराय स्वाहा। ६०५. ॐ श्रीदाय स्वाहा। ६०६. ॐ श्रीशाय स्वाहा। ६०७. ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा। ६०८. ॐ श्रीनिधये स्वाहा। ६०९. ॐ श्रीविभावनाय स्वाहा। ६१०. ॐ श्रीधराय स्वाहा। ६११. ॐ श्रीकराय स्वाहा। ६१२. ॐ श्रेयसे स्वाहा। ६१३. ॐ श्रीमते स्वाहा। ६१४. ॐ लोकत्रयाश्रयाय स्वाहा। ६१५. ॐ स्वाक्षाय स्वाहा। ६१६. ॐ स्वाङ्गाय स्वाहा। ६१७. ॐ शतानन्दाय स्वाहा। ६१८. ॐ नन्दिने स्वाहा। ६१९. ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय स्वाहा। ६२०. ॐ विजितात्मने स्वाहा। ६२१. ॐ विधेयात्मने स्वाहा। ६२२. ॐ सत्कीर्तये स्वाहा। ६२३. ॐ छिन्नसंशयाय स्वाहा। ६२४. ॐ उदीर्णाय स्वाहा। ६२५. ॐ सर्वतश्चक्षुषे स्वाहा। ६२६. ॐ अनीशाय स्वाहा। ६२७. ॐ शाश्वतस्थिराय स्वाहा। ६२८. ॐ भूशयाय स्वाहा। ६२९. ॐ भूषणाय स्वाहा। ६३०. ॐ भूतये स्वाहा। ६३१. ॐ विशोकाय स्वाहा। ६३२. ॐ शोकनाशनाय स्वाहा। ६३३. ॐ अर्चिष्मते स्वाहा। ६३४. ॐ अर्चिताय स्वाहा। ६३५. ॐ कुम्भाय स्वाहा। ६३६. ॐ विशुद्धात्मने स्वाहा। ६३७. ॐ विशोधनाय स्वाहा। ६३८. ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा। ६३९. ॐ अप्रतिरथाय स्वाहा। ६४०. ॐ प्रद्युम्नाय स्वाहा। ६४१. ॐ अमितविक्रमाय स्वाहा। ६४२. ॐ कालनेमिनिघ्ने स्वाहा। ६४३. ॐ वीराय स्वाहा। ६४४. ॐ शौरये स्वाहा। ६४५. ॐ शूरजनेश्वराय स्वाहा। ६४६. ॐ त्रिलोकात्मने स्वाहा। ६४७. ॐ त्रिलोकेशाय स्वाहा। ६४८. ॐ केशवाय स्वाहा। ६४९. ॐ केशिघ्ने स्वाहा। ६५०. ॐ हरये स्वाहा। ६५१. ॐ कामदेवाय स्वाहा। ६५२. ॐ कामपालाय स्वाहा। ६५३. ॐ कामिने स्वाहा। ६५४. ॐ कान्ताय स्वाहा। ६५५. ॐ कृतागमाय स्वाहा। ६५६. ॐ अनिर्देश्यवपुषे स्वाहा। ६५७. ॐ विष्णवे स्वाहा। ६५८. ॐ वीराय स्वाहा। ६५९. ॐ अनन्ताय स्वाहा। ६६०. ॐ धनञ्जयाय स्वाहा। ६६१. ॐ ब्रह्मण्याय स्वाहा। ६६२. ॐ ब्रह्मकृते स्वाहा। ६६३. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ६६४. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ६६५. ॐ ब्रह्मविवर्द्धनाय स्वाहा। ६६६. ॐ ब्रह्मविदे स्वाहा। ६६७. ॐ ब्राह्मणाय स्वाहा। ६६८. ॐ

ब्रह्मिणे स्वाहा। ६६९. ॐ ब्रह्मज्ञाय स्वाहा। ६७०. ॐ ब्राह्मणप्रियाय स्वाहा। ६७१. ॐ महाक्रमाय स्वाहा। ६७२. ॐ महाकर्मणे स्वाहा। ६७३. ॐ महातेजसे स्वाहा। ६७४. ॐ महोरगाय स्वाहा। ६७५. ॐ महाक्रतवे स्वाहा। ६७६. ॐ महायज्वने स्वाहा। ६७७. ॐ महायज्ञाय स्वाहा। ६७८. ॐ महाहविषे स्वाहा। ६७९. ॐ स्तव्याय स्वाहा। ६८०. ॐ स्तवप्रियाय स्वाहा। ६८१. ॐ स्तोत्राय स्वाहा। ६८२. ॐ स्तुतये स्वाहा। ६८३. ॐ स्तोत्रे स्वाहा। ६८४. ॐ रणप्रियाय स्वाहा। ६८५. ॐ पूर्णाय स्वाहा। ६८६. ॐ पूरयित्रे स्वाहा। ६८७. ॐ पुण्याय स्वाहा। ६८८. ॐ पुण्यकीर्तये स्वाहा। ६८९. ॐ अनामयाय स्वाहा। ६९०. ॐ मनोजवाय स्वाहा। ६९१. ॐ तीर्थकराय स्वाहा। ६९२. ॐ वसुरेतसे स्वाहा। ६९३. ॐ वसुप्रदाय स्वाहा। ६९४. ॐ वसुप्रदाय स्वाहा। ६९५. ॐ वासुदेवाय स्वाहा। ६९६. ॐ वसवे स्वाहा। ६९७. ॐ वसुमनसे स्वाहा। ६९८. ॐ हविषे स्वाहा। ६९९. ॐ सद्गतये स्वाहा। ७००. ॐ सत्कृतये स्वाहा। ७०१. ॐ सत्तायै स्वाहा। ७०२. ॐ सद्भूतये स्वाहा। ७०३. ॐ सत्परायणाय स्वाहा। ७०४. ॐ शूरसेनाय स्वाहा। ७०५. ॐ यदुश्रेष्ठाय स्वाहा। ७०६. ॐ सन्निवासाय स्वाहा। ७०७. ॐ सुयामुनाय स्वाहा। ७०८. ॐ भूतावासाय स्वाहा। ७०९. ॐ वासुदेवाय स्वाहा। ७१०. ॐ सर्वासुनिलयाय स्वाहा। ७११. ॐ अनलाय स्वाहा। ७१२. ॐ दर्पघ्ने स्वाहा। ७१३. ॐ दर्पदाय स्वाहा। ७१४. ॐ दृप्ताय स्वाहा। ७१५. ॐ दुर्धराय स्वाहा। ७१६. ॐ अपराजिताय स्वाहा। ७१७. ॐ विश्वमूर्तये स्वाहा। ७१८. ॐ महामूर्तये स्वाहा। ७१९. ॐ दीप्तमूर्तये स्वाहा। ७२०. ॐ अमूर्तिमते स्वाहा। ७२१. ॐ अनेकमूर्तये स्वाहा। ७२२. ॐ अव्यक्ताय स्वाहा। ७२३. ॐ शतमूर्तये स्वाहा। ७२४. ॐ शताननाय स्वाहा। ७२५. ॐ एकाय स्वाहा। ७२६. ॐ नैकाय स्वाहा। ७२७. ॐ सवाय स्वाहा। ७२८. ॐ काय स्वाहा। ७२९. ॐ कस्मै स्वाहा। ७३०. ॐ यस्मै स्वाहा। ७३१. ॐ तस्मै स्वाहा। ७३२. ॐ पदमनुत्तमाय स्वाहा। ७३३. ॐ लोकबन्धवे स्वाहा। ७३४. ॐ लोक-नाथाय स्वाहा। ७३५. ॐ माधवाय स्वाहा। ७३६. ॐ भक्तवत्सलाय स्वाहा। ७३७. ॐ सुवर्णवर्णाय स्वाहा। ७३८. ॐ हेमाङ्गाय स्वाहा। ७३९. ॐ वराङ्गाय स्वाहा। ७४०. ॐ चन्दनाङ्गदिने स्वाहा। ७४१. ॐ

वीरघ्ने स्वाहा। ७४२. ॐ विषमाय स्वाहा। ७४३. ॐ शून्याय स्वाहा। ७४४. ॐ घृताशिषे स्वाहा। ७४५. ॐ अचलाय स्वाहा। ७४६. ॐ चलाय स्वाहा। ७४७. ॐ अमानिने स्वाहा। ७४८. ॐ मानदाय स्वाहा। ७४९. ॐ मान्याय स्वाहा। ७५०. ॐ लोकस्वामिने स्वाहा। ७५१. ॐ त्रिलोकधृषे स्वाहा। ७५२. ॐ सुमेधसे स्वाहा। ७५३. ॐ मेधजाय स्वाहा। ७५४. ॐ धन्याय स्वाहा। ७५५. ॐ सत्यमेधसे स्वाहा। ७५६. ॐ धराधराय स्वाहा। ७५७. ॐ तेजोवृषाय स्वाहा। ७५८. ॐ द्युतिधराय स्वाहा। ७५९. ॐ सर्वशस्त्रभृतांवराय स्वाहा। ७६०. ॐ प्रग्रहाय स्वाहा। ७६१. ॐ निग्रहाय स्वाहा। ७६२. ॐ व्यग्रहाय स्वाहा। ७६३. ॐ नैकशृङ्गाय स्वाहा। ७६४. ॐ गदाग्रजाय स्वाहा। ७६५. ॐ चतुर्मूर्त्तये स्वाहा। ७६६. ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा। ७६७. ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा। ७६८. ॐ चतुर्गतये स्वाहा। ७६९. ॐ चतुरात्मने स्वाहा। ७७०. ॐ चतुर्भावाय स्वाहा। ७७१. ॐ चतुर्वेदविदे स्वाहा। ७७२. ॐ एकपदे स्वाहा। ७७३. ॐ समावर्ताय स्वाहा। ७७४. ॐ अनिवृत्तात्मने स्वाहा। ७७५. ॐ दुर्जयाय स्वाहा। ७७६. ॐ दुरतिक्रमाय स्वाहा। ७७७. ॐ दुर्लभाय स्वाहा। ७७८. ॐ दुर्गमाय स्वाहा। ७७९. ॐ दुर्गाय स्वाहा। ७८०. ॐ दुरावासाय स्वाहा। ७८१. ॐ दुरारिघ्ने स्वाहा। ७८२. ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा। ७८३. ॐ लोकसारङ्गाय स्वाहा। ७८४. ॐ सुतन्तवे स्वाहा। ७८५. ॐ तन्तुवर्धनाय स्वाहा। ७८६. ॐ इन्द्रकर्मणे स्वाहा। ७८७. ॐ महाकर्मणे स्वाहा। ७८८. ॐ कृतकर्मणे स्वाहा। ७८९. ॐ कृतागमाय स्वाहा। ७९०. ॐ उद्भवाय स्वाहा। ७९१. ॐ सुन्दराय स्वाहा। ७९२. ॐ सुन्दाय स्वाहा। ७९३. ॐ रत्ननाभाय स्वाहा। ७९४. ॐ सुलोचनाय स्वाहा। ७९५. ॐ अर्काय स्वाहा। ७९६. ॐ वाजसनाय स्वाहा। ७९७. ॐ शृङ्गिणे स्वाहा। ७९८. ॐ जयन्ताय स्वाहा। ७९९. ॐ सर्वविज्जयिने स्वाहा। ८००. ॐ सुवर्णबिन्दवे स्वाहा। ८०१. ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा। ८०२. ॐ सर्ववागी-श्वरेश्वराय स्वाहा। ८०३. ॐ महाह्रदाय स्वाहा। ८०४. ॐ महागर्त्ताय स्वाहा। ८०५. ॐ महाभूताय स्वाहा। ८०६. ॐ महानिधये स्वाहा। ८०७. ॐ कुमुदाय स्वाहा। ८०८. ॐ कुन्दराय स्वाहा। ८०९. ॐ कुन्दाय स्वाहा। ८१०. ॐ पर्जन्याय स्वाहा। ८११. ॐ पावनाय स्वाहा। ८१२. ॐ अनिलाय स्वाहा। ८१३. ॐ अमृतांशाय स्वाहा। ८१४. ॐ अमृतवपुषे

स्वाहा। ८१५. ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा। ८१६. ॐ सर्वतामुखाय स्वाहा। ८१७. ॐ सुलभाय स्वाहा। ८१८. ॐ सुव्रताय स्वाहा। ८१९. ॐ सिद्धाय स्वाहा। ८२०. ॐ शत्रुजिते स्वाहा। ८२१. ॐ शत्रुतापनाय स्वाहा। ८२२. ॐ न्यग्रोधाय स्वाहा। ८२३. ॐ उदुम्बराय स्वाहा। ८२४. ॐ अश्वत्थाय स्वाहा। ८२५. ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय स्वाहा। ८२६. ॐ सहस्रार्चिषे स्वाहा। ८२७. ॐ सप्तजिह्वाय स्वाहा। ८२८. ॐ सप्तैधसे स्वाहा। ८२९. ॐ सप्तवाहनाय स्वाहा। ८३०. ॐ अमूर्तये स्वाहा। ८३१. ॐ अनघाय स्वाहा। ८३२. ॐ अचिन्त्याय स्वाहा। ८३३. ॐ भयकृते स्वाहा। ८३४. ॐ भयनाशनाय स्वाहा। ८३५. ॐ अणवे स्वाहा। ८३६. ॐ बृहते स्वाहा। ८३७. ॐ कुशाय स्वाहा। ८३८. ॐ स्थूलाय स्वाहा। ८३९. ॐ गुणभृते स्वाहा। ८४०. ॐ निर्गुणाय स्वाहा। ८४१. ॐ महते स्वाहा। ८४२. ॐ अधृताय स्वाहा। ८४३. ॐ स्वधृताय स्वाहा। ८४४. ॐ स्वास्याय स्वाहा। ८४५. ॐ प्राग्वंशाय स्वाहा। ८४६. ॐ वंशवर्द्धनाय स्वाहा। ८४७. ॐ भारभृते स्वाहा। ८४८. ॐ कथिताय स्वाहा। ८४९. ॐ योगिने स्वाहा। ८५०. ॐ योगीशाय स्वाहा। ८५१. ॐ सर्वकामदाय स्वाहा। ८५२. ॐ आश्रमाय स्वाहा। ८५३. ॐ श्रमणाय स्वाहा। ८५४. ॐ क्षामाय स्वाहा। ८५५. ॐ सुपर्णाय स्वाहा। ८५६. ॐ वायुवाहनाय स्वाहा। ८५७. ॐ धनुर्धराय स्वाहा। ८५८. ॐ धनुर्वेदाय स्वाहा। ८५९. ॐ दण्डाय स्वाहा। ८६०. ॐ दमयित्रे स्वाहा। ८६१. ॐ दमाय स्वाहा। ८६२. ॐ अपराजिताय स्वाहा। ८६३. ॐ सर्वसहाय स्वाहा। ८६४. ॐ नियन्त्रे स्वाहा। ८६५. ॐ नियमाय स्वाहा। ८६६. ॐ यमाय स्वाहा। ८६७. ॐ सत्त्ववते स्वाहा। ८६८. ॐ सात्त्विकाय स्वाहा। ८६९. ॐ सत्याय स्वाहा। ८७०. ॐ सत्यधर्मपरायणाय स्वाहा। ८७१. ॐ अभिप्रायाय स्वाहा। ८७२. ॐ प्रियार्हाय स्वाहा। ८७३. ॐ अर्हाय स्वाहा। ८७४. ॐ प्रियकृते स्वाहा। ८७५. ॐ प्रीतिवर्धनाय स्वाहा। ८७६. ॐ विहायसगतये स्वाहा। ८७७. ॐ ज्योतिषे स्वाहा। ८७८. ॐ सुरुचये स्वाहा। ८७९. ॐ हुतभुजे स्वाहा। ८८०. ॐ विभवे स्वाहा। ८८१. ॐ रवये स्वाहा। ८८२. ॐ विरोचनाय स्वाहा। ८८३. ॐ सूर्याय स्वाहा। ८८४. ॐ सवित्रे स्वाहा। ८८५. ॐ रविर्लोचनाय स्वाहा। ८८६. ॐ अनन्ताय स्वाहा। ८८७. ॐ हुतभुजे स्वाहा। ८८८. ॐ भोक्त्रे

स्वाहा। ८८९. ॐ सुखदाय स्वाहा। ८९०. ॐ नैकजाय स्वाहा। ८९१. ॐ अग्रजाय स्वाहा। ८९२. ॐ अनिर्विण्णाय स्वाहा। ८९३. ॐ सदामर्षिणे स्वाहा। ८९४. ॐ लोकाधिष्ठानाय स्वाहा। ८९५. ॐ अद्भुताय स्वाहा। ८९६. ॐ सनात्नमः स्वाहा। ८९७. ॐ सनातनतमाय स्वाहा। ८९८. ॐ कपिलाय स्वाहा। ८९९. ॐ कपये स्वाहा। ९००. ॐ अव्ययाय स्वाहा। ९०१. ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा। ९०२. ॐ स्वस्तिकृते स्वाहा। ९०३. ॐ स्वस्तिने स्वाहा। ९०४. ॐ स्वस्तिभुजे स्वाहा। ९०५. ॐ स्वस्तिदक्षिणाय स्वाहा। ९०६. ॐ अरौद्राय स्वाहा। ९०७. ॐ कुण्डलिने स्वाहा। ९०८. ॐ चक्रिणे स्वाहा। ९०९. ॐ विक्रमिणे स्वाहा। ९१०. ॐ ऊर्जितशासनाय स्वाहा। ९११. ॐ शब्दातिगाय स्वाहा। ९१२. ॐ शब्द-सहाय स्वाहा। ९१३. ॐ शिशिराय स्वाहा। ९१४. ॐ शर्वरीकराय स्वाहा। ९१५. ॐ अक्रूराय स्वाहा। ९१६. ॐ पेशलाय स्वाहा। ९१७. ॐ दक्षाय स्वाहा। ९१८. ॐ दक्षिणाय स्वाहा। ९१९. ॐ क्षमिणांवराय स्वाहा। ९२०. ॐ विद्वत्तमाय स्वाहा। ९२१. ॐ वीतभयाय स्वाहा। ९२२. ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय स्वाहा। ९२३. ॐ उत्तारणाय स्वाहा। ९२४. ॐ दुष्कृतिघ्ने स्वाहा। ९२५. ॐ पुण्याय स्वाहा। ९२६. ॐ दुःस्वप्ननाशनाय स्वाहा। ९२७. ॐ वीरघ्ने स्वाहा। ९२८. ॐ रक्षणाय स्वाहा। ९२९. ॐ सद्भ्यः स्वाहा। ९३०. ॐ जीवनाय स्वाहा। ९३१. ॐ पर्यवस्थिताय स्वाहा। ९३२. ॐ अनन्तरूपाय स्वाहा। ९३३. ॐ अनन्तश्रिये स्वाहा। ९३४. ॐ जितमन्यवे स्वाहा। ९३५. ॐ भयापहाय स्वाहा। ९३६. ॐ चतुरस्राय स्वाहा। ९३७. ॐ गम्भीरात्मने स्वाहा। ९३८. ॐ विदिशाय स्वाहा। ९३९. ॐ व्यादिशाय स्वाहा। ९४०. ॐ दिशाय स्वाहा। ९४१. ॐ अनादये स्वाहा। ९४२. ॐ भुवे स्वाहा। ९४३. ॐ भुवोलक्ष्म्यै स्वाहा। ९४४. ॐ सुवीराय स्वाहा। ९४५. ॐ रुचिराङ्गदाय स्वाहा। ९४६. ॐ जननाय स्वाहा। ९४७. ॐ जनजन्मादये स्वाहा। ९४८. ॐ भीमाय स्वाहा। ९४९. ॐ भीमपराक्रमाय स्वाहा। ९५०. ॐ आधारनिलयाय स्वाहा। ९५१. ॐ धात्रे स्वाहा। ९५२. ॐ पुष्पहासाय स्वाहा। ९५३. ॐ प्रजागराय स्वाहा। ९५४. ॐ ऊर्ध्वगाय स्वाहा। ९५५. ॐ सत्पथाचाराय स्वाहा। ९५६. ॐ प्राणदाय स्वाहा। ९५७. ॐ प्रणवाय स्वाहा। ९५८. ॐ प्रणाय स्वाहा। ९५९. ॐ प्रमाणाय स्वाहा। ९६०. ॐ प्राणनिलयाय

स्वाहा। ९६१. ॐ प्राणभृते स्वाहा। ९६२. ॐ प्राणजीवनाय स्वाहा। ९६३. ॐ तत्त्वाय स्वाहा। ९६४. ॐ तत्त्वविदे स्वाहा। ९६५. ॐ एकात्मने स्वाहा। ९६६. ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय स्वाहा। ९६७. ॐ भूर्भुवःस्वस्तरवे स्वाहा। ९६८. ॐ ताराय स्वाहा। ९६९. ॐ सवित्रे स्वाहा। ९७०. ॐ प्रपितामहाय स्वाहा। ९७१. ॐ यज्ञाय स्वाहा। ९७२. ॐ यज्ञपतये स्वाहा। ९७३. ॐ यज्वने स्वाहा। ९७४. ॐ यज्ञाङ्गाय स्वाहा। ९७५. ॐ यज्ञवाहनाय स्वाहा। ९७६. ॐ यज्ञभृते स्वाहा। ९७७. ॐ यज्ञकृते स्वाहा। ९७८. ॐ यज्ञिने स्वाहा। ९७९. ॐ यज्ञभुजे स्वाहा। ९८०. ॐ यज्ञसाधनाय स्वाहा। ९८१. ॐ यज्ञान्तकृते स्वाहा। ९८२. ॐ यज्ञगुह्याय स्वाहा। ९८३. ॐ अन्नाय स्वाहा। ९८४. ॐ अन्नादाय स्वाहा। ९८५. ॐ आत्मयोनये स्वाहा। ९८६. ॐ स्वयञ्जाताय स्वाहा। ९८७. ॐ वैखानाय स्वाहा। ९८८. ॐ सामगायनाय स्वाहा। ९८९. ॐ देवकी-नन्दनाय स्वाहा। ९९०. ॐ स्रष्ट्रे स्वाहा। ९९१. ॐ क्षितीशाय स्वाहा। ९९२. ॐ पापनाशनाय स्वाहा। ९९३. ॐ शङ्खभृते स्वाहा। ९९४. ॐ नन्दकिने स्वाहा। ९९५. ॐ चक्रिणे स्वाहा। ९९६. ॐ शार्ङ्गधन्वने स्वाहा। ९९७. ॐ गदाधराय स्वाहा। ९९८. ॐ रथाङ्गपाणये स्वाहा। ९९९. ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा। १०००. ॐ सर्वप्रहरणायुधाय स्वाहा।

नवार्णमन्त्रन्यासः

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दांसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीप्रीत्यर्थे होम न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ब्रह्म-विष्णु-रुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णि-गनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे। महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः, सर्वाङ्गे।

करादिन्यासः—ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः—ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासायाम्। ॐ यै नमः, वामनासायाम्। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः, गुह्ये। एवं विन्यस्याऽष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्।

दिङ्न्यासः—ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्म, द्युतिमास्य-पाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ १॥

अक्ष-स्त्रक्-परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ २॥
घण्टा-शूल-हलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥ ३।
ततः 'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः' इति मालां सम्पूज्य, प्रार्थयेत्।

मालाप्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

उपरान्त 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा' इति नवार्णमन्त्र-मष्टोत्तरशतं होमे। ततः—

गुह्याऽतिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥
इति पठित्वा देव्या वामकरे होमो निवेदयेत्।

॥ इति नवार्णमन्त्रन्यासः॥

रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति-संहार-कारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः॥ १॥

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता॥ २॥
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि! जननी परा॥ ३॥
त्वयैतद् धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत् पाल्यते देवि! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा॥ ४॥
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृति-रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये॥ ५॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी॥ ६॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रय-विभाविनी।
कालरात्रि-र्महारात्रि-र्मोहिरात्रिश्च दारुणा॥ ७॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रींस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च॥ ८॥
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा॥ ९॥
सौम्या सौम्यतराशेष-सौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
पराऽपराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥ १०॥
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तथा॥ ११॥
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत् पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥ १२॥
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्॥ १३॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि! संस्तुता।
मोहयैतौ दुराघर्षावसुरौ मधु-कैटभौ॥ १४॥
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥ १५॥

॥ इति रात्रिसूक्तम्॥

दुर्गान्यासः

विनियोगः-प्रथम-मध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्म-विष्णु-रुद्राऋषयः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, गायत्र्युष्णगनुष्टुभश्छन्दांसि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्नि-वायु-सूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्-यजुः-सामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवता-प्रीत्यर्थे होमे विनियोगः।

करन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा॥

अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाऽम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥

तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥

मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥

अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चाऽस्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—खड्गिनी शूलिनी घोरा०-हृदयाय नमः। शूलेन पाहि नो देवि०-शिरसे स्वाहा। प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च०-शिखायै वषट्। सौम्यानि यानि रूपाणि-कवचाय हुम्। खड्ग-शूल-गदादीनि०-नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वस्वरूपेसर्वेशे०-अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र-गदा-ऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

॥ इति दुर्गान्यासः॥

दुर्गायाग में 'दुर्गासप्तशती' के द्वारा हवन होता है। पूर्णाहुति के दिन 'दुर्गा सहस्रनामावली' (देवीसहस्रनामावली) से हवन होता है। यह यज्ञ नौ दिनों में सम्पन्न होता है।

प्रधानहवनम्

न्यास के उपरान्त आचार्य **'सावर्णिः सूर्यतनयो०'** यहाँ से आरम्भ कर **'सावर्णिर्भविता मनुः'** तक प्रत्येक मन्त्रों द्वारा हवनीय द्रव्य से एक-एक आहुति कुण्ड में प्रदान करावें। इस पुस्तक में दुर्गा सप्तशती को नहीं दिया जा रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि कागज के मूल्य में जो वृद्धि हुई है।

दुर्गाहवनविषये विशेषविचारः

प्रथमोऽध्यायः—१. **तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि।** इस श्लोक से लवंग का हवन करे। २. **खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।** इन चार श्लोकों से घृत से आहुति करे। अध्यायान्त में—सुपारी में पान लपेटकर मौली से बाँधकर केशर, चावल और पुष्प—स्रुवे में घृत भर कर उसमें रख कर हवन करे—**ॐ अम्बे अम्बिके०।** इस मन्त्र को पढ़ कर ॐ अम्बायै स्वाहा। **ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।** इस प्रकार तीन आहुति दे।

द्वितीयोऽध्यायः—१. **अददज्ज्वलधिस्तस्यै**—इस श्लोक से कमल पुष्प से हवन करे। २. **ददावशून्यं सुरया**—इस श्लोक से शहद द्वारा हवन करे। ३. **अन्यैरपि सुरैर्देवी**—इस श्लोक से मोती से हवन करे। ४. **अवादयन्त पटहान्**—इस श्लोक से शंखाहुति करे। ५. **ततो देवी त्रिशूलेन**—इस श्लोक से सुवर्णादि की गदा से हवन करे। ६. **वेमुश्च केचिद्रुधिरम्**—इस श्लोक से लाल चन्दन से हवन करे। ७. **देव्या गणैश्च तैस्तत्र**—अनेक तरह के पुष्पों से हवन करे। अध्यायान्त में—नारिकेल, सहत, अनार, नारंगीफल, कूष्माण्ड, ईखदण्ड, मातुलिंग फल, बिल्वफल, पका केला, लवंग, भोजपत्र, इलायची, जावित्री, जायफल, नींबू मीठा, गुरुच, अबीर शेष पूर्ववत् करें।

तृतीयोऽध्यायः—१. **दृष्ट्वा तदापतच्छूलम्**—इस श्लोक से सुवर्णादि के त्रिशूल से होम करे। २. **सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ**—इस श्लोक से गुग्गुल से हवन करे। ३. **उदग्रश्च रणे देव्याः**—इस श्लोक से सोवापालक से होम करे। ४. **देवी क्रुद्धा गदापातैः**—इस श्लोक से अपामार्ग से हवन करे। ५. **सोऽपि कोपान्महावीर्यः**—इस श्लोक से बिना नमक के बड़े से हवन करे। ६. **ततः क्रुद्धा जगन्माता**—इस श्लोक से त्रिमधु से हवन करे। ७. **ननर्द चासुरः सोऽपि**—इस श्लोक से सहत से होम करे। ८. **सा च तान् प्रहितांस्तेन**—इस श्लोक से सहत से होम करे। ९. **गर्ज गर्ज क्षणं मूढ**—इस श्लोक से सहत से होम करे। १०. **अर्धनिष्क्रान्त एवासौ**—इस श्लोक से नारिकेल की बलि दे। अध्यायान्त में—भोजपत्र, लवंग, इलाची, बिल्वपत्र, लावा, पायस और सहत शेष प्रथम अध्यायवत् रहेगी।

चतुर्थोऽध्यायः—१. **शूलेन पाहि नो देवि**—यहाँ से चार श्लोक का पाठ मात्र कर '**ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा**' इसी मन्त्र से चार आहुति देवें। ऐसा करने से हवन में सात सौ आहुति पूरी होती है और निबन्धकारों ने भी यही क्रम लिखा है। २. **एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः**—सफेद चन्दन के चूरे से हवन करे। ३. **भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैः**—इससे कपूर और धूप से होम करे। ४. **इत्येत्कथितं भूप**—इस मन्त्र द्वारा पेड़ा से हवन करे। अध्यायान्त में—भोजपत्र, बिल्वपत्र, अमरबेल, खीर, मीठा नीबू, ईख और पका केला। शेष पूर्ववत् रहेगी।

पञ्चमोऽध्यायः—१. **पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्याम्**—इससे हलुवा से हवन करे। २. **नमो देव्यै महादेव्यै**—इस श्लोक से प्रारम्भ कर—'**या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैः**' इस श्लोक तक प्रत्येक मन्त्र से चावल और पायस से हवन करे। ३. **स तत्र गत्वा यत्रास्ते**—इस श्लोक से सरयाली से हवन करे। ४. **अवलिप्तासि मैवं त्वम्**—इस श्लोक से सरयाली से हवन करे। अध्यायान्त में—भोजपत्र, बिल्वफल, अमरबेल और छुहारा। शेष प्रथमवत् रहेगी।

षष्ठोऽध्यायः—१. **इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्ताम्**—इस श्लोक से सुरमा से हवन करे। २. **अथ क्रुद्धं महासैन्यम्**—इस श्लोक से गुलाल से हवन करे। ३. **ततो धुतसटः कोपात्**—इस श्लोक से गुग्गुल से हवन करे। अध्यायान्त में—भोजपत्र, बिल्वपत्र, कूष्माण्ड, छुहारा, अनेक प्रकार के पुष्प और पाटलपुष्प, शेष प्रथम अध्याय की तरह।

सप्तमोऽध्यायः—१. **ततः कोपं चकारोच्चैः**—इस श्लोक द्वारा काले रंग से हवन करे। २. **विचित्र खट्वाङ्गधरा**—इस श्लोक द्वारा गिरि गोलेवाली छुहारे की माला से हवन करे। अध्यायान्त में—भोजपत्र, इलायची, सफेद चन्दन और सफेद पुष्पा शेष पूर्व की तरह।

अष्टमोऽध्यायः—१. **मच्छस्त्रपातसंभूतान्**—इस श्लोक से लाल चन्दन से हवन करे। २. **मुखेनकाली जगृहे**—इस श्लोक से प्रारम्भ कर प्रत्येक श्लोक से लाल चन्दन की आहुति अध्याय की समाप्ति तक दे।

नवमोऽध्यायः—१. **ततः सिंहो महानादैः**—इस श्लोक से पके केले के फल से आहुति दे। २. **पुनश्च कृत्वा बाहूनाम्**—इस श्लोक से सरियाली से आहुति दे। अध्यायान्त में—कस्तूरी, भोजपत्र, कपूर और लवंग। शेष पूर्व की तरह करें।

दशमोऽध्यायः—१. **ततः शरशतैर्देवीम्**—इस श्लोक से सुवर्णादि निर्मित बाण और धनुष का हवन करें। अध्यायान्त में—भोजपत्र, इलायची, गुलाल, चावल, बड़ा गुग्गुल और पायस खीर। शेष पूर्ववत् करें।

एकादशोऽध्यायः—१. इस सम्पूर्ण अध्याय के प्रत्येक श्लोक से गौ का पवित्र दूध, चावल, केशर, घृत, बादाम, पिस्ता, मिश्री, सहत, किसमिस, चिरौंजी, अखरोट, आदि से बनी खीर से हवन करें। २. **सर्वस्वरूपे सर्वेशे**—हवनकर्ता इस श्लोक का पाठ कर '**ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा**' इस मन्त्र से घी की आहुति भी दे सकता है। ३. **रोगानशेषानपहंसि**—इस श्लोक से गुरुच (नीम गिलोय) से हवन करें। ४. **प्रणतानां प्रसीद त्वम्**—इस श्लोक से कपूर से हवन करें। ५. **सर्वाबाधाप्रशमनम्**—इस श्लोक से काली मिरच और कपूर से हवन करें। ६. **नन्दगोपगृहे जाता**—इस श्लोक से मक्खन और मिश्री से हवन करें। ७. **भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्**—इस श्लोक से अनार फल से हवन करें। ८. **ततः शतेन नेत्राणाम्**—इस श्लोक से गेंदे की माला और कमल की माला से हवन करें। ९. **शाकंभरीतिविख्यातम्**—इस श्लोक से हरे साग से होम करें। १०. **यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये**—इस श्लोक से कमल पुष्प से होम करें। अध्यायान्त में—लवंग, इलायची, भोजपत्र, सफेद चन्दन और अगर धूप, शेष प्रथम की तरह।

द्वादशोऽध्यायः—१. **उपसर्गानशेषांस्तु**—इस श्लोक से गुलाल, धूप और पीली सरसों से हवन करें। २. **बलिप्रदाने पूजायाम्**—इस श्लोक से ग्रेहड़े

आदि से हवन करें। ३. **सर्वाबाधा विनिर्मुक्तः**—इस श्लोक से मोती का होम करें। ४. **बालग्रहाभिभूतानाम्**—इस श्लोक से पीली सरसों से हवन करें। ५. **सर्वं ममैतन्माहात्म्यम्**—इस श्लोक से लाल पुष्प, धूप और लाल चन्दन से हवन करें तथा बारह बत्ती वाले दीपक से आरती करें। ६. **विप्राणां भोजनैः होमैः**—इस श्लोक से पूरी और मिठाई दें। ७. **तयैतन्मोह्यते विश्वम्**—इस श्लोक से अमरबेल से होम करें। अध्यायान्त में—पान, भोजपत्र, लवंग, इलायची, बेल, तिल, जातीपुष्प, शेष पूर्व की तरह।

त्रयोदशोऽध्यायः—१. **तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः**—इस श्लोक से धूप, अनेक तरह के पुष्प और लाल चन्दन से हवन करें। २. **ददतुस्तौ बलिं चैव**—इस श्लोक से उड़द, आम, पेड़ और विविध प्रकार के फलों से हवन करें। ३. प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर और 'उवाच' पर पत्र, पुष्प और फल से भी हवन कर सकते हैं। यह कतिपय तान्त्रिकों का मत मालूम होता है। अध्यायान्त में—लवंग, भोजपत्र, इलायची, श्रीफल, जायफल, बिल्वपत्र, लाल रेशमी साड़ी आदि वस्त्र, सोने की अंगूठी और नथिया। शेष पूर्व की तरह।

॥ इति दुर्गाहवनविषये विशेषविचारः॥

देवीसहस्त्रनामावल्या हवनम्

१. ॐ महाविद्यायै स्वाहा। २. ॐ जगन्मात्रे स्वाहा। ३. ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा! ४. ॐ शिवप्रियायै स्वाहा। ५. ॐ विष्णुमायायै स्वाहा। ६. ॐ शुभायै स्वाहा। ७. ॐ शान्तायै स्वाहा। ८. ॐ सिद्धायै स्वाहा। ९. ॐ सिद्धसरस्वत्यै स्वाहा। १०. ॐ क्षमायै स्वाहा। ११. ॐ कान्त्यै स्वाहा। १२ ॐ प्रभायै स्वाहा। १३. ॐ ज्योत्स्नायै स्वाहा। १४. ॐ पार्वत्यै स्वाहा। १५. ॐ सर्वमङ्गलायै स्वाहा। १६. ॐ हिङ्गुलायै स्वाहा। १७. ॐ चण्डिकायै स्वाहा। १८. ॐ दान्तायै स्वाहा। १९. ॐ पद्मायै स्वाहा। २०. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। २१. ॐ हरिप्रियायै स्वाहा। २२. ॐ त्रिपुरानन्दिन्यै स्वाहा। २३. ॐ नन्दायै स्वाहा। २४. ॐ सुनन्दायै स्वाहा। २५. ॐ सुरवन्दितायै स्वाहा। २६. ॐ यज्ञविद्यायै स्वाहा। २७. ॐ महामायायै स्वाहा। २८. ॐ वेदमात्रे स्वाहा। २९. ॐ सुधायै स्वाहा। ३०. ॐ धृत्यै स्वाहा। ३१. ॐ प्रीत्यै स्वाहा। ३२. ॐ प्रियायै स्वाहा। ३३. ॐ प्रसिद्धायै स्वाहा। ३४. ॐ मृडान्यै स्वाहा। ३५. ॐ विन्ध्यवासिन्यै स्वाहा। ३६. ॐ

सिद्धविद्यायै स्वाहा। ३७. ॐ महाशक्त्यै स्वाहा। ३८. ॐ पृथ्व्यै स्वाहा। ३९. ॐ नारदसेवितायै स्वाहा। ४०. ॐ पुरुहूतप्रियायै स्वाहा। ४१. ॐ कान्त्यै स्वाहा। ४२. ॐ कामिन्यै स्वाहा। ४३. ॐ पद्मलोचनायै स्वाहा। ४४. ॐ प्रह्लादिन्यै स्वाहा। ४५. ॐ महामात्रे स्वाहा। ४६. ॐ दुर्गायै स्वाहा। ४७. ॐ दुर्गार्तिनाशिन्यै स्वाहा। ४८. ॐ ज्वालामुख्यै स्वाहा। ४९. ॐ सुगोत्रायै स्वाहा। ५०. ॐ ज्योतिषे स्वाहा। ५१. ॐ कुमुदवासिन्यै स्वाहा। ५२. ॐ दुर्गायै स्वाहा। ५३. ॐ दुर्लभायै स्वाहा। ५४. ॐ विद्यायै स्वाहा। ५५. ॐ स्वर्गत्यै स्वाहा। ५६. ॐ पुरवासिन्यै स्वाहा। ५७. ॐ अर्पणायै स्वाहा। ५८. ॐ शाम्बर्यै स्वाहा। ५९. ॐ मायायै स्वाहा। ६०. ॐ मदिरायै स्वाहा। ६१. ॐ मृदुहासिन्यै स्वाहा। ६२. ॐ नारायण्यै स्वाहा। ६३. ॐ महानिद्रायै स्वाहा। ६४. ॐ योगनिद्रायै स्वाहा। ६५. ॐ प्रभावत्यै स्वाहा। ६६. ॐ प्रज्ञायै स्वाहा। ६७. ॐ अपरिमित्तायै स्वाहा। ६८. ॐ प्राज्ञायै स्वाहा। ६९. ॐ तारायै स्वाहा। ७०. ॐ मधुमत्यै स्वाहा। ७१. ॐ मधवे स्वाहा। ७२. ॐ क्षीरार्णवसुतायै स्वाहा। ७३. ॐ बालायै स्वाहा। ७४. ॐ बालिकायै स्वाहा। ७५. ॐ सिंहगामिन्यै स्वाहा। ७६. ॐ ओंकारायै स्वाहा। ७७. ॐ सुधाकारायै स्वाहा। ७८. ॐ चेतनायै स्वाहा। ७९. ॐ कोपनायै स्वाहा। ८०. ॐ क्षित्यै स्वाहा। ८१. ॐ अर्धबिन्दुधरायै स्वाहा। ८२. ॐ धिरायै स्वाहा। ८३. ॐ विश्वमात्रे स्वाहा। ८४. ॐ कलावत्यै स्वाहा। ८५. ॐ पद्मावत्यै स्वाहा। ८६. ॐ सुवस्त्रायै स्वाहा। ८७. ॐ प्रवृद्धायै स्वाहा। ८८. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ८९. ॐ जितमात्रे स्वाहा। ९०. ॐ जितेन्द्रायै स्वाहा। ९१. ॐ शारदायै स्वाहा। ९२. ॐ हंसवाहनायै स्वाहा। ९३. ॐ कुण्डासनायै स्वाहा। ९४. ॐ जगद्धात्र्यै स्वाहा। ९५. ॐ बुद्धमात्रे स्वाहा। ९६. ॐ जनेश्वर्यै स्वाहा। ९७. ॐ राजलक्ष्म्यै स्वाहा। ९८. ॐ वषट्कारायै स्वाहा। ९९. ॐ सुधाकारायै स्वाहा। १००. ॐ सुधात्मिकायै स्वाहा। १०१. ॐ राजनीत्यै स्वाहा। १०२. ॐ त्रयीवार्तायै स्वाहा। १०३. ॐ दण्डनीत्यै स्वाहा। १०४. ॐ क्रियावृत्यै स्वाहा। १०५. ॐ सद्भूत्यै स्वाहा। १०६. ॐ तारिण्यै स्वाहा। १०७. ॐ श्रद्धायै स्वाहा। १०८. ॐ सद्गत्यै स्वाहा। १०९. ॐ सत्य-परायणायै स्वाहा। ११०. ॐ सिन्धवे स्वाहा। १११. ॐ मन्दाकिन्यै स्वाहा। ११२. ॐ गङ्गायै स्वाहा। ११३. ॐ यमुनायै स्वाहा। ११४. ॐ सरस्वत्यै

स्वाहा। ११५. ॐ गोदावर्यै स्वाहा। ११६. ॐ विपाशायै स्वाहा। ११७. ॐ कावेर्यै स्वाहा। ११८. ॐ शतह्रदायै स्वाहा। ११९. ॐ शरय्वे स्वाहा। १२०. ॐ चन्द्रभागायै स्वाहा। १२१. ॐ कौशिक्यै स्वाहा। १२२. ॐ गण्डक्यै स्वाहा। १२३. ॐ शिवायै स्वाहा। १२४. ॐ नर्मदायै स्वाहा। १२५. ॐ कर्मनाशायै स्वाहा। १२६. ॐ चर्मण्वत्यै स्वाहा। १२७. ॐ वेदिकायै स्वाहा। १२८. ॐ वेत्रवत्यै स्वाहा। १२९. ॐ वितस्तायै स्वाहा। १३०. ॐ वरदायै स्वाहा। १३१. ॐ वरवाहनायै स्वाहा। १३२. ॐ शक्त्यै स्वाहा। १३३. ॐ पतिव्रतायै स्वाहा। १३४. ॐ साध्व्यै स्वाहा। १३५. ॐ सुचक्षुषे स्वाहा। १३६. ॐ कुण्डवासिन्यै स्वाहा। १३७. ॐ एकचक्षुपे स्वाहा। १३८. ॐ सहस्राक्ष्यै स्वाहा। १३९. ॐ सुश्रोण्यै स्वाहा। १४०. ॐ भगमालिन्यै स्वाहा। १४१. ॐ सेनाश्रेण्यै स्वाहा। १४२. ॐ पताकायै स्वाहा। १४३. ॐ सव्यूहायै स्वाहा। १४४. ॐ युद्धकांक्षिण्यै स्वाहा। १४५. ॐ पताकेन्यै स्वाहा। १४६. ॐ दयायै स्वाहा। १४७. ॐ रम्भायै स्वाहा। १४८. ॐ विपंच्यै स्वाहा। १४९. ॐ पञ्चमप्रियायै स्वाहा। १५०. ॐ परायै स्वाहा। १५१. ॐ परकलायै स्वाहा। १५२. ॐ कान्तायै स्वाहा। १५३. ॐ त्रिशक्त्यै स्वाहा। १५४. ॐ मोक्षदायिन्यै स्वाहा। १५५. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। १५६. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। १५७. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। १५८. ॐ कौमार्यै स्वाहा। १५९. ॐ कमलासनायै स्वाहा। १६०. ॐ इच्छायै स्वाहा। १६१. ॐ भगवत्यै स्वाहा। १६२. ॐ धेन्वै स्वाहा। १६३. ॐ कामधेन्वै स्वाहा। १६४. ॐ कृपावत्यै स्वाहा। १६५. ॐ वज्रायुधायै स्वाहा। १६६. ॐ वज्रहस्तायै स्वाहा। १६७. ॐ चण्ड्यै स्वाहा। १६८. ॐ चण्डपराक्रमायै स्वाहा। १६९. ॐ गौर्यै स्वाहा। १७०. ॐ सुवर्णवर्णायै स्वाहा। १७१. ॐ स्थितिसंहारकारिण्यै स्वाहा। १७२. ॐ एकायै स्वाहा। १७३. ॐ अनेकायै स्वाहा। १७४. ॐ महेज्यायै स्वाहा। १७५. ॐ शतवाहवे स्वाहा। १७६. ॐ महाभुजायै स्वाहा। १७७. ॐ भुजङ्गभूषणायै स्वाहा। १७८. ॐ भूषायै स्वाहा। १७९. ॐ षट्चक्रक्रमवासिन्यै स्वाहा। १८०. ॐ षट्चक्रभेदिन्यै स्वाहा। १८१. ॐ श्यामायै स्वाहा। १८२. ॐ कायस्थायै स्वाहा। १८३. ॐ कायवर्जितायै स्वाहा। १८४. ॐ सुस्मितायै स्वाहा। १८५. ॐ सुमुख्यै स्वाहा। १८६. ॐ क्षामायै स्वाहा। १८७. ॐ

मूलप्रकृत्यै स्वाहा। १८८. ॐ ईश्वर्यै स्वाहा। १८९. ॐ अजायै स्वाहा। १९०. ॐ बहुवर्णायै स्वाहा। १९१. ॐ पुरुषार्थप्रवर्त्तिन्यै स्वाहा। १९२. ॐ रक्तायै स्वाहा। १९३. ॐ नीलायै स्वाहा। १९४. ॐ सितायै स्वाहा। १९५. ॐ श्यामायै स्वाहा। १९६. ॐ कृष्णायै स्वाहा। १९७. ॐ पीतायै स्वाहा। १९८. ॐ कर्बुरायै स्वाहा। १९९. ॐ क्षुधायै स्वाहा। २००. ॐ तृष्णायै स्वाहा। २०१. ॐ जरायै स्वाहा। २०२. ॐ वृद्धायै स्वाहा। २०३. ॐ तरुण्यै स्वाहा। २०४. ॐ करुणालयायै स्वाहा। २०५. ॐ कलायै स्वाहा। २०६. ॐ काष्ठायै स्वाहा। २०७. ॐ मुहूर्तायै स्वाहा। २०८. ॐ निमेषायै स्वाहा। २०९. ॐ कालरूपिण्यै स्वाहा। २१०. ॐ स्वर्णायै स्वाहा। २११. ॐ रसनायै स्वाहा। २१२. ॐ नासायै स्वाहा। २१३. ॐ चक्षुषे स्वाहा। २१४. ॐ स्पर्शवत्यै स्वाहा। २१५. ॐ रसायै स्वाहा। २१६. ॐ गन्धप्रियायै स्वाहा। २१७. ॐ सुगन्धायै स्वाहा। २१८. ॐ सुस्पर्शायै स्वाहा। २१९. ॐ मनोगत्यै स्वाहा। २२०. ॐ मृगनाभ्यै स्वाहा। २२१. ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा। २२२. ॐ कर्पूरामोदधारिण्यै स्वाहा। २२३. ॐ पद्मयोन्यै स्वाहा। २२४. ॐ सुकेश्यै स्वाहा। २२५. ॐ सुलिङ्गायै स्वाहा। २२६. ॐ भगरूपिण्यै स्वाहा। २२७. ॐ योनिमुद्रायै स्वाहा। २२८. ॐ महामुद्रायै स्वाहा। २२९. ॐ खेचर्यै स्वाहा। २३०. ॐ स्वर्गगामिन्यै स्वाहा। २३१. ॐ मधुश्रियै स्वाहा। २३२. ॐ माधवीवल्ल्यै स्वाहा। २३३. ॐ मधुमत्यायै स्वाहा। २३४. ॐ मदोद्धतायै स्वाहा। २३५. ॐ मातङ्ग्यै स्वाहा। २३६. ॐ शुकहस्तायै स्वाहा। २३७. ॐ पुष्पबाणायै स्वाहा। २३८. ॐ इक्षुचापिन्यै स्वाहा। २३९. ॐ रक्ताम्बर-धराक्ष्यै स्वाहा। २४०. ॐ रक्तपुष्पावतंसिन्यै स्वाहा। २४१. ॐ शुभ्रावर-धरायै स्वाहा। २४२. ॐ अधारायै स्वाहा। २४३. ॐ महाश्वेतायै स्वाहा। २४४. ॐ वसुप्रियायै स्वाहा। २४५. ॐ सुवेण्यै स्वाहा। २४६. ॐ पद्महस्तायै स्वाहा। २४७. ॐ मुक्ताहारविभूषणायै स्वाहा। २४८. ॐ कर्पूरामोदिन्यै स्वाहा। २४९. ॐ श्वासायै स्वाहा। २५०. ॐ पद्मिन्यै स्वाहा। २५१. ॐ पद्ममञ्जरायै स्वाहा। २५२. ॐ खड्गिन्यै स्वाहा। २५३. ॐ चक्रहस्तायै स्वाहा। २५४. ॐ भुशुण्डीपरिधायुधायै स्वाहा। २५५. ॐ चापिन्यै स्वाहा। २५६. ॐ पाशहस्तायै स्वाहा। २५७. ॐ त्रिशूलवर-धारिण्यै स्वाहा। २५८. ॐ सुबाणायै स्वाहा। २५९. ॐ शक्तिहस्तायै

स्वाहा। २६०: ॐ मयूरवाहनायै स्वाहा। २६१. ॐ वरायुधधरायै स्वाहा। २६२. ॐ धीरायै स्वाहा। २६३. ॐ वीरपानमदोत्कटायै स्वाहा। २६४. ॐ वसुधायै स्वाहा। २६५. ॐ वसुधारायै स्वाहा। २६६. ॐ जयायै स्वाहा। २६७. ॐ शाकम्भर्यै स्वाहा। २६८. ॐ शिवायै स्वाहा। २६९. ॐ विजयायै स्वाहा। २७०. ॐ जयन्त्यै स्वाहा। २७१. ॐ सुस्तन्यै स्वाहा। २७२. ॐ शत्रुनाशिन्यै स्वाहा। २७३. ॐ कूर्मायै स्वाहा। २७४. ॐ सुपर्वायै स्वाहा। २७५. ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा। २७६. ॐ कामवन्दितायै स्वाहा। २७७. ॐ जालन्धरधरायै स्वाहा। २७८. ॐ अनन्तायै स्वाहा। २७९. ॐ कामरूपनिवासिन्यै स्वाहा। २८०. ॐ अन्तर्वर्त्यै स्वाहा। २८१. ॐ देवशक्त्यै स्वाहा। २८२. ॐ वरदायै स्वाहा। २८३. ॐ वरधारिण्यै स्वाहा। २८४. ॐ शीतलायै स्वाहा। २८५. ॐ सुशीलायै स्वाहा। २८६. ॐ बालग्रहविनाशिन्यै स्वाहा। २८७. ॐ कामबीजवत्यै स्वाहा। २८८. ॐ सत्यायै स्वाहा। २८९. ॐ सत्यधर्म-परायणायै स्वाहा। २९०. ॐ स्थूलमार्गस्थितायै स्वाहा। २९१. ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा। २९२. ॐ सूक्ष्मबुद्ध्यै स्वाहा। २९३. ॐ प्रबोधिन्यै स्वाहा। २९४. ॐ षट्कोणायै स्वाहा। २९५. ॐ त्रिकोणायै स्वाहा। २९६. ॐ त्र्यक्षायै स्वाहा। २९७. ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा। २९८. ॐ वृषप्रियायै स्वाहा। २९९. ॐ वृषारूढायै स्वाहा। ३००. ॐ महिषासुरघातिन्यै स्वाहा। ३०१. ॐ शम्भुदर्पहरायै स्वाहा। ३०२. ॐ दृप्तायै स्वाहा। ३०३. ॐ दीप्तपावकसान्निभायै स्वाहा। ३०४. ॐ कपालभूषणायै स्वाहा। ३०५. ॐ काल्यै स्वाहा। ३०६. ॐ कपालवरधारिण्यै स्वाहा। ३०७. ॐ कपाल-कुण्डलायै स्वाहा। ३०८. ॐ दीर्घायै स्वाहा। ३०९. ॐ शिवदूत्यै स्वाहा। ३१०. ॐ घनस्वन्यै स्वाहा। ३११. ॐ सिद्धिदायै स्वाहा। ३१२. ॐ बुद्धिदायै स्वाहा। ३१३. ॐ नित्यायै स्वाहा। ३१४. ॐ सत्यमार्गप्रबोधिन्यै स्वाहा। ३१५. ॐ मूलाधारायै स्वाहा। ३१६. ॐ निराकारायै स्वाहा। ३१७. ॐ वह्निकुण्डकृताश्रयायै स्वाहा। ३१८. ॐ वायुकुण्डासनासीनायै स्वाहा। ३१९. ॐ निराधारायै स्वाहा। ३२०. ॐ निराश्रयायै स्वाहा। ३२१. ॐ कम्बुग्रीवायै स्वाहा। ३२२. ॐ वसुमत्यै स्वाहा। ३२३. ॐ छत्रछायाकृतालयायै स्वाहा। ३२४. ॐ कुण्डालिन्यै स्वाहा। ३२५. ॐ जगद् गर्भायै स्वाहा। ३२६. ॐ भुजङ्गाकारशायिन्यै स्वाहा। ३२७. ॐ

प्रोल्लसत्सप्तपद्मायै स्वाहा। ३२८. ॐ नाभिनालमृडालिन्यै स्वाहा। ३२९. ॐ वल्लीतन्तुसमुत्थानायै स्वाहा। ३३०. ॐ षड्रसास्वादलोलुपायै स्वाहा। ३३१. ॐ श्वासोच्छ्वासगतये स्वाहा। ३३२. ॐ जिह्वाग्राहिण्यै स्वाहा। ३३३. ॐ वनसंश्रयायै स्वाहा। ३३४. ॐ तपस्विन्यै स्वाहा। ३३५. ॐ तपः सिद्धायै स्वाहा। ३३६. ॐ तापस्यै स्वाहा। ३३७. ॐ तपः प्रियायै स्वाहा। ३३८. ॐ तपोनिष्ठायै स्वाहा। ३३९. ॐ तपोयुक्तायै स्वाहा। ३४०. ॐ तपसः सिद्धिदायिन्यै स्वाहा। ३४१. ॐ सप्तधातुमयी-मूर्त्यै स्वाहा। ३४२. ॐ सप्तधात्वन्तराश्रयायै स्वाहा। ३४३. ॐ देहपुष्ट्यै स्वाहा। ३४४. ॐ मनस्तुष्ट्यै स्वाहा। ३४५. ॐ रत्नपुष्ट्यै स्वाहा। ३४६. ॐ बलोद्धतायै स्वाहा। ३४७. ॐ औषध्यै स्वाहा। ३४८. ॐ वैद्यमात्रे स्वाहा। ३४९. ॐ द्रव्यशक्त्यै स्वाहा। ३५०. ॐ प्रभाविन्यै स्वाहा। ३५१. ॐ वैद्यविद्यायै स्वाहा। ३५२. ॐ चिकित्सायै स्वाहा। ३५३. ॐ सुपथ्यायै स्वाहा। ३५४. ॐ रोगनाशिन्यै स्वाहा। ३५५. ॐ मृगयायै स्वाहा। ३५६. ॐ मृगमांसादायै स्वाहा। ३५७. ॐ मृगत्वचे स्वाहा। ३५८. ॐ मृगलोचनायै स्वाहा। ३५९. ॐ वागुरायै स्वाहा। ३६०. ॐ बन्धरूपायै स्वाहा। ३६१. ॐ वधरूपायै स्वाहा। ३६२. ॐ वधोद्यतायै स्वाहा। ३६३. ॐ बन्दिन्यै स्वाहा। ३६४. ॐ बन्दिस्तुताकारायै स्वाहा। ३६५. ॐ काराबन्धविमोचिन्यै स्वाहा। ३६६. ॐ शृङ्खलायै स्वाहा। ३६७. ॐ कलहायै स्वाहा। ३६८. ॐ विद्यायै स्वाहा। ३६९. ॐ दृढबन्धविमोक्षिण्यै स्वाहा। ३७०. ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ३७१. ॐ अम्बालिकायै स्वाहा। ३७२. ॐ अम्बायै स्वाहा। ३७३. ॐ स्वस्थायै स्वाहा। ३७४. ॐ साधुजनार्चितायै स्वाहा। ३७५. ॐ कौलिक्यै स्वाहा। ३७६. ॐ कुल-विद्यायै स्वाहा। ३७७. ॐ सुकूलायै स्वाहा। ३७८. ॐ कुलपूजितायै स्वाहा। ३७९. ॐ कालचक्रभ्रमायै स्वाहा। ३८०. ॐ भ्रान्तायै स्वाहा। ३८१. ॐ विभ्रमायै स्वाहा। ३८२. ॐ भ्रमनाशिन्यै स्वाहा। ३८३. ॐ वात्याल्यै स्वाहा। ३८४. ॐ मेघमालायै स्वाहा। ३८५. ॐ सुवृष्ट्यै स्वाहा। ३८६. ॐ सस्यवर्धिन्यै स्वाहा। ३८७. ॐ अकारायै स्वाहा। ३८८. ॐ इकारायै स्वाहा। ३८९. ॐ उकारायै स्वाहा। ३९०. ॐ ऐंकाररूपिन्यै स्वाहा। ३९१. ॐ ह्रींकारबीजरूपायै स्वाहा। ३९२. ॐ क्लींकाराम्बर-रूपिण्यै स्वाहा। ३९३. ॐ सर्वाक्षरमयीशक्त्यै स्वाहा। ३९४. ॐ

अक्षरार्णवमालिन्यै स्वाहा। ३९५. ॐ सिन्दूरायै स्वाहा। ३९६. ॐ अरुण-वर्णायै स्वाहा। ३९७. ॐ सिन्दूरतिलकप्रियायै स्वाहा। ३९८. ॐ वश्यायै स्वाहा। ३९९. ॐ वश्यबीजायै स्वाहा। ४००. ॐ लोकवश्यविभाविन्यै स्वाहा। ४०१. ॐ नृपवश्यायै स्वाहा। ४०२. ॐ नृपसेव्यायै स्वाहा। ४०३. ॐ नृपवश्यकर्यै स्वाहा। ४०४. ॐ प्रियायै स्वाहा। ४०५. ॐ महिष्यै स्वाहा। ४०६. ॐ नृपमान्यायै स्वाहा। ४०७. ॐ नृपाज्ञायै स्वाहा। ४०८. ॐ नृपनन्दिन्यै स्वाहा। ४०९. ॐ नृपधर्ममय्यै स्वाहा। ४१०. ॐ धन्यायै स्वाहा। ४११. ॐ धनधान्यविवर्धिन्यै स्वाहा। ४१२. ॐ चातुर्वर्ण-मय्यै स्वाहा। ४१३. ॐ नीत्यै स्वाहा। ४१४. ॐ चतुर्वर्णैःपूजितायै स्वाहा। ४१५. ॐ सर्वधर्ममयीशक्त्यै स्वाहा। ४१६. ॐ चतुराश्रमवासिन्यै स्वाहा। ४१७. ॐ ब्राह्मण्यै स्वाहा। ४१८. ॐ क्षत्रियायै स्वाहा। ४१९. ॐ वैश्यायै स्वाहा। ४२०. ॐ शूद्रायै स्वाहा। ४२१. ॐ आचारवरवर्णजायै स्वाहा। ४२२. ॐ वेदमार्गरतायै स्वाहा। ४२३. ॐ यज्ञायै स्वाहा। ४२४. ॐ वेदविश्वविभाविन्यै स्वाहा। ४२५. ॐ अस्त्रशस्त्रमयीविद्यायै स्वाहा। ४२६. ॐ वरशस्त्रास्त्रधारिण्यै स्वाहा। ४२७. ॐ सुमेधायै स्वाहा। ४२८. ॐ सत्यमेधायै स्वाहा। ४२९. ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा। ४३०. ॐ अपराजितायै स्वाहा। ४३१. ॐ गायत्र्यै स्वाहा। ४३२. ॐ सतकृत्यै स्वाहा। ४३३. ॐ संध्यायै स्वाहा। ४३४. ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ४३५. ॐ त्रिपदाश्रयायै स्वाहा। ४३६. ॐ त्रिसंध्यायै स्वाहा। ४३७. ॐ त्रिपदायै स्वाहा। ४३८. ॐ धात्र्यै स्वाहा। ४३९. ॐ सुस्वरायै स्वाहा। ४४०. ॐ सामगायिन्यै स्वाहा। ४४१. ॐ पांचाल्यै स्वाहा। ४४२. ॐ कालिकायै स्वाहा। ४४३. ॐ बालायै स्वाहा। ४४४. ॐ बालक्रीडायै स्वाहा। ४४५. ॐ सनातन्यै स्वाहा। ४४६. ॐ गर्भाधारायै स्वाहा। ४४७. ॐ धरायै स्वाहा। ४४८. ॐ शून्यायै स्वाहा। ४४९. ॐ गर्भाशयनिवासिन्यै स्वाहा। ४५०. ॐ सुरारिघातिन्यै स्वाहा। ४५१. ॐ कृत्यायै स्वाहा। ४५२. ॐ पूतनायै स्वाहा। ४५३. ॐ तिलोत्तमायै स्वाहा। ४५४. ॐ लज्जायै स्वाहा। ४५५. ॐ रसवत्यै स्वाहा। ४५६. ॐ नंदायै स्वाहा। ४५७. ॐ भवान्यै स्वाहा। ४५८. ॐ पापनाशिन्यै स्वाहा। ४५९. ॐ पट्टांबरधरायै स्वाहा। ४६०. ॐ गीतायै स्वाहा। ४६१. ॐ सुगीत्यै स्वाहा। ४६२. ॐ गानगोचरायै स्वाहा। ४६३. ॐ सप्तस्वरमयीतंत्र्यै स्वाहा।

४६४. ॐ षड्जमध्यमधैवतायै स्वाहा। ४६५. ॐ मूर्छनाग्रामसंस्थनायै स्वाहा। ४६६. ॐ स्वस्थानायै स्वाहा। ४६७. ॐ स्वस्थानवासिन्यै स्वाहा ४६८. ॐ शत्रुमार्गायै स्वाहा। ४६९. ॐ महादेव्यै स्वाहा। ४७०. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ४७१. ॐ कुलपुत्रिकायै स्वाहा। ४७२. ॐ अट्टाट्टहासिन्यै स्वाहा। ४७३. ॐ प्रेतायै स्वाहा। ४७४. ॐ प्रेतासननिवासिन्यै स्वाहा ४७५. ॐ गीतनृत्यप्रियायै स्वाहा। ४७६. ॐ कामायै स्वाहा। ४७७. ॐ तुष्टिदायै स्वाहा। ४७८. ॐ पुष्टिदायै स्वाहा। ४७९. ॐ क्षमायै स्वाहा ४८०. ॐ निष्ठायै स्वाहा। ४८१. ॐ सत्यप्रियायै स्वाहा। ४८२. ॐ प्रज्ञायै स्वाहा। ४८३. ॐ लोकेशायै स्वाहा। ४८४. ॐ सुरोत्तमायै स्वाहा ४८५. ॐ सविषायै स्वाहा। ४८६. ॐ ज्वालिन्यै स्वाहा। ४८७. ॐ ज्वालायै स्वाहा। ४८८. ॐ विषमोहार्तिनाशिन्यै स्वाहा। ४८९. ॐ विषायै स्वाहा। ४९०. ॐ नागदमिन्यै स्वाहा। ४९१. ॐ कुरुकल्पायै स्वाहा ४९२. ॐ अमृतोद् भवायै स्वाहा। ४९३. ॐ भूतभीतिहरायै स्वाहा ४९४. ॐ रक्षायै स्वाहा। ४९५. ॐ भूतावेषनिवासिन्यै स्वाहा। ४९६. ॐ रक्षोघ्न्यै स्वाहा। ४९७. ॐ राक्षस्यै स्वाहा। ४९८. ॐ रात्र्यै स्वाहा ४९९. ॐ दीर्घनिद्रायै स्वाहा। ५००. ॐ दिवागत्यै स्वाहा। ५०१. ॐ चन्द्रिकायै स्वाहा। ५०२. ॐ चन्द्रकान्त्यै स्वाहा। ५०३. ॐ सूर्यकान्त्यै स्वाहा। ५०४. ॐ निशाचर्यै स्वाहा। ५०५. ॐ डाकिन्यै स्वाहा। ५०६. ॐ शाकिन्यै स्वाहा। ५०७. ॐ शिक्षायै स्वाहा। ५०८. ॐ हाकिन्यै स्वाहा ५०९. ॐ चक्रवर्तिन्यै स्वाहा। ५१०. ॐ शिवायै स्वाहा। ५११. ॐ शिवप्रियायै स्वाहा। ५१२. ॐ स्वाङ्गायै स्वाहा। ५१३. ॐ सकलायै स्वाहा। ५१४. ॐ वनदेवतायै स्वाहा। ५१५. ॐ गुरुरूपधरायै स्वाहा ५१६. ॐ गुर्व्यै स्वाहा। ५१७. ॐ मृत्युमार्यै स्वाहा। ५१८. ॐ विशारदायै स्वाहा। ५१९. ॐ महामार्यै स्वाहा। ५२०. ॐ विनिद्रायै स्वाहा। ५२१. ॐ तन्द्रायै स्वाहा। ५२२. ॐ मृत्युविनाशिन्यै स्वाहा। ५२३. ॐ चन्द्रमण्डलसंकाशायै स्वाहा। ५२४. ॐ चन्द्रमण्डलवर्तिन्यै स्वाहा। ५२५. ॐ अणिमादिगुणोपेतायै स्वाहा। ५२६. ॐ सुस्पृहायै स्वाहा। ५२७. ॐ कामरूपिण्यै स्वाहा। ५२८. ॐ अष्टसिद्धिप्रदायै स्वाहा। ५२९. ॐ प्रौढायै स्वाहा। ५३०. ॐ दुष्टदानवघातिन्यै स्वाहा। ५३१. ॐ अनादिनिधनायै स्वाहा। ५३२. ॐ पुष्ट्यै स्वाहा। ५३३. ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा। ५३४. ॐ

चतुर्मुख्यै स्वाहा। ५३५. ॐ चतुःसमुद्रवसनायै स्वाहा। ५३६. ॐ चतुर्वर्ग-फलदायै स्वाहा। ५३७. ॐ काशपुष्पप्रतीकाशायै स्वाहा। ५३८. ॐ शरत् कुमुदलोचनायै स्वाहा। ५३९. ॐ भूतभव्यभविष्यायै स्वाहा। ५४०. ॐ शैलजायै स्वाहा। ५४१. ॐ शैलवासिन्यै स्वाहा। ५४२. ॐ वाममार्गरतायै स्वाहा। ५४३. ॐ वामायै स्वाहा। ५४४. ॐ शिववामाङ्गनासिन्यै स्वाहा। ५४५. ॐ वामाचारप्रियायै स्वाहा। ५४६. ॐ तुष्ट्यै स्वाहा। ५४७. ॐ लोपमुद्रायै स्वाहा। ५४८. ॐ प्रबोधिन्यै स्वाहा। ५४९. ॐ भूतात्मने स्वाहा। ५५०. ॐ परमात्मने स्वाहा। ५५१. ॐ भूतभावविभाविन्यै स्वाहा। ५५२. ॐ मङ्गलायै स्वाहा। ५५३. ॐ सुशीलायै स्वाहा। ५५४. ॐ परमार्गप्रबोधिन्यै स्वाहा। ५५५. ॐ दक्षायै स्वाहा। ५५६. ॐ दक्षिणामूर्त्यै स्वाहा। ५५७. ॐ सुदक्षायै स्वाहा। ५५८. ॐ हरिप्रियायै स्वाहा। ५५९. ॐ योगिन्यै स्वाहा। ५६०. ॐ योगनिद्रायै स्वाहा। ५६१. ॐ योगाङ्गध्यानशालिन्यै स्वाहा। ५६२. ॐ योगपत्रधरायै स्वाहा। ५६३. ॐ मुक्तायै स्वाहा। ५६४. ॐ मुक्तानां परमागतयै स्वाहा। ५६५. ॐ नारसिंह्यै स्वाहा। ५६६. ॐ सुजन्मने स्वाहा। ५६७. ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै स्वाहा। ५६८. ॐ धर्मदायै स्वाहा। ५६९. ॐ धनदायै स्वाहा। ५७०. ॐ कामदायै स्वाहा। ५७१. ॐ मोक्षदायै स्वाहा। ५७२. ॐ द्युतये स्वाहा। ५७३. ॐ साक्षिण्यै स्वाहा। ५७४. ॐ क्षणदायै स्वाहा। ५७५. ॐ आकांक्षायै स्वाहा। ५७६. ॐ दक्षजायै स्वाहा। ५७७. ॐ कोटिरूपिण्यै स्वाहा। ५७८. ॐ ऋतवे स्वाहा। ५७९. ॐ कात्यायन्यै स्वाहा। ५८०. ॐ स्वस्थायै स्वाहा। ५८१. ॐ स्वच्छन्दायै स्वाहा। ५८२. ॐ कविप्रियायै स्वाहा। ५८३. ॐ सत्यगमायै स्वाहा। ५८४. ॐ बहिःस्थायै स्वाहा। ५८५. ॐ काव्यशक्त्यै स्वाहा। ५८६. ॐ कवित्वदायै स्वाहा। ५८७. ॐ मेनापुत्र्यै स्वाहा। ५८८. ॐ सत्यै स्वाहा। ५८९. ॐ साध्व्यै स्वाहा। ५९०. ॐ मैनाकभगिन्यै स्वाहा। ५९१. ॐ तडिते स्वाहा। ५९२. ॐ सौदामन्यै स्वाहा। ५९३. ॐ सुधामायै स्वाहा। ५९४. ॐ सुधाम्न्यै स्वाहा। ५९५. ॐ धामशालिन्यै स्वाहा। ५९६. ॐ सौभाग्यदायिन्यै स्वाहा। ५९७. ॐ दिवे स्वाहा। ५९८. ॐ शुभगायै स्वाहा। ५९९. ॐ द्युतिवर्धिन्यै स्वाहा। ६००. ॐ श्रियै स्वाहा। ६०१. ॐ ह्रियै स्वाहा। ६०२. ॐ कृतिवसानायै स्वाहा। ६०३. ॐ कृतिकायै स्वाहा। ६०४. ॐ काल-

नाशिन्यै स्वाहा। ६०५. ॐ रक्तबीजवधोद्युक्तायै स्वाहा। ६०६. ॐ सुतन्तवे स्वाहा। ६०७. ॐ बीजसंतत्यै स्वाहा। ६०८. ॐ जगज्जीवायै स्वाहा। ६०९. ॐ जगद्बीजायै स्वाहा। ६१०. ॐ जगतत्रयहितैषिण्यै स्वाहा। ६११. ॐ चामीकरायै स्वाहा। ६१२. ॐ चन्द्रायै स्वाहा। ६१३. ॐ साक्षात् षोडशीकलायै स्वाहा। ६१४. ॐ यत्तत्पदानुबन्धायै स्वाहा। ६१५. ॐ यक्षिन्यै स्वाहा। ६१६. ॐ धनदार्चितायै स्वाहा। ६१७. ॐ चित्रिण्यै स्वाहा। ६१८. ॐ चित्रमायायै स्वाहा। ६१९. ॐ विचित्रायै स्वाहा। ६२०. ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा। ६२१. ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ६२२. ॐ मुण्डहस्तायै स्वाहा। ६२३. ॐ चण्डमुण्डवधोद्यतायै स्वाहा। ६२४. ॐ अष्टम्यै स्वाहा। ६२५. ॐ एकादश्यै स्वाहा। ६२६. ॐ पूर्णायै स्वाहा। ६२७. ॐ नवम्यै स्वाहा। ६२८. ॐ चतुर्दश्यै स्वाहा। ६२९. ॐ उमायै स्वाहा। ६३०. ॐ कलशहस्तायै स्वाहा। ६३१. ॐ पूर्णकुम्भधरायै स्वाहा। ६३२. ॐ धरायै स्वाहा। ६३३. ॐ अभीरवे स्वाहा। ६३४. ॐ भैरव्यै स्वाहा। ६३५. ॐ भीरवे स्वाहा। ६३६. ॐ भीमायै स्वाहा। ६३७. ॐ त्रिपुरभैरव्यै स्वाहा। ६३८. ॐ महाचण्डायै स्वाहा। ६३९. ॐ रौद्रायै स्वाहा। ६४०. ॐ महाभैरवपूजितायै स्वाहा। ६४१. ॐ निर्मुडायै स्वाहा। ६४२. ॐ हस्तिन्यै स्वाहा। ६४३. ॐ चण्डायै स्वाहा। ६४४. ॐ करालदशनाननायै स्वाहा। ६४५. ॐ करालायै स्वाहा। ६४६. ॐ विकरालायै स्वाहा। ६४७. ॐ घोरघर्घरनादिन्यै स्वाहा। ६४८. ॐ रक्तदन्तायै स्वाहा। ६४९. ॐ उर्ध्वकेश्यै स्वाहा। ६५०. ॐ बन्धूक-कुसुमारुणायै स्वाहा। ६५१. ॐ कादम्बर्यै स्वाहा। ६५२. ॐ पलाशायै स्वाहा। ६५३. ॐ काश्मीरकुङ्कुमप्रियायै स्वाहा। ६५४. ॐ क्षांत्यै स्वाहा। ६५५. ॐ बहुसुवर्णायै स्वाहा। ६५६. ॐ रत्यै स्वाहा। ६५७. ॐ बहुसुवर्णदायै स्वाहा। ६५८. ॐ मातङ्गिन्यै स्वाहा। ६५९. ॐ वरारोहायै स्वाहा। ६६०. ॐ मत्तमातङ्गगामिन्यै स्वाहा। ६६१. ॐ हंसायै स्वाहा। ६६२. ॐ हंसगत्यै स्वाहा। ६६३. ॐ हंस्यै स्वाहा। ६६४. ॐ हंसोज्ज्वलशिरोरुहायै स्वाहा। ६६५. ॐ पूर्णचन्द्रप्रतीकाशायै स्वाहा। ६६६. ॐ स्मिताशायै स्वाहा। ६६७. ॐ सुकुण्डलायै स्वाहा। ६६८. ॐ मष्यै स्वाहा। ६६९. ॐ लेखन्यै स्वाहा। ६७०. ॐ लेखायै स्वाहा। ६७१. ॐ सुलेखायै स्वाहा। ६७२. ॐ लेखकप्रियायै स्वाहा। ६७३. ॐ

शङ्खिन्यै स्वाहा। ६७४. ॐ शङ्खहस्तायै स्वाहा। ६७५. ॐ जलस्थायै स्वाहा। ६७६. ॐ जलदेवतायै स्वाहा। ६७७. ॐ कुरुक्षेत्रायै स्वाहा। ६७८. ॐ वन्यै स्वाहा। ६७९. ॐ काश्यै स्वाहा। ६८०. ॐ मथुरायै स्वाहा। ६८१. ॐ कांच्यै स्वाहा। ६८२. ॐ अवन्तिकायै स्वाहा। ६८३. ॐ अयोध्यायै स्वाहा। ६८४. ॐ द्वारकायै स्वाहा। ६८५. ॐ मायायै स्वाहा। ६८६. ॐ तीर्थायै स्वाहा। ६८७. ॐ तीर्थकर्यै स्वाहा। ६८८. ॐ प्रियायै स्वाहा। ६८९. ॐ त्रिपुरायै स्वाहा। ६९०. ॐ अप्रेयायै स्वाहा। ६९१. ॐ कोशस्थायै स्वाहा। ६९२. ॐ कोशवासिन्यै स्वाहा। ६९३. ॐ कौशिक्यै स्वाहा। ६९४. ॐ कुशावर्तायै स्वाहा। ६९५. ॐ कौशाम्बायै स्वाहा। ६९६. ॐ कोशवर्धिन्यै स्वाहा। ६९७. ॐ कोशदायै स्वाहा। ६९८. ॐ पद्मकोशाक्ष्यै स्वाहा। ६९९. ॐ कुसुम्भप्रियायै स्वाहा। ७००. ॐ तोतुलायै स्वाहा। ७०१. ॐ वर्तुलायै स्वाहा। ७०२. ॐ कोट्यै स्वाहा। ७०३. ॐ कोटस्थायै स्वाहा। ७०४. ॐ कोटराश्रयायै स्वाहा। ७०५. ॐ स्वयम्भुवे स्वाहा। ७०६. ॐ स्वरूपायै स्वाहा। ७०७. ॐ सुरूपायै स्वाहा। ७०८. ॐ रूपवर्धिन्यै स्वाहा। ७०९. ॐ तेजस्विन्यै स्वाहा। ७१०. ॐ सुदीक्षायै स्वाहा। ७११. ॐ बलदायै स्वाहा। ७१२. ॐ बलपायिन्यै स्वाहा। ७१३. ॐ महाकोशायै स्वाहा। ७१४. ॐ महागर्तायै स्वाहा। ७१५. ॐ बुद्धये स्वाहा। ७१६. ॐ सदसदात्मिकायै स्वाहा। ७१७. ॐ महाग्रहहरायै स्वाहा। ७१८. ॐ सौम्यायै स्वाहा। ७१९. ॐ विशोकायै स्वाहा। ७२०. ॐ शोकनासिन्यै स्वाहा। ७२१. ॐ सात्त्विकायै स्वाहा। ७२२. ॐ सत्वसंस्थायै स्वाहा। ७२३. ॐ राजस्यै स्वाहा। ७२४. ॐ रजोयुतायै स्वाहा। ७२५. ॐ तामस्यै स्वाहा। ७२६. ॐ तमोयुक्तायै स्वाहा। ७२७. ॐ गुणत्रयविभाविन्यै स्वाहा। ७२८. ॐ अव्यक्तायै स्वाहा। ७२९. ॐ व्यक्तरूपायै स्वाहा। ७३०. ॐ वेदविद्यायै स्वाहा। ७३१. ॐ शाम्भव्यै स्वाहा। ७३२. ॐ कल्याण्यै स्वाहा। ७३३. ॐ शाङ्कर्यै स्वाहा। ७३४. ॐ कल्पायै स्वाहा। ७३५. ॐ मनः-संकल्पसंतत्यै स्वाहा। ७३६. ॐ सर्वलोकमर्य्यशक्त्यै स्वाहा। ७३७. ॐ सर्वश्रवणगोचरायै स्वाहा। ७३८. ॐ सर्वज्ञानवत्यै स्वाहा। ७३९. ॐ वांछायै स्वाहा। ७४०. ॐ सर्वतत्त्वप्रबोधिन्यै स्वाहा। ७४१. ॐ जागृत्यै स्वाहा। ७४२. ॐ सुषुप्त्यै स्वाहा। ७४३. ॐ स्वप्नावस्थायै स्वाहा।

७४४. ॐ तुरीयकायै स्वाहा। ७४५. ॐ त्वरायै स्वाहा। ७४६. ॐ मंदगतये स्वाहा। ७४७. ॐ मंदायै स्वाहा। ७४८. ॐ मदिरामोदमोदिन्यै स्वाहा। ७४९. ॐ पानभूम्यै स्वाहा। ७५०. ॐ पानपात्रायै स्वाहा। ७५१. ॐ पानदानकरद्यतायै स्वाहा। ७५२. ॐ आघूर्णाय स्वाहा। ७५३. ॐ अरुणनेत्रायै स्वाहा। ७५४. ॐ किंचिदव्यक्तभाषिण्यै स्वाहा। ७५५. ॐ आशापूरायै स्वाहा। ७५६. ॐ दीक्षायै स्वाहा। ७५७. ॐ दीक्षादीक्षितपूजितायै स्वाहा। ७५८. ॐ नागबल्ल्यै स्वाहा। ७५९. ॐ नागकन्यायै स्वाहा। ७६०. ॐ भोगिन्यै स्वाहा। ७६१. ॐ भोगवल्लभायै स्वाहा। ७६२. ॐ सर्वशास्त्रमय्यै स्वाहा। ७६३. ॐ सुस्मृत्यै स्वाहा। ७६४. ॐ धर्मवादिन्यै स्वाहा। ७६५. ॐ श्रुतिस्मृतिधरायै स्वाहा। ७६६. ॐ ज्येष्ठायै स्वाहा। ७६७. ॐ श्रेष्ठायै स्वाहा। ७६८. ॐ पाताल-वासिन्यै स्वाहा। ७६९. ॐ मीमांसायै स्वाहा। ७७०. ॐ तर्कविद्यायै स्वाहा। ७७१. ॐ सुभक्त्यै स्वाहा। ७७२. ॐ भक्तवत्सलायै स्वाहा। ७७३. ॐ सुनाभ्यै स्वाहा। ७७४. ॐ यातनायै स्वाहा। ७७५. ॐ यात्यै स्वाहा। ७७६. ॐ गम्भीरायै स्वाहा। ७७७. ॐ अभाववर्जितायै स्वाहा। ७७८. ॐ नागपाशधरामूर्त्यै स्वाहा। ७७९. ॐ अगाधायै स्वाहा। ७८०. ॐ नागकुण्डलायै स्वाहा। ७८१. ॐ सुचक्रायै स्वाहा। ७८२. ॐ चक्रमध्यस्थायै स्वाहा। ७८३. ॐ चक्रकोण-निवासिन्यै स्वाहा। ७८४. ॐ सर्वमन्त्रमय्यैविद्यायै स्वाहा। ७८५. ॐ सर्वमन्त्राक्षरायै स्वाहा। ७८६. ॐ मधुश्रवसे स्वाहा। ७८७. ॐ स्रवत्यै स्वाहा। ७८८. ॐ भ्रामर्यै स्वाहा। ७८९. ॐ भ्रमरालयायै स्वाहा। ७९०. ॐ मातृमण्डलमध्यस्थायै स्वाहा। ७९१. ॐ मातृमण्डवासिन्यै स्वाहा। ७९२. ॐ कुमारजनन्यै स्वाहा। ७९३. ॐ क्रूरायै स्वाहा। ७९४. ॐ सुमुख्यै स्वाहा। ७९५. ॐ ज्वर-नाशिन्यै स्वाहा। ७९६. ॐ अतीतायै स्वाहा। ७९७. ॐ विद्यामानायै स्वाहा। ७९८. ॐ भाविन्यै स्वाहा। ७९९. ॐ प्रीतिमञ्जर्यै स्वाहा। ८००. ॐ सर्वसौख्यवत्यै शक्त्यै स्वाहा। ८०१. ॐ आहारपरिणामिन्यै स्वाहा। ८०२. ॐ पञ्चभूतनिदानायै स्वाहा। ८०३. ॐ भवसागरतारिण्यै स्वाहा। ८०४. ॐ अक्रूरायै स्वाहा। ८०५. ॐ ग्रहवत्यै स्वाहा। ८०६. ॐ विग्रहायै स्वाहा। ८०७. ॐ ग्रहवर्जितायै स्वाहा। ८०८. ॐ रोहिणी-भूमिगर्भायै स्वाहा। ८०९. ॐ कालभुवे स्वाहा। ८१०. ॐ कालवर्तिन्यै

स्वाहा। ८११. ॐ कलङ्करहितायै स्वाहा। ८१२. ॐ नार्यै स्वाहा। ८१३. ॐ चतुःषष्ट्यभिधायिन्यै स्वाहा। ८१४. ॐ जीर्णायै स्वाहा। ८१५. ॐ जीर्णवस्त्रायै स्वाहा। ८१६. ॐ नूतनायै स्वाहा। ८१७. ॐ नववल्लभायै स्वाहा। ८१८. ॐ अजरायै स्वाहा। ८१९. ॐ रतिप्रीत्यै स्वाहा। ८२०. ॐ अतिरागविवर्धिन्यै स्वाहा। ८२१. ॐ पञ्चवात्तगत्ति-भिन्नायै स्वाहा। ८२२. ॐ पञ्चश्लेषामाशयाधरायै स्वाहा। ८२३. ॐ पञ्चप्रीत्तवत्यैशक्त्यै स्वाहा। ८२४. ॐ पञ्चस्थानविभाविन्यै स्वाहा। ८२५. ॐ उदकायै स्वाहा। ८२६. ॐ वृषस्यंत्यै स्वाहा। ८२७. ॐ त्र्यहःप्रस्त्रविन्यै स्वाहा। ८२८. ॐ रजःशुक्रधराशक्त्यै स्वाहा। ८२९. ॐ जरायुर्गर्मधारिण्यै स्वाहा। ८३०. ॐ त्रिकालज्ञायै स्वाहा। ८३१. ॐ त्रिलिङ्गायै स्वाहा। ८३२. ॐ त्रिमूर्तिपुरवासिन्यै स्वाहा। ८३३. ॐ अगारायै स्वाहा। ८३४. ॐ शिवतत्त्वायै स्वाहा। ८३५. ॐ कामतत्त्वायै स्वाहा। ८३६. ॐ रागिन्यै स्वाहा। ८३७. ॐ प्राच्यै स्वाहा। ८३८. ॐ अवाच्यै स्वाहा। ८३९. ॐ प्रतीच्यै स्वाहा। ८४०. ॐ उदीच्यै स्वाहा। ८४१. ॐ विदिशे स्वाहा। ८४२. ॐ दिशायै स्वाहा। ८४३. ॐ अहंकृत्यै स्वाहा। ८४४. ॐ अहंकारायै स्वाहा। ८४५. ॐ बालमायायै स्वाहा। ८४६. ॐ बलिप्रियायै स्वाहा। ८४७. ॐ स्त्रुचे स्वाहा। ८४८. ॐ स्त्रुवायै स्वाहा। ८४९. ॐ सामिधेन्यै स्वाहा। ८५०. ॐ सुश्रद्धायै स्वाहा। ८५१. ॐ श्राद्धदेवतायै स्वाहा। ८५२. ॐ मात्रे स्वाहा। ८५३. ॐ मातामह्यै स्वाहा। ८५४. ॐ तृप्त्यै स्वाहा। ८५५. ॐ पितुर्मात्रे स्वाहा। ८५६. ॐ पितामह्यै स्वाहा। ८५७. ॐ स्नुपायै स्वाहा। ८५८. ॐ दोहित्रिण्यै स्वाहा। ८५९. ॐ पुत्र्यै स्वाहा। ८६०. ॐ पौत्र्यै स्वाहा। ८६१. ॐ नपुत्र्यै स्वाहा। ८६२. ॐ स्वस्त्रे स्वाहा। ८६३. ॐ प्रियायै स्वाहा। ८६४. ॐ स्तनदायै स्वाहा। ८६५. ॐ स्तनधारायै स्वाहा। ८६६. ॐ विश्वयोन्यै स्वाहा। ८६७. ॐ स्तनंधय्यै स्वाहा। ८६८. ॐ शिशूत्संगधरायै स्वाहा। ८६९. ॐ दोलायै स्वाहा। ८७०. ॐ दोलाक्रीडायै स्वाहा। ८७१. ॐ अभिनन्दिन्यै स्वाहा। ८७२. ॐ उर्वश्यै स्वाहा। ८७३. ॐ कदल्यै स्वाहा। ८७४. ॐ केकायै स्वाहा। ८७५. ॐ विशिखायै स्वाहा। ८७६. ॐ शिखिवर्त्तिन्यै स्वाहा। ८७७. ॐ खट्वाङ्गधारिण्यै स्वाहा। ८७८. ॐ खड्गबाण-पुंखानुवर्तिन्यै स्वाहा। ८७९. ॐ लक्षप्राप्तिकरायै स्वाहा। ८८०. ॐ लक्ष्यै

स्वाहा। ८८१. ॐ सुलक्षणायै स्वाहा। ८८२. ॐ शुभलक्षणायै स्वाहा। ८८३. ॐ वर्तिन्यै स्वाहा। ८८४. ॐ सुपथाचारायै स्वाहा। ८८५. ॐ परिखायै स्वाहा। ८८६. ॐ स्वनिर्वृत्यै स्वाहा। ८८७. ॐ प्राकारवलयायै स्वाहा। ८८८. ॐ वेलायै स्वाहा। ८८९. ॐ मर्यादायै स्वाहा। ८९०. ॐ महोदध्यै स्वाहा। ८९१. ॐ पोषण्यै स्वाहा। ८९२. ॐ शोषणीशक्त्यै स्वाहा। ८९३. ॐ दीर्घकेश्यै स्वाहा। ८९४. ॐ सुलोमशायै स्वाहा। ८९५. ॐ ललितायै स्वाहा। ८९६. ॐ मांसलायै स्वाहा। ८९७. ॐ तन्थ्यै स्वाहा। ८९८. ॐ वेदवेदांगधारिण्यै स्वाहा। ८९९. ॐ नरासृक्पानमत्तायै स्वाहा। ९००. ॐ नरमुंडास्थिभूषणायै स्वाहा। ९०१. ॐ अक्षक्रीडारत्यै स्वाहा। ९०२. ॐ सौर्यै स्वाहा। ९०३. ॐ सारिकाशुकभाषिण्यै स्वाहा। ९०४. ॐ शाबर्यै स्वाहा। ९०५. ॐ गारुडीविद्यायै स्वाहा। ९०६. ॐ वारुण्यै स्वाहा। ९०७. ॐ वरुणार्चितायै स्वाहा। ९०८. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ९०९. ॐ तुंडहस्तायै स्वाहा। ९१०. ॐ दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरायै स्वाहा। ९११. ॐ मीनमूर्त्यै स्वाहा। ९१२. ॐ धरामूर्त्यै स्वाहा। ९१३. ॐ वदान्यायै स्वाहा। ९१४. ॐ प्रतिमाश्रयायै स्वाहा। ९१५. ॐ अमूर्त्यै स्वाहा। ९१६. ॐ निधिरूपायै स्वाहा। ९१७. ॐ शालग्रामशिलायै स्वाहा। ९१८. ॐ शुचये स्वाहा। ९१९. ॐ स्मृतिसंस्काररूपायै स्वाहा। ९२०. ॐ सुसंस्कारायै स्वाहा। ९२१. ॐ संसृत्यै स्वाहा। ९२२. ॐ प्राकृतायै स्वाहा। ९२३. ॐ वेदभाषायै स्वाहा। ९२४. ॐ गाथायै स्वाहा। ९२५. ॐ गीत्यै स्वाहा। ९२६. ॐ प्रहेलिकायै स्वाहा। ९२७. ॐ इडायै स्वाहा। ९२८. ॐ पिंगलायै स्वाहा। ९२९. ॐ पिंगायै स्वाहा। ९३०. ॐ सुषुम्नायै स्वाहा। ९३१. ॐ सूर्यवाहिन्यै स्वाहा। ९३२. ॐ शशिश्रवायै स्वाहा। ९३३. ॐ तालुस्थायै स्वाहा। ९३४. ॐ काकिन्यै स्वाहा। ९३५. ॐ मृतजीविन्यै स्वाहा। ९३६. ॐ अणुरूपायै स्वाहा। ९३७. ॐ बृहद्रूपायै स्वाहा। ९३८. ॐ लघुरूपायै स्वाहा। ९३९. ॐ गुरुस्थिरायै स्वाहा। ९४०. ॐ स्थावर्यै स्वाहा। ९४१. ॐ जंगमायैदेव्यै स्वाहा। ९४२. ॐ कृतकर्मफलप्रदायै स्वाहा। ९४३. ॐ विषयायै स्वाहा। ९४४. ॐ क्रान्तदेहायै स्वाहा। ९४५. ॐ निर्विषायै स्वाहा। ९४६. ॐ जितेन्द्रियायै स्वाहा। ९४७. ॐ चित्स्वरूपायै स्वाहा। ९४८. ॐ चिदानन्दायै स्वाहा। ९४९. ॐ परब्रह्मावबोधिन्यै स्वाहा। ९५०. ॐ निर्विकारायै स्वाहा। ९५१. ॐ निर्वैरायै स्वाहा।

९५२. ॐ रत्यै स्वाहा। ९५३. ॐ सत्यायै स्वाहा। ९५४. ॐ अधिवर्तिन्यै स्वाहा। ९५५. ॐ पुरुषायै स्वाहा। ९५६. ॐ अज्ञानभिन्नायै स्वाहा। ९५७. ॐ क्षांत्यै स्वाहा। ९५८. ॐ कैवल्यदायिन्यै स्वाहा। ९५९. ॐ विविक्तसेविन्यै स्वाहा। ९६०. ॐ प्राज्ञायै स्वाहा। ९६१. ॐ जनितायै स्वाहा। ९६२. ॐ बहुश्रुतायै स्वाहा। ९६३. ॐ निराहारायै स्वाहा। ९६४. ॐ समस्तैकायै स्वाहा। ९६५. ॐ सर्वलोकैकसेवितायै स्वाहा। ९६६. ॐ सेव्यसेव्यायै स्वाहा। ९६७. ॐ प्रियायै स्वाहा। ९६८. ॐ सेव्यायै स्वाहा। ९६९. ॐ सेवाफलविवर्धिन्यै स्वाहा। ९७०. ॐ कलौ-कल्किप्रियायै स्वाहा। ९७१. ॐ शीलायै स्वाहा। ९७२. ॐ दुष्टम्लेच्छ-विनाशिन्यै स्वाहा। ९७३. ॐ प्रत्यंचायै स्वाहा। ९७४. ॐ धनुषे स्वाहा। ९७५. ॐ यष्ट्यै स्वाहा। ९७६. ॐ खड्गधरायै स्वाहा। ९७७. ॐ धरारथायै स्वाहा। ९७८. ॐ अश्वप्लुतायै स्वाहा। ९७९. ॐ वल्गायै स्वाहा। ९८०. ॐ सृण्यै स्वाहा। ९८१. ॐ मत्तवारुणायै स्वाहा। ९८२. ॐ वीरसुवे स्वाहा। ९८३. ॐ वेदमात्रे स्वाहा। ९८४. ॐ वीरश्रियै स्वाहा। ९८५. ॐ वीरनंदिन्यै स्वाहा। ९८६. ॐ जयश्रिये स्वाहा। ९८७. ॐ जयदीक्षायै स्वाहा। ९८८. ॐ जयदायै स्वाहा। ९८९. ॐ जयवर्धिन्यै स्वाहा। ९९०. ॐ क्षेमङ्कर्यै स्वाहा। ९९१. ॐ सिद्धिरूपायै स्वाहा। ९९२. ॐ सत्कीर्त्यै स्वाहा। ९९३. ॐ पथिदेवतायै स्वाहा। ९९४. ॐ सौभाग्यायै स्वाहा। ९९५. ॐ शुभाकारायै स्वाहा। ९९६. ॐ सर्वसौभाग्य-दायिन्यै स्वाहा। ९९७. ॐ सर्वतीर्थमय्यैमूर्त्यै स्वाहा। ९९८. ॐ सर्वदेव-मय्यैप्रभायै स्वाहा। ९९९. ॐ सर्वसिद्धिप्रदायैशक्त्यै स्वाहा। १०००. ॐ सर्वमङ्गलसंज्ञितायै स्वाहा।

सूर्ययागन्यासः

विनियोगः—विभ्राडित्यस्य विभ्राट्सौर्य ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तं प्रत्नथेत्यस्य काश्यपवत्सावृषी त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, अयं वेन इत्यस्य वेन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, चित्रमित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आन इत्यस्य अगस्त्य ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसुतकक्षावृषी गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तत्सूर्यस्येति द्वयोः कुत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, बण्महानिति द्वयोर्जमदग्निऋषिः आद्यस्य बृहतीछन्दः द्वितीयस्य सतोबृहतीछन्दः सूर्यो देवता श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेध ऋषिः बृहतीछन्दः सूर्यो देवता, अद्या देवा इत्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आ कृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरसावृषी त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, न्यासे होमे च विनियोगः।

न्यासः—१. ॐ बिभ्राड्बृहत्० वामकरे। २. ॐ उदुत्यम्० दक्षिणकरे। ३. ॐ येना पावक चक्षसा० वामपादे। ४. ॐ दैव्यावद्ध्वर्यू० दक्षिणपादे। ५. ॐ तं प्रत्नथा० वामजानौ। ६. ॐ अयं वेनः० दक्षिणजानौ। ७. ॐ चित्रं देवानाम्० वामकट्याम्। ८. ॐ आन ऽइडाभिः० दक्षिणकट्याम्। ९. ॐ यदद्य कच्च० नाभौ। १०. ॐ तरणिर्विश्व० हृदये। ११. ॐ तत्सूर्यस्य० वामबाहौ। १२. ॐ तन्मित्रस्य० दक्षिणबाहौ। १३. ॐ बण्महान्० कण्ठे। १४. ॐ बट्सूर्य श्रवसा० मुखे। १५. ॐ श्रायन्त ऽइव० अक्ष्णोः। १६. ॐ अद्या देवाः० शिरसि। १७. ॐ आ कृष्णेन० सर्वाङ्गे।

पुनः—१. ॐ तन्मित्रस्य० हृदयाय स्वाहा। २. ॐ बण्महान्० शिरसे स्वाहा। ३. ॐ बट्सूर्य श्रवसा० शिखायै वषट्। ४. ॐ श्रायन्त ऽइव कवचाय हुम्। ५. ॐ अद्यादेवा० नेत्रत्रयाय वौषट्। ६. ॐ आ कृष्णेन० अस्त्राय फट्।

षडङ्गकरन्यासः—ॐ विभ्राडिति अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ दैव्यावद्ध्वर्य्विति तर्जनीभ्यां नमः। ॐ चित्रन्देवानामिति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ तरणिर्विश्वेति अनामिकाभ्यां नमः। ॐ बट्सूर्य्येति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ आ कृष्णेनेति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

सूर्य ध्यानम्

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरणमयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥

सूर्ययागस्वाहाकारमन्त्राः

सूर्ययाग में एक करोड़ या दस हजार आहुति निम्न मन्त्रों के द्वारा होती है। पूर्णाहुति के दिन सूर्यसहस्रनामावली से हवन होता है। यह यज्ञ आठ दिनों में सम्पन्न होता है।

ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति सूर्याय स्वाहा॥ १॥ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यठं० सूर्याय स्वाहा॥ २॥ येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२ऽ अनु। त्वं वरुण पश्यसि सूर्याय स्वाहा॥ ३॥ दैव्यावध्वर्यू आ गतठं० रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञठं० समञ्जाथे। तं प्रत्नथायं वेनश्चित्र देवानाम् सूर्याय स्वाहा॥ ४॥ तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदठं० स्वर्विदम्। प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्द्धसे सूर्याय स्वाहा॥ ५॥ अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने। इममपाठं०सङ्गमे सूर्यस्य शिशुंन विप्रा मतिभी रिहन्ति सूर्याय स्वाहा॥ ६॥ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावा-पृथिवी अन्तरिक्षठं० सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च सूर्याय स्वाहा॥ ७॥ आ न इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु। अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा सूर्याय स्वाहा॥ ८॥ यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे सूर्याय स्वाहा॥ ९॥ तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमा भासि रोचनम् सूर्याय स्वाहा॥ १०॥ तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततठं० संजभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै सूर्याय स्वाहा॥ ११॥ तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः संभरन्ति सूर्याय स्वाहा॥ १२॥ बण्महाँ२॥ असि सूर्य बडादित्य महाँ२॥ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२॥ असि सूर्याय स्वाहा॥ १३॥ बट्सूर्य श्रवसा महाँ२॥ असि सत्रा देव महाँ२॥ असि। मह्ना देवानामसुर्य्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् सूर्याय स्वाहा॥ १४॥ श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम सूर्याय स्वाहा॥ १५॥ अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरठं० हसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नोमित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः सूर्याय स्वाहा॥ १६॥ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् सूर्याय स्वाहा॥ १७॥

सूर्यसहस्त्रनामावल्या हवनम्

१. ॐ विश्वजिते स्वाहा। २. ॐ विश्वजित्कर्त्रे स्वाहा। ३. ॐ विश्वात्मने स्वाहा। ४. ॐ विश्वतोमुखाय स्वाहा। ५. ॐ विश्वेश्वराय स्वाहा। ६. ॐ विश्वयोनये स्वाहा। ७. ॐ नियतात्मने स्वाहा। ८. ॐ जितेंद्रियाय स्वाहा। ९. ॐ कालाश्रयाय स्वाहा। १०. ॐ कालकर्त्रे स्वाहा। ११. ॐ कालघ्ने स्वाहा। १२. ॐ कालनाशनाय स्वाहा। १३. ॐ महायोगिने स्वाहा। १४. ॐ महाबुद्धये स्वाहा। १५. ॐ महात्मने स्वाहा। १६. ॐ सुमहा-बलाय स्वाहा। १७. ॐ प्रभवे स्वाहा। १८. ॐ विभवे स्वाहा। १९. ॐ भूतनाथाय स्वाहा। २०. ॐ भूतात्मने स्वाहा। २१. ॐ भुवनेश्वराय स्वाहा। २२. ॐ भूतभव्याय स्वाहा। २३. ॐ भावितात्मने स्वाहा। २४. ॐ भूतान्तःकरणाय स्वाहा। २५. ॐ शिवाय स्वाहा। २६. ॐ शरण्याय स्वाहा। २७. ॐ कमलानन्दाय स्वाहा। २८. ॐ नन्दनाय स्वाहा। २९. ॐ नन्दवर्धनाय स्वाहा। ३०. ॐ वरेण्याय स्वाहा। ३१. ॐ वरदाय स्वाहा। ३२. ॐ योगिने स्वाहा। ३३. ॐ सुसयुक्ताय स्वाहा। ३४. ॐ प्रकाशनाय स्वाहा। ३५. ॐ प्राक्प्राणाय स्वाहा। ३६. ॐ परप्राणाय स्वाहा। ३७. ॐ प्रीतात्मने स्वाहा। ३८. ॐ प्रीयताय स्वाहा। ३९. ॐ प्रियाय स्वाहा। ४०. ॐ नयाय स्वाहा। ४१. ॐ सहस्त्रपदे स्वाहा। ४२. ॐ साधवे स्वाहा। ४३. ॐ दिव्यकुंडलमंडिताय स्वाहा। ४४. ॐ अव्यंगधारिणे स्वाहा। ४५. ॐ धीरात्मने स्वाहा। ४६. ॐ प्रचेतसे स्वाहा। ४७. ॐ वायुवाहनाय स्वाहा। ४८. ॐ समाहितमतये स्वाहा। ४९. ॐ धात्रे स्वाहा। ५०. ॐ विधात्रे स्वाहा। ५१. ॐ कृतमंगलाय स्वाहा। ५२. ॐ कपर्दिने स्वाहा। ५३. ॐ कल्पकृते स्वाहा। ५४. ॐ रुद्राय स्वाहा। ५५. ॐ सुमनसे स्वाहा। ५६. ॐ धर्मवत्सलाय स्वाहा। ५७. ॐ समायुक्ताय स्वाहा। ५८. ॐ नियुक्तात्मने स्वाहा। ५९. ॐ शमात्मने स्वाहा। ६०. ॐ कृतिनां-वराय स्वाहा। ६१. ॐ अविचिन्त्यवपुषे स्वाहा। ६२. ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा। ६३. ॐ महायोगाय स्वाहा। ६४. ॐ महेश्वराय स्वाहा। ६५. ॐ कान्ताय स्वाहा। ६६. ॐ कामादये स्वाहा। ६७. ॐ आदित्याय स्वाहा। ६८. ॐ नियतात्मने स्वाहा। ६९. ॐ निराकुलाय स्वाहा। ७०. ॐ कामाय स्वाहा। ७१. ॐ कारुणिकाय स्वाहा। ७२. ॐ कर्त्रे स्वाहा। ७३. ॐ कमलाकराय स्वाहा। ७४. ॐ बोधकाय स्वाहा। ७५. ॐ सप्तसप्तये स्वाहा। ७६. ॐ अचिन्त्यात्मने स्वाहा। ७७. ॐ महाकारुणिकोत्तमाय स्वाहा। ७८. ॐ

संजीवनाय स्वाहा। ७९. ॐ जीवनाथाय स्वाहा। ८०. ॐ जगज्जीवनाय स्वाहा। ८१. ॐ जगत्पतये स्वाहा। ८२. ॐ अजयाय स्वाहा। ८३. ॐ विश्वनिलयाय स्वाहा। ८४. ॐ संविभागाय स्वाहा। ८५. ॐ गोवृषध्वजाय स्वाहा। ८६. ॐ वृषाकपये स्वाहा। ८७. ॐ कल्पकर्त्रे स्वाहा। ८८. ॐ कल्पान्तःकरणाय स्वाहा। ८९. ॐ रवये स्वाहा। ९०. ॐ एकचक्ररथाय स्वाहा। ९१. ॐ मौनिने स्वाहा। ९२. ॐ सुरथाय स्वाहा। ९३. ॐ रथिनांवराय स्वाहा। ९४. ॐ अक्रोधनाय स्वाहा। ९५. ॐ रश्मिमालिने स्वाहा। ९६. ॐ तेजोराशये स्वाहा। ९७. ॐ विभावसवे स्वाहा। ९८. ॐ दिव्यकृते स्वाहा। ९९. ॐ दिनकृते स्वाहा। १००. ॐ देवाय स्वाहा। १०१. ॐ देवदेवाय स्वाहा। १०२. ॐ दिवस्पतये स्वाहा। १०३. ॐ दिननाथाय स्वाहा। १०४. ॐ हविर्होत्रे स्वाहा। १०५. ॐ दिव्यवाहवे स्वाहा। १०६. ॐ दिवाकराय स्वाहा। १०७. ॐ यज्ञाय स्वाहा। १०८. ॐ यज्ञपतये स्वाहा। १०९. ॐ पूष्णे स्वाहा। ११०. ॐ स्वर्गरेतसे स्वाहा। १११. ॐ परावहाय स्वाहा। ११२. ॐ परापरज्ञाय स्वाहा। ११३. ॐ तरणये स्वाहा। ११४. ॐ अंशुमालिने स्वाहा। ११५. ॐ मनोहराय स्वाहा। ११६. ॐ प्राज्ञाय स्वाहा। ११७. ॐ प्रज्ञापतये स्वाहा। ११८. ॐ सूर्याय स्वाहा। ११९. ॐ सवित्रे स्वाहा। १२०. ॐ विष्णवे स्वाहा। १२१. ॐ अंशुमते स्वाहा। १२२. ॐ महागतये स्वाहा। १२३. ॐ गंधबाहवे स्वाहा। १२४. ॐ विहिताय स्वाहा। १२५. ॐ विधये स्वाहा। १२६. ॐ आशुगाय स्वाहा। १२७. ॐ पतंगाय स्वाहा। १२८. ॐ पतंगपतये स्वाहा। १२९. ॐ स्थाणवे स्वाहा। १३०. ॐ विहंगाय स्वाहा। १३१. ॐ वराय स्वाहा। १३२. ॐ हर्यश्वाय स्वाहा। १३३. ॐ हरिताश्वाय स्वाहा। १३४. ॐ हरिदश्वाय स्वाहा। १३५. ॐ विहगाय स्वाहा। १३६. ॐ जगत्प्रियाय स्वाहा। १३७. ॐ त्र्यंबकाय स्वाहा। १३८. ॐ सर्वदमनाय स्वाहा। १३९. ॐ भावितात्मने स्वाहा। १४०. ॐ भिषग्वराय स्वाहा। १४१. ॐ आलोककृते स्वाहा। १४२. ॐ लोकनाथाय स्वाहा। १४३. ॐ लोकालोक-नमस्कृताय स्वाहा। १४४. ॐ कालाय स्वाहा। १४५. ॐ कल्पान्तकाय स्वाहा। १४६. ॐ वह्नवेय स्वाहा। १४७. ॐ तपनाय स्वाहा। १४८. ॐ विश्वतापनाय स्वाहा। १४९. ॐ खड्गिने स्वाहा। १५०. ॐ प्रतर्दनाय स्वाहा। १५१. ॐ धन्याय स्वाहा। १५२. ॐ हयगाय स्वाहा। १५३. ॐ वाग्विशारदाय स्वाहा। १५४. ॐ श्रीमते स्वाहा। १५५. ॐ श्रीशशिरासे

स्वाहा। १५६. ॐ वाग्मिने स्वाहा। १५७. ॐ श्रीपतये स्वाहा। १५८. ॐ श्रीनिकेतनाय स्वाहा। १५९. ॐ श्रीकण्ठाय स्वाहा। १६०. ॐ श्रीधराय स्वाहा। १६१. ॐ श्रीशाय स्वाहा। १६२. ॐ निवासाय स्वाहा। १६३. ॐ वसुप्रदाय स्वाहा। १६४. ॐ कामचारिणे स्वाहा। १६५. ॐ महाकायाय स्वाहा। १६६. ॐ महेशाय स्वाहा। १६७. ॐ विदिताशयाय स्वाहा १६८. ॐ तीर्थक्रियावते स्वाहा। १६९. ॐ सुनयाय स्वाहा। १७०. ॐ विभवाय स्वाहा। १७१. ॐ भक्तवत्सलाय स्वाहा। १७२. ॐ कीर्तये स्वाहा। १७३. ॐ कीर्तिकराय स्वाहा। १७४. ॐ नित्याय स्वाहा १७५. ॐ कुण्डलिने स्वाहा। १७६. ॐ कवचिने स्वाहा। १७७. ॐ रथिने स्वाहा। १७८. ॐ हिरण्यरेतसे स्वाहा। १७९. ॐ सत्याश्वाय स्वाहा १८०. ॐ प्रयतात्मने स्वाहा। १८१. ॐ परंतपाय स्वाहा। १८२. ॐ बुद्धिमते स्वाहा। १८३. ॐ अमरश्रेष्ठाय स्वाहा। १८४. ॐ रोचिष्णवे स्वाहा। १८५. ॐ पापनाशनाय स्वाहा। १८६. ॐ समुद्राय स्वाहा १८७. ॐ धनदाय स्वाहा। १८८. ॐ धात्रे स्वाहा। १८९. ॐ मांधात्रे स्वाहा। १९०. ॐ कश्मलापहाय स्वाहा। १९१. ॐ तमोघ्ने स्वाहा १९२. ॐ ध्वांतघ्ने स्वाहा। १९३. ॐ ज्योतिषे स्वाहा। १९४. ॐ त्रात्रे स्वाहा। १९५. ॐ अंतःकरणाय स्वाहा। १९६. ॐ गुहाय स्वाहा १९७. ॐ पशुमते स्वाहा। १९८. ॐ प्रयतानन्दाय स्वाहा। १९९. ॐ भूतेशाय स्वाहा। २००. ॐ श्रीमतांवराय स्वाहा। २०१. ॐ नित्यादित्याय स्वाहा। २०२. ॐ नित्यरथाय स्वाहा। २०३. ॐ सुरेशाय स्वाहा २०४. ॐ सुरपूजिताय स्वाहा। २०५. ॐ अजिताय स्वाहा। २०६. ॐ विजयाय स्वाहा। २०७. ॐ जेत्रे स्वाहा। २०८. ॐ जंगमस्थावरात्मकाय स्वाहा। २०९. ॐ जीवानन्दाय स्वाहा। २१०. ॐ नित्यगामिने स्वाहा २११. ॐ विजेत्रे स्वाहा। २१२. ॐ विजयप्रदाय स्वाहा। २१३. ॐ पर्जन्याय स्वाहा। २१४. ॐ अग्नये स्वाहा। २१५. ॐ स्थितये स्वाहा २१६. ॐ स्थेपसे स्वाहा। २१७. ॐ स्थविराय स्वाहा। २१८. ॐ अणवे स्वाहा। २१९. ॐ निरंजनाय स्वाहा। २२०. ॐ प्रद्योतनाय स्वाहा २२१. ॐ रथारूढाय स्वाहा। २२२. ॐ सर्वलोकप्रकाशकाय स्वाहा २२३. ॐ ध्रुवाय स्वाहा। २२४. ॐ मेधिने स्वाहा। २२५. ॐ महावीर्याय स्वाहा। २२६. ॐ हंसाय स्वाहा। २२७. ॐ संसारतारकाय स्वाहा २२८. ॐ सृष्टिकर्त्रे स्वाहा। २२९. ॐ क्रियाहेतवे स्वाहा। २३०. ॐ

मार्तंडाय स्वाहा। २३१. ॐ मरुतांपयते स्वाहा। २३२. ॐ मरुत्वते स्वाहा। २३३. ॐ दहनाय स्वाहा। २३४. ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा। २३५. ॐ भगाय स्वाहा। २३६. ॐ भोगाय स्वाहा। २३७. ॐ अर्यम्णे स्वाहा। २३८. ॐ पतये स्वाहा। २३९. ॐ वरुणेशाय स्वाहा। २४०. ॐ जगत्स्वामिने स्वाहा। २४१. ॐ कृतकृत्याय स्वाहा। २४२. ॐ सुलोचनाय स्वाहा। २४३. ॐ विवस्वते स्वाहा। २४४. ॐ भानुमते स्वाहा। २४५. ॐ कार्यकारणाय स्वाहा। २४६. ॐ वर्चसांनिधये स्वाहा। २४७. ॐ असंगगामिने स्वाहा। २४८. ॐ तिग्मांशवे स्वाहा। २४९. ॐ धर्मांशवे स्वाहा। २५०. ॐ दीप्तदीधितये स्वाहा। २५१. ॐ सहस्रदीधितये स्वाहा। २५२. ॐ ब्रध्नाय स्वाहा। २५३. ॐ सहस्रांशवे स्वाहा। २५४. ॐ प्रभाकराय स्वाहा। २५५. ॐ गभस्तिमते स्वाहा। २५६. ॐ दीधितिमते स्वाहा। २५७. ॐ ऋग्विधात्रे स्वाहा। २५८. ॐ अतुलद्युतये स्वाहा। २५९. ॐ भास्कराय स्वाहा। २६०. ॐ सुरकार्यज्ञाय स्वाहा। २६१. ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा। २६२. ॐ तीक्ष्णदीधितये स्वाहा। २६३. ॐ सुरज्येष्ठाय स्वाहा। २६४. ॐ सुरपतये स्वाहा। २६५. ॐ बहुज्ञाय स्वाहा। २६६. ॐ वचसांपतये स्वाहा। २६७. ॐ तेजोनिधये स्वाहा। २६८. ॐ बृहत्तेजसे स्वाहा। २६९. ॐ बृहत्कीर्तये स्वाहा। २७०. ॐ बृहस्पतये स्वाहा। २७१. ॐ अहिमाय स्वाहा। २७२. ॐ अनूर्जिताय स्वाहा। २७३. ॐ धूमते स्वाहा। २७४. ॐ नामुक्ताय स्वाहा। २७५. ॐ कीर्तिवर्द्धनाय स्वाहा। २७६. ॐ महावैद्याय स्वाहा। २७७. ॐ गणपतये स्वाहा। २७८. ॐ गणेशाय स्वाहा। २७९. ॐ गणनायकाय स्वाहा। २८०. ॐ तीव्राय स्वाहा। २८१. ॐ प्रतापनाय स्वाहा। २८२. ॐ तापिने स्वाहा। २८३. ॐ मार्तण्डाय स्वाहा। २८४. ॐ सुतापनाय स्वाहा। २८५. ॐ कार्तसुस्वराय स्वाहा। २८६. ॐ हृषीकेशाय स्वाहा। २८७. ॐ पद्मिने स्वाहा। २८८. ॐ नन्दाय स्वाहा। २८९. ॐ अभिनंदिताय स्वाहा। २९०. ॐ पद्मनाभाय स्वाहा। २९१. ॐ अमृता-हाराय स्वाहा। २९२. ॐ स्थितिमते स्वाहा। २९३. ॐ केतुमते स्वाहा। २९४. ॐ नभसे स्वाहा। २९५. ॐ अनाद्यंताय स्वाहा। २९६. ॐ अच्युताय स्वाहा। २९७. ॐ विश्वाय स्वाहा। २९८. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। २९९. ॐ घृणिने स्वाहा। ३००. ॐ विराजे स्वाहा। ३०१. ॐ आमुक्ताय स्वाहा। ३०२. ॐ मुक्तिजनकाय स्वाहा। ३०३. ॐ कंचुकिने स्वाहा। ३०४. ॐ विश्वभावनाय स्वाहा। ३०५. ॐ अनिमित्तगतये स्वाहा।

३०६. ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा। ३०७. ॐ शरण्याय स्वाहा। ३०८. ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा। ३०९. ॐ विगाहिरेणवे स्वाहा। ३१०. ॐ असहाय स्वाहा। ३११. ॐ समायुक्ताय स्वाहा। ३१२. ॐ समाहिताय स्वाहा। ३१३. ॐ धर्मकेतवे स्वाहा। ३१४. ॐ धर्मरतये स्वाहा। ३१५. ॐ संहर्त्रे स्वाहा। ३१६. ॐ संयमाय स्वाहा। ३१७. ॐ यमाय स्वाहा। ३१८. ॐ प्रणतार्तिहराय स्वाहा। ३१९. ॐ वादिने स्वाहा। ३२०. ॐ ऋतवे स्वाहा। ३२१. ॐ कालानलद्युतये स्वाहा। ३२२. ॐ सुखसेव्याय स्वाहा। ३२३. ॐ महातेजसे स्वाहा। ३२४. ॐ जगतामादिकारणाय स्वाहा। ३२५. ॐ महेन्द्राय स्वाहा। ३२६. ॐ अभिष्टुताय स्वाहा। ३२७. ॐ स्तोत्रस्तुतिहेतवे स्वाहा। ३२८. ॐ विभाकराय स्वाहा। ३२९. ॐ सहस्त्रकराय स्वाहा। ३३०. ॐ आयुष्मते स्वाहा। ३३१. ॐ अरोषाय स्वाहा। ३३२. ॐ सुखदाय स्वाहा। ३३३. ॐ सुखिने स्वाहा। ३३४. ॐ व्याधिघ्ने स्वाहा। ३३५. ॐ दुःखघ्ने स्वाहा। ३३६. ॐ सौख्याय स्वाहा। ३३७. ॐ कल्याणाय स्वाहा। ३३८. ॐ कल्पिनांवराय स्वाहा। ३३९. ॐ अरोगकारणाय स्वाहा। ३४०. ॐ ऋद्धये स्वाहा। ३४१. ॐ सिद्धये स्वाहा। ३४२. ॐ वृद्धये स्वाहा। ३४३. ॐ अहस्पतये स्वाहा। ३४४. ॐ हिरण्यरेतसे स्वाहा। ३४५. ॐ आरोग्याय स्वाहा। ३४६. ॐ विदुषे स्वाहा। ३४७. ॐ बन्धवे स्वाहा। ३४८. ॐ बुधाय स्वाहा। ३४९. ॐ महते स्वाहा। ३५०. ॐ प्राणवते स्वाहा। ३५१. ॐ धीमते स्वाहा। ३५२. ॐ धर्माय स्वाहा। ३५३. ॐ धर्मकर्त्रे स्वाहा। ३५४. ॐ रुचिप्रदाय स्वाहा। ३५५. ॐ सर्वप्रियाय स्वाहा। ३५६. ॐ सर्वसहाय स्वाहा। ३५७. ॐ सर्वशत्रुनिवारणाय स्वाहा। ३५८. ॐ प्रांशवे स्वाहा। ३५९. ॐ विद्योदनाय स्वाहा। ३६०. ॐ द्योताय स्वाहा। ३६१. ॐ सहस्त्रकिरणाय स्वाहा। ३६२. ॐ कृतिने स्वाहा। ३६३. ॐ केयूरभूषणोद्भासिने स्वाहा। ३६४. ॐ भासिताय स्वाहा। ३६५. ॐ भासनाय स्वाहा। ३६६. ॐ अनलाय स्वाहा। ३६७. ॐ शरण्यार्तिहराय स्वाहा। ३६८. ॐ दात्रे स्वाहा। ३६९. ॐ खद्योताय स्वाहा। ३७०. ॐ खगसत्तमाय स्वाहा। ३७१. ॐ कर्मसाक्षिणे स्वाहा। ३७२. ॐ तमोरातये स्वाहा। ३७३. ॐ सर्वद्युतिहराय स्वाहा। ३७४. ॐ अमलाय स्वाहा। ३७५. ॐ कल्याणिने स्वाहा। ३७६. ॐ कल्याणकराय स्वाहा। ३७७. ॐ कल्पाय स्वाहा। ३७८. ॐ कल्पकराय स्वाहा। ३७९. ॐ कवये स्वाहा। ३८०. ॐ कल्याणसृजे स्वाहा।

३८१. ॐ कल्पवपुषे स्वाहा। ३८२. ॐ सर्वकल्याण-भाजनाय स्वाहा। ३८३. ॐ शांतिप्रियाय स्वाहा। ३८४. ॐ प्रसन्नात्मने स्वाहा। ३८५. ॐ प्रशान्ताय स्वाहा। ३८६. ॐ प्रशमप्रियाय स्वाहा। ३८७. ॐ उदारकर्मणे स्वाहा। ३८८. ॐ सुनयाय स्वाहा। ३८९. ॐ सुवर्चसे स्वाहा। ३९०. ॐ वर्चसोज्वलाय स्वाहा। ३९१. ॐ वर्चस्विने स्वाहा। ३९२. ॐ वर्चसामी-शाय स्वाहा। ३९३. ॐ त्रैलोक्येशाय स्वाहा। ३९४. ॐ वशानुगाय स्वाहा। ३९५. ॐ ओजस्विने स्वाहा। ३९६. ॐ सुएषसे स्वाहा। ३९७. ॐ वर्णिने स्वाहा। ३९८. ॐ वर्णाध्यक्षाय स्वाहा। ३९९. ॐ वलिप्रियाय स्वाहा। ४००. ॐ यशस्विने स्वाहा। ४०१. ॐ वेदनिलयाय स्वाहा। ४०२. ॐ तेजस्विने स्वाहा। ४०३. ॐ प्रकृतिस्थिताय स्वाहा। ४०४. ॐ आकाश-गाय स्वाहा। ४०५. ॐ शीघ्ररतये स्वाहा। ४०६. ॐ आशुगाय स्वाहा। ४०७. ॐ श्रुतिमते स्वाहा। ४०८. ॐ रवगाय स्वाहा। ४०९. ॐ गोपतये स्वाहा। ४१०. ॐ ग्रहदेवेशाय स्वाहा। ४११. ॐ गोमते स्वाहा। ४१२. ॐ एकाय स्वाहा। ४१३. ॐ प्रभंजनाय स्वाहा। ४१४. ॐ जनयित्रे स्वाहा। ४१५. ॐ प्रजनाय स्वाहा। ४१६. ॐ दीपाय स्वाहा। ४१७. ॐ जीवाय स्वाहा। ४१८. ॐ सर्वप्रकाशकृते स्वाहा। ४१९. ॐ कर्मसाक्षिणे स्वाहा। ४२०. ॐ योगनित्याय स्वाहा। ४२१. ॐ नभःश्रिये स्वाहा। ४२२. ॐ असुरान्तकाय स्वाहा। ४२३. ॐ रक्षोघ्नाय स्वाहा। ४२४. ॐ विघ्नशमनाय स्वाहा। ४२५. ॐ किरीटिने स्वाहा। ४२६. ॐ सुमनप्रियाय स्वाहा। ४२७. ॐ मरीचिमते स्वाहा। ४२८. ॐ अनुमते स्वाहा। ४२९. ॐ गतक्षोभाय स्वाहा। ४३०. ॐ विशेषगाय स्वाहा। ४३१. ॐ शिष्टाचाराय स्वाहा। ४३२. ॐ सदाचाराय स्वाहा। ४३३. ॐ सचाराय स्वाहा। ४३४. ॐ चारतत्पराय स्वाहा। ४३५. ॐ मन्दराय स्वाहा। ४३६. ॐ माठराय स्वाहा। ४३७. ॐ रेणवे स्वाहा। ४३८. ॐ क्षोभणाय स्वाहा। ४३९. ॐ पक्षिणांगुरवे स्वाहा। ४४०. ॐ कृतक्षोभ्याय स्वाहा। ४४१. ॐ विशिष्टात्मने स्वाहा। ४४२. ॐ विधेयाय स्वाहा। ४४३. ॐ ज्ञानशोभनाय स्वाहा। ४४४. ॐ श्वेतकान्ताय स्वाहा। ४४५. ॐ महाश्वेताय स्वाहा। ४४६. ॐ सानुगाय स्वाहा। ४४७. ॐ मोक्षदाय स्वाहा। ४४८. ॐ सर्ववेदप्रगीतात्मने स्वाहा। ४४९. ॐ सर्ववेदलयाय स्वाहा। ४५०. ॐ आलयाय स्वाहा। ४५१. ॐ वेदमूर्तये स्वाहा। ४५२. ॐ चतुर्वेदाय स्वाहा। ४५३. ॐ वेदाब्धिने स्वाहा। ४५४. ॐ वेदपारगाय स्वाहा।

४५५. ॐ क्रियावते स्वाहा। ४५६. ॐ अतिरोचिष्णवे स्वाहा। ४५७. ॐ वरीयसे स्वाहा। ४५८. ॐ वरप्रदाय स्वाहा। ४५९. ॐ व्रतधारिणे स्वाहा। ४६०. ॐ व्रतधराय स्वाहा। ४६१. ॐ लोकबन्धवे स्वाहा। ४६२. ॐ अलंकृताय स्वाहा। ४६३. ॐ अलंकाराय स्वाहा। ४६४. ॐ अक्षराय स्वाहा। ४६५. ॐ दिव्यविद्यावते स्वाहा। ४६६. ॐ विदिताशयाय स्वाहा। ४६७. ॐ प्रभापूर्णाय स्वाहा। ४६८. ॐ जितरिपवे स्वाहा। ४६९. ॐ सुजनाय स्वाहा। ४७०. ॐ अरुणसारथये स्वाहा। ४७१. ॐ कुबेराय स्वाहा। ४७२. ॐ सुरथाय स्वाहा। ४७३. ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ४७४. ॐ महिताय स्वाहा। ४७५. ॐ अभिहिताय स्वाहा। ४७६. ॐ गुरवे स्वाहा। ४७७. ॐ ग्रहराजाय स्वाहा। ४७८. ॐ ग्रहपतये स्वाहा। ४७९. ॐ ग्रहनक्षत्रमंडनाय स्वाहा। ४८०. ॐ भास्कराय स्वाहा। ४८१. ॐ सतता-नन्दाय स्वाहा। ४८२. ॐ नन्दनाय स्वाहा। ४८३. ॐ वरवाहनाय स्वाहा। ४८४. ॐ चतुर्मुखाय स्वाहा। ४८५. ॐ पद्ममालिने स्वाहा। ४८६. ॐ पूतात्मने स्वाहा। ४८७. ॐ प्रणतार्तिघ्ने स्वाहा। ४८८. ॐ अकिंचनाय स्वाहा। ४८९. ॐ सत्यसंधाय स्वाहा। ४९०. ॐ निर्गुणाय स्वाहा। ४९१. ॐ गुणवते स्वाहा। ४९२. ॐ गुणिने स्वाहा। ४९३. ॐ सम्पूर्णाय स्वाहा। ४९४. ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा। ४९५. ॐ विघेयाय स्वाहा। ४९६. ॐ योगतत्पराय स्वाहा। ४९७. ॐ सहस्रांशवे स्वाहा। ४९८. ॐ ऋतुपतये स्वाहा। ४९९. ॐ सर्वस्वाय स्वाहा। ५००. ॐ सुमतये स्वाहा। ५०१. ॐ सुवाचे स्वाहा। ५०२. ॐ सुवाहनाय स्वाहा। ५०३. ॐ माल्य-दाम्ने स्वाहा। ५०४. ॐ घृताहाराय स्वाहा। ५०५. ॐ हरिप्रियाय स्वाहा। ५०६. ॐ प्रथिताय स्वाहा। ५०७. ॐ ब्राह्मणाय स्वाहा। ५०८. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ५०९. ॐ प्रतीतात्मने स्वाहा। ५१०. ॐ सुरालयाय स्वाहा। ५११. ॐ शतबिन्दवे स्वाहा। ५१२. ॐ शतमखाय स्वाहा। ५१३. ॐ गरीयसे स्वाहा। ५१४. ॐ अनलप्रदाय स्वाहा। ५१५. ॐ धीराय स्वाहा। ५१६. ॐ महत्तराय स्वाहा। ५१७. ॐ धन्यपुरुषाय स्वाहा। ५१८. ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा। ५१९. ॐ सुसंस्थिताय स्वाहा। ५२०. ॐ दिव्यरथाय स्वाहा। ५२१. ॐ मोक्षाधारनिकेतनाय स्वाहा। ५२२. ॐ वैद्याय स्वाहा। ५२३. ॐ राजाधिराजाय स्वाहा। ५२४. ॐ विद्याराजाय स्वाहा। ५२५. ॐ विवादकृते स्वाहा। ५२६. ॐ अनिर्देश्यवपुषे स्वाहा। ५२७. ॐ श्रीदाय स्वाहा। ५२८. ॐ वीरेन्द्राय स्वाहा। ५२९. ॐ बहुमंगलाय स्वाहा।

५३०. ॐ निर्द्वंद्वाय स्वाहा। ५३१. ॐ द्वंद्वघ्ने स्वाहा। ५३२. ॐ सर्गाय स्वाहा। ५३३. ॐ सर्वगाय स्वाहा। ५३४. ॐ सर्वप्रकाशकाय स्वाहा। ५३५. ॐ चतुर्वेदधराय स्वाहा। ५३६. ॐ नित्याय स्वाहा। ५३७. ॐ विनिद्राय स्वाहा। ५३८. ॐ विविधाशनाय स्वाहा। ५३९. ॐ चक्रवर्तिने स्वाहा। ५४०. ॐ धृतिकराय स्वाहा। ५४१. ॐ महाराजाय स्वाहा। ५४२. ॐ महेश्वराय स्वाहा। ५४३. ॐ विचित्ररथाय स्वाहा। ५४४. ॐ एकाकिनेय स्वाहा। ५४५. ॐ सप्तसप्तये स्वाहा। ५४६. ॐ परात्पराय स्वाहा। ५४७. ॐ सर्वोदधिस्थितिकराय स्वाहा। ५४८. ॐ स्थितये स्वाहा। ५४९. ॐ स्थेयाय स्वाहा। ५५०. ॐ स्थितिप्रियाय स्वाहा। ५५१. ॐ निष्कलाय स्वाहा। ५५२. ॐ पुष्कलनभसे स्वाहा। ५५३. ॐ वसुदाय स्वाहा। ५५४. ॐ वासवप्रियाय स्वाहा। ५५५. ॐ वसुमते स्वाहा। ५५६. ॐ वासवस्वामिने स्वाहा। ५५७. ॐ वसुराजाय स्वाहा। ५५८. ॐ वसुप्रियाय स्वाहा। ५५९. ॐ बलवते स्वाहा। ५६०. ॐ ज्ञानवते स्वाहा। ५६१. ॐ स्वाहा। स्वधावेदादिकार स्वाहा। ५६२. ॐ संकल्पयोनये स्वाहा। ५६३. ॐ दिनकृते स्वाहा। ५६४. ॐ भगवते स्वाहा। ५६५. ॐ कारणावहाय स्वाहा। ५६६. ॐ नीलकण्ठाय स्वाहा। ५६७. ॐ धनाध्यक्षाय स्वाहा। ५६८. ॐ धनिने स्वाहा। ५६९. ॐ धर्मिणे स्वाहा। ५७०. ॐ प्रियम्वदाय स्वाहा। ५७१. ॐ वषट्काराय स्वाहा। ५७२. ॐ हुताय स्वाहा। ५७३. ॐ होत्रे स्वाहा। ५७४. ॐ स्वाहा। काराय स्वाहा। ५७५. ॐ हुताहुतये स्वाहा। ५७६. ॐ जनार्दनाय स्वाहा। ५७७. ॐ जनानंदिने स्वाहा। ५७८. ॐ नराय स्वाहा। ५७९. ॐ नारायणाय स्वाहा। ५८०. ॐ अम्बुदाय स्वाहा। ५८१. ॐ स्वर्णांगाय स्वाहा। ५८२. ॐ क्षपणाय स्वाहा। ५८३. ॐ वायवे स्वाहा। ५८४. ॐ आयवे स्वाहा। ५८५. ॐ सुरनमस्कृताय स्वाहा। ५८६. ॐ विग्रहाय स्वाहा। ५८७. ॐ विमलाय स्वाहा। ५८८. ॐ बिंदवे स्वाहा। ५८९. ॐ विशोकाय स्वाहा। ५९०. ॐ विमलद्युतये स्वाहा। ५९१. ॐ द्योतिताय स्वाहा। ५९२. ॐ द्योतनाय स्वाहा। ५९३. ॐ विदुषे स्वाहा। ५९४. ॐ विवित्वते स्वाहा। ५९५. ॐ वरदाय स्वाहा। ५९६. ॐ बलिने स्वाहा। ५९७. ॐ घर्मयोनये स्वाहा। ५९८. ॐ महामोहाय स्वाहा। ५९९. ॐ विष्णुभ्रात्रे स्वाहा। ६००. ॐ सनातनाय स्वाहा। ६०१. ॐ सावित्री-भाविताय स्वाहा। ६०२. ॐ राज्ञे स्वाहा। ६०३. ॐ विस्तृताय स्वाहा।

६०४. ॐ विघृणाय स्वाहा। ६०५. ॐ विराजे स्वाहा। ६०६. ॐ सप्तर्चिषे स्वाहा। ६०७. ॐ सत्यतुरगाय स्वाहा। ६०८. ॐ सत्यलोकनमस्कृताय स्वाहा। ६०९. ॐ सम्पन्नाय स्वाहा। ६१०. ॐ गुणसम्पन्नाय स्वाहा। ६११. ॐ सुमनसे स्वाहा। ६१२. ॐ शोभनप्रियाय स्वाहा। ६१३. ॐ सर्वात्मने स्वाहा। ६१४. ॐ सर्वकृते स्वाहा। ६१५. ॐ सृष्टये स्वाहा। ६१६. ॐ सप्तिमते स्वाहा। ६१७. ॐ सप्तमीप्रियाय स्वाहा। ६१८. ॐ सुमेधसे स्वाहा। ६१९. ॐ माधवाय स्वाहा। ६२०. ॐ मन्दाय स्वाहा। ६२१. ॐ मेधाविने स्वाहा। ६२२. ॐ मधुसूदनाय स्वाहा। ६२३. ॐ अंगिरसे स्वाहा। ६२४. ॐ गतिकालज्ञाय स्वाहा। ६२५. ॐ धूमकेतवे स्वाहा। ६२६. ॐ सुकेतनाय स्वाहा। ६२७. ॐ सुखिने स्वाहा। ६२८. ॐ सुखप्रदाय स्वाहा। ६२९. ॐ सौख्याय स्वाहा। ६३०. ॐ कामिने स्वाहा। ६३१. ॐ कांतिप्रियाय स्वाहा। ६३२. ॐ मुनये स्वाहा। ६३३. ॐ संतपनाय स्वाहा। ६३४. ॐ आतपिन स्वाहा। ६३५. ॐ तपसांपतये स्वाहा। ६३६. ॐ उग्रस्त्रवते स्वाहा। ६३७. ॐ सहस्त्रोस्त्राय स्वाहा। ६३८. ॐ प्रियकारिणे स्वाहा। ६३९. ॐ प्रियंकराय स्वाहा। ६४०. ॐ प्रीताय स्वाहा। ६४१. ॐ विमन्यवे स्वाहा। ६४२. ॐ अम्भोदाय स्वाहा। ६४३. ॐ जीवनाय स्वाहा। ६४४. ॐ जगताम्पतये स्वाहा। ६४५. ॐ जगन्मित्रे स्वाहा। ६४६. ॐ प्रीतमनसे स्वाहा। ६४७. ॐ सर्वगाय स्वाहा। ६४८. ॐ सर्वाय स्वाहा। ६४९. ॐ सर्वगुहाय स्वाहा। ६५०. ॐ बलाय स्वाहा। ६५१. ॐ जगदाय स्वाहा। ६५२. ॐ जगदानंदिने स्वाहा। ६५३. ॐ जगत्रात्रे स्वाहा। ६५४. ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा। ६५५. ॐ श्रेयसे स्वाहा। ६५६. ॐ श्रेयस्कराय स्वाहा। ६५७. ॐ ज्यायसे स्वाहा। ६५८. ॐ उत्तमोत्तमाय स्वाहा। ६५९. ॐ उत्तमाय स्वाहा। ६६०. ॐ महामरेवे स्वाहा। ६६१. ॐ महाशैलाय स्वाहा। ६६२. ॐ धरणाय स्वाहा। ६६३. ॐ धरणीघराय स्वाहा। ६६४. ॐ धराधराय स्वाहा। ६६५. ॐ धर्मराजाय स्वाहा। ६६६. ॐ धर्माधर्मप्रवर्तकाय स्वाहा। ६६७. ॐ रथाध्यक्षाय स्वाहा। ६६८. ॐ रथपतये स्वाहा। ६६९. ॐ त्वरमाणाय स्वाहा। ६७०. ॐ अमितानलाय स्वाहा। ६७१. ॐ उत्तराय स्वाहा। ६७२. ॐ पूर्वादिक्स्वामिने स्वाहा। ६७३. ॐ तारापतये स्वाहा। ६७४. ॐ अपांपतये स्वाहा। ६७५. ॐ पुण्यसंकीर्तनाय स्वाहा। ६७६. ॐ पुण्यहेतवे स्वाहा। ६७७. ॐ लोकरथाश्रयाय स्वाहा। ६७८. ॐ स्वर्मानवे

स्वाहा। ६७९. ॐ विहगारिष्टाय स्वाहा। ६८०. ॐ विशिष्टोत्कृष्टकर्मकृते स्वाहा। ६८१. ॐ व्याधिप्रणाशनाय स्वाहा। ६८२. ॐ केतवे स्वाहा। ६८३. ॐ शूराय स्वाहा। ६८४. ॐ सर्वजिताम्वराय स्वाहा। ६८५. ॐ एकनाथाय स्वाहा। ६८६. ॐ रथाधीशाय स्वाहा। ६८७. ॐ शनैश्चरपित्रे स्वाहा। ६८८. ॐ असिताय स्वाहा। ६८९. ॐ वैवस्वतगुरवे स्वाहा। ६९०. ॐ मृत्यवे स्वाहा। ६९१. ॐ नित्यधर्माय स्वाहा। ६९२. ॐ महाबलाय स्वाहा। ६९३. ॐ प्रलम्बहाराय स्वाहा। ६९४. ॐ सचारिणे स्वाहा। ६९५. ॐ प्रद्योताय स्वाहा। ६९६. ॐ प्रद्योतिताय स्वाहा। ६९७. ॐ अनलाय स्वाहा। ६९८. ॐ सन्तानकृते स्वाहा। ६९९. ॐ महामन्त्राय स्वाहा। ७००. ॐ मन्त्रमूर्तये स्वाहा। ७०१. ॐ महालयाय स्वाहा। ७०२. ॐ श्रेष्ठात्मने स्वाहा। ७०३. ॐ मरुताय स्वाहा। ७०४. ॐ सूनवे स्वाहा। ७०५. ॐ मरुतामीश्वराय स्वाहा। ७०६. ॐ शुचये स्वाहा। ७०७. ॐ संसारगतिविच्छेत्रे स्वाहा। ७०८. ॐ संसारार्णवतारकाय स्वाहा। ७०९. ॐ सत्यजिव्हाय स्वाहा। ७१०. ॐ सहस्रार्चिषे स्वाहा। ७११. ॐ रत्नगर्भाय स्वाहा। ७१२. ॐ अपराजिताय स्वाहा। ७१३. ॐ धर्मकेतवे स्वाहा। ७१४. ॐ अमोघात्मने स्वाहा। ७१५. ॐ धर्माधर्म-प्रकाशकाय स्वाहा। ७१६. ॐ लोकसाक्षिणे स्वाहा। ७१७. ॐ लोकगुरवे स्वाहा। ७१८. ॐ लोकेशाय स्वाहा। ७१९. ॐ छन्दवाहनाय स्वाहा। ७२०. ॐ धर्मयूपाय स्वाहा। ७२१. ॐ सूक्ष्मवायवे स्वाहा। ७२२. ॐ धनुःपाणये स्वाहा। ७२३. ॐ धनुर्धराय स्वाहा। ७२४. ॐ पिनाकधृषे स्वाहा। ७२५. ॐ महोत्सवाय स्वाहा। ७२६. ॐ नैकमायाय स्वाहा। ७२७. ॐ महासनाय स्वाहा। ७२८. ॐ शक्तये स्वाहा। ७२९. ॐ शक्तिमतांश्रेष्ठाय स्वाहा। ७३०. ॐ सर्वशास्त्रभृताम्वराय स्वाहा। ७३१. ॐ ज्ञानगम्याय स्वाहा। ७३२. ॐ दुराराध्याय स्वाहा। ७३३. ॐ लोहितांगाय स्वाहा। ७३४. ॐ अरिमर्दनाय स्वाहा। ७३५. ॐ अनन्ताय स्वाहा। ७३६. ॐ धर्मदाय स्वाहा। ७३७. ॐ दानिने स्वाहा। ७३८. ॐ धर्मकृते स्वाहा। ७३९. ॐ चक्रिविक्रमाय स्वाहा। ७४०. ॐ दैवताय स्वाहा। ७४१. ॐ त्र्यक्षराय स्वाहा। ७४२. ॐ भेद्याय स्वाहा। ७४३. ॐ नीलांगाय स्वाहा। ७४४. ॐ नीललोहिताय स्वाहा। ७४५. ॐ व्यासाय स्वाहा। ७४६. ॐ व्यसनघ्ने स्वाहा। ७४७. ॐ वादिने स्वाहा। ७४८. ॐ व्योम-चारिणे स्वाहा। ७४९. ॐ व्ययापहाय स्वाहा। ७५०. ॐ शार्ङ्गधन्विने

स्वाहा। ७५१. ॐ स्थिराय स्वाहा। ७५२. ॐ भामाय स्वाहा। ७५३. ॐ सर्वप्रहरणायुधाय स्वाहा। ७५४. ॐ परमेष्ठिने स्वाहा। ७५५. ॐ परंज्योतिषे स्वाहा। ७५६. ॐ नाकपालिने स्वाहा। ७५७. ॐ दिवस्पतये स्वाहा। ७५८. ॐ वदान्याय स्वाहा। ७५९. ॐ वासुकये स्वाहा। ७६०. ॐ वेद्याय स्वाहा। ७६१. ॐ आत्रेयाय स्वाहा। ७६२. ॐ अतिपराक्रमाय स्वाहा। ७६३. ॐ द्वापराय स्वाहा। ७६४. ॐ परमोदराय स्वाहा। ७६५. ॐ परब्रह्मचर्यवते स्वाहा। ७६६. ॐ उद्दीप्तवेषाय स्वाहा। ७६७. ॐ मुकुटिने स्वाहा। ७६८. ॐ पद्महस्ताय स्वाहा। ७६९. ॐ हिमांशुभृते स्वाहा। ७७०. ॐ स्मिताय स्वाहा। ७७१. ॐ प्रशान्तवदनाय स्वाहा। ७७२. ॐ पद्मोत्तरनिभाननाय स्वाहा। ७७३. ॐ सायंदिवादिव्य-वपुषे स्वाहा। ७७४. ॐ अनिर्देश्याय स्वाहा। ७७५. ॐ महारथाय स्वाहा। ७७६. ॐ महाप्रथाय स्वाहा। ७७७. ॐ महानिकाय स्वाहा। ७७८. ॐ शेषाय स्वाहा। ७७९. ॐ सत्त्वरजस्तमाय स्वाहा। ७८०. ॐ अनन्य-प्रतिमाय स्वाहा। ७८१. ॐ स्पष्टाय स्वाहा। ७८२. ॐ नित्यतुष्टाय स्वाहा। ७८३. ॐ कृतातपाय स्वाहा। ७८४. ॐ अहिंसकाय स्वाहा। ७८५. ॐ भयकराय स्वाहा। ७८६. ॐ लोकालोकप्रकाशकाय स्वाहा। ७८७. ॐ जगन्नाथाय स्वाहा। ७८८. ॐ जगत्साक्षिणे स्वाहा। ७८९. ॐ जगज्जनमनोहराय स्वाहा। ७९०. ॐ भास्वते स्वाहा। ७९१. ॐ विभावसवे स्वाहा। ७९२. ॐ वेधसे स्वाहा। ७९३. ॐ विहारिणे स्वाहा। ७९४. ॐ वरदायकाय स्वाहा। ७९५. ॐ ग्रहनाथाय स्वाहा। ७९६. ॐ ग्रहपतये स्वाहा। ७९७. ॐ ग्रहेशाय स्वाहा। ७९८. ॐ तिमिरापहाय स्वाहा। ७९९. ॐ सैंहिकेयरिपवे स्वाहा। ८००. ॐ सिंहस्वामिने स्वाहा। ८०१. ॐ सिंहासनस्थिताय स्वाहा। ८०२. ॐ त्रयीतनवे स्वाहा। ८०३. ॐ जगच्चक्षुषे स्वाहा। ८०४. ॐ अद्वितीयाय स्वाहा। ८०५. ॐ अरिमर्दनाय स्वाहा। ८०६. ॐ चतुर्वर्णार्तिघ्ने स्वाहा। ८०७. ॐ शुद्धमतये स्वाहा। ८०८. ॐ शुद्धाय स्वाहा। ८०९. ॐ सुधालयाय स्वाहा। ८१०. ॐ द्विभुजाय स्वाहा। ८११. ॐ अद्वयवादिने स्वाहा। ८१२. ॐ योगिने स्वाहा। ८१३. ॐ योगीश्वराय स्वाहा। ८१४. ॐ अरुणाय स्वाहा। ८१५. ॐ योगिगम्याय स्वाहा। ८१६. ॐ योगिश्रेष्ठाय स्वाहा। ८१७. ॐ योगवते स्वाहा। ८१८. ॐ योगिनीपतये स्वाहा। ८१९. ॐ दिग्पतये स्वाहा। ८२०. ॐ दिवसस्वामिने स्वाहा। ८२१. ॐ दिलीपाय स्वाहा।

८२२. ॐ व्योमदीपकाय स्वाहा। ८२३. ॐ कलिरत्नाय स्वाहा। ८२४. ॐ कलायुक्ताय स्वाहा। ८२५. ॐ कलिकल्मष-नाशनाय स्वाहा। ८२६. ॐ कलावते स्वाहा। ८२७. ॐ कलिदोषघ्नाय स्वाहा। ८२८. ॐ कलिदेवाय स्वाहा। ८२९. ॐ कलानिधये स्वाहा। ८३०. ॐ कालज्ञान-धराय स्वाहा। ८३१. ॐ पूर्वाय स्वाहा। ८३२. ॐ पूर्वदिक्पुत्राय स्वाहा। ८३३. ॐ उत्तमाय स्वाहा। ८३४. ॐ पूर्वदिक्तिलकाय स्वाहा। ८३५. ॐ पुण्याय स्वाहा। ८३६. ॐ परमात्मने स्वाहा। ८३७. ॐ परन्तपाय स्वाहा। ८३८. ॐ परम्ज्योतिषे स्वाहा। ८३९. ॐ परधाम्ने स्वाहा। ८४०. ॐ परात्पराय स्वाहा। ८४१. ॐ नरान्तकाय स्वाहा। ८४२. ॐ उदिताय स्वाहा। ८४३. ॐ पर्वतारूढाय स्वाहा। ८४४. ॐ पवित्राय स्वाहा। ८४५. ॐ पापनाशनाय स्वाहा। ८४६. ॐ उदयाचल-मारूढाय स्वाहा। ८४७. ॐ प्राचिशृंगारभाजनाय स्वाहा। ८४८. ॐ खरांशवे स्वाहा। ८४९. ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ८५०. ॐ व्योमरत्नाय स्वाहा। ८५१. ॐ धर्मतनुद्युतये स्वाहा। ८५२. ॐ अहर्मणये स्वाहा। ८५३. ॐ अनन्तात्मने स्वाहा। ८५४. ॐ कृतान्तजनकाय स्वाहा। ८५५. ॐ अध्वमाय स्वाहा। ८५६. ॐ यमुनाजनकाय स्वाहा। ८५७. ॐ जीवाय स्वाहा। ८५८. ॐ जयलक्ष्मीविभूषिताय स्वाहा। ८५९. ॐ चित्रांगदाय स्वाहा। ८६०. ॐ चित्रभानवे स्वाहा। ८६१. ॐ चराचरविकाशकृते स्वाहा। ८६२. ॐ द्वादशात्मने स्वाहा। ८६३. ॐ ध्वांतशत्रवे स्वाहा। ८६४. ॐ गगनध्वजाय स्वाहा। ८६५. ॐ आत्मभुवे स्वाहा। ८६६. ॐ विश्वाधराय स्वाहा। ८६७. ॐ विश्वनाथाय स्वाहा। ८६८. ॐ विश्वध्वांत-प्रणाशकृते स्वाहा। ८६९. ॐ पद्महस्ताय स्वाहा। ८७०. ॐ पद्ममित्राय स्वाहा। ८७१. ॐ पद्मरागसमद्युतये स्वाहा। ८७२. ॐ पद्मिनिबोधकाय स्वाहा। ८७३. ॐ पूताय स्वाहा। ८७४. ॐ परमाय स्वाहा। ८७५. ॐ पद्मबान्धवाय स्वाहा। ८७६. ॐ नमस्कारप्रियाय स्वाहा। ८७७. ॐ हेलिने स्वाहा। ८७८. ॐ विश्वरूपाय स्वाहा। ८७९. ॐ विनोदकृते स्वाहा। ८८०. ॐ भरणीसंभवायभीमाय स्वाहा। ८८१. ॐ भूर्भुवः स्वःप्रकाश-काय स्वाहा। ८८२. ॐ वेदगीताय स्वाहा। ८८३. ॐ वेदमुखाय स्वाहा। ८८४. ॐ ऋग्यजुःसमाय स्वाहा। ८८५. ॐ इनाय स्वाहा। ८८६. ॐ युगादिकरणाय स्वाहा। ८८७. ॐ स्थितिसंहारकाय स्वाहा। ८८८. ॐ वैकल्यनाशाय स्वाहा। ८८९. ॐ वेदांगाय स्वाहा। ८९०. ॐ वेदविद्या-

विशारदाय स्वाहा। ८९१. ॐ सुवर्णरेतसे स्वाहा। ८९२. ॐ शुभगाय स्वाहा। ८९३. ॐ हव्यकव्यप्रदायकाय स्वाहा। ८९४. ॐ काराय स्वाहा। ८९५. ॐ वषट्काराय स्वाहा। ८९६. ॐ इषेत्वोर्जस्वरूपधृषे स्वाहा। ८९७. ॐ जितवश्वानराय स्वाहा। ८९८. ॐ जातवेदसे स्वाहा। ८९९. ॐ जगदलंकृतये स्वाहा। ९००. ॐ अक्षराय स्वाहा। ९०१. ॐ कृतविश्वाय स्वाहा। ९०२. ॐ अर्काय स्वाहा। ९०३. ॐ मिहिराय स्वाहा। ९०४. ॐ मंडलाधिपाय स्वाहा। ९०५. ॐ दुर्विज्ञेयगतये स्वाहा। ९०६. ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा। ९०७. ॐ सुहृताश्रितमंदिराय स्वाहा। ९०८. ॐ कलिंगदेश-सम्भूताय स्वाहा। ९०९. ॐ कान्ताय स्वाहा। ९१०. ॐ काश्यपगोत्रजाय स्वाहा। ९११. ॐ ईश्वराग्न्यधिदेवाय स्वाहा। ९१२. ॐ तीव्राय स्वाहा। ९१३. ॐ पद्मासनस्थिताय स्वाहा। ९१४. ॐ अनादिरूपाय स्वाहा। ९१५. ॐ दितिजाय स्वाहा। ९१६. ॐ रत्नकान्तये स्वाहा। ९१७. ॐ प्रभामयाय स्वाहा। ९१८. ॐ जगत्प्रदीपाय स्वाहा। ९१९. ॐ विस्तीर्णाय स्वाहा। ९२०. ॐ महाविस्तीर्णमंडलाय स्वाहा। ९२१. ॐ एकचक्ररथाय स्वाहा। ९२२. ॐ स्वर्णरथाय स्वाहा। ९२३. ॐ स्वर्णशरीरधृषे स्वाहा। ९२४. ॐ निरालम्बाय स्वाहा। ९२५. ॐ गगनगाय स्वाहा। ९२६. ॐ धर्मकर्मप्रभावकृते स्वाहा। ९२७. ॐ धर्मात्मने स्वाहा। ९२८. ॐ कर्मणां-साक्षिणे स्वाहा। ९२९. ॐ प्रत्यक्षाय स्वाहा। ९३०. ॐ परमेश्वराय स्वाहा। ९३१. ॐ मेरुसेविते स्वाहा। ९३२. ॐ सुमेधाविने स्वाहा। ९३३. ॐ मेरुरक्षायुराय स्वाहा। ९३४. ॐ महते स्वाहा। ९३५. ॐ आधारभूताय स्वाहा। ९३६. ॐ रतिमते स्वाहा। ९३७. ॐ धनधान्यकृते स्वाहा। ९३८. ॐ पापसंतापसंहर्त्रे स्वाहा। ९३९. ॐ मनोवांछितदायकाय स्वाहा। ९४०. ॐ रोगहर्त्रे स्वाहा। ९४१. ॐ राज्यदायिने स्वाहा। ९४२. ॐ रमणीयगुणाय स्वाहा। ९४३. ॐ अनृणिने स्वाहा। ९४४. ॐ कालत्रयानन्त-रूपाय स्वाहा। ९४५. ॐ मुनिवृन्दनमस्कृताय स्वाहा। ९४६. ॐ सध्याराग-कृताय स्वाहा। ९४७. ॐ सिद्धाय स्वाहा। ९४८. ॐ संध्यावंदनवंदिताय स्वाहा। ९४९. ॐ साम्राज्यदाननिरताय स्वाहा। ९५०. ॐ समाराधन-तोषवते स्वाहा। ९५१. ॐ भक्तदुःखक्षयकराय स्वाहा। ९५२. ॐ भवसागरतारकाय स्वाहा। ९५३. ॐ भयापहर्त्रे स्वाहा। ९५४. ॐ भगवते स्वाहा। ९५५. ॐ अप्रमेयपराक्रमाय स्वाहा। ९५६. ॐ मनुस्वामिने स्वाहा। ९५७. ॐ मन्युपतये स्वाहा। ९५८. ॐ मान्याय स्वाहा। ९५९. ॐ

मन्वन्तराधिपाय स्वाहा। ९६०. ॐ अहोरात्रचलाय स्वाहा। ९६१. ॐ अनादये स्वाहा। ९६२. ॐ अघमर्षणाय स्वाहा। ९६३. ॐ ईशित्रे स्वाहा। ९६४. ॐ गायत्रीजपसुप्रीताय स्वाहा। ९६५. ॐ भर्गाय स्वाहा। ९६६. ॐ भूदेववन्दिताय स्वाहा। ९६७. ॐ सहस्रकिरणस्वामिने स्वाहा। ९६८. ॐ सहस्राक्षाय स्वाहा। ९६९. ॐ सहस्रपदे स्वाहा। ९७०. ॐ कामदाय स्वाहा। ९७१. ॐ मोक्षदाय स्वाहा। ९७२. ॐ साधवे स्वाहा। ९७३. ॐ साधुलोकसुखावहाय स्वाहा। ९७४. ॐ जयध्वजाय स्वाहा। ९७५. ॐ जितरिपवे स्वाहा। ९७६. ॐ जयश्रिये स्वाहा। ९७७. ॐ जयदायकाय स्वाहा। ९७८. ॐ भूतशुद्धिकराय स्वाहा। ९७९. ॐ भूपाय स्वाहा। ९८०. ॐ भव्याय स्वाहा। ९८१. ॐ भूमिप्रकाशकाय स्वाहा। ९८२. ॐ मार्गानुगाय स्वाहा। ९८३. ॐ महादेवाय स्वाहा। ९८४. ॐ अमितगामिने स्वाहा। ९८५. ॐ महाप्रभवे स्वाहा। ९८६. ॐ निराधाराय स्वाहा। ९८७. ॐ निराहाराय स्वाहा। ९८८. ॐ नयवते स्वाहा। ९८९. ॐ निपुणाय स्वाहा। ९९०. ॐ अनघाय स्वाहा। ९९१. ॐ परब्रह्मचारिणे स्वाहा। ९९२. ॐ चराचरपुरोहिताय स्वाहा। ९९३. ॐ स्वर्दीपकाय स्वाहा। ९९४. ॐ अमितत्राणाय स्वाहा। ९९५. ॐ परप्राणाय स्वाहा। ९९६. ॐ प्रमाणकृते स्वाहा। ९९७. ॐ शुक्लाय स्वाहा। ९९८. ॐ शुक्लप्रभास्वामिने स्वाहा। ९९९. ॐ रत्नांगाय स्वाहा। १०००. ॐ सूर्यदैवताय स्वाहा।

रुद्रयागहवनमन्त्राः

(एकषट्युत्तरशतधाविभागपक्षमाश्रित्य)

रुद्रयाग तीन प्रकार का होता है—रुद्र, महारुद्र और अतिरुद्र। रुद्रयाग पाँच, सात और नौ दिन में पूर्ण होता है। महारुद्रयाग नौ या ग्यारह दिन में पूर्ण होता है। अतिरुद्रयाग नौ या ग्यारह दिन में पूर्ण होता है। रुद्रयाग में उन्नीस हजार नौ सौ इक्कीस आहुति निम्न मन्त्रों से होती है। महारुद्रयाग में दो लाख उन्नीस हजार एक सौ इकतीस आहुति निम्न मन्त्रों से होती है। अतिरुद्रयाग चौबीस लाख दस हजार चार सौ इकतालीस आहुति होती है।

हरिः ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳ हवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳ हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳ हवामहेव्वसोमम। आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् स्वाहा॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥१॥ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२॥ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥३॥ येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥४॥ यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिꣳश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥५॥ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु स्वाहा॥६॥

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥ पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥२॥ एतावानस्य

अथ षडङ्गन्यासः

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों३प्रतिष्ठ। हृदयाय नमः॥१॥

ॐ अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वा इव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ॥ शिरसे स्वाहा॥२॥

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ शिखायै वषट्॥३॥

ॐ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥ कवचाय हुम्॥४॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्मात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥ नेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ अस्त्राय फट्॥६॥

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥ १॥
वृष वाहन! सर्प-भूषण! डमरु -बादक! शूल-धारक!।
संततं हृदि चिन्तयामि त्वामयि गङ्गाधर! चन्द्रशेखर!॥ २॥

रुद्रयागन्यासः

(रुद्रसूक्तेनन्यासः)

विनियोगः-नमस्त इति षोडशर्चस्य परमेष्ठी ऋषिः, नमस्त इत्यस्य गायत्रीछन्दः, यात इति त्रयाणामनुष्टुप्छन्दः, अध्यवोचदिति त्रयाणां पङ्क्तिश्छन्दः, नमोऽस्तु नीलग्रीवायेति सप्तानामनुष्टुप्छन्दः, मा नो महान्तमिति द्वयोः कुत्स ऋषिःर्जगतीछन्दः, सर्वेषामेको रुद्रोदेवता, न्यासे हवने च विनियोगः।

१. ॐ नमस्ते० वामकरे। २. ॐ याते रुद्र शिवा० दक्षिणकरे। ३. ॐ यामिषुं गिरिशन्त० वामपादे। ४. ॐ शिवेन वचसा० दक्षिणपादे। ५. ॐ अध्यवोचदधिवक्ता० वामजानौ। ६. ॐ असौ यस्ताम्रः० दक्षिणजानौ। ७. ॐ असौ योऽवसर्पति० वामकट्याम्। ८. ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय० दक्षिणकट्याम। ९. ॐ प्रमुञ्च० नाभौ। १०. ॐ विज्यन्धनु० हृदये। ११. ॐ या ते हेतिः० वामबाहौ। १२. ॐ परि ते धन्वनः० दक्षिणबाहौ। १३. ॐ अवतत्त्यधनुष्ट्वम्० कण्ठे। १४. ॐ नमस्ते ऽआयुधाय० मुखे। १५. ॐ मा नो महान्तम्० नेत्रयोः। १६. ॐ मा नस्तोके० मूर्ध्नि।

पुनः—१. या ते हेतिः० हृदयाय नमः। २. परि ते धन्वनः० शिरसे स्वाहा। ३. अवतत्त्य धनुष्ट्वम्० शिखायै वषट्। ४. नमस्ते ऽआयुधाय० कवचाय हुम्। ५. मा नो महान्तम्० नेत्राभ्यां वौषट्। ६. मा नस्तोके० अस्त्राय फट्।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥ १॥
वृष वाहन! सर्प-भूषण! डमरु -बादक! शूल-धारक!।
संततं हृदि चिन्तयामि त्वामयि गङ्गाधर! चन्द्रशेखर!॥ २॥

महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥३॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥४॥ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाᳬंसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥७॥ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥८॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥९॥ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥१०॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬ शूद्रो अजायत॥११॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥१२॥ नाभ्या आसीदन्तरिक्षᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ अकल्पयन्॥१३॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥१४॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥१५॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः स्वाहा॥१६॥

ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥१॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥२॥ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते। तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा॥३॥ यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये॥४॥ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा

अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे॥५॥ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण स्वाहा॥६॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभण श्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतᳬं सेना अजयत्साक मिन्द्रः॥१॥ संक्रन्दनेनाऽनिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना। तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा॥२॥ स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सᳬंस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन। सᳬं सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिता भिरस्ता॥३॥ बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँअपबाधमानः। प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्॥४॥ बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः। अभिवीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित्॥५॥ गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा। इमᳬं सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रᳬं सखायो अनु सᳬंरभध्वम्॥६॥ अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः। दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकᳬं सेना अवतु प्र युत्सु॥७॥ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥८॥ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुताᳬं शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥९॥ उद्धर्षय मघवन्ना-युधान्युत्सत्वनां मामकानां मनाᳬंसि। उद्वृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्यु द्रथानां जयतां यन्तु घोषाः॥१०॥ अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्व स्माकं या इषवस्ता जयन्तु। अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ२॥ उ देवा अवता हवेषु॥११॥ अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि। अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् स्वाहा॥१२॥

ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति॥१॥ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यम्॥२॥ येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२॥ अनु। त्वं वरुण पश्यसि॥३॥ दैव्यावध्वर्यू आगतꣳ रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वा यज्ञꣳ समञ्जाथे। तं प्रत्नथायं वेनश्चित्रं देवानाम्॥४॥ तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदꣳस्वर्विदम्। प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे॥५॥ अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने। इममपाꣳसङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति॥६॥ आ न इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु। अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा॥८॥ यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे॥९॥ तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य। विश्वमाभासि रोचनम्॥१०॥ तत्सूर्य्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततꣳ संजभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै॥११॥ तन्मित्रस्य वरुण-स्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः संभरन्ति॥१२॥ बण्महाँ२॥ असि सूर्य्य बडादित्य महाँ२॥ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२॥ असि॥१३॥ बट्सूर्य्य श्रवसा महाँ२॥ असि सत्रा देव महाँ२॥ असि। मह्ना देवानामसुर्य्यः पुरोहितो विभु ज्योतिर दाभ्यम्॥१४॥ श्रायन्त इव सूर्य्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम॥१५॥ अद्या देवा उदिता सूर्य्यस्य निरꣳहसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नोमित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥१६॥ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥१७॥

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा॥१॥ या ते रुद्र शिवा

तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि स्वाहा॥२॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंᳬसीः पुरुषं जगत् स्वाहा॥३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्ज गदयक्ष्मᳬ सुमना असत् स्वाहा॥४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींᳬश्च सर्वान् जम्भयन् सर्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव स्वाहा॥५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनᳬ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाᳬ हेड ईमहे स्वाहा॥६॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्न दृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा॥७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः स्वाहा॥८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप स्वाहा॥९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२॥ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा॥१०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्व तस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा॥११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा॥१२॥ अवतत्य धनुष्ट्वᳬ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा॥१३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने स्वाहा॥१४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा॥१५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा॥१६॥

ॐ नमो हिरण्य बाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमः स्वाहा॥१७॥ ॐ नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमः

स्वाहा॥१८॥ ॐ नमो शुष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमः स्वाहा॥१९॥ ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिनै पुष्टानां पतये नमः स्वाहा॥२०॥ ॐ नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमः स्वाहा॥२१॥ ॐ नमो भुवस्य हेत्यै जगतां पतये नमः स्वाहा॥२२॥ ॐ नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमः स्वाहा॥२३॥ ॐ नमो सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः॥२४॥ ॐ नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमः स्वाहा॥२५॥ ॐ नमो भुवन्तयै वारिवस्कृतायौषधीनां नमः स्वाहा॥२६॥ ॐ नमो मन्त्रिणै वाणिजाय कक्षाणां पतये नमः स्वाहा॥२७॥ ॐ नमऽ उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः स्वाहा॥२८॥ ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमः स्वाहा॥२९॥ ॐ नमः सहमानाय निव्याधिने आव्याधिनीनां पतयेनमः स्वाहा॥३०॥ ॐ नमो निषङ्गिणै ककुभाय स्तेनानां पतये नमः स्वाहा॥३१॥ ॐ नमो निचेरवै परिचरायारण्यानां पतये नमः स्वाहा॥३२॥ ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमः स्वाहा॥३३॥ ॐ नमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्कराणां पतये नमः स्वाहा॥३४॥ ॐ नमः सृकायिभ्यो जिघांᳬसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमः स्वाहा॥३५॥ ॐ नमोऽसिमद्भ्योनक्तंचरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः स्वाहा॥३६॥ ॐ नमऽ उष्णीषिणै गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमः स्वाहा॥३७॥ ॐ नमऽ इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥३८॥ ॐ नमऽ आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥३९॥ ॐ नमऽ आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४०॥ ॐ नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४१॥ ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४२॥ ॐ नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४३॥ ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४४॥ ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४५॥ ॐ नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४६॥ ॐ नमऽ आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च

वो नमः स्वाहा॥४७॥ ॐ नमऽ उगणाभ्यस्तृᳪं हुतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४८॥ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४९॥ ॐ नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५०॥ ॐ नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५१॥ ॐ नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५२॥ ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५३॥ ॐ नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५४॥ ॐ नमः क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५५॥ ॐ नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५६॥ ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५७॥ ॐ नमो कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५८॥ ॐ नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५९॥ ॐ नमो श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥६०॥ ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥६१॥ ॐ नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा॥६२॥ ॐ नमः शर्वाय च पशुपतये च नमः स्वाहा॥६३॥ ॐ नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः स्वाहा॥६४॥ ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा॥६५॥ ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा॥६६॥ ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा॥६७॥ ॐ नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा॥६८॥ ॐ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च स्वाहा॥६९॥ ॐ नमो बृहते च वर्षीयसे च स्वाहा॥७०॥ ॐ नमो वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा॥७१॥ ॐ नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च स्वाहा॥७२॥ ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च स्वाहा॥७३॥ ॐ नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च स्वाहा॥७४॥ ॐ नमऽ ऊर्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा॥७५॥ ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्याय च स्वाहा॥७६॥ ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा॥७७॥ ॐ नमः पूर्वजाय चापरजाय च स्वाहा॥७८॥ ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा॥७९॥ ॐ नमो जघन्याय च बुद्ध्न्याय च। स्वाहा॥८०॥ ॐ नमः

सोभ्यांय च प्रतिसर्यांय च स्वाहा॥८१॥ ॐ नमो याम्यांय च क्षेम्यांय च स्वाहा॥८२॥ ॐ नमः श्लोक्यांय चावसान्याय च स्वाहा॥८३॥ ॐ नमऽ उर्वर्य्याय च खल्यांय च स्वाहा॥८४॥ ॐ नमो वन्यांय च कक्ष्यांय च स्वाहा॥८५॥ ॐ नमः श्रवाये च प्रतिश्रवार्य च स्वाहा॥८६॥ ॐ नमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा॥८७॥ ॐ नमः शूरांय चावभेदिनें च स्वाहा॥८८॥ ॐ नमो बिल्मिनें च कवचिनें च स्वाहा॥८९॥ ॐ नमो वर्मिणें च वरूथिनें च स्वाहा॥९०॥ ॐ नमः श्रुतार्य च श्रुतसेनार्य च स्वाहा॥९१॥ ॐ नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च स्वाहा॥९२॥ ॐ नमो धृष्णवें च प्रमृशार्य च स्वाहा॥९३॥ ॐ नमो निषङ्गिणें चेषुधिमतें च स्वाहा॥९४॥ ॐ नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिनें च स्वाहा॥९५॥ ॐ नमः स्वायुधार्य च सुधन्वने च स्वाहा॥९६॥ ॐ नमः स्रुत्यांय च पथ्यांय च स्वाहा॥९७॥ ॐ नमः काट्यांय च नीप्यांय च स्वाहा॥९८॥ ॐ नमः कुल्यांय च सरस्याय च स्वाहा॥९९॥ ॐ नमो नादेयार्य च वैशन्तार्य च स्वाहा॥१००॥ ॐ नमः कूप्यांय चाऽवट्याय च स्वाहा॥१०१॥ ॐ नमो वीध्र्याय चातप्याय च स्वाहा॥१०२॥ ॐ नमो मेघ्यांय च विद्युत्याय च स्वाहा॥१०३॥ ॐ नमो वर्ष्यांय चावर्ष्यांय च स्वाहा॥१०४॥ ॐ नमो वात्यांय च रेष्म्यांय च स्वाहा॥१०५॥ ॐ नमो वास्तव्याय च वास्तुपार्य च स्वाहा॥१०६॥ ॐ नमः सोमांय च रुद्रार्य च स्वाहा॥१०७॥ ॐ नमस्ताम्रार्य चारुणार्य च स्वाहा॥१०८॥ ॐ नमः शंगवें च पशुपतये च स्वाहा॥१०९॥ ॐ नमऽ उग्रार्य च भीमार्य च स्वाहा॥११०॥ ॐ नमोऽग्रेवधार्य च दूरेवधार्य च स्वाहा॥१११॥ ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा॥११२॥ ॐ नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो स्वाहा॥११३॥ ॐ नमस्तारार्य स्वाहा॥११४॥ ॐ नमः शंभवार्य च मयोभवार्य च स्वाहा॥११५॥ ॐ नमः शंकरार्य च मयस्करार्य च स्वाहा॥११६॥ ॐ नमः शिवार्य

च शिवतराय च स्वाहा॥११७॥ ॐ नमः पार्याय चावार्याय च स्वाहा॥११८॥ ॐ नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा॥११९॥ ॐ नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च स्वाहा॥१२०॥ ॐ नमः शष्प्याय च फेन्याय च स्वाहा॥१२१॥ ॐ नमः सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा॥१२२॥ ॐ नमः किᳬंशिलाय च क्षयणाय च स्वाहा॥१२३॥ ॐ नमः कपर्दिने च पुलस्तये च स्वाहा॥१२४॥ ॐ नमऽ इरिण्याय च प्रपथ्याय च स्वाहा॥१२५॥ ॐ नमो व्व्रज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा॥१२६॥ ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा॥१२७॥ ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा॥१२८॥ ॐ नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च स्वाहा॥१२९॥ ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्त्याय च स्वाहा॥१३०॥ ॐ नमः पाᳬंसव्याय च रजस्याय च स्वाहा॥१३१॥ ॐ नमो लोप्याय चोलप्याय च स्वाहा॥१३२॥ ॐ नमऽ ऊर्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा॥१३३॥ ॐ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च स्वाहा॥१३४॥ ॐ नमऽ उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा॥१३५॥ ॐ नमऽ आखिदते च प्रखिदते च स्वाहा॥१३६॥ ॐ नमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥१३७॥ ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यो स्वाहा॥१३८॥ ॐ नमो विचिन्वत्केभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यः स्वाहा॥१३९॥ ॐ नमो विक्षिणत्केभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यः स्वाहा॥१४०॥ ॐ नमऽ आनिर्हतेभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यः स्वाहा॥१४१॥ ॐ द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मो च नः किंचनाममत् स्वाहा॥१४२॥ ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा॥१४३॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा॥१४४॥ ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य

दुर्मतिरघायोः। अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा॥१४५॥ ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि स्वाहा॥१४६॥ ॐ विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा॥१४७॥ ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा॥१४८॥ ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१४९॥ ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१५०॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१५१॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१५२॥ ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१५३॥ ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१५४॥ ॐ ये पथाम्पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्युधः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१५५॥ ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१५६॥ ॐ येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१५७॥ ॐ य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥१५८॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा॥१५९॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदी

चीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा॥१६०॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा॥१६१॥

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः—ॐ वयᳪसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचमेहि॥१॥ एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राऽम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः॥२॥ अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्य वस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्॥३॥ भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखं मेषाय मेष्यै॥४॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥५॥ एतत्ते रुद्राऽवसं तेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिᳪसन्नः शिवोऽतीहि॥६॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥७॥ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिᳪसीः। निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय॥८॥ (पाठमात्रम्)

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा॥१॥ अग्निᳪ हृदयेनाशनिᳪ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्॥२॥ उग्रं लोहितेन मित्रᳪ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यᳪ रुद्रस्यान्तःपार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥३॥ लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः

स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा। माꣳसेभ्यः स्वाहा माꣳसेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्याहा मज्जभ्यः स्वाहा। रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा॥४॥ आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संय्यासाय स्वाहा वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा॥५॥ तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा। निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्त्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा॥६॥ यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा॥७॥ (पाठमात्रम्)

ॐ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१॥ प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२॥ ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥३॥ ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥४॥ २-ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१॥ ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२॥

यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥३॥ शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥४॥ ३-नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ ऊर्क् च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१॥ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२॥ वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथ्यं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥३॥ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥४॥ ४-नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे श्यामं च मे लोहं च मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१॥ अग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२॥ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥३॥ ५-नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१॥ मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म इन्द्रश्च

मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२॥ पृथिवी च मे इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे समाश्च म इन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥३॥ ६-ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ अᳬशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपाᳬशुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१॥ आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्कैवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२॥ स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मेऽधिषवणे च मे पूतभृच्च म आधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥३॥ ७-ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१॥ व्रतं च म ऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मेऽहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥२॥ ८-ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविᳬशतिश्च म एकविᳬशतिश्च मे त्रयोविᳬशतिश्च मे त्रयोविᳬशतिश्च मे पञ्चविᳬशतिश्च मे पञ्चविᳬशतिश्च मे सप्तविᳬशतिश्च मे सप्तविᳬशतिश्च मे नवविᳬशतिश्च मे नवविᳬशतिश्च म एकत्रिᳬशच्च म एकत्रिᳬशच्च मे त्रयस्त्रिᳬशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥१॥ ९-नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ चतस्रश्च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च

मे षोडश च मे षोडश च मे विंᳬशतिश्च मे विंᳬशतिश्च मे चतुर्विंᳬशतिश्च मे चतुर्विंᳬशतिश्च मेऽष्टाविंᳬशतिश्च मेऽष्टाविंᳬशतिश्च मे द्वात्रिंᳬशच्च मे द्वात्रिंᳬशच्च मे षट्त्रिंᳬशच्च मे षट्त्रिंᳬशच्च मे चत्वारिंᳬशच्च मे चत्वारिंᳬशच्च मे चतुश्चत्वारिंᳬशच्च मे चतुश्चत्वारिंᳬशच्च मेऽष्टाचत्वारिंᳬशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥१॥ १०-नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्य्यवाट् च मे तुर्य्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१॥ पष्ठवाट् च मे षष्ठौही च म उक्षा च मे वशा च म ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वांश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥२॥

पुनः-ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥१॥ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२॥ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥३॥ येनेदं भूतं भुवनं भविष्य त्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥४॥ यस्मिन्नृचः साम यजूᳬषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंᳬश्चित्तᳬ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु॥५॥ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु स्वाहा॥६॥

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिᳬ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥ पुरुष एवेदᳬ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥२॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥३॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥४॥ ततो विराडजायत विराजो अधि

पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांᳫंसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥७॥ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥८॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥९॥ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥१०॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳫं शूद्रो अजायत॥११॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥१२॥ नाभ्या आसीदन्तरिक्षᳫं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ अकल्पयन्॥१३॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥१४॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥१५॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः स्वाहा॥१६॥

ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥१॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥२॥ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते। तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा॥३॥ यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये॥४॥ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे॥५॥ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण स्वाहा॥६॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥१॥ संक्रन्दनेनाऽनिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना। तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा॥२॥ स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सꣳस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन। सꣳ सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता॥३॥ बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँअपबाधमानः। प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्॥४॥ बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः। अभिवीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित्॥५॥ गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा। इमꣳ सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रꣳसखायो अनु सꣳरभध्वम्॥६॥ अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः। दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकꣳ सेना अवतु प्र युत्सु॥७॥ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥८॥ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुताꣳ शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥९॥ उद्धर्षय मघवन्ना-युधान्युत्सत्वनां मामकानां मनाꣳसि। उद्वृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः॥१०॥ अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु। अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ२॥ उ देवा अवता हवेषु॥११॥ अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि। अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् स्वाहा॥१२॥

ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति॥१॥ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यम्॥२॥ येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२॥ अनु। त्वं वरुण पश्यसि॥३॥

दैव्यावध्वर्यू आगतुँ रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वा यज्ञँ समञ्जाथे। तं प्रत्नथायं वेनश्चित्रं देवानाम्॥४॥ तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदुँस्वर्विदम्। प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे॥५॥ अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने। इममपाँसङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुनं विप्रा मतिभी रिहन्ति॥६॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्य्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च॥७॥ आ न इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु। अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा॥८॥ यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे॥९॥ तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य। विश्वमाभासि रोचनम्॥१०॥ तत्सूर्य्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्त्तोर्विततुँ संजभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै॥११॥ तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्ध रितः संभरन्ति॥१२॥ बण्महाँ२॥ असि सूर्य्य बडादित्य महाँ२॥ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२॥ असि॥१३॥ बट्सूर्य्य श्रवसा महाँ२॥ असि सत्रा देव महाँ२॥ असि। मह्ना देवानामसुर्य्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम्॥१४॥ श्रायन्त इव सूर्य्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम॥१५॥ अद्या देवा उदिता सूर्य्यस्य निरँहसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नोमित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥१६॥ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥१७॥

११-ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ॐ वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाऽहर्पतये स्वाहाह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनँशिनाय स्वाहा विनँशिन आन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। इयं ते राण्मित्राय यन्तासि

यमेन ऊर्जे त्वा वृष्टयै त्वा प्रजानां त्वाधिपत्याय॥१॥ आयुर्य्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्य्यज्ञेन कल्पताᳬ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग् यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्य्यज्ञेन कल्पतां स्वर्य्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं य्यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्च यजुश्च ऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरं च। स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापतेः प्रजा अभूम वेट् स्वाहा॥२॥

ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ स्वाहा॥१॥ ॐ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः स्वाहा॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥३॥ ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा॥४॥ ॐ कस्त्वा सत्यो मदानां मᳬहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु स्वाहा॥५॥ ॐ अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः स्वाहा॥६॥ ॐ कया त्वं न ऊत्याभि प्रमन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आभर स्वाहा॥७॥ ॐ इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥८॥ ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्य्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः स्वाहा॥९॥ ॐ शं नो वातः पवताᳬ शं नस्तपतु सूर्य्यः। शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु स्वाहा॥१०॥ ॐ अहानि शं भवन्तु नः शᳬ रात्रीः प्रतिधीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः स्वाहा॥११॥ ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा॥१२॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा॥१३॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे स्वाहा॥१४॥ ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव

मातरः स्वाहा॥१५॥ ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः स्वाहा॥१६॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि स्वाहा॥१७॥ ॐ दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे स्वाहा॥१८॥ ॐ दृते दृंह मा:। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम् स्वाहा॥१९॥ ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव स्वाहा॥२०॥ ॐ नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे स्वाहा॥२१॥ ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः स्वाहा॥२२॥ ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः स्वाहा॥२३॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् स्वाहा॥२४॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥१॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥२॥ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥३॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥४॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम्॥५॥ (पाठमात्रम्)

अथ षडङ्गन्यासः

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों३प्रतिष्ठ। हृदयाय नमः॥१॥

ॐ अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वा इव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ॥ शिरसे स्वाहा॥२॥

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ शिखायै वषट्॥३॥

ॐ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृते-नानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥ कवचाय हुम्॥४॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वत-स्मात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥ नेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ अस्त्राय फट्॥६॥

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥ १॥
वृष वाहन! सर्प-भूषण! डमरु-बादक! शूल-धारक!।
संततं हृदि चिन्तयामि त्वामयि गङ्गाधर! चन्द्रशेखर!॥ २॥

शिवसहस्त्रनामावल्या हवनम्

१. ॐ स्थिराय स्वाहा। २. ॐ स्थाणवे स्वाहा। ३. ॐ प्रभवे स्वाहा। ४. ॐ भीमाय स्वाहा। ५. ॐ प्रवराय स्वाहा। ६. ॐ वरदाय स्वाहा। ७. ॐ वराय स्वाहा। ८. ॐ सर्वात्मने स्वाहा। ९. ॐ सर्वविख्याताय स्वाहा। १०. ॐ सर्वस्मै स्वाहा। ११. ॐ सर्वकराय स्वाहा। १२. ॐ भवाय स्वाहा। १३. ॐ जटिने स्वाहा। १४ ॐ चर्मिणे स्वाहा। १५. ॐ शिखण्डिने स्वाहा। १६. ॐ सर्वाङ्गाय स्वाहा। १७. ॐ सर्वभावनाय स्वाहा। १८. ॐ हराय स्वाहा। १९. ॐ हरिणाक्षाय स्वाहा। २०. ॐ सर्वभूतहराय स्वाहा। २१. ॐ वृत्तये स्वाहा। २२. ॐ प्रभवे स्वाहा। २३. ॐ निवृत्तये स्वाहा। २४. ॐ नियताय स्वाहा। २५. ॐ शाश्वताय स्वाहा। २६. ॐ ध्रुवाय स्वाहा। २७. ॐ श्मशानवासिने स्वाहा। २८. ॐ भगवते स्वाहा। २९. ॐ खेचराय स्वाहा। ३०. ॐ गोचराय स्वाहा। ३१. ॐ आनन्दाय स्वाहा। ३२. ॐ अभिवाद्याय स्वाहा। ३३. ॐ महाकर्मणे स्वाहा। ३४. ॐ तपस्विने स्वाहा। ३५. ॐ भूतभावनाय स्वाहा। ३६. ॐ उन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय स्वाहा। ३७. ॐ सर्वलोकप्रजापतये स्वाहा। ३८. ॐ महारूपाय स्वाहा। ३९. ॐ महाकयाय स्वाहा। ४०. ॐ वृषरूपाय स्वाहा। ४१. ॐ महायशसे स्वाहा। ४२. ॐ महात्मने स्वाहा। ४३. ॐ सर्वभूतात्मने स्वाहा। ४४. ॐ विश्वरूपाय स्वाहा। ४५. ॐ महाहनवे स्वाहा। ४६. ॐ लोकपालाय स्वाहा। ४७. ॐ अन्तर्हितात्मने स्वाहा। ४८. ॐ प्रसादाय स्वाहा। ४९. ॐ हयगर्दभये स्वाहा। ५०. ॐ पवित्राय स्वाहा। ५१. ॐ महते स्वाहा। ५२. ॐ नियमाय स्वाहा। ५३. ॐ नियमाश्रिताय स्वाहा। ५४. ॐ सर्वकर्मणे स्वाहा। ५५. ॐ स्वयम्भूताय स्वाहा। ५६. ॐ आदाये स्वाहा। ५७. ॐ आदिकराय स्वाहा। ५८. ॐ निधये स्वाहा। ५९. ॐ सहस्त्राक्षाय स्वाहा। ६०. ॐ विशालाक्षाय स्वाहा। ६१. ॐ सोमाय स्वाहा। ६२. ॐ नक्षत्रसाधकाय स्वाहा। ६३. ॐ चन्द्राय स्वाहा। ६४. ॐ सूर्याय स्वाहा। ६५. ॐ शनये स्वाहा। ६६. ॐ केतवे स्वाहा। ६७. ॐ ग्रहाय स्वाहा। ६८. ॐ ग्रहपतये स्वाहा। ६९. ॐ वराय स्वाहा। ७०. ॐ अत्रये स्वाहा। ७१. ॐ अत्र्यानमस्कर्त्रे स्वाहा। ७२. ॐ मृगवाणार्पणाय स्वाहा। ७३. ॐ अनघाय स्वाहा। ७४. ॐ महातपसे स्वाहा। ७५. ॐ घोरतपसे स्वाहा। ७६. ॐ अदीनाय स्वाहा। ७७. ॐ दीनसाधकाय स्वाहा। ७८. ॐ संवत्सराय स्वाहा। ७९. ॐ मन्त्राय स्वाहा।

८०. ॐ प्रमाणाय स्वाहा। ८१. ॐ परमतपसे स्वाहा। ८२. ॐ योगिने स्वाहा। ८३. ॐ योज्याय स्वाहा। ८४. ॐ महाबीजाय स्वाहा। ८५. ॐ महारेतसे स्वाहा। ८६. ॐ महाबलाय स्वाहा। ८७. ॐ सुवर्णरेतसे स्वाहा। ८८. ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा। ८९. ॐ सुबीजाय स्वाहा। ९०. ॐ बीज-वाहनाय स्वाहा। ९१. ॐ दशबाहवे स्वाहा। ९२. ॐ अनिमिषाय स्वाहा। ९३. ॐ नीलकण्ठाय स्वाहा। ९४. ॐ उमापतये स्वाहा। ९५. ॐ विश्वरूपाय स्वाहा। ९६. ॐ स्वयंश्रेष्ठाय स्वाहा। ९७. ॐ बलवीराय स्वाहा। ९८. ॐ अबलाय स्वाहा। ९९. ॐ गणाय स्वाहा। १००. ॐ गणकर्त्रे स्वाहा। १०१. ॐ गणपतये स्वाहा। १०२. ॐ दिग्वाससे स्वाहा। १०३. ॐ कामाय स्वाहा। १०४. ॐ मन्त्रविदे स्वाहा। १०५. ॐ परमाय स्वाहा। १०६. ॐ मन्त्राय स्वाहा। १०७. ॐ सर्वभावकराय स्वाहा। १०८. ॐ हराय स्वाहा। १०९. ॐ कमण्डलुधराय स्वाहा। ११०. ॐ धन्विने स्वाहा। १११. ॐ बाणहस्ताय स्वाहा। ११२. ॐ कपालवते स्वाहा। ११३. ॐ अशनिने स्वाहा। ११४. ॐ शतघ्निने स्वाहा। ११५. ॐ खड्गिने स्वाहा। ११६. ॐ पट्टिशिने स्वाहा। ११७. ॐ आयुधिने स्वाहा। ११८. ॐ महते स्वाहा। ११९. ॐ स्रुवहस्ताय स्वाहा। १२०. ॐ सुरूपाय स्वाहा। १२१. ॐ तेजसे स्वाहा। १२२. ॐ तेजस्करनिधये स्वाहा। १२३. ॐ उष्णीषिणे स्वाहा। १२४. ॐ सुवक्त्राय स्वाहा। १२५. ॐ उदग्राय स्वाहा। १२६. ॐ विनताय स्वाहा। १२७. ॐ दीर्घाय स्वाहा। १२८. ॐ हरिकेशाय स्वाहा। १२९. ॐ सुतीर्थाय स्वाहा। १३०. ॐ कृष्णाय स्वाहा। १३१. ॐ शृगालरूपाय स्वाहा। १३२. ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा। १३३. ॐ मुण्डाय स्वाहा। १३४. ॐ सर्वशुभकराय स्वाहा। १३५. ॐ अजाय स्वाहा। १३६. ॐ बहुरूपाय स्वाहा। १३७. ॐ गन्धधारिणे स्वाहा। १३८. ॐ कपर्दिने स्वाहा। १३९. ॐ ऊर्ध्वरेतसे स्वाहा। १४०. ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय स्वाहा। १४१. ॐ ऊर्ध्वशायिने स्वाहा। १४२. ॐ नभस्थलाय स्वाहा। १४३. ॐ त्रिजटाय स्वाहा। १४४. ॐ चीरवाससे स्वाहा। १४५. ॐ रुद्राय स्वाहा। १४६. ॐ सेनापतये स्वाहा। १४७. ॐ विभवे स्वाहा। १४८. ॐ अहश्चराय स्वाहा। १४९. ॐ नक्तञ्चराय स्वाहा। १५०. ॐ तिग्ममन्यवे स्वाहा। १५१. ॐ सुवर्चसे स्वाहा। १५२. ॐ गजघ्ने स्वाहा। १५३. ॐ दैत्यघ्ने स्वाहा। १५४. ॐ कालाय स्वाहा। १५५. ॐ लोकधात्रे स्वाहा। १५६. ॐ गुणाकराय

स्वाहा। १५७. ॐ सिंहशार्दूलरूपाय स्वाहा। १५८. ॐ आर्द्रचर्माम्बरा-वृताय स्वाहा। १५९. ॐ कालयोगिने स्वाहा। १६०. ॐ महानादाय स्वाहा। १६१. ॐ सर्वकामाय स्वाहा। १६२. ॐ चतुष्पथाय स्वाहा। १६३. ॐ निशाचराय स्वाहा। १६४. ॐ प्रेतचारिणे स्वाहा। १६५. ॐ भूतचारिणे स्वाहा। १६६. ॐ महेश्वराय स्वाहा। १६७. ॐ बहुभूताय स्वाहा। १६८. ॐ बहुधाराय स्वाहा। १६९. ॐ स्वर्भानवे स्वाहा। १७०. ॐ अमिताय स्वाहा। १७१. ॐ गतये स्वाहा। १७२. ॐ नृत्यप्रियाय स्वाहा। १७३. ॐ नित्यनर्ताय स्वाहा। १७४. ॐ नर्तकाय स्वाहा। १७५. ॐ सर्वलालसाय स्वाहा। १७६. ॐ घोराय स्वाहा। १७७. ॐ महातपसे स्वाहा। १७८. ॐ पाशाय स्वाहा। १७९. ॐ नित्याय स्वाहा। १८०. ॐ गिरिरुहाय स्वाहा। १८१. ॐ नभसे स्वाहा। १८२. ॐ सहस्रहस्ताय स्वाहा। १८३. ॐ विजयाय स्वाहा। १८४. ॐ व्यवसायाय स्वाहा। १८५. ॐ अतन्द्रिताय स्वाहा। १८६. ॐ अघर्षणाय स्वाहा। १८७. ॐ धर्षणात्मने स्वाहा। १८८. ॐ यज्ञघ्ने स्वाहा। १८९. ॐ कामनाशकाय स्वाहा। १९०. ॐ दक्षयागापहारिणे स्वाहा। १९१. ॐ सुमहाय्याय स्वाहा। १९२. ॐ मध्यमाय स्वाहा। १९३. ॐ तेजोपहारिणे स्वाहा। १९४. ॐ बलघ्ने स्वाहा। १९५. ॐ मुदिताय स्वाहा। १९६. ॐ अर्थाय स्वाहा। १९७. ॐ अजिताय स्वाहा। १९८. ॐ अवराय स्वाहा। १९९. ॐ गम्भीराय स्वाहा। २००. ॐ गम्भीराय स्वाहा। २०१. ॐ गंभीरबलवाहनाय स्वाहा। २०२. ॐ न्यग्रोधरूपाय स्वाहा। २०३. ॐ न्यग्रोधाय स्वाहा। २०४. ॐ वृक्षकर्णस्थितये स्वाहा। २०५. ॐ विभवे स्वाहा। २०६. ॐ सुतीक्ष्णदशनाय स्वाहा। २०७. ॐ महाकायाय स्वाहा। २०८. ॐ महाननाय स्वाहा। २०९. ॐ विष्वक्सेनाय स्वाहा। २१०. ॐ हरये स्वाहा। २११. ॐ यज्ञाय स्वाहा। २१२. ॐ संयुगापीडवाहनाय स्वाहा। २१३. ॐ तीक्ष्णतापाय स्वाहा। २१४. ॐ हर्यश्वाय स्वाहा। २१५. ॐ सहाय स्वाहा। २१६. ॐ कर्मकालविदे स्वाहा। २१७. ॐ विष्णुप्रसादिताय स्वाहा। २१८. ॐ यज्ञाय स्वाहा। २१९. ॐ समुद्राय स्वाहा। २२०. ॐ वडवामुखाय स्वाहा। २२१. ॐ हुताशनसहाय स्वाहा। २२२. ॐ प्रशान्तात्मने स्वाहा। २२३. ॐ हुताशनाय स्वाहा। २२४. ॐ उग्रतेजसे स्वाहा। २२५. ॐ महातेजसे स्वाहा। २२६. ॐ जन्याय स्वाहा। २२७. ॐ विजयकालविदे स्वाहा। २२८. ॐ ज्योतिषामयनाय स्वाहा।

२२९. ॐ सिद्धये स्वाहा। २३०. ॐ सर्वविग्रहाय स्वाहा। २३१. ॐ शिखिने स्वाहा। २३२. ॐ मुण्डिने स्वाहा। २३३. ॐ जटिने स्वाहा। २३४. ॐ ज्वालिने स्वाहा। २३५. ॐ मूर्तिजाय स्वाहा। २३६. ॐ मूर्द्धगाय स्वाहा। २३७. ॐ बलिने स्वाहा। २३८. ॐ वेणविने स्वाहा। २३९. ॐ पणविने स्वाहा। २४०. ॐ तालिने स्वाहा। २४१. ॐ खलिने स्वाहा। २४२. ॐ कालकटकटाय स्वाहा। २४३. ॐ नक्षत्रविग्रहमतये स्वाहा। २४४. ॐ गुणबुद्धये स्वाहा। २४५. ॐ लगाय स्वाहा। २४६. ॐ अग्माय स्वाहा। २४७. ॐ प्रजापतये स्वाहा। २४८. ॐ विश्वबाहवे स्वाहा। २४९. ॐ विभागाय स्वाहा। २५०. ॐ सर्वगाय स्वाहा। २५१. ॐ अमुखाय स्वाहा। २५२. ॐ विमोचनाय स्वाहा। २५३. ॐ ससुरणाय स्वाहा। २५४. ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय स्वाहा। २५५. ॐ मेढजाय स्वाहा। २५६. ॐ ललचारिणे स्वाहा। २५७. ॐ महीचारिणे स्वाहा। २५८. ॐ स्नुताय स्वाहा। २५९. ॐ सर्वतूर्यनिनादिने स्वाहा। २६०. ॐ सर्वातोद्य-षरिग्रहाय स्वाहा। २६१. ॐ ब्यालरूपाय स्वाहा। २६२. ॐ गुहावासिने स्वाहा। २६३. ॐ गुहाय स्वाहा। २६४. ॐ मालिने स्वाहा। २६५. ॐ तरङ्गविदे स्वाहा। २६६. ॐ त्रिदशाय स्वाहा। २६७. ॐ त्रिकालधृषे स्वाहा। २६८. ॐ कर्मसर्वबन्धविमोचनाय स्वाहा। २६९. ॐ असुरेन्द्राणां स्वाहा। २७०. ॐ युधिशत्रुबिनाशिने स्वाहा। २७१. ॐ सांख्यप्रसादाय स्वाहा। २७२. ॐ दुर्वाससे स्वाहा। २७३. ॐ सर्वसाधुनियेबिताय स्वाहा। २७४. ॐ प्रस्कन्दनाथ स्वाहा। २७५. ॐ बिभागज्ञाय स्वाहा। २७६. ॐ अतुल्याय स्वाहा। २७७. ॐ यज्ञभागविदे स्वाहा। २७८. ॐ सर्वचारिणे स्वाहा। २७९. ॐ सर्ववासाय स्वाहा। २८०. ॐ दुर्वाससे स्वाहा। २८१. ॐ वासवाय स्वाहा। २८२. ॐ अमराय स्वाहा। २८३. ॐ हेमाय स्वाहा। २८४. ॐ हेमकराय स्वाहा। २८५. ॐ अयज्ञसर्वधारिणे स्वाहा। २८६. ॐ धरोत्तमाय स्वाहा। २८७. ॐ लोहिताक्षाय स्वाहा। २८८. ॐ महाक्षाय स्वाहा। २८९. ॐ विजयाक्षाय स्वाहा। २९०. ॐ विशारदाय स्वाहा। २९१. ॐ सर्वकामदाय स्वाहा। २९२. ॐ सर्वकालप्रसादाय स्वाहा। २९३. ॐ सुबलाय स्वाहा। २९४. ॐ बलरूपधृषे स्वाहा। २९५. ॐ संग्रहाय स्वाहा। २९६. ॐ निग्रहाय स्वाहा। २९७. ॐ कर्त्रे स्वाहा। २९८. ॐ सर्पचीरनिवासाय स्वाहा। २९९. ॐ मुख्याय स्वाहा। ३००. ॐ अमुख्याय स्वाहा। ३०१. ॐ देहाय स्वाहा। ३०२. ॐ काहलये

स्वाहा। ३०३. ॐ सर्वकामवराय स्वाहा। ३०४. ॐ सर्वदाय स्वाहा। ३०५. ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा। ३०६. ॐ आकाशनिर्विरूपाय स्वाहा। ३०७. ॐ निपातिने स्वाहा। ३०८. ॐ अवशाय स्वाहा। ३०९. ॐ खगाय स्वाहा। ३१०. ॐ रौद्ररूपाय स्वाहा। ३११. ॐ अंशवे स्वाहा। ३१२. ॐ आदित्याय स्वाहा। ३१३. ॐ बहुरश्मये स्वाहा। ३१४. ॐ सुवर्चसिने स्वाहा। ३१५. ॐ वसुवेगाय स्वाहा। ३१६. ॐ महावेगाय स्वाहा। ३१७. ॐ मनोवेगाय स्वाहा। ३१८. ॐ निशाचराय स्वाहा। ३१९. ॐ सर्ववासिने स्वाहा। ३२०. ॐ श्रियावासिने स्वाहा। ३२१. ॐ उपदेश-कराय स्वाहा। ३२२. ॐ अकराय स्वाहा। ३२३. ॐ मुनये स्वाहा। ३२४. ॐ आत्मनिरालोकाय स्वाहा। ३२५. ॐ सम्भग्नाय स्वाहा। ३२६. ॐ सहस्त्रदाय स्वाहा। ३२७. ॐ पक्षिणे स्वाहा। ३२८. ॐ पक्षरूपाय स्वाहा। ३२९. ॐ अतिदीप्ताय स्वाहा। ३३०. ॐ विशाम्पतये स्वाहा। ३३१. ॐ उन्मादाय स्वाहा। ३३२. ॐ मदनाय स्वाहा। ३३३. ॐ कामाय स्वाहा। ३३४. ॐ अश्वत्थाय स्वाहा। ३३५. ॐ अर्थकराय स्वाहा। ३३६. ॐ यशसे स्वाहा। ३३७. ॐ वामदेवाय स्वाहा। ३३८. ॐ वामाय स्वाहा। ३३९. ॐ प्राचे स्वाहा। ३४०. ॐ दक्षिणाय स्वाहा। ३४१. ॐ वामनाय स्वाहा। ३४२. ॐ सिद्धयोगिने स्वाहा। ३४३. ॐ महषय स्वाहा। ३४४. ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा। ३४५. ॐ सिद्धसाधकाय स्वाहा। ३४६. ॐ भिक्षवे स्वाहा। ३४७. ॐ भिक्षरूपाय स्वाहा। ३४८. ॐ विपणाय स्वाहा। ३४९. ॐ मृदवे स्वाहा। ३५०. ॐ अव्ययाय स्वाहा। ३५१. ॐ महासेनाय स्वाहा। ३५२. ॐ विशाखाय स्वाहा। ३५३. ॐ षष्टिभागाय स्वाहा। ३५४. ॐ गवाम्पतये स्वाहा। ३५५. ॐ वज्रहस्ताय स्वाहा। ३५६. ॐ विष्कम्भिने स्वाहा। ३५७. ॐ चमूस्तम्भनाय स्वाहा। ३५८. ॐ वृत्तावृत्तकराय स्वाहा। ३५९. ॐ तालाय स्वाहा। ३६०. ॐ मधवे स्वाहा। ३६१. ॐ मधुकलोचनाय स्वाहा। ३६२. ॐ वाचस्पत्याय स्वाहा। ३६३. ॐ वाजसनाय स्वाहा। ३६४. ॐ आश्रम-पूजिताय स्वाहा। ३६५. ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा। ३६६. ॐ लाकचारिणे स्वाहा। ३६७. ॐ सवचारिणे स्वाहा। ३६८. ॐ विचारविदे स्वाहा। ३६९. ॐ ईशानाय स्वाहा। ३७०. ॐ ईश्वराय स्वाहा। ३७१. ॐ कालाय स्वाहा। ३७२. ॐ निशाचारिणे स्वाहा। ३७३. ॐ पिनाकधृगे स्वाहा। ३७४. ॐ निमित्तस्थाय स्वाहा। ३७५. ॐ निमित्ताय स्वाहा। ३७६. ॐ

नन्दये स्वाहा। ३७७. ॐ नन्दिकराय स्वाहा। ३७८. ॐ हरये स्वाहा। ३७९. ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। ३८०. ॐ नन्दिने स्वाहा। ३८१. ॐ नन्दराय स्वाहा। ३८२. ॐ नन्दिवर्धनाय स्वाहा। ३८३. ॐ भगहारिणे स्वाहा। ३८४. ॐ निहन्त्रे स्वाहा। ३८५. ॐ कालाय स्वाहा। ३८६. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ३८७. ॐ पितामहाय स्वाहा। ३८८. ॐ चतुर्मुखाय स्वाहा। ३८९. ॐ महालिङ्गाय स्वाहा। ३९०. ॐ चारुलिङ्गाय स्वाहा। ३९१. ॐ लिङ्गाध्यक्षाय स्वाहा। ३९२. ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा। ३९३. ॐ योगाध्यक्षाय स्वाहा। ३९४. ॐ युगावहाय स्वाहा। ३९५. ॐ बीजाध्यक्षाय स्वाहा। ३९६. ॐ बीजकर्त्रे स्वाहा। ३९७. ॐ अध्यात्मानुगताय स्वाहा। ३९८. ॐ बलाय स्वाहा। ३९९. ॐ इतिहासाय स्वाहा। ४००. ॐ सङ्कल्पाय स्वाहा। ४०१. ॐ गौतमाय स्वाहा। ४०२. ॐ निशाकराय स्वाहा। ४०३. ॐ दम्भाय स्वाहा। ४०४. ॐ अदम्भाय स्वाहा। ४०५. ॐ वैदम्भाय स्वाहा। ४०६. ॐ वश्याय स्वाहा। ४०७. ॐ वशकराय स्वाहा। ४०८. ॐ कलये स्वाहा। ४०९. ॐ लोककर्त्रे स्वाहा। ४१०. ॐ पशुपतये स्वाहा। ४११. ॐ महाकर्त्रे स्वाहा। ४१२. ॐ अनौषधाय स्वाहा। ४१३. ॐ अक्षराय स्वाहा। ४१४. ॐ परब्रह्मणे स्वाहा। ४१५. ॐ बलवते स्वाहा। ४१६. ॐ शक्राय स्वाहा। ४१७. ॐ नीतये स्वाहा। ४१८. ॐ अनीतये स्वाहा। ४१९. ॐ शुद्धात्मने स्वाहा। ४२०. ॐ मान्याय स्वाहा। ४२१. ॐ शुद्धाय स्वाहा। ४२२. ॐ गतागताय स्वाहा। ४२३. ॐ बहुप्रसादाय स्वाहा। ४२४. ॐ सुस्वप्नाय स्वाहा। ४२५. ॐ दर्पणाय स्वाहा। ४२६. ॐ अमित्रजिते स्वाहा। ४२७. ॐ वेदकराय स्वाहा। ४२८. ॐ मन्त्रकराय स्वाहा। ४२९. ॐ विदुषे स्वाहा। ४३०. ॐ समरमर्दनाय स्वाहा। ४३१. ॐ महामेघनिवासिने स्वाहा। ४३२. ॐ महाघोराय स्वाहा। ४३३. ॐ वंशिने स्वाहा। ४३४. ॐ कराय स्वाहा। ४३५. ॐ अग्निज्वालाय स्वाहा। ४३६. ॐ महाज्वालाय स्वाहा। ४३७. ॐ अतिधूम्राय स्वाहा। ४३८. ॐ हुताय स्वाहा। ४३९. ॐ हविषे स्वाहा। ४४०. ॐ वृषणाय स्वाहा। ४४१. ॐ शङ्कराय स्वाहा। ४४२. ॐ वर्चस्विने स्वाहा। ४४३. ॐ धूमकेतनाय स्वाहा। ४४४. ॐ नीलाय स्वाहा। ४४५. ॐ अङ्गलुब्धाय स्वाहा। ४४६. ॐ शोभनाय स्वाहा। ४४७. ॐ निरवग्रहाय स्वाहा। ४४८. ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा। ४४९. ॐ स्वस्तिभावाय स्वाहा। ४५०. ॐ भागिने स्वाहा। ४५१. ॐ भागकराय स्वाहा। ४५२. ॐ लघवे

स्वाहा। ४५३. ॐ उत्सङ्गाय स्वाहा। ४५४. ॐ महाङ्गाय स्वाहा। ४५५. ॐ महागर्भपरायणाय स्वाहा। ४५६. ॐ कृष्णवर्णाय स्वाहा। ४५७. ॐ सुवर्णाय स्वाहा। ४५८. ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय स्वाहा। ४५९. ॐ महापादाय स्वाहा। ४६०. ॐ महाहस्ताय स्वाहा। ४६१. ॐ महाकायाय स्वाहा। ४६२. ॐ महायशसे स्वाहा। ४६३. ॐ महामूर्ध्ने स्वाहा। ४६४. ॐ महामात्राय स्वाहा। ४६५. ॐ महानेत्राय स्वाहा। ४६६. ॐ निशालयाय स्वाहा। ४६७. ॐ महान्तकाय स्वाहा। ४६८. ॐ महाकर्णाय स्वाहा। ४६९. ॐ महोष्ठाय स्वाहा। ४७०. ॐ महाहनवे स्वाहा। ४७१. ॐ महानाशाय स्वाहा। ४७२. ॐ महाकम्बवे स्वाहा। ४७३. ॐ महाग्रीवाय स्वाहा। ४७४. ॐ श्मशानभाजे स्वाहा। ४७५. ॐ महावक्षसे स्वाहा। ४७६. ॐ महोरस्काय स्वाहा। ४७७. ॐ अन्तरात्मने स्वाहा। ४७८. ॐ मृगालयाय स्वाहा। ४७९. ॐ लम्बनाय स्वाहा। ४८०. ॐ लम्बितोष्ठाय स्वाहा। ४८१. ॐ महामायाय स्वाहा। ४८२. ॐ पयोनिधये स्वाहा। ४८३. ॐ महादन्ताय स्वाहा। ४८४. ॐ महादंष्ट्राय स्वाहा। ४८५. ॐ महाजिह्वाय स्वाहा। ४८६. ॐ महामुखाय स्वाहा। ४८७. ॐ महानखाय स्वाहा। ४८८. ॐ महारोम्णे स्वाहा। ४८९. ॐ महाकेशाय स्वाहा। ४९०. ॐ महाजटाय स्वाहा। ४९१. ॐ प्रसन्नाय स्वाहा। ४९२. ॐ प्रसादाय स्वाहा। ४९३. ॐ प्रत्ययाय स्वाहा। ४९४. ॐ गिरिसाधनाय स्वाहा। ४९५. ॐ स्नेहनाय स्वाहा। ४९६. ॐ अस्नेहनाय स्वाहा। ४९७. ॐ अजिताय स्वाहा। ४९८. ॐ महामुनये स्वाहा। ४९९. ॐ वृक्षा-काराय स्वाहा। ५००. ॐ वृक्षकेतवे स्वाहा। ५०१. ॐ अनलाय स्वाहा। ५०२. ॐ वायुवाहनाय स्वाहा। ५०३. ॐ गण्डनिले स्वाहा। ५०४. ॐ मेरुधाम्ने स्वाहा। ५०५. ॐ देवाधिपतये स्वाहा। ५०६. ॐ अथर्वशीर्षाय स्वाहा। ५०७. ॐ सामास्याय स्वाहा। ५०८. ॐ ऋक्सहस्रामितेक्षणाय स्वाहा। ५०९. ॐ यजुःपादभुजाय स्वाहा। ५१०. ॐ गुह्याय स्वाहा। ५११. ॐ प्रकाशाय स्वाहा। ५१२. ॐ जङ्गमाय स्वाहा। ५१३. ॐ अमोघार्थाय स्वाहा। ५१४. ॐ प्रसादाय स्वाहा। ५१५. ॐ आभिगम्याय स्वाहा। ५१६. ॐ सुदर्शनाय स्वाहा। ५१७. ॐ उपकाराय स्वाहा। ५१८. ॐ प्रियाय स्वाहा। ५१९. ॐ सर्वाय स्वाहा। ५२०. ॐ कनकाय स्वाहा। ५२१. ॐ काञ्चनच्छवये स्वाहा। ५२२. ॐ नाभये स्वाहा। ५२३. ॐ नन्दिकराय स्वाहा। ५२४. ॐ भावाय स्वाहा। ५२५. ॐ

पुष्करस्थपतये स्वाहा। ५२६. ॐ स्थिराय स्वाहा। ५२७. ॐ द्वादशाय स्वाहा। ५२८. ॐ त्रासनाय स्वाहा। ५२९. ॐ आद्याय स्वाहा। ५३०. ॐ यज्ञाय स्वाहा। ५३१. ॐ यज्ञसमाहिताय स्वाहा। ५३२. ॐ नक्ताय स्वाहा। ५३३. ॐ कलये स्वाहा। ५३४. ॐ कालाय स्वाहा। ५३५. ॐ मकराय स्वाहा। ५३६. ॐ कलपूजिताय स्वाहा। ५३७. ॐ सगणाय स्वाहा। ५३८. ॐ गणकराय स्वाहा। ५३९. ॐ भूतवाहनसारथये स्वाहा। ५४०. ॐ भस्मशयाय स्वाहा। ५४१. ॐ भस्मगोप्त्रे स्वाहा। ५४२. ॐ भस्मभूताय स्वाहा। ५४३. ॐ तरवे स्वाहा। ५४४. ॐ गणाय स्वाहा। ५४५. ॐ लोकपाय स्वाहा। ५४६. ॐ अलोकाय स्वाहा। ५४७. ॐ महात्मने स्वाहा। ५४८. ॐ सर्वपूजिताय स्वाहा। ५४९. ॐ शुक्लाय स्वाहा। ५५०. ॐ त्रिशुक्लाय स्वाहा। ५५१. ॐ सम्पन्नाय स्वाहा। ५५२. ॐ शुचये स्वाहा। ५५३. ॐ भूतनिषेविताय स्वाहा। ५५४. ॐ आश्रमस्थाय स्वाहा। ५५५. ॐ क्रियावस्थाय स्वाहा। ५५६. ॐ विश्वकर्मपतये स्वाहा। ५५७. ॐ वराय स्वाहा। ५५८. ॐ विशालशाखाय स्वाहा। ५५९. ॐ ताम्रोष्ठाय स्वाहा। ५६०. ॐ अम्बुजाय स्वाहा। ५६१. ॐ सुनिश्चलाय स्वाहा। ५६२. ॐ कपिलाय स्वाहा। ५६३. ॐ कपिशाय स्वाहा। ५६४. ॐ शुक्लाय स्वाहा। ५६५. ॐ आयुषे स्वाहा। ५६६. ॐ पराय स्वाहा। ५६७. ॐ अपराय स्वाहा। ५६८. ॐ गन्धर्वाय स्वाहा। ५६९. ॐ अदितये स्वाहा। ५७०. ॐ तार्क्ष्याय स्वाहा। ५७१. ॐ सुविज्ञेयाय स्वाहा। ५७२. ॐ सुशारदाय स्वाहा। ५७३. ॐ परश्वधायुधाय स्वाहा। ५७४. ॐ देवाय स्वाहा। ५७५. ॐ अनुकारिणे स्वाहा। ५७६. ॐ सुवान्धवाय स्वाहा। ५७७. ॐ तुम्बवीणाय स्वाहा। ५७८. ॐ महाक्रोधाय स्वाहा। ५७९. ॐ ऊर्ध्वरेतसे स्वाहा। ५८०. ॐ जलेशयाय स्वाहा। ५८१. ॐ उग्राय स्वाहा। ५८२. ॐ वंशकराय स्वाहा। ५८३. ॐ वंशाय स्वाहा। ५८४. ॐ वंशनादाय स्वाहा। ५८५. ॐ आनन्दिताय स्वाहा। ५८६. ॐ सर्वाङ्गरूपाय स्वाहा। ५८७. ॐ मायाविने स्वाहा। ५८८. ॐ सुहृदाय स्वाहा। ५८९. ॐ अनिलाय स्वाहा। ५९०. ॐ अनलाय स्वाहा। ५९१. ॐ बन्धनाय स्वाहा। ५९२. ॐ बन्धकर्त्रे स्वाहा। ५९३. ॐ सुबन्धनविमोचनाय स्वाहा। ५९४. ॐ सयज्ञारये स्वाहा। ५९५. ॐ सकामारये स्वाहा। ५९६. ॐ महादंष्ट्राय स्वाहा। ५९७. ॐ महायुधाय स्वाहा। ५९८. ॐ बहुधानिन्दिताय स्वाहा। ५९९. ॐ शर्वाय स्वाहा।

६००. ॐ शङ्कराय स्वाहा। ६०१. ॐ शङ्कराय स्वाहा। ६०२. ॐ अधनाय स्वाहा। ६०३. ॐ अमरेशाय स्वाहा। ६०४. ॐ महादेवाय स्वाहा। ६०५. ॐ विश्वदेवाय स्वाहा। ६०६. ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा। ६०७. ॐ अहिर्बुध्न्याय स्वाहा। ६०८. ॐ अनिलाभाय स्वाहा। ६०९. ॐ चेकिताय स्वाहा। ६१०. ॐ हविषे स्वाहा। ६११. ॐ अजैकपादे स्वाहा। ६१२. ॐ कपालिने स्वाहा। ६१३. ॐ त्रिशङ्कवे स्वाहा। ६१४. ॐ अजिताय स्वाहा। ६१५. ॐ शिवाय स्वाहा। ६१६. ॐ धन्वन्तरये स्वाहा। ६१७. ॐ धूमकेतवे स्वाहा। ६१८. ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ६१९. ॐ वैश्रवणाय स्वाहा। ६२०. ॐ धात्रे स्वाहा। ६२१. ॐ शक्राय स्वाहा। ६२२. ॐ विष्णवे स्वाहा। ६२३. ॐ भिन्नाय स्वाहा। ६२४. ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा। ६२५. ॐ ध्रुवाय स्वाहा। ६२६. ॐ धराय स्वाहा। ६२७. ॐ प्रभावाय स्वाहा। ६२८. ॐ सवगर्वाय स्वाहा। ६२९. ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ६३०. ॐ सवित्रे स्वाहा। ६३१. ॐ रवये स्वाहा। ६३२. ॐ उषङ्गवे स्वाहा। ६३३. ॐ विधात्रे स्वाहा। ६३४. ॐ मान्धात्रे स्वाहा। ६३५. ॐ भूतभावनाय स्वाहा। ६३६. ॐ विभवे स्वाहा। ६३७. ॐ वर्णविभाविने स्वाहा। ६३८. ॐ सर्वकामगुणावहाय स्वाहा। ६३९. ॐ पद्मनाभाय स्वाहा। ६४०. ॐ महागर्भाय स्वाहा। ६४१. ॐ चन्द्रवक्त्राय स्वाहा। ६४२. ॐ अनिलाय स्वाहा। ६४३. ॐ अनलाय स्वाहा। ६४४. ॐ बलवते स्वाहा। ६४५. ॐ उपशान्ताय स्वाहा। ६४६. ॐ पुराणाय स्वाहा। ६४७. ॐ पुण्यचञ्चवे स्वाहा। ६४८. ॐ इत्यै स्वाहा। ६४९. ॐ कुरुकर्त्रे स्वाहा। ६५०. ॐ कुरुवासिने स्वाहा। ६५१. ॐ पुरुहूताय स्वाहा। ६५२. ॐ गुणौषधाय स्वाहा। ६५३. ॐ सर्वाशयाय स्वाहा। ६५४. ॐ दर्भचारिणे स्वाहा। ६५५. ॐ सर्वप्राणिपतये स्वाहा। ६५६. ॐ देवदेवाय स्वाहा। ६५७. ॐ सुखासक्ताय स्वाहा। ६५८. ॐ सदसते स्वाहा। ६५९. ॐ सर्वरत्नविदे स्वाहा। ६६०. ॐ कैलाशगिरिवासिने स्वाहा। ६६१. ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय स्वाहा। ६६२. ॐ कूलहारिणे स्वाहा। ६६३. ॐ कूलकर्त्रे स्वाहा। ६६४. ॐ बहुविद्याय स्वाहा। ६६५. ॐ बहुप्रदाय स्वाहा। ६६६. ॐ वणिजाय स्वाहा। ६६७. ॐ वर्धकिने स्वाहा। ६६८. ॐ वृक्षाय स्वाहा। ६६९. ॐ बकुलाय स्वाहा। ६७०. ॐ चन्दनाय स्वाहा। ६७१. ॐ छन्दाय स्वाहा। ६७२. ॐ सारग्रीवाय स्वाहा। ६७३. ॐ महाजत्रवे स्वाहा। ६७४. ॐ अलोलाय स्वाहा। ६७५. ॐ

महौषधाय स्वाहा। ६७६. ॐ सिद्धार्थकारिणे स्वाहा। ६७७. ॐ छन्दोव्याकरणोत्तरसिद्धार्थाय स्वाहा। ६७८. ॐ सिंहनादाय स्वाहा। ६७९. ॐ सिंहद्रष्ट्राय स्वाहा। ६८०. ॐ सिंहगाय स्वाहा। ६८१. ॐ सिंहवाहनाय स्वाहा। ६८२. ॐ प्रभावात्मने स्वाहा। ६८३. ॐ जगत्कालस्थानाय स्वाहा। ६८४. ॐ लोकहिताय स्वाहा। ६८५. ॐ तरवे स्वाहा। ६८६. ॐ सारङ्गाय स्वाहा। ६८७. ॐ नवचक्राङ्गाय स्वाहा। ६८८. ॐ केतुमालिने स्वाहा। ६८९. ॐ सभायनाय स्वाहा। ६९०. ॐ भूतालयाय स्वाहा। ६९१. ॐ भूतपतये स्वाहा। ६९२. ॐ अहोरात्राय स्वाहा। ६९३. ॐ अनिन्दिताय स्वाहा। ६९४. ॐ सर्वभूतवाहत्रे स्वाहा। ६९५. ॐ सर्वभूतनिलयाय स्वाहा। ६९६. ॐ विभवे स्वाहा। ६९७. ॐ भवाय स्वाहा। ६९८. ॐ अमोघाय स्वाहा। ६९९. ॐ संयताय स्वाहा। ७००. ॐ अश्वाय स्वाहा। ७०१. ॐ भोजनाय स्वाहा। ७०२. ॐ प्राणधारणाय स्वाहा। ७०३. ॐ धृतिमते स्वाहा। ७०४. ॐ मतिमते स्वाहा। ७०५. ॐ दक्षाय स्वाहा। ७०६. ॐ सत्कृताय स्वाहा। ७०७. ॐ युगाधिपाय स्वाहा। ७०८. ॐ गोपालाय स्वाहा। ७०९. ॐ गोपतये स्वाहा। ७१०. ॐ ग्रामाय स्वाहा। ७११. ॐ गोचर्मवसनाय स्वाहा। ७१२. ॐ हरये स्वाहा। ७१३. ॐ हिरण्यबाहवे स्वाहा। ७१४. ॐ प्रवेशिनां गुहापालाय स्वाहा। ७१५. ॐ प्रकृष्टारये स्वाहा। ७१६. ॐ महाहर्षाय स्वाहा। ७१७. ॐ जितकामाय स्वाहा। ७१८. ॐ जितेन्द्रियाय स्वाहा। ७१९. ॐ गान्धाराय स्वाहा। ७२०. ॐ सुवासाय स्वाहा। ७२१. ॐ तपःसक्ताय स्वाहा। ७२२. ॐ रतये स्वाहा। ७२३. ॐ नराय स्वाहा। ७२४. ॐ महागीताय स्वाहा। ७२५. ॐ महानृत्याय स्वाहा। ७२६. ॐ अप्सरोगणसेविताय स्वाहा। ७२७. ॐ महाकेतवे स्वाहा। ७२८. ॐ महाधातवे स्वाहा। ७२९. ॐ नैकसानुचराय स्वाहा। ७३०. ॐ चलाय स्वाहा। ७३१. ॐ आवेदनीयाय स्वाहा। ७३२. ॐ आदेशाय स्वाहा। ७३३. ॐ सर्वगन्धसुखाबहाय स्वाहा। ७३४. ॐ तोरणाय स्वाहा। ७३५. ॐ तारणाय स्वाहा। ७३६. ॐ वाताय स्वाहा। ७३७. ॐ परिधिने स्वाहा। ७३८. ॐ पतिखेचराय स्वाहा। ७३९. ॐ संयोगवर्धनाय स्वाहा। ७४०. ॐ गुणाधिकवृद्धाय स्वाहा। ७४१. ॐ अधिकवृद्धाय स्वाहा। ७४२. ॐ नित्यात्मसहाय स्वाहा। ७४३. ॐ देवासुरपतये स्वाहा। ७४४. ॐ पत्ये स्वाहा। ७४५. ॐ युक्ताय स्वाहा। ७४६. ॐ युक्तबाहवे स्वाहा। ७४७. ॐ दिविसुपर्वदेवाय

स्वाहा। ७४८. ॐ आषाढाय स्वाहा। ७४९. ॐ सुषाढाय स्वाहा। ७५०. ॐ ध्रुवाय स्वाहा। ७५१. ॐ हरिणाय स्वाहा। ७५२. ॐ हराय स्वाहा। ७५३. ॐ आवर्तमानवपुषे स्वाहा। ७५४. ॐ वसुश्रेष्ठाय स्वाहा। ७५५. ॐ महापथाय स्वाहा। ७५६. ॐ विमर्षशिरोहारिणये स्वाहा। ७५७. ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय स्वाहा। ७५८. ॐ अक्षरयोगिने स्वाहा। ७५९. ॐ सर्वयोगिने स्वाहा। ७६०. ॐ महाबलाय स्वाहा। ७६१. ॐ समाम्नायाय स्वाहा। ७६२. ॐ असमाम्नायाय स्वाहा। ७६३. ॐ तीर्थ-देवाय स्वाहा। ७६४. ॐ महारथाय स्वाहा। ७६५. ॐ निर्जीवाय स्वाहा। ७६६. ॐ जीवनाय स्वाहा। ७६७. ॐ मन्त्राय स्वाहा। ७६८. ॐ शुभाक्षाय स्वाहा। ७६९. ॐ बहुकर्कशाय स्वाहा। ७७०. ॐ रत्नप्रभूताय स्वाहा। ७७१. ॐ रत्नाङ्गाय स्वाहा। ७७२. ॐ महार्णवनिपानविदे स्वाहा। ७७३. ॐ मूलाय स्वाहा। ७७४. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ७७५. ॐ अमृताय स्वाहा। ७७६. ॐ व्यक्ताव्यक्ताय स्वाहा। ७७७. ॐ तपोनिधय स्वाहा। ७७८. ॐ आरोहणाय स्वाहा। ७७९. ॐ अधिरोधाय स्वाहा। ७८०. ॐ शीलधारिणे स्वाहा। ७८१. ॐ महायशसे स्वाहा। ७८२. ॐ सेनाकल्पाय स्वाहा। ७८३. ॐ महाकल्पाय स्वाहा। ७८४. ॐ योगाय स्वाहा। ७८५. ॐ युगकराय स्वाहा। ७८६. ॐ हरये स्वाहा। ७८७. ॐ युगरूपाय स्वाहा। ७८८. ॐ महारूपाय स्वाहा। ७८९. ॐ महागहनाय स्वाहा। ७९०. ॐ वधाय स्वाहा। ७९१. ॐ न्यायनिर्वपणाय स्वाहा। ७९२. ॐ पादाय स्वाहा। ७९३. ॐ पण्डिताय स्वाहा। ७९४. ॐ अचलोपमाय स्वाहा। ७९५. ॐ बहुमालाय स्वाहा। ७९६. ॐ महामालाय स्वाहा। ७९७. ॐ शशिहरसुलोचनाय स्वाहा। ७९८. ॐ विस्तारलवणकूपाय स्वाहा। ७९९. ॐ त्रियुगाय स्वाहा। ८००. ॐ सफलोदयाय स्वाहा। ८०१. ॐ त्रिनेत्राय स्वाहा। ८०२. ॐ विषाणाङ्गाय स्वाहा। ८०३. ॐ मणिविद्धाय स्वाहा। ८०४. ॐ जटाधराय स्वाहा। ८०५. ॐ विन्दवे स्वाहा। ८०६. ॐ विसर्गाय स्वाहा। ८०७. ॐ सुमुखाय स्वाहा। ८०८. ॐ शराय स्वाहा। ८०९. ॐ सर्वायुधाय स्वाहा। ८१०. ॐ सहाय स्वाहा। ८११. ॐ निवेदनाय स्वाहा। ८१२. ॐ सुखजाताय स्वाहा। ८१३. ॐ सुगन्धाराय स्वाहा। ८१४. ॐ महाधनुषे स्वाहा। ८१५. ॐ गन्धपालिभगवते स्वाहा। ८१६. ॐ सर्वर्मोत्थानाय स्वाहा। ८१७. ॐ मन्थानबहुलबाहवे स्वाहा। ८१८. ॐ सकलाय स्वाहा। ८१९. ॐ

सर्वलोचनाय स्वाहा। ८२०. ॐ तलस्तालाय स्वाहा। ८२१. ॐ करस्थ-लिने स्वाहा। ८२२. ॐ ऊर्ध्वसंहननाय स्वाहा। ८२३. ॐ महते स्वाहा। ८२४. ॐ छत्राय स्वाहा। ८२५. ॐ सुच्छत्राय स्वाहा। ८२६. ॐ विख्यातलोकाय स्वाहा। ८२७. ॐ सर्वाश्रयक्रमाय स्वाहा। ८२८. ॐ मुण्डाय स्वाहा। ८२९. ॐ विरूताय स्वाहा। ८३०. ॐ विकृताय स्वाहा। ८३१. ॐ दण्डिने स्वाहा। ८३२. ॐ कुण्डिने स्वाहा। ८३३. ॐ विकुर्वाणाय स्वाहा। ८३४. ॐ हर्यक्षाप स्वाहा। ८३५. ॐ ककुभाय स्वाहा। ८३६. ॐ वज्रिणे स्वाहा। ८३७. ॐ शतजिह्वाय स्वाहा। ८३८. ॐ सहस्त्रपदे स्वाहा। ८३९. ॐ सहस्त्रमूर्ध्ने स्वाहा। ८४०. ॐ देवेन्द्राय स्वाहा। ८४१. ॐ सर्वदेवमायाय स्वाहा। ८४२. ॐ गुरवे स्वाहा। ८४३. ॐ ओं सहस्त्रबाहवे स्वाहा। ८४४. ॐ सर्वाङ्गाय स्वाहा। ८४५. ॐ शरण्याय स्वाहा। ८४६. ॐ सर्वलोककृते स्वाहा। ८४७. ॐ पवित्राय स्वाहा। ८४८. ॐ त्रिककुन्मन्त्राय स्वाहा। ८४९. ॐ कनिष्ठाय स्वाहा। ८५०. ॐ कृष्णपिंगलाय स्वाहा। ८५१. ॐ ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रे स्वाहा। ८५२. ॐ शतघ्नीपाशशक्तिमते स्वाहा। ८५३. ॐ पद्मगर्भाय स्वाहा। ८५४. ॐ महागर्भाय स्वाहा। ८५५. ॐ ब्रह्मगर्भाय स्वाहा। ८५६. ॐ जलजोद्भवाय स्वाहा। ८५७. ॐ गभस्तये स्वाहा। ८५८. ॐ ब्रह्मकृते स्वाहा। ८५९. ॐ ब्रह्मिणे स्वाहा। ८६०. ॐ ब्रह्मविदे स्वाहा। ८६१. ॐ ब्राह्मणाय स्वाहा। ८६२. ॐ गतये स्वाहा। ८६३. ॐ अनन्तरूपाय स्वाहा। ८६४. ॐ नैकात्मने स्वाहा। ८६५. ॐ स्वयंभुवतिग्मतेजसे स्वाहा। ८६६. ॐ ऊर्ध्व-गात्मने स्वाहा। ८६७. ॐ पशुपतये स्वाहा। ८६८. ॐ घातरंहसे स्वाहा। ८६९. ॐ मनोजवाय स्वाहा। ८७०. ॐ चन्दनिने स्वाहा। ८७१. ॐ पद्मनालाग्राय स्वाहा। ८७२. ॐ सुरभ्युत्तारणाय स्वाहा। ८७३. ॐ नराय स्वाहा। ८७४. ॐ कर्णिकारमहास्त्रग्विणे स्वाहा। ८७५. ॐ नीलमौलये स्वाहा। ८७६. ॐ पिनाकधृषे स्वाहा। ८७७. ॐ उमापतये स्वाहा। ८७८. ॐ उमाकान्ताय स्वाहा। ८७९. ॐ जाह्नवीधृषे स्वाहा। ८८०. ॐ उमाधवाय स्वाहा। ८८१. ॐ वरवराहाय स्वाहा। ८८२. ॐ वरदाय स्वाहा। ८८३. ॐ वरेण्याय स्वाहा। ८८४. ॐ सुमहास्वनाय स्वाहा। ८८५. ॐ महाप्रसादाय स्वाहा। ८८६. ॐ दमनाय स्वाहा। ८८७. ॐ शत्रुघ्ने स्वाहा। ८८८. ॐ श्वेतपिङ्गलाय स्वाहा। ८८९. ॐ पीतात्मने स्वाहा। ८९०. ॐ परमात्मने स्वाहा। ८९१. ॐ प्रयतात्मने स्वाहा।

८९२. ॐ प्रधानधृषे स्वाहा। ८९३. ॐ सर्वपार्श्वमुखाय स्वाहा। ८९४. ॐ त्र्यक्षाय स्वाहा। ८९५. ॐ सर्वधारणवराय स्वाहा। ८९६. ॐ चराचरात्मने स्वाहा। ८९७. ॐ सूक्ष्मात्मने स्वाहा। ८९८. ॐ अमृतगो-वृषेश्वराय स्वाहा। ८९९. ॐ साध्यर्षये स्वाहा। ९००. ॐ आदित्यवसवे स्वाहा। ९०१. ॐ विवस्वत्सवित्रमृताय स्वाहा। ९०२. ॐ व्यासाय स्वाहा। ९०३. ॐ सर्वसुसंक्षेपविस्तराय स्वाहा। ९०४. ॐ पर्ययनराय स्वाहा। ९०५. ॐ क्रतवे स्वाहा। ९०६. ॐ संवत्सराय स्वाहा। ९०७. ॐ मासाय स्वाहा। ९०८. ॐ पक्षाय स्वाहा। ९०९. ॐ संख्यासमापनाय स्वाहा। ९१०. ॐ कलायै स्वाहा। ९११. ॐ काष्ठायै स्वाहा। ९१२. ॐ लवेभ्यः स्वाहा। ९१३. ॐ मात्राभ्यः स्वाहा। ९१४. ॐ मुहूर्ताहः क्षपाभ्यः स्वाहा। ९१५. ॐ क्षणेभ्यः स्वाहा। ९१६. ॐ विश्वक्षेत्राय स्वाहा। ९१७. ॐ प्रजाबीजाय स्वाहा। ९१८. ॐ लिङ्गाय स्वाहा। ९१९. ॐ आद्यनिर्गमाय स्वाहा। ९२०. ॐ सते स्वाहा। ९२१. ॐ असते स्वाहा। ९२२. ॐ व्यक्ताय स्वाहा। ९२३. ॐ अव्यक्ताय स्वाहा। ९२४. ॐ पित्रे स्वाहा। ९२५. ॐ मात्रे स्वाहा। ९२६. ॐ पितामहाय स्वाहा। ९२७. ॐ स्वर्ग-द्वाराय स्वाहा। ९२८. ॐ प्रजाद्वाराय स्वाहा। ९२९. ॐ मोक्षद्वाराय स्वाहा। ९३०. ॐ त्रिविष्टपाय स्वाहा। ९३१. ॐ निर्वाणाय स्वाहा। ९३२. ॐ ह्लादनाय स्वाहा। ९३३. ॐ ब्रह्मलोकाय स्वाहा। ९३४. ॐ परागतये स्वाहा। ९३५. ॐ देवासुरविनिर्मात्रे स्वाहा। ९३६. ॐ देवासुरपरायणाय स्वाहा। ९३७. ॐ देवासुरगुरवे स्वाहा। ९३८. ॐ देवाय स्वाहा। ९३९. ॐ देवासुरनमस्कृताय स्वाहा। ९४०. ॐ देवासुरमहामात्राय स्वाहा। ९४१. ॐ देवासुरगणाश्रयाय स्वाहा। ९४२. ॐ देवासुरगणाध्यक्षाय स्वाहा। ९४३. ॐ देवासुरगणाग्रण्ये स्वाहा। ९४४. ॐ देवातिदेवाय स्वाहा। ९४५. ॐ देवर्षये स्वाहा। ९४६. ॐ देवासुरवरप्रदाय स्वाहा। ९४७. ॐ देवासुरेश्वराय स्वाहा। ९४८. ॐ विश्वाय स्वाहा। ९४९. ॐ देवासुरमहेश्वराय स्वाहा। ९५०. ॐ सर्वदेवमयाय स्वाहा। ९५१. ॐ अचिन्त्याय स्वाहा। ९५२. ॐ देवात्मने स्वाहा। ९५३. ॐ आत्मसम्भवाय स्वाहा। ९५४. ॐ उद्भिदे स्वाहा। ९५५. ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा। ९५६. ॐ वैद्याय स्वाहा। ९५७. ॐ विरजाय स्वाहा। ९५८. ॐ नीरजाय स्वाहा। ९५९. ॐ अमराय स्वाहा। ९६०. ॐ ईड्याय स्वाहा। ९६१. ॐ हस्तीश्वराय स्वाहा। ९६२. ॐ व्याघ्राय स्वाहा। ९६३. ॐ देवसिंहाय

स्वाहा। ९६४. ॐ नरर्षभाय स्वाहा। ९६५. ॐ विबुधाय स्वाहा। ९६६. ॐ अग्रवराय स्वाहा। ९६७. ॐ सूक्ष्माय स्वाहा। ९६८. ॐ सर्वदेवाय स्वाहा। ९६९. ॐ तपोमयाय स्वाहा। ९७०. ॐ सुयुक्ताय स्वाहा। ९७१. ॐ शोभनाय स्वाहा। ९७२. ॐ वज्रिणे स्वाहा। ९७३. ॐ प्रासानां प्रभवाय स्वाहा। ९७४. ॐ अव्याय स्वाहा। ९७५. ॐ गुहाय स्वाहा। ९७६. ॐ कान्ताय स्वाहा। ९७७. ॐ निजसर्गाय स्वाहा। ९७८. ॐ पवित्राय स्वाहा। ९७९. ॐ सर्वपावनाय स्वाहा। ९८०. ॐ शृङ्गिणे स्वाहा। ९८१. ॐ शृङ्गप्रियाय स्वाहा। ९८२. ॐ बभ्रवे स्वाहा। ९८३. ॐ राजराजाय स्वाहा। ९८४. ॐ निरानयाय स्वाहा। ९८५. ॐ अभिरामाय स्वाहा। ९८६. ॐ सुरगणाय स्वाहा। ९८७. ॐ विरामाय स्वाहा। ९८८. ॐ सर्वसाधनाय स्वाहा। ९८९. ॐ ललाटाक्षाय स्वाहा। ९९०. ॐ विश्वदेवाय स्वाहा। ९९१. ॐ हरिणाय स्वाहा। ९९२. ॐ ब्रह्मवर्चसे स्वाहा। ९९३. ॐ स्थावरपतये स्वाहा। ९९४. ॐ नियमेन्द्रियवर्धनाय स्वाहा। ९९५. ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा। ९९६. ॐ सिद्धभूतार्थाय स्वाहा। ९९७. ॐ अचिन्त्याय स्वाहा। ९९८. ॐ सत्यव्रताय स्वाहा। ९९९. ॐ शुचये स्वाहा। १०००. ॐ व्रताधिपाय स्वाहा। १००१. ॐ पराय स्वाहा। १००२. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। १००३. ॐ भक्तानां परमगतये स्वाहा। १००४. ॐ विमुक्ताय स्वाहा। १००५. ॐ मुक्ततेजसे स्वाहा। १००६. ॐ श्रीमते स्वाहा। १००७. ॐ श्रीवर्धनाय स्वाहा। १००८. ॐ जगते स्वाहा।

गायत्रीमन्त्रस्य बृहन्न्यासः

प्रणवन्यासः—विनियोगः—ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवताः, शरीरशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मऋषये नमः—शिरसि॥ १॥ ॐ गायत्रीछन्दसे नमः—मुखे॥ २॥ ॐ परमात्मदेवतायै नमः—हृदये॥ ३॥ इति प्रणवन्यासः।

व्याहृति ऋष्यादिन्यासः—विनियोगः—ॐ सप्तव्याहृतीनां जमदग्नि-भारद्वाजात्रि-गौतम-कश्यप-विश्वामित्रवसिष्ठा ऋषयः गायत्र्युष्णि-गनुष्टुब्बृहती-पंक्तित्रिष्टुब्ज-गत्यश्छन्दांसि अग्निवायु-सूर्य-बृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवा-देवताः, न्यासे जपे च विनियोगः।

ॐ जमदग्नि-भारद्वाजात्रि-गौतम-कश्यप-विश्वामित्र-वसिष्ठ-ऋषिभ्यो नमः—शिरसि॥ १॥ ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती-पंक्तित्रिष्टुब्जगती-छन्दोभ्यो नमः—मुखे॥ २॥ ॐ अग्नि-वायु-सूर्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेव-देवताभ्यो नमः—हृदये॥ ३॥ इति व्याहृति-ऋष्यादिन्यासः।

गायत्र्या ऋष्यादिन्यासः—विनियोगः—ॐ गायत्र्या विश्वामित्र-ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता, न्यासे जपे च विनियोगः।

ॐ विश्वामित्रऋषये नमः—शिरसि॥ १॥ ॐ गायत्रीछन्दसे नमः—मुखे॥ २॥ ॐ सवितृदेवतायै नमः—हृदये॥ ३॥ इति गायत्र्या-ऋष्यादिन्यासः।

शिरस ऋष्यादिन्यासः—विनियोगः—ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः ब्रह्माग्नि-वायुसूर्या देवताः, प्राणायामे विनियोगः।

ॐ प्रजापतिऋषये नमः—शिरसि॥ १॥ ॐ यजुश्छन्दसे नमः—मुखे॥ २॥ ॐ ब्रह्माग्नि-वायु-सूर्य-देवताभ्यो नमः—हृदये॥ ३॥ इति शिरस ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः—ॐ भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥ ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिन्यासः—ॐ भूः हृदयाय नमः॥ १॥ ॐ भुवः शिरसे स्वाहा॥ २॥ ॐ स्वः शिखायै वषट्॥ ३॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् कवचाय हुम्॥ ४॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्राभ्यां वौषट्॥ ५॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् अस्त्राय फट्॥ ६॥ इति हृदयादिन्यासः।

व्याहृतिन्यासः—ॐ भूः नमः—हृदये॥ १॥ ॐ भुवः नमः—मुखे॥ २॥ ॐ स्वः नमः—दक्षांसे॥ ३॥ ॐ महः नमः—वामांसे॥ ४॥ ॐ जनः नमः—दक्षिणोरौ॥ ५॥ ॐ तपः नमः—वामोरौ॥ ६॥ ॐ सत्यं नमः—जठरे॥ ७॥ इति व्याहृतिन्यासः।

गायत्र्यक्षरन्यासः—ॐ तत् नमः पादद्वयाङ्गुलिमूलयोः॥ १॥ ॐ सं नमः गुल्फयोः॥ २॥ ॐ विं नमः जानुनो॥ ३॥ ॐ तुं नमः पादमूलयोः॥ ४॥ ॐ वं नमः लिङ्गे॥ ५॥ ॐ रें नमः नाभौ॥ ६॥ ॐ णिं नमः हृदये॥ ७॥ ॐ यं नमः कण्ठे॥ ८॥ ॐ यं नमः हस्तद्वयाङ्गुलिमूलयोः॥ ९॥ ॐ गों नमः मणिबन्धयोः॥ १०॥ ॐ दें नमः कूर्परयोः॥ ११॥ ॐ वं नमः बाहुमूलयोः॥ १२॥ ॐ स्यं नमः आस्ये॥ १३॥ ॐ धीं नमः नासापुटयोः॥ १४॥ ॐ मं नमः कपोलयोः॥ १५॥ ॐ हिं नमः नेत्रयोः॥ १६॥ ॐ धिं नमः कर्णयोः॥ १७॥ ॐ यों नमः भ्रूमध्ये॥ १८॥ ॐ यों नमः मस्तके॥ १९॥ ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे॥ २०॥ ॐ प्रं नमः उत्तरवक्त्रे॥ २१॥ ॐ चों नमः दक्षिणवक्त्रे॥ २२॥ ॐ दं नमः पूर्ववक्त्रे॥ २३॥ ॐ यात् नमः ऊर्ध्ववक्त्रे॥ २४॥ इति गायत्र्यक्षरन्यासः।

गायत्रीपदन्यासः—ॐ तत् नमः शिरसि॥ १॥ ॐ सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये॥ २॥ ॐ वरेण्यं नमः नेत्रयोः॥ ३॥ ॐ भर्गो नमः मुखे॥ ४॥ ॐ देवस्य नमः कण्ठे॥ ५॥ ॐ धीमहि नमः हृदये॥ ६॥ ॐ धियो नमः नाभौ॥ ७॥ ॐ यो नमः गुह्ये॥ ८॥ ॐ नं नमः जानुनोः॥ ९॥ ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः॥ १०॥ ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि॥ ११॥ इति गायत्रीपदन्यासः।

गायत्र्याः न्यासः—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादिपादांगुलिपर्यन्तम्॥ १॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नमः हृदयादिनाभ्यन्तम्॥ २॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् नमः मूर्द्धादिहृदयान्तम्॥ ३॥ इति गायत्र्याः न्यासः।

गायत्र्याः षडङ्गन्यासः—ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः॥ १॥ ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा॥ २॥ ॐ भर्गो देवस्य रुद्राय शिखायै वषट्॥ ३॥ ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुम्॥ ४॥ ॐ धियो यो नः सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ५॥ ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट्॥ ६॥ इति गायत्र्याः षडङ्गन्यासः।

ध्यानम्

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशां पाशं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारबिन्दुयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

प्रधानाहुतिः

गायत्री यज्ञ नौ या ग्यारह दिन में सम्पन्न होता है। अतः आचार्य और ब्राह्मण निम्न गायत्री मन्त्र का उच्चारण करके कुण्ड में चौबीस लाख आहुति प्रदान करवायें—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात् स्वाहा॥

विशेष—गायत्री यज्ञादि के हवन में व्याहृति रहित गायत्री-मन्त्र से हवन करना चाहिए, ऐसा धर्मसिन्धु ग्रन्थ में लिखा है। यह प्रथा प्रायः सर्वत्र गायत्री-यज्ञादि के हवन में प्रचलित है।

गायत्रीसहस्रनामावल्या हवनम्

१. ॐ अचिन्त्यलक्षणायै स्वाहा। २. ॐ अव्यक्तायै स्वाहा। ३. ॐ अर्थमातृ-महेश्वर्यै स्वाहा। ४. ॐ अमृतार्णवमध्यस्थायै स्वाहा। ५. ॐ अजितायै स्वाहा। ६. ॐ अपराजितायै स्वाहा। ७. ॐ अणिमादिगुणाधारायै स्वाहा। ८. ॐ अर्कमण्डलसंस्थितायै स्वाहा। ९. ॐ अजरायै स्वाहा। १०. ॐ अजायै स्वाहा। ११. ॐ अपरायै स्वाहा। १२. ॐ अधर्मायै स्वाहा। १३. ॐ अक्षसूत्रधरायै स्वाहा। १४. ॐ अधरायै स्वाहा। १५. ॐ अकारादिक्षकारान्तायै स्वाहा। १६. ॐ अरिषड्वर्गभेदिन्यै स्वाहा। १७. ॐ अञ्जनादिप्रतीकाशायै स्वाहा। १८. ॐ अञ्जनाद्रिनिवासिन्यै स्वाहा। १९. ॐ अदित्यै स्वाहा। २०. ॐ अजपायै स्वाहा। २१. ॐ अविद्यायै स्वाहा। २२. ॐ अरविन्दनिभेक्षणायै स्वाहा। २३. ॐ अन्तर्बहिःस्थितायै स्वाहा। २४. ॐ अविद्याध्वंसिन्यै स्वाहा। २५. ॐ अन्तरात्मिकायै स्वाहा। २६. ॐ अजायै स्वाहा। २७. ॐ अजमुखावासायै स्वाहा। २८. ॐ अरविन्दनिभाननायै स्वाहा। २९. ॐ अर्धमात्रायै स्वाहा। ३०. ॐ अर्थदानज्ञायै स्वाहा। ३१. ॐ अरिमण्डलमर्दिन्यै स्वाहा। ३२. ॐ असुरघ्न्यै स्वाहा। ३३. ॐ अमावास्यायै स्वाहा। ३४. ॐ अलक्ष्मीघ्नन्त्यै स्वाहा।

३५. ॐ अजार्चितायै स्वाहा। ३६. ॐ आदिलक्ष्म्यै स्वाहा। ३७. ॐ आदिशक्त्यै स्वाहा। ३८. ॐ आकृत्यै स्वाहा। ३९. ॐ आयताननायै स्वाहा। ४०. ॐ आदित्यपदवीचारायै स्वाहा। ४१. ॐ आदित्यपरि-सेवितायै स्वाहा। ४२. ॐ आचार्यायै स्वाहा। ४३. ॐ आवर्तनायै स्वाहा। ४४. ॐ आचारायै स्वाहा। ४५. ॐ आदिमूर्तिनिवासिन्यै स्वाहा। ४६. ॐ आग्नेय्यै स्वाहा। ४७. ॐ आमये स्वाहा। ४८. ॐ आद्यायै स्वाहा। ४९. ॐ आराध्यायै स्वाहा। ५०. ॐ आसनस्थितायै स्वाहा। ५१. ॐ आधार-निलयायै स्वाहा। ५२. ॐ आधारायै स्वाहा। ५३. ॐ आकाशान्त-निवासिन्यै स्वाहा। ५४. ॐ आद्याक्षरसमायुक्तायै स्वाहा। ५५. ॐ अन्तराकाशरूपिण्यै स्वाहा। ५६. ॐ आदित्यमण्डलगतायै स्वाहा। ५७. ॐ आन्तरध्वान्तनाशिन्यै स्वाहा। ५८. ॐ इन्दिरायै स्वाहा। ५९. ॐ इष्टदायै स्वाहा। ६०. ॐ इष्टायै स्वाहा। ६१. ॐ इन्दीवरनिभेक्षणायै स्वाहा। ६२. ॐ इरावर्त्यै स्वाहा। ६३. ॐ इन्द्रपदायै स्वाहा। ६४. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा। ६५. ॐ इन्दुरूपिण्यै स्वाहा। ६६. ॐ इक्षुकोदण्डसंयुक्तायै स्वाहा। ६७. ॐ इषुसन्धानकारिण्यै स्वाहा। ६८. ॐ इन्द्रनीलसमाकारायै स्वाहा। ६९. ॐ इडापिङ्गलरूपिण्यै स्वाहा। ७०. ॐ इन्द्राक्ष्यै स्वाहा। ७१. ॐ ईश्वरीदेव्यै स्वाहा। ७२. ॐ ईहात्रयविवर्जियायै स्वाहा। ७३. ॐ उमायै स्वाहा। ७४. ॐ उषायै स्वाहा। ७५. ॐ उडुनिभायै स्वाहा। ७६. ॐ उर्वारुकफलाननायै स्वाहा। ७७. ॐ उडुप्रभायै स्वाहा। ७८. ॐ उडुमत्यै स्वाहा। ७९. ॐ उडुपायै स्वाहा। ८०. ॐ उडुमध्यगायै स्वाहा। ८१. ॐ ऊर्ध्वायै स्वाहा। ८२. ॐ ऊर्ध्वकेश्यै स्वाहा। ८३. ॐ ऊर्ध्वाधोगतिभेदिन्यै स्वाहा। ८४. ॐ ऊर्ध्वबाहुप्रियायै स्वाहा। ८५. ॐ ऊर्मिमालावाग्ग्रन्थ-दायिन्यै स्वाहा। ८६. ॐ ऋतायै स्वाहा। ८७. ॐ ऋषये स्वाहा। ८८. ॐ ऋतुमत्यै स्वाहा। ८९. ॐ ऋषिदेवनमस्कृतायै स्वाहा। ९०. ॐ ऋग्वेदायै स्वाहा। ९१. ॐ ऋणहर्त्र्यै स्वाहा। ९२. ॐ ऋषिमण्डलचारिण्यै स्वाहा। ९३. ॐ ऋद्धिदायै स्वाहा। ९४. ॐ ऋजुमार्गस्थायै स्वाहा। ९५. ॐ ऋजुधर्मायै स्वाहा। ९६. ॐ ऋतुप्रदायै स्वाहा। ९७. ॐ ऋग्वेदनिलयायै स्वाहा। ९८. ॐ ऋज्व्यै स्वाहा। ९९. ॐ लुप्तधर्मप्रवर्तिन्यै स्वाहा। १००. ॐ लूतारिवरसंभूतायै स्वाहा। १०१. ॐ लूतादिविषहारिण्यै स्वाहा। १०२. ॐ एकाक्षरायै स्वाहा। १०३. ॐ एकमात्रायै स्वाहा। १०४. ॐ एकायै स्वाहा। १०५. ॐ एकैकनिष्ठितायै स्वाहा। १०६. ॐ ऐन्द्र्यै

स्वाहा। १०७. ॐ ऐरावतारूढायै स्वाहा। १०८. ॐ ऐहिकामुष्मिकप्रदायै स्वाहा। १०९. ॐ ओङ्कारायै स्वाहा। ११०. ॐ औषध्यै स्वाहा। १११. ॐ ओतायै स्वाहा। ११२. ॐ ओतप्रोतनिवासिन्यै स्वाहा। ११३. ॐ और्वायै स्वाहा। ११४. ॐ औषधसम्पन्नायै स्वाहा। ११५. ॐ औपासनफलप्रदायै स्वाहा। ११६. ॐ अण्डमध्यस्थिदेव्यै स्वाहा। ११७. ॐ आःकारमनु-रूपिण्यै स्वाहा। ११८. ॐ कात्यायन्यै स्वाहा। ११९. ॐ कालरात्र्यै स्वाहा। १२०. ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा। १२१. ॐ कामसुन्दर्यै स्वाहा। १२२. ॐ कमलायै स्वाहा। १२३. ॐ कामिन्यै स्वाहा। १२४. ॐ कान्तायै स्वाहा। १२५. ॐ कामदायै स्वाहा। १२६. ॐ कालकण्ठिन्यै स्वाहा। १२७. ॐ करिकुम्भस्तनभरायै स्वाहा। १२८. ॐ करबीर-सुवासिन्यै स्वाहा। १२९. ॐ कल्याण्यै स्वाहा। १३०. ॐ कुण्डलवत्यै स्वाहा। १३१. ॐ कुरुक्षेत्रनिवासिन्यै स्वाहा। १३२. ॐ कुरुविन्ददला-कारायै स्वाहा। १३३. ॐ कुण्डल्यै स्वाहा। १३४. ॐ कुमुदालयायै स्वाहा। १३५. ॐ कालजिह्वायै स्वाहा। १३६. ॐ करालास्यायै स्वाहा। १३७. ॐ कालिकायै स्वाहा। १३८. ॐ कालरूपिण्यै स्वाहा। १३९. ॐ कमनीयगुणायै स्वाहा। १४०. ॐ कान्त्यै स्वाहा। १४१. ॐ कलाधारायै स्वाहा। १४२. ॐ कुमुद्वत्यै स्वाहा। १४३. ॐ कौशिक्यै स्वाहा। १४४. ॐ कमलाकारायै स्वाहा। १४५. ॐ कामचारप्रभञ्जिन्यै स्वाहा। १४६. ॐ कौमार्यै स्वाहा। १४७. ॐ करुणापाङ्ग्यै स्वाहा। १४८. ॐ ककुवन्तायै स्वाहा। १४९. ॐ करिप्रियायै स्वाहा। १५०. ॐ केसर्यै स्वाहा। १५१. ॐ केशवनुतायै स्वाहा। १५२. ॐ कदम्बकुसुमप्रियायै स्वाहा। १५३. ॐ कालिन्द्यै स्वाहा। १५४. ॐ कालिकायै स्वाहा। १५५. ॐ काञ्च्यै स्वाहा। १५६. ॐ कलशोद्भवसंस्तुतायै स्वाहा। १५७. ॐ काममात्रे स्वाहा। १५८. ॐ क्रतुमत्यै स्वाहा। १५९. ॐ कामरूपायै स्वाहा। १६०. ॐ कृपावत्यै स्वाहा। १६१. ॐ कुमार्यै स्वाहा। १६२. ॐ कुण्डनिलयायै स्वाहा। १६३. ॐ किरात्यै स्वाहा। १६४. ॐ कीरवाहनायै स्वाहा। १६५. ॐ कैकेय्यै स्वाहा। १६६. ॐ कोकिलालापायै स्वाहा। १६७. ॐ केतक्यै स्वाहा। १६८. ॐ कुसुमप्रियायै स्वाहा। १६९. ॐ कमण्डलुधरायै स्वाहा। १७०. ॐ काल्यै स्वाहा। १७१. ॐ कर्मनिर्मूल-कारिण्यै स्वाहा। १७२. ॐ कलहंसगत्यै स्वाहा। १७३. ॐ कक्षायै स्वाहा। १७४. ॐ कृतकौतुकमङ्गलायै स्वाहा। १७५. ॐ कस्तूरीतिलकायै स्वाहा। १७६. ॐ

कम्राये स्वाहा। १७७. ॐ करीन्द्रगमनायै स्वाहा। १७८. ॐ कुह्वै स्वाहा। १७९. ॐ कर्पूरलेपनायै स्वाहा। १८०. ॐ कृष्णायै स्वाहा। १८१. ॐ कपिलायै स्वाहा। १८२. ॐ कुहराश्रयायै स्वाहा। १८३. ॐ कूटस्थायै स्वाहा। १८४. ॐ कुधरायै स्वाहा। १८५. ॐ कम्रायै स्वाहा। १८६. ॐ कुक्षिस्थाखिलविष्टपायै स्वाहा। १८७. ॐ खड्गखेटकरायै स्वाहा। १८८. ॐ खर्वायै स्वाहा। १८९. ॐ खेचर्यै स्वाहा। १९०. ॐ खगवाहनायै स्वाहा। १९१. ॐ खट्वाङ्गधारिण्यै स्वाहा। १९२. ॐ ख्यातायै स्वाहा। १९३. ॐ खगराजोपरिस्थितायै स्वाहा। १९४. ॐ खलघ्न्यै स्वाहा। १९५. ॐ खण्डितजरायै स्वाहा। १९६. ॐ खण्डाख्यानप्रदायिन्यै स्वाहा। १९७. ॐ खण्डेन्दुतिलकायै स्वाहा। १९८. ॐ गङ्गायै स्वाहा। १९९. ॐ गणेशगुहपूजितायै स्वाहा। २००. ॐ गायत्र्यै स्वाहा। २०१. ॐ गोमत्यै स्वाहा। २०२. ॐ गीतायै स्वाहा। २०३. ॐ गान्धार्यै स्वाहा। २०४. ॐ गानलोलुपायै स्वाहा। २०५. ॐ गौतम्यै स्वाहा। २०६. ॐ गामिन्यै स्वाहा। २०७. ॐ गाधायै स्वाहा। २०८. ॐ गन्धर्वाप्सरसेवितायै स्वाहा। २०९. ॐ गोविन्दचरणाक्रान्तायै स्वाहा। २१०. ॐ गुणत्रयविभावितायै स्वाहा। २११. ॐ गन्धर्व्यै स्वाहा। २१२. ॐ गह्वर्यै स्वाहा। २१३. ॐ गोत्रायै स्वाहा। २१४. ॐ गिरीशायै स्वाहा। २१५. ॐ गहनायै स्वाहा। २१६. ॐ गम्यै स्वाहा। २१७. ॐ गुहावासायै स्वाहा। २१८. ॐ गुणवत्यै स्वाहा। २१९. ॐ गुरुपापप्रणाशिन्यै स्वाहा। २२०. ॐ गुर्व्यै स्वाहा। २२१. ॐ गुणवत्यै स्वाहा। २२२. ॐ गुह्यायै स्वाहा। २२३. ॐ गोप्तव्यायै स्वाहा। २२४. ॐ गुणदायिन्यै स्वाहा। २२५. ॐ गिरिजायै स्वाहा। २२६. ॐ गुह्यमातङ्ग्यै स्वाहा। २२७. ॐ गरुडध्वजवल्लभायै स्वाहा। २२८. ॐ गर्वापहारिण्यै स्वाहा। २२९. ॐ गोदायै स्वाहा। २३०. ॐ गोकुलस्थायै स्वाहा। २३१. ॐ गदाधरायै स्वाहा। २३२. ॐ गोकर्णनिलयासक्तायै स्वाहा। २३३. ॐ गुह्यमण्डलवर्तिन्यै स्वाहा। २३४. ॐ धर्मदायै स्वाहा। २३५. ॐ धनदायै स्वाहा। २३६. ॐ घण्टायै स्वाहा। २३७. ॐ घोरदानवमर्दिन्यै स्वाहा। २३८. ॐ घृणिमन्त्रमय्यै स्वाहा। २३९. ॐ घोषायै स्वाहा। २४०. ॐ धनसंपातदायिन्यै स्वाहा। २४१. ॐ घण्टारवप्रियायै स्वाहा। २४२. ॐ घ्राणायै स्वाहा। २४३. ॐ घृणिसन्तुष्टिकारिण्यै स्वाहा। २४४. ॐ घनारिमण्डलायै स्वाहा। २४५. ॐ घूर्णायै स्वाहा। २४६. ॐ घृताच्यै स्वाहा। २४७. ॐ घनवेगिन्यै स्वाहा।

२४८. ॐ ज्ञानधातुमय्यै स्वाहा। २४९. ॐ चर्चायै स्वाहा। २५०. ॐ चर्चितायै स्वाहा। २५१. ॐ चारुहासिन्यै स्वाहा। २५२. ॐ चटुलायै स्वाहा। २५३. ॐ चण्डिकायै स्वाहा। २५४. ॐ चित्रायै स्वाहा। २५५. ॐ चित्रमाल्यविभूषितायै स्वाहा। २५६. ॐ चतुर्भुजायै स्वाहा। २५७. ॐ चारुदन्तायै स्वाहा। २५८. ॐ चातुर्यै स्वाहा। २५९. ॐ चरित-प्रदायै स्वाहा। २६०. ॐ चूलिकायै स्वाहा। २६१. ॐ चित्रवस्त्रान्तायै स्वाहा। २६२. ॐ चन्द्रमःकर्णकुण्डलायै स्वाहा। २६३. ॐ चन्द्रहासायै स्वाहा। २६४. ॐ चारुदात्र्यै स्वाहा। २६५. ॐ चकोर्यै स्वाहा। २६६. ॐ चन्द्रहासिन्यै स्वाहा। २६७. ॐ चन्द्रिकायै स्वाहा। २६८. ॐ चन्द्रधात्र्यै स्वाहा। २६९. ॐ चौर्यै स्वाहा। २७०. ॐ चौरायै स्वाहा। २७१. ॐ चण्डिकायै स्वाहा। २७२. ॐ चञ्चद्वाग्वादिन्यै स्वाहा। २७३. ॐ चन्द्रचूडायै स्वाहा। २७४. ॐ चोरविनाशिन्यै स्वाहा। २७५. ॐ चारुचन्दन-लिप्ताङ्ग्यै स्वाहा। २७६. ॐ चञ्चच्चामरवीजितायै स्वाहा। २७७. ॐ चारुमध्यायै स्वाहा। २७८. ॐ चारुगत्यै स्वाहा। २७९. ॐ चन्दिलायै स्वाहा। २८०. ॐ चन्द्ररूपिण्यै स्वाहा। २८१. ॐ चारुहोम-प्रियायै स्वाहा। २८२. ॐ चार्वाचरितायै स्वाहा। २८३. ॐ चक्रबाहुकायै स्वाहा। २८४. ॐ चन्द्रमण्डलमध्यस्थायै स्वाहा। २८५. ॐ चन्द्रमण्डल-दर्पणायै स्वाहा। २८६. ॐ चक्रवाकस्तन्यै स्वाहा। २८७. ॐ चेष्टायै स्वाहा। २८८. ॐ चित्रायै स्वाहा। २८९. ॐ चारुविलासिन्यै स्वाहा। २९०. ॐ चित्स्वरूपायै स्वाहा। २९१. ॐ चन्द्रवत्यै स्वाहा। २९२. ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। २९३. ॐ चन्दनप्रियायै स्वाहा। २९४. ॐ चोदयित्र्यै स्वाहा। २९५. ॐ चिरप्रज्ञायै स्वाहा। २९६. ॐ चातकायै स्वाहा। २९७. ॐ चारुहेतुक्यै स्वाहा। २९८. ॐ छत्रयातायै स्वाहा। २९९. ॐ छत्रधरायै स्वाहा। ३००. ॐ छायायै स्वाहा। ३०१. ॐ छन्दःपरिच्छदायै स्वाहा। ३०२. ॐ छायादेव्यै स्वाहा। ३०३. ॐ छिद्रनखायै स्वाहा। ३०४. ॐ छन्नेन्द्रियविसर्पिण्यै स्वाहा। ३०५. ॐ छन्दोऽनुष्टुप्प्रतिष्ठान्तायै स्वाहा। ३०६. ॐ छिद्रोपद्रवभेदिन्यै स्वाहा। ३०७. ॐ छेदायै स्वाहा। ३०८. ॐ छत्रेश्वर्यै स्वाहा। ३०९. ॐ छिन्नायै स्वाहा। ३१०. ॐ छुरिकायै स्वाहा। ३११. ॐ छेदनप्रियायै स्वाहा। ३१२. ॐ जनन्यै स्वाहा। ३१३. ॐ जन्मरहितायै स्वाहा। ३१४. ॐ जातवेदायै स्वाहा। ३१५. ॐ जगन्मय्यै स्वाहा। ३१६. ॐ जाह्नव्यै स्वाहा। ३१७. ॐ जटिलायै स्वाहा।

३१८. ॐ जेत्र्यै स्वाहा। ३१९. ॐ जरामरणवर्जितायै स्वाहा। ३२०. ॐ जम्बूद्वीपवत्यै स्वाहा। ३२१. ॐ ज्वालायै स्वाहा। ३२२. ॐ जयन्त्यै स्वाहा। ३२३. ॐ जलशालिन्यै स्वाहा। ३२४. ॐ जितेन्द्रियायै स्वाहा। ३२५. ॐ जितक्रोधायै स्वाहा। ३२६. ॐ जितामित्रायै स्वाहा। ३२७. ॐ जगत्प्रियायै स्वाहा। ३२८. ॐ जातरूपमय्यै स्वाहा। ३२९. ॐ जिह्वायै स्वाहा। ३३०. ॐ जानक्यै स्वाहा। ३३१. ॐ जगत्यै स्वाहा। ३३२. ॐ जरायै स्वाहा। ३३३. ॐ जनित्र्यै स्वाहा। ३३४. ॐ जह्नुतनयायै स्वाहा। ३३५. ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै स्वाहा। ३३६. ॐ ज्वालामुख्यै स्वाहा। ३३७. ॐ जपवत्यै स्वाहा। ३३८. ॐ ज्वरघ्न्यै स्वाहा। ३३९. ॐ जित-विष्टपायै स्वाहा। ३४०. ॐ जिताक्रान्तमय्यै स्वाहा। ३४१. ॐ ज्वालायै स्वाहा। ३४२. ॐ जाग्रत्यै स्वाहा। ३४३. ॐ ज्वरदेवतायै स्वाहा। ३४४. ॐ ज्वलन्त्यै स्वाहा। ३४५. ॐ जलदायै स्वाहा। ३४६. ॐ ज्येष्ठायै स्वाहा। ३४७. ॐ ज्याघोषास्फोटदिङ्मुख्यै स्वाहा। ३४८. ॐ जम्भिन्यै स्वाहा। ३४९. ॐ जृम्भणायै स्वाहा। ३५०. ॐ जृम्भायै स्वाहा। ३५१. ॐ ज्वलन्माणिक्यकुण्डलायै स्वाहा। ३५२. ॐ झिंझिकायै स्वाहा। ३५३. ॐ झणनिर्घोषायै स्वाहा। ३५४. ॐ झंझामारुतवेगिन्यै स्वाहा। ३५५. ॐ झल्लरीवाद्यकुशलायै स्वाहा। ३५६. ॐ ञरूपायै स्वाहा। ३५७. ॐ ञभुजा-स्मृतायै स्वाहा। ३५८. ॐ टङ्कवाणसमायुक्तायै स्वाहा। ३५९. ॐ टङ्किन्यै स्वाहा। ३६०. ॐ टङ्कभेदिन्यै स्वाहा। ३६१. ॐ टङ्कीगणकृताघोषायै स्वाहा। ३६२. ॐ टङ्कनीयमहोरसायै स्वाहा। ३६३. ॐ टङ्कारकारिणीदेव्यै स्वाहा। ३६४. ॐ ठठशब्दनिनादिन्यै स्वाहा। ३६५. ॐ डामर्यै स्वाहा। ३६६. ॐ डाकिन्यै स्वाहा। ३६७. ॐ डिम्भायै स्वाहा। ३६८. ॐ डुण्डुमारैकनिर्जितायै स्वाहा। ३६९. ॐ डामरीतन्त्रमार्गस्थायै स्वाहा। ३७०. ॐ डमड्डमरुनादिन्यै स्वाहा। ३७१. ॐ डिण्डीरवसहायै स्वाहा। ३७२. ॐ डिम्भलसत्क्रीडापरायणायै स्वाहा। ३७३. ॐ ढुण्ढिविघ्नेश-जनन्यै स्वाहा। ३७४. ॐ ढक्काहस्तायै स्वाहा। ३७५. ॐ ढिलिव्रजायै स्वाहा। ३७६. ॐ नित्यज्ञानायै स्वाहा। ३७७. ॐ निरुपमायै स्वाहा। ३७८. ॐ निर्गुणायै स्वाहा। ३७९. ॐ नर्मदायै स्वाहा। ३८०. ॐ नद्यै स्वाहा। ३८१. ॐ त्रिगुणायै स्वाहा। ३८२. ॐ त्रिपदायै स्वाहा। ३८३. ॐ तन्त्र्यै स्वाहा। ३८४. ॐ तुलस्यै स्वाहा। ३८५. ॐ तरुणायै स्वाहा। ३८६. ॐ तरवे स्वाहा। ३८७. ॐ त्रिविक्रमपदाक्रान्तायै स्वाहा। ३८८. ॐ

तुरीयपदगामिन्यै स्वाहा। ३८९. ॐ तरुणादित्यसङ्काशायै स्वाहा। ३९०. ॐ तामस्यै स्वाहा। ३९१. ॐ तुहिनायै स्वाहा। ३९२. ॐ तुरायै स्वाहा। ३९३. ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै स्वाहा। ३९४. ॐ त्रिवल्यै स्वाहा। ३९५. ॐ त्रिलोचनायै स्वाहा। ३९६. ॐ त्रिशक्त्यै स्वाहा। ३९७. ॐ त्रिपुरायै स्वाहा। ३९८. ॐ तुङ्गायै स्वाहा। ३९९. ॐ तुरङ्गवदनायै स्वाहा। ४००. ॐ तिमिङ्गिलगिलायै स्वाहा। ४०१. ॐ तीव्रायै स्वाहा। ४०२. ॐ तिस्रोतायै स्वाहा। ४०३. ॐ तामसादिन्यै स्वाहा। ४०४. ॐ तन्त्रमन्त्रविशेषज्ञयै स्वाहा। ४०५. ॐ तनुमध्यायै स्वाहा। ४०६. ॐ त्रिविष्टपायै स्वाहा। ४०७. ॐ त्रिसन्ध्यायै स्वाहा। ४०८. ॐ त्रिस्तन्यै स्वाहा। ४०९. ॐ तोषासंस्थायै स्वाहा। ४१०. ॐ तालप्रतापिन्यै स्वाहा। ४११. ॐ ताटङ्किन्यै स्वाहा। ४१२. ॐ तुषाराभायै स्वाहा। ४१३. ॐ तुहिनाचलवासिन्यै स्वाहा। ४१४. ॐ तन्तुजालसमायुक्तायै स्वाहा। ४१५. ॐ तारहारावलिप्रियायै स्वाहा। ४१६. ॐ तिलहोमप्रियायै स्वाहा। ४१७. ॐ तीर्थायै स्वाहा। ४१८. ॐ तमालकुसुमाकृत्यै स्वाहा। ४१९. ॐ तारकायै स्वाहा। ४२०. ॐ त्रियुतायै स्वाहा। ४२१. ॐ तन्व्यै स्वाहा। ४२२. ॐ त्रिशंकुपरिवारितायै स्वाहा। ४२३. ॐ तलोदर्यै स्वाहा। ४२४. ॐ तिलाभूषायै स्वाहा। ४२५. ॐ ताटङ्कप्रियवाहिन्यै स्वाहा। ४२६. ॐ त्रिजटायै स्वाहा। ४२७. ॐ तित्तिर्यै स्वाहा। ४२८. ॐ तृष्णायै स्वाहा। ४२९. ॐ त्रिविधायै स्वाहा। ४३०. ॐ तरुणाकृत्यै स्वाहा। ४३१. ॐ तप्तकाञ्चनसंकाशायै स्वाहा। ४३२. ॐ तप्तकाञ्चनभूषणायै स्वाहा। ४३३. ॐ त्रैयम्बकायै स्वाहा। ४३४. ॐ त्रिवर्गायै स्वाहा। ४३५. ॐ त्रिकालज्ञानप्रदायिन्यै स्वाहा। ४३६. ॐ तर्पणायै स्वाहा। ४३७. ॐ तृप्तिदायै स्वाहा। ४३८. ॐ तृप्तायै स्वाहा। ४३९. ॐ तामस्यै स्वाहा। ४४०. ॐ तुम्बुरुस्तुतायै स्वाहा। ४४१. ॐ तार्क्ष्यस्थायै स्वाहा। ४४२. ॐ त्रिगुणाकारायै स्वाहा। ४४३. ॐ त्रिभंग्यै स्वाहा। ४४४. ॐ तनुवल्ल्यै स्वाहा। ४४५. ॐ थात्कार्यै स्वाहा। ४४६. ॐ थारवायै स्वाहा। ४४७. ॐ थान्तायै स्वाहा। ४४८. ॐ दीनवत्सलायै स्वाहा। ४४९. ॐ दानवान्तकर्यै स्वाहा। ४५०. ॐ गौर्यै स्वाहा। ४५१. ॐ दुर्गायै स्वाहा। ४५२. ॐ दुर्गासुरनिवर्हिण्यै स्वाहा। ४५३. ॐ देवरीत्यै स्वाहा। ४५४. ॐ दिवारात्र्यै स्वाहा। ४५५. ॐ दौपद्यै स्वाहा। ४५६. ॐ दुन्दुभिस्वनायै स्वाहा। ४५७. ॐ देवयान्यै स्वाहा। ४५८. ॐ दुरावासायै स्वाहा। ४५९. ॐ दारिद्र्योद्भेदिन्यै

स्वाहा। ४६०. ॐ दिवायै स्वाहा। ४६१. ॐ दामोदरप्रियायै स्वाहा। ४६२. ॐ दीप्तायै स्वाहा। ४६३. ॐ दिग्वासायै स्वाहा। ४६४. ॐ दिग्विमोहिन्यै स्वाहा। ४६५. ॐ दण्डकारण्यनिलयायै स्वाहा। ४६६. ॐ दण्डिन्यै स्वाहा। ४६७. ॐ देवपूजितायै स्वाहा। ४६८. ॐ देवबन्द्यायै स्वाहा। ४६९. ॐ दिविषदायै स्वाहा। ४७०. ॐ द्वेषिण्यै स्वाहा। ४७१. ॐ दानवाकृतये स्वाहा। ४७२. ॐ दीनानाथस्तुतायै स्वाहा। ४७३. ॐ दीक्षायै स्वाहा। ४७४. ॐ दैवतादिस्वरूपिण्यै स्वाहा। ४७५. ॐ धात्र्यै स्वाहा। ४७६. ॐ धनुर्धरायै स्वाहा। ४७७. ॐ धेनवे स्वाहा। ४७८. ॐ धारिण्यै स्वाहा। ४७९. ॐ धर्मचारिण्यै स्वाहा। ४८०. ॐ धरंधरायै स्वाहा। ४८१. ॐ धराधरायै स्वाहा। ४८२. ॐ धनदायै स्वाहा। ४८३. ॐ धान्यदोहिन्यै स्वाहा। ४८४. ॐ धर्मशीलायै स्वाहा। ४८५. ॐ धनाध्यक्षायै स्वाहा। ४८६. ॐ धनुर्वेदविशारदायै स्वाहा। ४८७. ॐ धृत्यै स्वाहा। ४८८. ॐ धन्यायै स्वाहा। ४८९. ॐ धृतपदायै स्वाहा। ४९०. ॐ धर्मराजप्रियायै स्वाहा। ४९१. ॐ ध्रुवायै स्वाहा। ४९२. ॐ धूमावत्यै स्वाहा। ४९३. ॐ धूमकेश्यै स्वाहा। ४९४. ॐ धर्मशास्त्रप्रकाशिन्यै स्वाहा। ४९५. ॐ नन्दायै स्वाहा। ४९६. ॐ नन्दप्रियायै स्वाहा। ४९७. ॐ निद्रायै स्वाहा। ४९८. ॐ नृनुतायै स्वाहा। ४९९. ॐ नन्दनात्मिकायै स्वाहा। ५००. ॐ नर्मदायै स्वाहा। ५०१. ॐ नलिन्यै स्वाहा। ५०२. ॐ नीलायै स्वाहा। ५०३. ॐ नीलकण्ठसमाश्रयायै स्वाहा। ५०४. ॐ नारायणप्रियायै स्वाहा। ५०५. ॐ नित्यायै स्वाहा। ५०६. ॐ निर्मलायै स्वाहा। ५०७. ॐ निर्गुणायै स्वाहा। ५०८. ॐ निधये स्वाहा। ५०९. ॐ निराधारायै स्वाहा। ५१०. ॐ निरुपमायै स्वाहा। ५११. ॐ नित्यशुद्धायै स्वाहा। ५१२. ॐ निरञ्जनायै स्वाहा। ५१३. ॐ नादविन्दुकलातीतायै स्वाहा। ५१४. ॐ नादविन्दुकलात्मिकायै स्वाहा। ५१५. ॐ नृसिंहिन्यै स्वाहा। ५१६. ॐ नगधरायै स्वाहा। ५१७. ॐ नृपनागविभूषितायै स्वाहा। ५१८. ॐ नरकक्लेशशमन्यै स्वाहा। ५१९. ॐ नारायणपदोद्भवायै स्वाहा। ५२०. ॐ निरवद्यायै स्वाहा। ५२१. ॐ निराकारायै स्वाहा। ५२२. ॐ नारदप्रियकारिण्यै स्वाहा। ५२३. ॐ नानाज्योतिस्समाख्यातायै स्वाहा। ५२४. ॐ निधिदायै स्वाहा। ५२५. ॐ निर्मलात्मिकायै स्वाहा। ५२६. ॐ नवसत्रधरायै स्वाहा। ५२७. ॐ नीतये स्वाहा। ५२८. ॐ निरुपद्रवकारिण्यै स्वाहा। ५२९. ॐ नन्दजायै स्वाहा।

५३०. ॐ नवरत्नाढ्यायै स्वाहा। ५३१. ॐ नैमिषारण्यवासिन्यै स्वाहा। ५३२. ॐ नवनीतप्रियायै स्वाहा। ५३३. ॐ नार्यै स्वाहा। ५३४. ॐ नील-जीमूतनिस्वनायै स्वाहा। ५३५. ॐ निशेषिण्यै स्वाहा। ५३६. ॐ नदी-रूपायै स्वाहा। ५३७. ॐ नीलग्रीवायै स्वाहा। ५३८. ॐ निशेश्वर्यै स्वाहा। ५३९. ॐ नामावल्यै स्वाहा। ५४०. ॐ निशुम्भघ्न्यै स्वाहा। ५४१. ॐ नागलोकनिवासिन्यै स्वाहा। ५४२. ॐ नवजांबूनदप्रख्यायै स्वाहा। ५४३. ॐ नागलोकाधिदेवतायै स्वाहा। ५४४. ॐ नूपुराक्रान्तचरणायै स्वाहा। ५४५. ॐ नरचित्तप्रमोदिन्यै स्वाहा। ५४६. ॐ निमग्नारक्तनयनायै स्वाहा। ५४७. ॐ निर्घातसमनिस्वनायै स्वाहा। ५४८. ॐ नन्दनोद्यान-निरयायै स्वाहा। ५४९. ॐ निर्व्यूहोपरिचारिण्यै स्वाहा। ५५०. ॐ पार्वत्यै स्वाहा। ५५१. ॐ परमोदारायै स्वाहा। ५५२. ॐ परब्रह्मात्मिकायै स्वाहा। ५५३. ॐ परायै स्वाहा। ५५४. ॐ पञ्चकोशविनिर्मुक्तायै स्वाहा। ५५५. ॐ पञ्चपातकनाशिन्यै स्वाहा। ५५६. ॐ परचित्तविधानज्ञायै स्वाहा। ५५७. ॐ पञ्चिकायै स्वाहा। ५५८. ॐ पञ्चरूपिण्यै स्वाहा। ५५९. ॐ पूर्णिमायै स्वाहा। ५६०. ॐ परमायै स्वाहा। ५६१. ॐ प्रीत्यै स्वाहा। ५६२. ॐ परतेजःप्रकाशिन्यै स्वाहा। ५६३. ॐ पुराण्यै स्वाहा। ५६४. ॐ पौरुण्यै स्वाहा। ५६५. ॐ पुण्यायै स्वाहा। ५६६. ॐ पुण्डरीकनिभेक्षणायै स्वाहा। ५६७. ॐ पातालतलनिर्मग्नायै स्वाहा। ५६८. ॐ प्रीत्यायै स्वाहा। ५६९. ॐ प्रीतिविवर्धिन्यै स्वाहा। ५७०. ॐ पावन्यै स्वाहा। ५७१. ॐ पादसहितायै स्वाहा। ५७२. ॐ पेशलायै स्वाहा। ५७३. ॐ पवनाशिन्यै स्वाहा। ५७४. ॐ प्रजापतये स्वाहा। ५७५. ॐ परिश्रान्तायै स्वाहा। ५७६. ॐ पर्वतस्तनमण्डलायै स्वाहा। ५७७. ॐ पद्मप्रियायै स्वाहा। ५७८. ॐ पद्मसंस्थायै स्वाहा। ५७९. ॐ पद्माक्ष्यै स्वाहा। ५८०. ॐ पद्मसंभवायै स्वाहा। ५८१. ॐ पद्मपत्रायै स्वाहा। ५८२. ॐ पद्मपदायै स्वाहा। ५८३. ॐ पद्मिन्यै स्वाहा। ५८४. ॐ प्रियभाषिण्यै स्वाहा। ५८५. ॐ पशुपाशविनिर्मुक्तायै स्वाहा। ५८६. ॐ पुरंध्र्यै स्वाहा। ५८७. ॐ पुरवासिन्यै स्वाहा। ५८८. ॐ पुष्कलायै स्वाहा। ५८९. ॐ पुरुषायै स्वाहा। ५९०. ॐ पर्वायै स्वाहा। ५९१. ॐ पारिजातकुसुमप्रियायै स्वाहा। ५९२. ॐ पतिव्रतायै स्वाहा। ५९३. ॐ पवित्राङ्ग्यै स्वाहा। ५९४. ॐ पुष्पहासपरायणायै स्वाहा। ५९५. ॐ प्रज्ञावतीसुतायै स्वाहा। ५९६. ॐ पौत्र्यै स्वाहा। ५९७. ॐ पुत्रपूज्यायै स्वाहा। ५९८. ॐ

पयस्विन्यै स्वाहा। ५९९. ॐ पट्टिपाशधरायै स्वाहा। ६००. ॐ पङ्क्त्यै स्वाहा। ६०१. ॐ पितृलोकप्रदायिन्यै स्वाहा। ६०२. ॐ पुराण्यै स्वाहा। ६०३. ॐ पुण्यशीलायै स्वाहा। ६०४. ॐ प्रणतार्तिविनाशिन्यै स्वाहा। ६०५. ॐ प्रद्युम्नजनन्यै स्वाहा। ६०६. ॐ पुष्टायै स्वाहा। ६०७. ॐ पितामहपरिग्रहायै स्वाहा। ६०८. ॐ पुण्डरीकपुरावासायै स्वाहा। ६०९. ॐ पुण्डरीकसमाननायै स्वाहा। ६१०. ॐ पृथुजङ्घायै स्वाहा। ६११. ॐ पृथुभुजायै स्वाहा। ६१२. ॐ पृथुपादायै स्वाहा। ६१३. ॐ पृथुदर्यै स्वाहा। ६१४. ॐ प्रवालशोभायै स्वाहा। ६१५. ॐ पिङ्गाक्ष्यै स्वाहा। ६१६. ॐ पीतवाससे स्वाहा। ६१७. ॐ प्रचापलायै स्वाहा। ६१८. ॐ प्रसवायै स्वाहा। ६१९. ॐ पुष्टिदायै स्वाहा। ६२०. ॐ पुण्यायै स्वाहा। ६२१. ॐ प्रतिष्ठायै स्वाहा। ६२२. ॐ प्रणवागत्यै स्वाहा। ६२३. ॐ पञ्चवर्णायै स्वाहा। ६२४. ॐ पञ्चवाण्यै स्वाहा। ६२५. ॐ पञ्चिकायै स्वाहा। ६२६. ॐ पञ्जरस्थितायै स्वाहा। ६२७. ॐ परमायायै स्वाहा। ६२८. ॐ परज्योतिषे स्वाहा। ६२९. ॐ परप्रीतये स्वाहा। ६३०. ॐ परागतये स्वाहा। ६३१. ॐ पराकाष्ठायै स्वाहा। ६३२. ॐ परेशान्यै स्वाहा। ६३३. ॐ पावन्यै स्वाहा। ६३४. ॐ पावकद्युतये स्वाहा। ६३५. ॐ पुण्यभद्रायै स्वाहा। ६३६. ॐ परिच्छेद्यायै स्वाहा। ६३७. ॐ पुष्पहासायै स्वाहा। ६३८. ॐ पृथूदर्यै स्वाहा। ६३९. ॐ पीताङ्ग्यै स्वाहा। ६४०. ॐ पीतवसनायै स्वाहा। ६४१. ॐ पीतशय्यायै स्वाहा। ६४२. ॐ पिशाचिन्यै स्वाहा। ६४३. ॐ पीतक्रियायै स्वाहा। ६४४. ॐ पिशाचघ्न्यै स्वाहा। ६४५. ॐ पाटलाक्ष्यै स्वाहा। ६४६. ॐ पटुक्रियायै स्वाहा। ६४७. ॐ पञ्चभक्षप्रियाचारायै स्वाहा। ६४८. ॐ पूतनाप्राणघातिन्यै स्वाहा। ६४९. ॐ पुन्नागवनमध्यस्थायै स्वाहा। ६५०. ॐ पुण्यतीर्थनिशेवितायै स्वाहा। ६५१. ॐ पञ्चाङ्ग्यै स्वाहा। ६५२. ॐ पराशक्त्यै स्वाहा। ६५३. ॐ परमाह्लादकारिण्यै स्वाहा। ६५४. ॐ पुष्पकाण्डस्थितायै स्वाहा। ६५५. ॐ पूषायै स्वाहा। ६५६. ॐ पोषिताखिलविष्टपायै स्वाहा। ६५७. ॐ पानप्रियायै स्वाहा। ६५८. ॐ पञ्चशिखायै स्वाहा। ६५९. ॐ पन्नगोपरिशायिन्यै स्वाहा। ६६०. ॐ पञ्चमात्रात्मिकायै स्वाहा। ६६१. ॐ पृथ्व्यै स्वाहा। ६६२. ॐ पथिकायै स्वाहा। ६६३. ॐ पृथुदोहिन्यै स्वाहा। ६६४. ॐ पुराणन्यायमीमांसायै स्वाहा। ६६५. ॐ पाटल्यै स्वाहा। ६६६. ॐ पुष्पगन्धिन्यै स्वाहा। ६६७. ॐ पुण्यप्रजायै स्वाहा। ६६८. ॐ

पारदात्र्यै स्वाहा। ६६९. ॐ परमार्गैकगोचरायै स्वाहा। ६७०. ॐ प्रवालशोभायै स्वाहा। ६७१. ॐ पूर्णाशायै स्वाहा। ६७२. ॐ प्रणवायै स्वाहा। ६७३. ॐ पल्लवोदर्यै स्वाहा। ६७४. ॐ फलिन्यै स्वाहा। ६७५. ॐ फलदायै स्वाहा। ६७६. ॐ फल्गवे स्वाहा। ६७७. ॐ फूत्कार्यै स्वाहा। ६७८. ॐ फलकाकृत्यै स्वाहा। ६७९. ॐ फणीन्द्रभोगशयनायै स्वाहा। ६८०. ॐ फणिमण्डलमण्डितायै स्वाहा। ६८१. ॐ बालबालायै स्वाहा। ६८२. ॐ बहुमतायै स्वाहा। ६८३. ॐ बालातपनिभांशुकायै स्वाहा। ६८४. ॐ बलभद्रप्रियायै स्वाहा। ६८५. ॐ बन्द्यायै स्वाहा। ६८६. ॐ बडवायै स्वाहा। ६८७. ॐ बुद्धिसंस्तुतायै स्वाहा। ६८८. ॐ बन्दीदेव्यै स्वाहा। ६८९. ॐ बिलवत्यै स्वाहा। ६९०. ॐ बडिशघ्न्यै स्वाहा। ६९१. ॐ बलिप्रियायै स्वाहा। ६९२. ॐ बान्धव्यै स्वाहा। ६९३. ॐ बोधितायै स्वाहा। ६९४. ॐ बुद्ध्यै स्वाहा। ६९५. ॐ बन्धूककुसुमप्रियायै स्वाहा। ६९६. ॐ बालभानुप्रभाकारायै स्वाहा। ६९७. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। ६९८. ॐ ब्राह्मणदेवतायै स्वाहा। ६९९. ॐ बृहस्पतिस्तुतायै स्वाहा। ७००. ॐ वृन्दायै स्वाहा। ७०१. ॐ वृन्दावन-विहारिण्यै स्वाहा। ७०२. ॐ बालाकिन्यै स्वाहा। ७०३. ॐ बिलाहारायै स्वाहा। ७०४. ॐ बिलवासायै स्वाहा। ७०५. ॐ बहूदकायै स्वाहा। ७०६. ॐ बहुनेत्रायै स्वाहा। ७०७. ॐ बहुपदायै स्वाहा। ७०८. ॐ बहुकर्णावतंसिकायै स्वाहा। ७०९. ॐ बहुबाहुयुतायै स्वाहा। ७१०. ॐ बीजरूपिण्यै स्वाहा। ७११. ॐ बहुरूपिण्यै स्वाहा। ७१२. ॐ बिन्दुनाद-कलातीतायै स्वाहा। ७१३. ॐ बिन्दुनादस्वरूपिण्यै स्वाहा। ७१४. ॐ बद्धगोधांगुलित्राणायै स्वाहा। ७१५. ॐ बदर्याश्रमवासिन्यै स्वाहा। ७१६. ॐ वृन्दारकायै स्वाहा। ७१७. ॐ बृहत्स्कन्धायै स्वाहा। ७१८. ॐ बृहतीबाणपातिन्यै स्वाहा। ७१९. ॐ वृन्दाध्यक्षायै स्वाहा। ७२०. ॐ बहुनुतायै स्वाहा। ७२१. ॐ वनितायै स्वाहा। ७२२. ॐ बहुविक्रमायै स्वाहा। ७२३. ॐ बद्धपद्मासनासीनायै स्वाहा। ७२४. ॐ बिल्वपत्र-तलस्थितायै स्वाहा। ७२५. ॐ बोधिद्रुमनिजावासायै स्वाहा। ७२६. ॐ बडिस्थायै स्वाहा। ७२७. ॐ बिन्दुदर्पणायै स्वाहा। ७२८. ॐ बालायै स्वाहा। ७२९. ॐ बाणासनवत्यै स्वाहा। ७३०. ॐ बडवानलवेगिन्यै स्वाहा। ७३१. ॐ ब्रह्माण्डवहिरन्तःस्थायै स्वाहा। ७३२. ॐ ब्रह्मकङ्कण-सूत्रिण्यै स्वाहा। ७३३. ॐ भवान्यै स्वाहा। ७३४. ॐ भीषणवत्यै स्वाहा।

७३५. ॐ भाविन्यै स्वाहा। ७३६. ॐ भयहारिण्यै स्वाहा। ७३७. ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा। ७३८. ॐ भुजङ्गाक्ष्यै स्वाहा। ७३९. ॐ भारत्यै स्वाहा। ७४०. ॐ भारताशयायै स्वाहा। ७४१. ॐ भैरव्यै स्वाहा। ७४२. ॐ भीषणकारायै स्वाहा। ७४३. ॐ भूतिदायै स्वाहा। ७४४. ॐ भूतिमालिन्यै स्वाहा। ७४५. ॐ भामिन्यै स्वाहा। ७४६. ॐ भोगनिरतायै स्वाहा। ७४७. ॐ भद्रदायै स्वाहा। ७४८. ॐ भूरिविक्रमायै स्वाहा। ७४९. ॐ भूतवासायै स्वाहा। ७५०. ॐ भृगुलतायै स्वाहा। ७५१. ॐ भार्गव्यै स्वाहा। ७५२. ॐ भूसुरार्चितायै स्वाहा। ७५३. ॐ भागीरथ्यै स्वाहा। ७५४. ॐ भोगवत्यै स्वाहा। ७५५. ॐ भवनस्थायै स्वाहा। ७५६. ॐ भिषग्वरायै स्वाहा। ७५७. ॐ भामिन्यै स्वाहा। ७५८. ॐ भोगिन्यै स्वाहा। ७५९. ॐ भाषायै स्वाहा। ७६०. ॐ भवान्यै स्वाहा। ७६१. ॐ भूरिदक्षि-णायै स्वाहा। ७६२. ॐ भगात्मिकायै स्वाहा। ७६३. ॐ भीमवत्यै स्वाहा। ७६४. ॐ भवबन्धविमोचिन्यै स्वाहा। ७६५. ॐ भजनीयायै स्वाहा। ७६६. ॐ भूतधात्रीरञ्जितायै स्वाहा। ७६७. ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा। ७६८. ॐ भुजङ्गवलयायै स्वाहा। ७६९. ॐ भीमायै स्वाहा। ७७०. ॐ भेरुण्डायै स्वाहा। ७७१. ॐ भागधेयिन्यै स्वाहा। ७७२. ॐ मात्रे स्वाहा। ७७३. ॐ मायायै स्वाहा। ७७४. ॐ मधुमत्यै स्वाहा। ७७५. ॐ मधु-जिह्वायै स्वाहा। ७७६. ॐ मधुप्रियायै स्वाहा। ७७७. ॐ महादेव्यै स्वाहा। ७७८. ॐ महाभागायै स्वाहा। ७७९. ॐ मालिन्यै स्वाहा। ७८०. ॐ मीनलोचनायै स्वाहा। ७८१. ॐ मायातीतायै स्वाहा। ७८२. ॐ मधुमत्यै स्वाहा। ७८३. ॐ मधुमांसायै स्वाहा। ७८४. ॐ मधुद्रवायै स्वाहा। ७८५. ॐ मानव्यै स्वाहा। ७८६. ॐ मधुसम्भूतायै स्वाहा। ७८७. ॐ मिथिलापुरवासिन्यै स्वाहा। ७८८. ॐ मधुकैटभसंहर्त्र्यै स्वाहा। ७८९. ॐ मेदिन्यै स्वाहा। ७९०. ॐ मेघमालिन्यै स्वाहा। ७९१. ॐ मन्दोदर्यै स्वाहा। ७९२. ॐ महामायायै स्वाहा। ७९३. ॐ मैथिल्यै स्वाहा। ७९४. ॐ ममृणप्रियायै स्वाहा। ७९५. ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा। ७९६. ॐ महाकाल्यै स्वाहा। ७९७. ॐ महाकन्यायै स्वाहा। ७९८. ॐ महेश्वर्यै स्वाहा। ७९९. ॐ माहेन्द्र्यै स्वाहा। ८००. ॐ मेरुतनयायै स्वाहा। ८०१. ॐ मन्दारकुसुमार्चितायै स्वाहा। ८०२. ॐ मञ्जुमञ्जीरचरणायै स्वाहा। ८०३. ॐ मोक्षदायै स्वाहा। ८०४. ॐ मञ्जुभाषिण्यै स्वाहा। ८०५. ॐ मधुरद्राविण्यै स्वाहा। ८०६. ॐ मुद्रायै स्वाहा। ८०७. ॐ मलयायै स्वाहा। ८०८. ॐ मलयान्वितायै स्वाहा।

८०९. ॐ मेधायै स्वाहा। ८१०. ॐ मरतश्यामायै स्वाहा। ८११. ॐ मागध्यै स्वाहा। ८१२. ॐ मेनकात्मजायै स्वाहा। ८१३. ॐ महामायै स्वाहा। ८१४. ॐ महावीरायै स्वाहा। ८१५. ॐ महाश्यामायै स्वाहा। ८१६. ॐ मनुस्तुतायै स्वाहा। ८१७. ॐ मातृकायै स्वाहा। ८१८. ॐ मिहिराभासायै स्वाहा। ८१९. ॐ मुकुन्दपदविक्रमायै स्वाहा। ८२०. ॐ मूलाधारस्थितायै स्वाहा। ८२१. ॐ मुग्धायै स्वाहा। ८२२. ॐ मणिपूरक-वासिन्यै स्वाहा। ८२३. ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा। ८२४. ॐ महिषारूढायै स्वाहा। ८२५. ॐ महिषासुरमर्दिन्यै स्वाहा। ८२६. ॐ योगासनायै स्वाहा। ८२७. ॐ योगगम्यायै स्वाहा। ८२८. ॐ योगायै स्वाहा। ८२९. ॐ यौवन-काश्रयायै स्वाहा। ८३०. ॐ यौवन्यै स्वाहा। ८३१. ॐ युद्धमध्यस्थायै स्वाहा। ८३२. ॐ यमुनायै स्वाहा। ८३३. ॐ युगधारिण्यै स्वाहा। ८३४. ॐ यक्षिण्यै स्वाहा। ८३५. ॐ योगयुक्तायै स्वाहा। ८३६. ॐ यक्षराजप्रसूतिन्यै स्वाहा। ८३७. ॐ यात्रायै स्वाहा। ८३८. ॐ यान-विधानज्ञायै स्वाहा। ८३९. ॐ यदुवंशसमुद्भवायै स्वाहा। ८४०. ॐ यकारादिहकारान्तायै स्वाहा। ८४१. ॐ याजुष्यै स्वाहा। ८४२. ॐ यज्ञरूपिण्यै स्वाहा। ८४३. ॐ यामिन्यै स्वाहा। ८४४. ॐ योगनिरतायै स्वाहा। ८४५. ॐ यातुधानमयङ्कर्यै स्वाहा। ८४६. ॐ रुक्मिण्यै स्वाहा। ८४७. ॐ रमण्यै स्वाहा। ८४८. ॐ रामायै स्वाहा। ८४९. ॐ रेवत्यै स्वाहा। ८५०. ॐ रेणुकायै स्वाहा। ८५१. ॐ रत्यै स्वाहा। ८५२. ॐ रौद्र्यै स्वाहा। ८५३. ॐ रौद्रप्रियाकारायै स्वाहा। ८५४. ॐ राममात्रे स्वाहा। ८५५. ॐ रतिप्रियायै स्वाहा। ८५६. ॐ रोहिण्यै स्वाहां। ८५७. ॐ राज्यदायै स्वाहा। ८५८. ॐ रेवायै स्वाहा। ८५९. ॐ रमायै स्वाहा। ८६०. ॐ राजीवलोचनायै स्वाहा। ८६१. ॐ राकेश्यै स्वाहा। ८६२. ॐ रूपसम्पन्नायै स्वाहा। ८६३. ॐ रत्नसिंहासनस्थितायै स्वाहा। ८६४. ॐ रक्तमाल्याम्बरधरायै स्वाहा। ८६५. ॐ रक्तगन्धानुलेपनायै स्वाहा। ८६६. ॐ राजहंससमारूढायै स्वाहा। ८६७. ॐ रम्भायै स्वाहा। ८६८. ॐ रक्तबलि-प्रियायै स्वाहा। ८६९. ॐ रमणीययुगाधारायै स्वाहा। ८७०. ॐ राजिता-खिलभूतलायै स्वाहा। ८७१. ॐ रुरुचर्मपरीधानायै स्वाहा। ८७२. ॐ रथिन्यै स्वाहा। ८७३. ॐ रत्नमालिकायै स्वाहा। ८७४. ॐ रोगेश्यै स्वाहा। ८७५. ॐ रोगशमन्यै स्वाहा। ८७६. ॐ राविण्यै स्वाहा। ८७७. ॐ रोमहर्षिण्यै स्वाहा। ८७८. ॐ रामचन्द्रपदाक्रान्तायै स्वाहा। ८७९. ॐ

रावणच्छेदकारिण्यै स्वाहा। ८८०. ॐ रत्नवस्त्रपरिच्छिन्नायै स्वाहा। ८८१. ॐ रथस्थायैं स्वाहा। ८८२. ॐ रुक्मभूषणायै स्वाहा। ८८३. ॐ लज्जाधिदेवतायै स्वाहा। ८८४. ॐ लोलायै स्वाहा। ८८५. ॐ ललितायै स्वाहा। ८८६. ॐ लिङ्गधारिण्यै स्वाहा। ८८७. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ८८८. ॐ लोलायै स्वाहा। ८८९. ॐ लुप्तविषायै स्वाहा। ८९०. ॐ लोकिन्यै स्वाहा। ८९१. ॐ लोकविश्रुतायै स्वाहा। ८९२. ॐ लज्जायै स्वाहा। ८९३. ॐ लम्बोदरीदेव्यै स्वाहा। ८९४. ॐ ललनायै स्वाहा। ८९५. ॐ लोकधारिण्यै स्वाहा। ८९६. ॐ वरदायै स्वाहा। ८९७. ॐ वन्दितायै स्वाहा। ८९८. ॐ विद्यायै स्वाहा। ८९९. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ९००. ॐ विमलाकृत्यै स्वाहा। ९०१. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ९०२. ॐ विरजायै स्वाहा। ९०३. ॐ वर्षायै स्वाहा। ९०४. ॐ वरलक्ष्म्यै स्वाहा। ९०५. ॐ विलासिन्यै स्वाहा। ९०६. ॐ विनतायै स्वाहा। ९०७. ॐ व्योमध्यस्थायै स्वाहा। ९०८. ॐ वारिजासनसंस्थितायै स्वाहा। ९०९. ॐ वारुण्यै स्वाहा। ९१०. ॐ वेणुसंभूतायै स्वाहा। ९११. ॐ वीतिहोत्रायै स्वाहा। ९१२. ॐ विरूपिण्यै स्वाहा। ९१३. ॐ वायुमण्डल-मध्यस्थायै स्वाहा। ९१४. ॐ विष्णुरूपायै स्वाहा। ९१५. ॐ विधिप्रियायै स्वाहा। ९१६. ॐ विष्णुपत्न्यै स्वाहा। ९१७. ॐ विष्णुमत्यै स्वाहा। ९१८. ॐ विशालाक्ष्यै स्वाहा। ९१९. ॐ वसुन्धरायै स्वाहा। ९२०. ॐ वामदेव-प्रियायै स्वाहा। ९२१. ॐ वेलायै स्वाहा। ९२२. ॐ वज्रिण्यै स्वाहा। ९२३. ॐ वसुदोहिन्यै स्वाहा। ९२४. ॐ वेदाक्षरपरीताङ्ग्यै स्वाहा। ९२५. ॐ वाजपेयफलप्रदायै स्वाहा। ९२६. ॐ वासव्यै स्वाहा। ९२७. ॐ वामजनन्यै स्वाहा। ९२८. ॐ वैकुण्ठनिलयायै स्वाहा। ९२९. ॐ वरायै स्वाहा। ९३०. ॐ व्यासप्रियायै स्वाहा। ९३१. ॐ वर्मधरायै स्वाहा। ९३२. ॐ बाल्मीकिपरिसेवितायै स्वाहा। ९३३. ॐ शाकम्भर्यै स्वाहा। ९३४. ॐ शिवायै स्वाहा। ९३५. ॐ शान्तायै स्वाहा। ९३६. ॐ शारदायै स्वाहा। ९३७. ॐ शरणागतये स्वाहा। ९३८. ॐ शातोदर्यै स्वाहा। ९३९. ॐ शुभाचारायै स्वाहा। ९४०. ॐ शुम्भासुरविमर्दिन्यै स्वाहा। ९४१. ॐ शोभावत्यै स्वाहा। ९४२. ॐ शिवाकारायै स्वाहा। ९४३. ॐ शङ्करार्ध-शरीरिण्यै स्वाहा। ९४४. ॐ शोणायै स्वाहा। ९४५. ॐ शुभाशयायै स्वाहा। ९४६. ॐ शुभ्रायै स्वाहा। ९४७. ॐ शिरःसन्धानकारिण्यै स्वाहा। ९४८. ॐ शरावत्यै स्वाहा। ९४९. ॐ शरानन्दायै स्वाहा। ९५०. ॐ

शरज्ज्योत्स्नायै स्वाहा। ९५१. ॐ शुभाननायै स्वाहा। ९५२. ॐ शरभायै स्वाहा। ९५३. ॐ शूलिन्यै स्वाहा। ९५४. ॐ शुद्धायै स्वाहा। ९५५. ॐ शबर्यै स्वाहा। ९५६. ॐ शुकवाहनायै स्वाहा। ९५७. ॐ श्रीमत्यै स्वाहा। ९५८. ॐ श्रीधरानन्दायै स्वाहा। ९५९. ॐ श्रवणानन्ददायिन्यै स्वाहा। ९६०. ॐ शर्वाण्यै स्वाहा। ९६१. ॐ शर्वरीवन्धायै स्वाहा। ९६२. ॐ षड्भाषायै स्वाहा। ९६३. ॐ षड्ऋतुप्रियायै स्वाहा। ९६४. ॐ षडाधार-स्थितादेव्यै स्वाहा। ९६५. ॐ षण्मुखप्रियकारिण्यै स्वाहा। ९६६. ॐ षडङ्गरूपसुमतिसुरासुरनमस्कृतायै स्वाहा। ९६७. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ९६८. ॐ सदाधारायै स्वाहा। ९६९. ॐ सर्वमङ्गलकारिण्यै स्वाहा। ९७०. ॐ सामगानप्रियायै स्वाहा। ९७१. ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा। ९७२. ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ९७३. ॐ सामसम्भवायै स्वाहा। ९७४. ॐ सर्वावासायै स्वाहा। ९७५. ॐ सदानन्दायै स्वाहा। ९७६. ॐ सुस्तन्यै स्वाहा। ९७७. ॐ सागराम्बरायै स्वाहा। ९७८. ॐ सर्वैश्वर्यप्रियायै स्वाहा। ९७९. ॐ सिद्ध्यै स्वाहा। ९८०. ॐ साधुबन्धुपराक्रमायै स्वाहा। ९८१. ॐ सप्तर्षि-मण्डलगतायै स्वाहा। ९८२. ॐ सोममण्डलवासिन्यै स्वाहा। ९८३. ॐ सर्वज्ञायै स्वाहा। ९८४. ॐ सान्द्रकरुणायै स्वाहा। ९८५. ॐ समानाधिक-वर्जितायै स्वाहा। ९८६. ॐ सर्वोत्तुङ्गायै स्वाहा। ९८७. ॐ संगहीनायै स्वाहा। ९८८. ॐ सद्गुणायै स्वाहा। ९८९. ॐ सकलेष्टदायै स्वाहा। ९९०. ॐ सरघायै स्वाहा। ९९१. ॐ सूर्यतनयायै स्वाहा। ९९२. ॐ सुकेश्यै स्वाहा। ९९३. ॐ सोमसंहत्यै स्वाहा। ९९४. ॐ हिरण्यवर्णायै स्वाहा। ९९५. ॐ हरिण्यै स्वाहा। ९९६. ॐ ह्रींकार्यै स्वाहा। ९९७. ॐ हंसवाहिन्यै स्वाहा। ९९८. ॐ क्षौमवस्त्रपरीताङ्ग्यै स्वाहा। ९९९. ॐ क्षीराब्धितनयायै स्वाहा। १०००. ॐ क्षमायै स्वाहा। १००१. ॐ गायत्र्यै स्वाहा। १००२. ॐ सावित्र्यै स्वाहा। १००३. ॐ पार्वत्यै स्वाहा। १००४. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। १००५. ॐ वेदगर्भायै स्वाहा। १००६. ॐ वरारोहायै स्वाहा। १००७. ॐ श्रीगायत्र्यै स्वाहा। १००८. ॐ पराम्बिकायै स्वाहा।

लक्ष्मीयागन्यासः

विनियोगः—हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः, आद्यानां तिसृणामनुष्टुप्छन्दः, चतुर्थ्याः प्रस्तार-पंक्तिश्छन्दः, पञ्चमी-षष्ठ्योस्त्रिष्टुप्छन्दः, ततोऽष्टानामनुष्टुप्छन्दः, अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, श्रीरग्निश्च देवते न्यासेहवने च विनियोगः।

१. ॐ हिरण्यवर्णाम्०—वामकरे। २. ॐ तां मऽआवह०—दक्षिणकरे। ३. ॐ अश्वपूर्वाम्०—वामपादे। ४. ॐ कां सोऽस्मिताम्०—दक्षिणपादे। ५. ॐ चन्द्रां प्रभासाम्०—वामजानौ। ६. ॐ आदित्य-वर्णे०—दक्षिणजानौ। ७. ॐ उपैतु माम्०—वामकट्याम्। ८. ॐ क्षुत्पि-पासामलाम्०—दक्षिणकट्याम्। ९. ॐ गन्धद्वाराम्०—नाभौ। १०. ॐ मनसः काममाकूतिम्०—हृदये। ११. ॐ कर्दमेन प्रजा भूता०—वामबाहौ। १२. ॐ आपः सृजन्तु०—दक्षिणबाहौ। १३. ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्०—कण्ठे। १४. ॐ आर्द्रां यष्करिणीम्०—मुखे। १५. ॐ तां मऽआवह०—नेत्रयो। १६. ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०—मूर्ध्नि।

पुनः—१. कर्दमेन प्रजा भूता०—हृदयाय नमः। २. आपः सृजन्तु०—शिरसे स्वाहा। ३. आर्द्रां पुष्करिणीम्०—शिखायै वषट्। ४. आर्द्रां यष्करिणीम्०—कवचाय हुम्। ५. ॐ तां म ऽआवह०—नेत्राभ्यां वौषट्। ६. ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०—अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्त्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भै-
र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता॥ १॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
करकमलघृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिमुकुटविचित्राऽलङ्कृताऽऽकल्पजालैः
सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥ २॥

लक्ष्मीयागस्वाहाकारमन्त्राः

लक्ष्मीयाग आठ दिनों में सम्पन्न होता है और इसमें ऋक्परिशिष्टोक्त निम्न 'श्रीसूक्त' के सोलह मन्त्रों से हवन होता है। पूर्णाहुति के दिन लक्ष्मी-सहस्रनामावली से ही हवन होता है। इस यज्ञ में एक लाख आहुति होती है।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ १॥ ता म आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ २॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रीयं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ ३॥ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ ४॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ ५॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्त्व वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्याअलक्ष्मीः महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ ६॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ ७॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ ८॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ ९॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ १०॥ कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ ११॥ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ १२॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ १३॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ १४॥ ता म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ १५॥ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् महालक्ष्म्यै स्वाहा॥ १६॥

लक्ष्मीसहस्त्रनामावल्या हवनम्

१. ॐ श्रियै स्वाहा। २. ॐ वासुदेवमहिष्ये स्वाहा। ३. ॐ पुंप्रधाने-श्वरेश्वर्यै स्वाहा। ४. ॐ अचिन्त्यानन्तविभवायै स्वाहा। ५. ॐ भावाभावति-भाविन्यै स्वाहा। ६. ॐ अहंभावात्मिकायै स्वाहा। ७. ॐ पद्मायै स्वाहा। ८. ॐ शान्तानन्तजितात्मिकायै स्वाहा। ९. ॐ ब्रह्मभावंगतायै स्वाहा। १०. ॐ त्यक्तभीत्यै स्वाहा। ११. ॐ सर्वजगन्मय्यै स्वाहा। १२. ॐ षाड्गुण्यपूर्णायै स्वाहा। १३. ॐ त्रय्यन्तरूपायै स्वाहा। १४. ॐ आत्मान-पगामिन्यै स्वाहा। १५. ॐ एकयोग्यायै स्वाहा। १६. ॐ अशून्यभावाकृत्यै स्वाहा। १७. ॐ तेजःप्रभाविन्यै स्वाहा। १८. ॐ भाव्याभावकभावायै स्वाहा। १९. ॐ आत्मभाव्यायै स्वाहा। २०. ॐ कामदुहे स्वाहा। २१. ॐ आत्मभुवे स्वाहा। २२. ॐ भावाभावमय्यै स्वाहा। २३. ॐ दिव्यायै स्वाहा। २४. ॐ भेद्यभेदकभावगायै स्वाहा। २५. ॐ जगत्कुटुम्बिन्यै स्वाहा। २६. ॐ अखिलाधारायै स्वाहा। २७. ॐ कामविजृम्भिण्यै स्वाहा। २८. ॐ पञ्चकृत्यकर्यै स्वाहा। २९. ॐ पञ्चशक्तिमय्यै स्वाहा। ३०. ॐ आत्मवल्ल-भायै स्वाहा। ३१. ॐ भावाभावानुयायै स्वाहा। ३२. ॐ सर्वसम्मतायै स्वाहा। ३३. ॐ आत्मोपगूहिन्यै स्वाहा। ३४. ॐ अपृथक्चारिण्यै स्वाहा। ३५. ॐ सौम्यायै स्वाहा। ३६. ॐ सौम्यरूपायै स्वाहा। ३७. ॐ अव्यवस्थितायै स्वाहा। ३८. ॐ आद्यन्तरहितायै स्वाहा। ३९. ॐ देव्यै स्वाहा। ४०. ॐ भवभाव्यस्वरूपिण्यै स्वाहा। ४१. ॐ महाविभूत्यै स्वाहा। ४२. ॐ समतांगतायै स्वाहा। ४३. ॐ ज्योतिर्गणेश्वर्यै स्वाहा। ४४. ॐ सर्वकार्यकर्यै स्वाहा। ४५. ॐ धर्मस्वभावायै स्वाहा। ४६. ॐ आत्माग्रतः-स्थितायै स्वाहा। ४७. ॐ आज्ञासमविभक्ताङ्ग्यै स्वाहा। ४८. ॐ ज्ञानानन्द-क्रियामय्यै स्वाहा। ४९. ॐ स्वातन्त्र्यरूपायै स्वाहा। ५०. ॐ देवोरःस्थितायै स्वाहा। ५१. ॐ तद्धर्मधर्मिण्यै स्वाहा। ५२. ॐ सर्वभूतेश्वर्यै स्वाहा। ५३. ॐ सर्वभूतमात्रे स्वाहा। ५४. ॐ आत्ममोहिन्यै स्वाहा। ५५. ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्यै स्वाहा। ५६. ॐ सर्वव्यापिन्यै स्वाहा। ५७. ॐ प्राप्तयोगिन्यै स्वाहा। ५८. ॐ विमुक्तिदायिन्यै स्वाहा। ५९. ॐ भक्तगम्यायै स्वाहा। ६०. ॐ संसारतारिण्यै स्वाहा। ६१. ॐ धर्मार्थवादिन्यै स्वाहा। ६२. ॐ व्योमनिलयायै स्वाहा। ६३. ॐ व्योमविग्रहायै स्वाहा। ६४. ॐ पञ्चव्योम-पद्यै स्वाहा। ६५. ॐ रक्षव्यावृत्यै स्वाहा। ६६. ॐ प्राप्यपूरिण्यै स्वाहा।

६७. ॐ आनन्दरूपायै स्वाहा। ६८. ॐ सर्वाप्तिशालिन्यै स्वाहा। ६९. ॐ शक्तिनायिकायै स्वाहा। ७०. ॐ हिरण्यवर्णायै स्वाहा। ७१. ॐ हैरण्य-प्राकारायै स्वाहा। ७२. ॐ हेममालिन्यै स्वाहा। ७३. ॐ प्रस्फुरत्तायै स्वाहा। ७४. ॐ भद्रहोमायै स्वाहा। ७५. ॐ वेशिन्यै स्वाहा। ७६. ॐ रजतस्रजायै स्वाहा। ७७. ॐ स्वाज्ञाकार्यमरायै स्वाहा। ७८. ॐ नित्यसुरभ्यै स्वाहा। ७९. ॐ व्योमचारिण्यै स्वाहा। ८०. ॐ योगक्षेमवहायै स्वाहा। ८१. ॐ सर्वसुलभायै स्वाहा। ८२. ॐ इच्छाक्रियात्मिकायै स्वाहा। ८३. ॐ महासमूहायै स्वाहा। ८४. ॐ निखिलप्ररोहायै स्वाहा। ८५. ॐ वेदगोचरायै स्वाहा। ८६. ॐ विस्मयाधायिन्यै स्वाहा। ८७. ॐ ब्रह्मसंहितायै स्वाहा। ८८. ॐ सुगुणोत्तरायै स्वाहा। ८९. ॐ प्रज्ञापरिमितायै स्वाहा। ९०. ॐ आत्मानुरूपायै स्वाहा। ९१. ॐ सत्योपायार्जितायै स्वाहा। ९२. ॐ मनोज्ञेयायै स्वाहा। ९३. ॐ ज्ञानगम्यायै स्वाहा। ९४. ॐ नित्यमुक्तायै स्वाहा। ९५. ॐ आत्मसेविन्यै स्वाहा। ९६. ॐ कर्तृशक्त्यै स्वाहा। ९७. ॐ सुगहनायै स्वाहा। ९८. ॐ भोक्तृशक्त्यै स्वाहा। ९९. ॐ गुणप्रियायै स्वाहा। १००. ॐ ज्ञानशक्त्यै स्वाहा। १०१. ॐ अनौपम्यायै स्वाहा। १०२. ॐ परशक्त्यै स्वाहा। १०३. ॐ निरामयायै स्वाहा। १०४. ॐ अकलङ्कायै स्वाहा। १०५. ॐ महाशक्त्यै स्वाहा। १०६. ॐ निराधारायै स्वाहा। १०७. ॐ विकासिन्यै स्वाहा। १०८. ॐ महामायायै स्वाहा। १०९. ॐ महानन्दायै स्वाहा। ११०. ॐ ब्रह्मनीत्यै स्वाहा। १११. ॐ निराश्रयायै स्वाहा। ११२. ॐ एकस्वरूपायै स्वाहा। ११३. ॐ त्रिविधायै स्वाहा। ११४. ॐ संख्यातीतायै स्वाहा। ११५. ॐ निरंजनायै स्वाहा। ११६. ॐ आत्मसत्तायै स्वाहा। ११७. ॐ नित्यशुचये स्वाहा। ११८. ॐ निर्विकल्पायै स्वाहा। ११९. ॐ सुखोचितायै स्वाहा। १२०. ॐ नित्यशान्तायै स्वाहा। १२१. ॐ निस्तरङ्गायै स्वाहा। १२२. ॐ निर्भिन्नायै स्वाहा। १२३. ॐ सर्वभेदिन्यै स्वाहा। १२४. ॐ असंकीर्णायै स्वाहा। १२५. ॐ अविधेयात्मने स्वाहा। १२६. ॐ निषेद्ध्यायै स्वाहा। १२७. ॐ सर्वपावन्यै स्वाहा। १२८. ॐ निष्कामनायै स्वाहा। १२९. ॐ सर्वरसायै स्वाहा। १३०. ॐ अभेद्यायै स्वाहा। १३१. ॐ सर्वार्थसाधिन्यै स्वाहा। १३२. ॐ अनिर्देश्यायै स्वाहा। १३३. ॐ अपरिमितायै स्वाहा। १३४. ॐ निर्विकारायै स्वाहा। १३५. ॐ त्रिलक्षणायै स्वाहा। १३६. ॐ अभयङ्कर्यै स्वाहा। १३७. ॐ

स्त्रीस्वरूपायै स्वाहा। १३८. ॐ अव्यक्तायै स्वाहा। १३९. ॐ सदसदाकृत्यै स्वाहा। १४०. ॐ अप्रतर्क्यायै स्वाहा। १४१. ॐ अप्रतिहतायै स्वाहा। १४२. ॐ नियन्त्र्यै स्वाहा। १४३. ॐ यन्त्रवाहिन्यै स्वाहा। १४४. ॐ हार्दमूर्त्यै स्वाहा। १४५. ॐ महामूर्त्यै स्वाहा। १४६. ॐ अव्यक्तायै स्वाहा। १४७. ॐ विश्वगोपिन्यै स्वाहा। १४८. ॐ वर्धमानायै स्वाहा। १४९. ॐ अनवद्याङ्ग्यै स्वाहा। १५०. ॐ निरवद्यायै स्वाहा। १५१. ॐ त्रिवर्गदायै स्वाहा। १५२. ॐ अप्रमेयायै स्वाहा। १५३. ॐ अमृतदुधायै स्वाहा। १५४. ॐ कूटस्थायै स्वाहा। १५५. ॐ कुलनन्दिन्यै स्वाहा। १५६. ॐ अविगीतायै स्वाहा। १५७. ॐ तन्त्रसिद्धायै स्वाहा। १५८. ॐ योगसिद्धायै स्वाहा। १५९. ॐ अमरेश्वर्यै स्वाहा। १६०. ॐ विश्वसूत्यै स्वाहा। १६१. ॐ तर्पन्त्यै स्वाहा। १६२. ॐ नित्यतृप्तायै स्वाहा। १६३. ॐ महोषध्यै स्वाहा। १६४. ॐ शब्दात्ययायै स्वाहा। १६५. ॐ शब्दसहायै स्वाहा। १६६. ॐ कृतज्ञायै स्वाहा। १६७. ॐ कृतलक्षणायै स्वाहा। १६८. ॐ त्रिवर्तिन्यै स्वाहा। १६९. ॐ त्रिलोकस्थायै स्वाहा। १७०. ॐ भूर्भुवःस्वरयोनिजायै स्वाहा। १७१. ॐ अग्राह्यायै स्वाहा। १७२. ॐ अग्राह्यकायै स्वाहा। १७३. ॐ अनन्ताह्वयायै स्वाहा। १७४. ॐ सर्वातिशायिन्यै स्वाहा। १७५. ॐ व्योमपद्मायै स्वाहा। १७६. ॐ कृतधुरायै स्वाहा। १७७. ॐ पूर्णकामायै स्वाहा। १७८. ॐ महेश्वर्यै स्वाहा। १७९. ॐ सुवाच्यायै स्वाहा। १८०. ॐ वाचिकायै स्वाहा। १८१. ॐ सत्यकथनायै स्वाहा। १८२. ॐ सर्वपाविन्यै स्वाहा। १८३. ॐ लक्ष्यमाणायै स्वाहा। १८४. ॐ लक्षयन्त्यै स्वाहा। १८५. ॐ जगज्ज्येष्ठायै स्वाहा। १८६. ॐ शुभावहायै स्वाहा। १८७. ॐ जगत्प्रतिष्ठायै स्वाहा। १८८. ॐ भुवनभर्त्र्यै स्वाहा। १८९. ॐ गूढ़प्रभाविन्यै स्वाहा। १९०. ॐ क्रियायोगात्मिकायै स्वाहा। १९१. ॐ मूर्तायै स्वाहा। १९२. ॐ हृदब्जस्थायै स्वाहा। १९३. ॐ महाक्रमायै स्वाहा। १९४. ॐ परमदिवे स्वाहा। १९५. ॐ प्रथमजायै स्वाहा। १९६. ॐ परमाप्तायै स्वाहा। १९७. ॐ जगन्निधये स्वाहा। १९८. ॐ आत्मानपायिन्यै स्वाहा। १९९. ॐ तुल्य-स्वरूपायै स्वाहा। २००. ॐ समलक्षणायै स्वाहा। २०१. ॐ तुल्यवृत्तायै स्वाहा। २०२. ॐ समवयसे स्वाहा। २०३. ॐ मोदमानायै स्वाहा। २०४. ॐ खगध्वजायै स्वाहा। २०५. ॐ तुल्यचेष्टायै स्वाहा। २०६. ॐ तुल्यशीलायै स्वाहा। २०७. ॐ वरदायै स्वाहा।

२०८. ॐ कामरूपिण्यै स्वाहा। २०९. ॐ समग्रलक्षणायै स्वाहा। २१०. ॐ अनन्तायै स्वाहा। २११. ॐ तुल्यभूत्यै स्वाहा। २१२. ॐ सनातनायै स्वाहा। २१३. ॐ महर्द्धर्यै स्वाहा। २१४. ॐ सत्यसंकल्पायै स्वाहा। २१५. ॐ भूमिजायै स्वाहा। २१६. ॐ परमेश्वर्यै स्वाहा। २१७. ॐ जगन्मात्रे स्वाहा। २१८. ॐ सूत्रवत्यै स्वाहा। २१९. ॐ भूतधात्र्यै स्वाहा। २२०. ॐ यशस्विन्यै स्वाहा। २२१. ॐ महाभिलाषायै स्वाहा। २२२. ॐ सावित्र्यै स्वाहा। २२३. ॐ प्रधानायै स्वाहा। २२४. ॐ सर्वभासिन्यै स्वाहा। २२५. ॐ नानावपुषे स्वाहा। २२६. ॐ बहुविधायै स्वाहा। २२७. ॐ सर्वज्ञायै स्वाहा। २२८. ॐ पुण्यकीर्तनायै स्वाहा। २२९. ॐ भूताश्रयायै स्वाहा। २३०. ॐ हृषीकेशायै स्वाहा। २३१. ॐ अशोकायै स्वाहा। २३२. ॐ स्वाङ्गिवाहिकायै स्वाहा। २३३. ॐ ब्रह्मात्मिकायै स्वाहा। २३४. ॐ पुण्यजन्यै स्वाहा। २३५. ॐ सत्यकामायै स्वाहा। २३६. ॐ समाधिभुवे स्वाहा। २३७. ॐ हिरण्यगर्भायै स्वाहा। २३८. ॐ गम्भीरायै स्वाहा। २३९. ॐ गोधूल्यै स्वाहा। २४०. ॐ कमलासनायै स्वाहा। २४१. ॐ जितक्रोधायै स्वाहा। २४२. ॐ कुमुदिन्यै स्वाहा। २४३. ॐ वैजयन्त्यै स्वाहा। २४४. ॐ मनोजवायै स्वाहा। २४५. ॐ धनलक्ष्म्यै स्वाहा। २४६. ॐ स्वस्तिकर्यै स्वाहा। २४७. ॐ राजलक्ष्म्यै स्वाहा। २४८. ॐ महासत्यै स्वाहा। २४९. ॐ जयलक्ष्म्यै स्वाहा। २५०. ॐ महागोष्ठ्यै स्वाहा। २५१. ॐ मघोन्यै स्वाहा। २५२. ॐ माधवप्रियायै स्वाहा। २५३. ॐ पद्मगर्भायै स्वाहा। २५४. ॐ वेदवत्यै स्वाहा। २५५. ॐ विविक्तायै स्वाहा। २५६. ॐ परमेष्ठिन्यै स्वाहा। २५७. ॐ सुवर्णविन्दवे स्वाहा। २५८. ॐ महत्यै स्वाहा। २५९. ॐ महायोगिप्रियायै स्वाहा। २६०. ॐ अनघायै स्वाहा। २६१. ॐ पद्मे स्थितायै स्वाहा। २६२. ॐ वेदमय्यै स्वाहा। २६३. ॐ कुमुदायै स्वाहा। २६४. ॐ जयवाहिन्यै स्वाहा। २६५. ॐ संहत्यै स्वाहा। २६६. ॐ निर्मितायै स्वाहा। २६७. ॐ ज्योतिषे स्वाहा। २६८. ॐ नियत्यै स्वाहा। २६९. ॐ विविधोत्सवायै स्वाहा। २७०. ॐ रुद्रवन्द्यायै स्वाहा। २७१. ॐ सिन्धुमत्यै स्वाहा। २७२. ॐ वेदमात्रे स्वाहा। २७३. ॐ मधुव्रतायै स्वाहा। २७४. ॐ विश्वम्भरायै स्वाहा। २७५. ॐ हैमवत्यै स्वाहा। २७६. ॐ समुद्रायै स्वाहा। २७७. ॐ इच्छाविहारिण्यै स्वाहा। २७८. ॐ अनुकूलायै स्वाहा। २७९. ॐ यज्ञवत्यै स्वाहा।

२८०. ॐ शतकोट्यै स्वाहा। २८१. ॐ सुपेशलायै स्वाहा। २८२. ॐ धर्मोदयायै स्वाहा। २८३. ॐ धर्मसेवायै स्वाहा। २८४. ॐ सुकुमार्यै स्वाहा। २८५. ॐ सभावत्यै स्वाहा। २८६. ॐ भीमायै स्वाहा। २८७. ॐ ब्रह्मस्तुतायै स्वाहा। २८८. ॐ मध्यप्रभायै स्वाहा। २८९. ॐ देवर्षिवन्दितायै स्वाहा। २९०. ॐ देवभोग्यायै स्वाहा। २९१. ॐ महाभागायै स्वाहा। २९२. ॐ प्रतिज्ञायै स्वाहा। २९३. ॐ पूर्णशेवध्यै स्वाहा। २९४. ॐ सुवर्णायै स्वाहा। २९५. ॐ रुचिरप्रख्यायै स्वाहा। २९६. ॐ भोगिन्यै स्वाहा। २९७. ॐ भोगदायिन्यै स्वाहा। २९८. ॐ वसुप्रणायै स्वाहा। २९९. ॐ उत्तमवध्वै स्वाहा। ३००. ॐ गायत्र्यै स्वाहा। ३०१. ॐ कमलोद्भवायै स्वाहा। ३०२. ॐ विद्वत्प्रियायै स्वाहा। ३०३. ॐ पद्मचिह्नायै स्वाहा। ३०४. ॐ वरिष्ठायै स्वाहा। ३०५. ॐ कमलेक्षणायै स्वाहा। ३०६. ॐ पद्मप्रियायै स्वाहा। ३०७. ॐ सुप्रसन्नायै स्वाहा। ३०८. ॐ प्रमोदायै स्वाहा। ३०९. ॐ प्रियपार्श्वगायै स्वाहा। ३१०. ॐ विश्वभूषायै स्वाहा। ३११. ॐ कान्तिमत्यै स्वाहा। ३१२. ॐ कृष्णायै स्वाहा। ३१३. ॐ वीणारवोत्सुकायै स्वाहा। ३१४. ॐ रोचिष्कर्यै स्वाहा। ३१५. ॐ स्वप्रकाशायै स्वाहा। ३१६. ॐ शोभमानायै स्वाहा। ३१७. ॐ विहङ्गमायै स्वाहा। ३१८. ॐ देवाङ्कस्थायै स्वाहा। ३१९. ॐ परिणत्यै स्वाहा। ३२०. ॐ कामवत्सायै स्वाहा। ३२१. ॐ महामत्यै स्वाहा। ३२२. ॐ इल्वलायै स्वाहा। ३२३. ॐ उत्पलनाभायै स्वाहा। ३२४. ॐ आधिशमन्यै स्वाहा। ३२५. ॐ वरवर्णिन्यै स्वाहा। ३२६. ॐ स्वनिष्ठायै स्वाहा। ३२७. ॐ पद्मनिलयायै स्वाहा। ३२८. ॐ सद्गत्यै स्वाहा। ३२९. ॐ पद्मगन्धिन्यै स्वाहा। ३३०. ॐ पद्मवर्णायै स्वाहा। ३३१. ॐ कामयोन्यै स्वाहा। ३३२. ॐ चण्डिकायै स्वाहा। ३३३. ॐ चोरुकोपनायै स्वाहा। ३३४. ॐ रतिस्नुषायै स्वाहा। ३३५. ॐ पद्मधरायै स्वाहा। ३३६. ॐ पूज्यायै स्वाहा। ३३७. ॐ त्रैलोक्यमोहिन्यै स्वाहा। ३३८. ॐ नित्यकन्यायै स्वाहा। ३३९. ॐ विन्दुमालिन्यै स्वाहा। ३४०. ॐ अक्षयायै स्वाहा। ३४१. ॐ सर्वगन्धिन्यै स्वाहा। ३४२. ॐ गन्धात्मिकायै स्वाहा। ३४३. ॐ सुरसिकायै स्वाहा। ३४४. ॐ दीप्तमूर्त्यै स्वाहा। ३४५. ॐ सुमध्यमायै स्वाहा। ३४६. ॐ पृथुश्रोण्यै स्वाहा। ३४७. ॐ सौम्यमुख्यै स्वाहा। ३४८. ॐ सुभगायै स्वाहा। ३४९. ॐ विष्टरश्रुत्यै स्वाहा। ३५०. ॐ

स्मिताननायै स्वाहा। ३५१. ॐ चारुगत्यै स्वाहा। ३५२. ॐ निम्ननाभ्यै स्वाहा। ३५३. ॐ महास्तन्यै स्वाहा। ३५४. ॐ स्निग्धवेण्यै स्वाहा। ३५५. ॐ भगवत्यै स्वाहा। ३५६. ॐ सुकान्तायै स्वाहा। ३५७. ॐ वामलोचनायै स्वाहा। ३५८. ॐ पल्लवाङ्घ्र्यै स्वाहा। ३५९. ॐ पद्ममनसे स्वाहा। ३६०. ॐ पद्मबोधायै स्वाहा। ३६१. ॐ महाप्सरसे स्वाहा। ३६२. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ३६३. ॐ चारुहासायै स्वाहा। ३६४. ॐ शुभदृष्ट्यै स्वाहा। ३६५. ॐ ककुद्मिन्यै स्वाहा। ३६६. ॐ कम्बुग्रीवायै स्वाहा। ३६७. ॐ सुजघनायै स्वाहा। ३६८. ॐ रक्तपाण्यै स्वाहा। ३६९. ॐ मनोरमायै स्वाहा। ३७०. ॐ पद्मिन्यै स्वाहा। ३७१. ॐ मन्दगमनायै स्वाहा। ३७२. ॐ चतुर्दंष्ट्रायै स्वाहा। ३७३. ॐ चतुर्भुजायै स्वाहा। ३७४. ॐ शुभरेखायै स्वाहा। ३७५. ॐ विलासभ्रुवे स्वाहा। ३७६. ॐ शुकवाण्यै स्वाहा। ३७७. ॐ कलावत्यै स्वाहा। ३७८. ॐ ऋजुनासायै स्वाहा। ३७९. ॐ कलरवायै स्वाहा। ३८०. ॐ वरारोहायै स्वाहा। ३८१. ॐ तलोदर्यै स्वाहा। ३८२. ॐ सन्ध्यायै स्वाहा। ३८३. ॐ बिम्बाधरायै स्वाहा। ३८४. ॐ पूर्वभाषिण्यै स्वाहा। ३८५. ॐ श्रीसमाह्वयायै स्वाहा। ३८६. ॐ इक्षुचापायै स्वाहा। ३८७. ॐ सुमशरायै स्वाहा। ३८८. ॐ दिव्यभूषायै स्वाहा। ३८९. ॐ मनोहरायै स्वाहा। ३९०. ॐ वासव्यै स्वाहा। ३९१. ॐ पाण्डरच्छत्रायै स्वाहा। ३९२. ॐ करभोरवे स्वाहा। ३९३. ॐ तिलोत्तमायै स्वाहा। ३९४. ॐ सीमन्तिन्यै स्वाहा। ३९५. ॐ प्राणशक्त्यै स्वाहा। ३९६. ॐ विभीषिण्यै स्वाहा। ३९७. ॐ असुधारिण्यै स्वाहा। ३९८. ॐ भद्रायै स्वाहा। ३९९. ॐ जयावहायै स्वाहा। ४००. ॐ चन्द्रवदनायै स्वाहा। ४०१. ॐ कुटिलालकायै स्वाहा। ४०२. ॐ चित्राम्बरायै स्वाहा। ४०३. ॐ चित्रगन्धायै स्वाहा। ४०४. ॐ रत्नमौलिसमुज्ज्वलायै स्वाहा। ४०५. ॐ दिव्यायुधायै स्वाहा। ४०६. ॐ दिव्यमाल्यायै स्वाहा। ४०७. ॐ विशाखायै स्वाहा। ४०८. ॐ चित्रवाहनायै स्वाहा। ४०९. ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ४१०. ॐ सिन्धुतनयायै स्वाहा। ४११. ॐ निःश्रेण्यै स्वाहा। ४१२. ॐ सुमहासिन्यै स्वाहा। ४१३. ॐ सामप्रियायै स्वाहा। ४१४. ॐ नवमृग्यै स्वाहा। ४१५. ॐ सर्वसेव्यायै स्वाहा। ४१६. ॐ वराङ्गनायै स्वाहा। ४१७. ॐ गन्धद्वारायै स्वाहा। ४१८. ॐ दुराधर्षायै स्वाहा। ४१९. ॐ नित्यपुष्टायै स्वाहा। ४२०. ॐ

करीषिण्यै स्वाहा। ४२१. ॐ देवजुष्टायै स्वाहा। ४२२. ॐ दिव्यवर्णायै स्वाहा। ४२३. ॐ दिव्यगन्धायै स्वाहा। ४२४. ॐ स्वकर्दमायै स्वाहा। ४२५. ॐ अनन्तरूपायै स्वाहा। ४२६. ॐ अनन्तस्थायै स्वाहा। ४२७. ॐ सर्वदानन्तसङ्गमायै स्वाहा। ४२८. ॐ यज्ञाशन्यै स्वाहा। ४२९. ॐ महावृष्ट्यै स्वाहा। ४३०. ॐ सर्वपूज्यायै स्वाहा। ४३१. ॐ वषट्क्रियायै स्वाहा। ४३२. ॐ योगप्रियायै स्वाहा। ४३३. ॐ वियन्नाभ्यै स्वाहा। ४३४. ॐ अनन्तश्रियै स्वाहा। ४३५. ॐ अतीन्द्रियायै स्वाहा। ४३६. ॐ योगिसेव्यायै स्वाहा। ४३७. ॐ सत्यरतायै स्वाहा। ४३८. ॐ योगमायायै स्वाहा। ४३९. ॐ पुरातन्यै स्वाहा। ४४०. ॐ सर्वेश्वर्यै स्वाहा। ४४१. ॐ सुतरुण्यै स्वाहा। ४४२. ॐ शरण्यायै स्वाहा। ४४३. ॐ धर्मदेवतायै स्वाहा। ४४४. ॐ सुतरायै स्वाहा। ४४५. ॐ संवृतज्योतिषे स्वाहा। ४४६. ॐ योगिन्यै स्वाहा। ४४७. ॐ योगसिद्धिदायै स्वाहा। ४४८. ॐ सृष्टिशक्त्यै स्वाहा। ४४९. ॐ द्योतमानभूतायै स्वाहा। ४५०. ॐ मङ्गलदेवतायै स्वाहा। ४५१. ॐ संहारशक्त्यै स्वाहा। ४५२. ॐ प्रबलायै स्वाहा। ४५३. ॐ निरुपाधयै स्वाहा। ४५४. ॐ परावरायै स्वाहा। ४५५. ॐ उत्तारिण्यै स्वाहा। ४५६. ॐ तारयन्त्यै स्वाहा। ४५७. ॐ शाश्वत्यै स्वाहा। ४५८. ॐ समितिञ्जयायै स्वाहा। ४५९. ॐ महाश्रियै स्वाहा। ४६०. ॐ अजहत्कीर्त्यै स्वाहा। ४६१. ॐ योगश्रियै स्वाहा। ४६२. ॐ सिद्धिसाधन्यै स्वाहा। ४६३. ॐ पुण्यश्रियै स्वाहा। ४६४. ॐ पुण्यनिलयायै स्वाहा। ४६५. ॐ ब्रह्मश्रियै स्वाहा। ४६६. ॐ ब्राह्मणप्रियायै स्वाहा। ४६७. ॐ राजश्रियै स्वाहा। ४६८. ॐ राजकलितायै स्वाहा। ४६९. ॐ फलश्रियै स्वाहा। ४७०. ॐ स्वर्गदायिन्यै स्वाहा। ४७१. ॐ देवश्रियै स्वाहा। ४७२. ॐ अद्भुतकथायै स्वाहा। ४७३. ॐ वेदश्रियै स्वाहा। ४७४. ॐ श्रुतिमार्गिण्यै स्वाहा। ४७५. ॐ तमोपहायै स्वाहा। ४७६. ॐ अव्ययनिधयै स्वाहा। ४७७. ॐ लक्ष्मणायै स्वाहा। ४७८. ॐ हृदयङ्गमायै स्वाहा। ४७९. ॐ मृतसंजीविन्यै स्वाहा। ४८०. ॐ शुभ्रायै स्वाहा। ४८१. ॐ चन्द्रिकायै स्वाहा। ४८२. ॐ सर्वतोमुख्यै स्वाहा। ४८३. ॐ सर्वोत्तमायै स्वाहा। ४८४. ॐ मित्रविन्दायै स्वाहा। ४८५. ॐ मैथिल्यै स्वाहा। ४८६. ॐ प्रियदर्शनायै स्वाहा। ४८७. ॐ सत्यभामायै स्वाहा। ४८८. ॐ वेदवेद्यायै स्वाहा। ४८९. ॐ सीतायै स्वाहा। ४९०. ॐ प्रणतपोषिण्यै स्व.हा। ४९१. ॐ मूलप्रकृत्यै

स्वाहा। ४९२. ॐ ईशानायै स्वाहा। ४९३. ॐ शिवदायै स्वाहा। ४९४. ॐ दीपप्रदीपिन्यै स्वाहा। ४९५. ॐ अभिप्रियायै स्वाहा। ४९६. ॐ स्वैरवृत्त्यै स्वाहा। ४९७. ॐ रुक्मिण्यै स्वाहा। ४९८. ॐ सर्वसाक्षिण्यै स्वाहा। ४९९. ॐ गान्धारिण्यै स्वाहा। ५००. ॐ परगत्यै स्वाहा। ५०१. ॐ तत्त्वगर्भायै स्वाहा। ५०२. ॐ भवाभवायै स्वाहा। ५०३. ॐ अन्तर्वर्त्यै स्वाहा। ५०४. ॐ महामुद्रायै स्वाहा। ५०५. ॐ विष्णुदुर्गायै स्वाहा। ५०६. ॐ महाबलायै स्वाहा। ५०७. ॐ मदयन्त्यै स्वाहा। ५०८. ॐ लोक-धारिण्यै स्वाहा। ५०९. ॐ अदृश्यायै स्वाहा। ५१०. ॐ सर्वनिष्कृत्यै स्वाहा। ५११. ॐ देवसेनायै स्वाहा। ५१२. ॐ आत्मफलदायै स्वाहा। ५१३. ॐ वसुधायै स्वाहा। ५१४. ॐ मुख्यमातृकायै स्वाहा। ५१५. ॐ क्षीरधारायै स्वाहा। ५१६. ॐ घृतमय्यै स्वाहा। ५१७. ॐ जुह्वत्यै स्वाहा। ५१८. ॐ यज्ञदक्षिणायै स्वाहा। ५१९. ॐ योगनिद्रायै स्वाहा। ५२०. ॐ योगरतायै स्वाहा। ५२१. ॐ ब्रह्मचर्यायै स्वाहा। ५२२. ॐ दुरत्ययायै स्वाहा। ५२३. ॐ सिंह्मपिच्छायै स्वाहा। ५२४. ॐ महादुर्गायै स्वाहा। ५२५. ॐ जयन्त्यै स्वाहा। ५२६. ॐ खगवाहिन्यै स्वाहा। ५२७. ॐ जगत्प्रियायै स्वाहा। ५२८. ॐ विरूपाक्ष्यै स्वाहा। ५२९. ॐ सुवर्णायै स्वाहा। ५३०. ॐ क्रूरतापिन्यै स्वाहा। ५३१. ॐ कात्यायन्यै स्वाहा। ५३२. ॐ कालरात्र्यै स्वाहा। ५३३. ॐ निशिदृष्टायै स्वाहा। ५३४. ॐ करालिकायै स्वाहा। ५३५. ॐ त्रिशूलिन्यै स्वाहा। ५३६. ॐ खड्गधरायै स्वाहा। ५३७. ॐ महाकाल्यै स्वाहा। ५३८. ॐ इन्द्रमालिन्यै स्वाहा। ५३९. ॐ एकवीरायै स्वाहा। ५४०. ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा। ५४१. ॐ सौनन्द्यै स्वाहा। ५४२. ॐ उल्लसद्गदायै स्वाहा। ५४३. ॐ नारायण्यै स्वाहा। ५४४. ॐ जगत्पूरिण्यै स्वाहा। ५४५. ॐ उर्वरायै स्वाहा। ५४६. ॐ द्रुहिणप्रसवे स्वाहा। ५४७. ॐ यज्ञकामायै स्वाहा। ५४८. ॐ लेलिहानायै स्वाहा। ५४९. ॐ तीर्थकर्यै स्वाहा। ५५०. ॐ उग्रविक्रमायै स्वाहा। ५५१. ॐ गरुत्मदुदयायै स्वाहा। ५५२. ॐ अत्युग्रायै स्वाहा। ५५३. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ५५४. ॐ मातृभाषिण्यै स्वाहा। ५५५. ॐ अश्वक्रान्तायै स्वाहा। ५५६. ॐ रथक्रान्तायै स्वाहा। ५५७. ॐ विष्णुक्रान्तायै स्वाहा। ५५८. ॐ उरुचारिण्यै स्वाहा। ५५९. ॐ वैरोचिन्यै स्वाहा। ५६०. ॐ नारसिंह्यै स्वाहा। ५६१. ॐ जीमूतायै स्वाहा। ५६२. ॐ शुभदेक्षणायै स्वाहा।

५६३. ॐ दीक्षाविधायै स्वाहा। ५६४. ॐ विश्वशक्त्यै स्वाहा। ५६५. ॐ निजशक्त्यै स्वाहा। ५६६. ॐ सुदर्शिन्यै स्वाहा। ५६७. ॐ प्रतीत्यै स्वाहा। ५६८. ॐ जगत्यै स्वाहा। ५६९. ॐ वन्यधारिण्यै स्वाहा। ५७०. ॐ कलिनाशिन्यै स्वाहा। ५७१. ॐ अयोध्यायै स्वाहा। ५७२. ॐ अच्छिन्न-सन्तानायै स्वाहा। ५७३. ॐ महारत्नायै स्वाहा। ५७४. ॐ सुखावहायै स्वाहा। ५७५. ॐ राजवत्यै स्वाहा। ५७६. ॐ अर्कप्रतिभायै स्वाहा। ५७७. ॐ विनयित्र्यै स्वाहा। ५७८. ॐ महाशनायै स्वाहा। ५७९. ॐ अमृतस्यन्दिन्यै स्वाहा। ५८०. ॐ सीमायै स्वाहा। ५८१. ॐ यज्ञगर्भायै स्वाहा। ५८२. ॐ समीक्षणायै स्वाहा। ५८३. ॐ आकूत्यै स्वाहा। ५८४. ॐ ऋग्यजुःसामघोषायै स्वाहा। ५८५. ॐ आरामवधूत्सुकायै स्वाहा। ५८६. ॐ सोमपायै स्वाहा। ५८७. ॐ माधव्यै स्वाहा। ५८८. ॐ नित्य-कल्याण्यै स्वाहा। ५८९. ॐ कमलार्चितायै स्वाहा। ५९०. ॐ योगरूढ्यै स्वाहा। ५९१. ॐ स्वार्थजुष्टायै स्वाहा। ५९२. ॐ वह्निवर्णायै स्वाहा। ५९३. ॐ जितासुरायै स्वाहा। ५९४. ॐ यज्ञविद्यायै स्वाहा। ५९५. ॐ गुह्य-विद्यायै स्वाहा। ५९६. ॐ अध्यात्मविद्यायै स्वाहा। ५९७. ॐ कृतागमायै स्वाहा। ५९८. ॐ आप्यायिन्यै स्वाहा। ५९९. ॐ कलातीतायै स्वाहा। ६००. ॐ सुमित्रायै स्वाहा। ६०१. ॐ परमभक्तिदायै स्वाहा। ६०२. ॐ काङ्क्षमाणायै स्वाहा। ६०३. ॐ महामायायै स्वाहा। ६०४. ॐ कोल-कामायै स्वाहा। ६०५. ॐ अमरावत्यै स्वाहा। ६०६. ॐ सुवीर्यायै स्वाहा। ६०७. ॐ दुःस्वप्नहरायै स्वाहा। ६०८. ॐ देवक्यै स्वाहा। ६०९. ॐ वसुदेवतायै स्वाहा। ६१०. ॐ सौदामिन्यै स्वाहा। ६११. ॐ मेघरथायै स्वाहा। ६१२. ॐ ऋद्धिदायै स्वाहा। ६१३. ॐ दैत्यमर्दिन्यै स्वाहा। ६१४. ॐ श्रेयस्कर्यै स्वाहा। ६१५. ॐ चित्रलीलायै स्वाहा। ६१६. ॐ एकायिन्यै स्वाहा। ६१७. ॐ रत्नपादुकायै स्वाहा। ६१८. ॐ मनस्यमानायै स्वाहा। ६१९. ॐ तुलस्यै स्वाहा। ६२०. ॐ रोगनाशिन्यै स्वाहा। ६२१. ॐ उरुप्रथायै स्वाहा। ६२२. ॐ तेजस्विन्यै स्वाहा। ६२३. ॐ सुखोज्ज्वलायै स्वाहा। ६२४. ॐ मन्दरेखायै स्वाहा। ६२५. ॐ अमृतनाशिन्यै स्वाहा। ६२६. ॐ ब्रह्मिष्ठायै स्वाहा। ६२७. ॐ वह्निशमन्यै स्वाहा। ६२८. ॐ जुषमाणायै स्वाहा। ६२९. ॐ गुणात्यायै स्वाहा। ६३०. ॐ कादम्बर्यै स्वाहा। ६३१. ॐ ब्रह्मरथायै स्वाहा। ६३२. ॐ विधात्र्यै स्वाहा। ६३३. ॐ

उज्ज्वल-हस्तिकायै स्वाहा। ६३४. ॐ अक्षोभ्यायै स्वाहा। ६३५. ॐ सर्वतोभद्रायै स्वाहा। ६३६. ॐ वयस्यायै स्वाहा। ६३७. ॐ स्वस्ति-दक्षिणायै स्वाहा। ६३८. ॐ सहस्रास्यायै स्वाहा। ६३९. ॐ ज्ञानमात्रे स्वाहा। ६४०. ॐ वैश्वानर्यै स्वाहा। ६४१. ॐ अक्षवर्तिन्यै स्वाहा। ६४२. ॐ प्रत्यग्वरायै स्वाहा। ६४३. ॐ वारणवत्यै स्वाहा। ६४४. ॐ अनसूयायै स्वाहा। ६४५. ॐ दुरासदायै स्वाहा। ६४६. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ६४७. ॐ कुण्डलिन्यै स्वाहा। ६४८. ॐ भव्यायै स्वाहा। ६४९. ॐ दुर्गविनाशिन्यै स्वाहा। ६५०. ॐ मृत्युञ्जयायै स्वाहा। ६५१. ॐ त्रासहरायै स्वाहा। ६५२. ॐ निर्भयायै स्वाहा। ६५३. ॐ शत्रुसूदिन्यै स्वाहा। ६५४. ॐ एकाक्षरायै स्वाहा। ६५५. ॐ सुपुरन्ध्र्यै स्वाहा। ६५६. ॐ सुरपक्षायै स्वाहा। ६५७. ॐ वरातुलायै स्वाहा। ६५८. ॐ सकृद्विभासायै स्वाहा। ६५९. ॐ प्रद्युम्नायै स्वाहा। ६६०. ॐ हरिभद्रायै स्वाहा। ६६१. ॐ धुरन्धरायै स्वाहा। ६६२. ॐ बिल्वप्रियायै स्वाहा। ६६३. ॐ अवन्यै स्वाहा। ६६४. ॐ चक्रहृदयायै स्वाहा। ६६५. ॐ कम्बुतीर्थगायै स्वाहा। ६६६. ॐ सर्वमन्त्रात्मिकायै स्वाहा। ६६७ ॐ विद्युते स्वाहा। ६६८. ॐ यशोदायै स्वाहा। ६६९. ॐ सर्वरञ्जिन्यै स्वाहा। ६७०. ॐ ध्वजच्छत्राश्रयायै स्वाहा। ६७१. ॐ भूम्यै स्वाहा। ६७२. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ६७३. ॐ सद्गुणो-ज्ज्वलायै स्वाहा। ६७४. ॐ सुषेणायै स्वाहा। ६७५. ॐ लोकविदितायै स्वाहा। ६७६. ॐ कामसुवे स्वाहा। ६७७. ॐ जगदादिभुवे स्वाहा। ६७८. ॐ वेदान्तयोन्यै स्वाहा। ६७९. ॐ जिज्ञासायै स्वाहा। ६८०. ॐ मनीषायै स्वाहा। ६८१. ॐ समदर्शिन्यै स्वाहा। ६८२. ॐ सहस्रशक्त्यै स्वाहा। ६८३. ॐ आवृत्त्यै स्वाहा। ६८४. ॐ सुस्थिरायै स्वाहा। ६८५. ॐ श्रेयस्सान्निधयै स्वाहा। ६८६. ॐ रोहिण्यै स्वाहा। ६८७. ॐ रेवत्यै स्वाहा। ६८८. ॐ चन्द्रसोदर्यै स्वाहा। ६८९. ॐ भद्रमोदिन्यै स्वाहा। ६९०. ॐ आर्यायै स्वाहा। ६९१. ॐ गव्यप्रियायै स्वाहा। ६९२. ॐ विश्वभाविन्यै स्वाहा। ६९३. ॐ सुविभाविन्यै स्वाहा। ६९४. ॐ सुप्रदृश्यायै स्वाहा। ६९५. ॐ कामचारिण्यै स्वाहा। ६९६. ॐ अप्रमत्तायै स्वाहा। ६९७. ॐ ललन्तिकायै स्वाहा। ६९८. ॐ जगद्योन्यै स्वाहा। ६९९. ॐ मोक्षलक्ष्म्यै स्वाहा। ७००. ॐ सुदुर्लभायै स्वाहा। ७०१. ॐ भास्कर्यै स्वाहा। ७०२. ॐ पुण्यगेहस्थायै स्वाहा। ७०३. ॐ मनोज्ञायै स्वाहा। ७०४. ॐ विभवप्रदायै

स्वाहा। ७०५. ॐ लोकस्वामिन्यै स्वाहा। ७०६. ॐ अच्युतार्थायै स्वाहा। ७०७. ॐ पुष्कलायै स्वाहा। ७०८. ॐ जगदाकृत्यै स्वाहा। ७०९. ॐ विचित्रहारिण्यै स्वाहा। ७१०. ॐ कान्तायै स्वाहा। ७११. ॐ पाविन्यै स्वाहा। ७१२. ॐ भूतभाविन्यै स्वाहा। ७१३. ॐ प्राणिन्यै स्वाहा। ७१४. ॐ प्राणदायै स्वाहा। ७१५. ॐ विद्वते स्वाहा। ७१६. ॐ विश्वब्रह्माण्डवासिन्यै स्वाहा। ७१७. ॐ सम्पूर्णायै स्वाहा। ७१८. ॐ परमोत्साहायै स्वाहा। ७१९. ॐ परमोत्साहायै स्वाहा। ७२०. ॐ श्रीपत्यै स्वाहा। ७२१. ॐ श्रीमत्यै स्वाहा। ७२२. ॐ श्रुत्यै स्वाहा। ७२३. ॐ श्रयन्त्यै स्वाहा। ७२४. ॐ श्रयमाणायै स्वाहा। ७२५. ॐ क्षमायै स्वाहा। ७२६. ॐ विश्वरूपायै स्वाहा। ७२७. ॐ प्रसादिन्यै स्वाहा। ७२८. ॐ हर्षिण्यै स्वाहा। ७२९. ॐ प्रथमायै स्वाहा। ७३०. ॐ सर्वायै स्वाहा। ७३१. ॐ विशालायै स्वाहा। ७३२. ॐ कामवर्षिण्यै स्वाहा। ७३३. ॐ सुप्रतीकायै स्वाहा। ७३४. ॐ पृश्निमत्यै स्वाहा। ७३५. ॐ निवृत्त्यै स्वाहा। ७३६. ॐ विविधायै स्वाहा। ७३७. ॐ परायै स्वाहा। ७३८. ॐ सुयज्ञायै स्वाहा। ७३९. ॐ मधुरायै स्वाहा। ७४०. ॐ श्रीदायै स्वाहा। ७४१. ॐ देवरात्यै स्वाहा। ७४२. ॐ महामनसे स्वाहा। ७४३. ॐ स्थूलायै स्वाहा। ७४४. ॐ सर्वाकृत्यै स्वाहा। ७४५. ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा। ७४६. ॐ निम्नगव्यायै स्वाहा। ७४७. ॐ तमोनुदायै स्वाहा। ७४८. ॐ तुष्ट्यै स्वाहा। ७४९. ॐ वागीश्वर्यै स्वाहा। ७५०. ॐ पुष्ट्यै स्वाहा। ७५१. ॐ सर्वायै स्वाहा। ७५२. ॐ आद्यायै स्वाहा। ७५३. ॐ स्वरुशोषिण्यै स्वाहा। ७५४. ॐ शक्त्यात्मिकायै स्वाहा। ७५५. ॐ शब्दशक्त्यै स्वाहा। ७५६. ॐ विशिष्टायै स्वाहा। ७५७. ॐ वायुमत्यै स्वाहा। ७५८. ॐ अम्ब्यै स्वाहा। ७५९. ॐ आन्वीक्षिक्यै स्वाहा। ७६०. ॐ त्रयीवार्तायै स्वाहा। ७६१. ॐ दण्डनीत्यै स्वाहा। ७६२. ॐ नियामिकायै स्वाहा। ७६३. ॐ व्याल्यै स्वाहा। ७६४. ॐ सङ्कर्षण्यै स्वाहा। ७६५. ॐ द्योतायै स्वाहा। ७६६. ॐ महादेव्यै स्वाहा। ७६७. ॐ अपराजितायै स्वाहा। ७६८. ॐ कपिलायै स्वाहा। ७६९. ॐ पिङ्गलायै स्वाहा। ७७०. ॐ स्वस्थायै स्वाहा। ७७१. ॐ बलाक्यै स्वाहा। ७७२. ॐ घोषनन्दिन्यै स्वाहा। ७७३. ॐ अजितायै स्वाहा। ७७४. ॐ कर्षण्यै स्वाहा। ७७५. ॐ क्षान्त्यै स्वाहा। ७७६. ॐ गरुडायै स्वाहा। ७७७. ॐ गरुडासनायै स्वाहा। ७७८. ॐ हलादिन्यै स्वाहा। ७७९. ॐ

अनुग्रहायै स्वाहा। ७८०. ॐ नित्यायै स्वाहा। ७८१. ॐ ब्रह्मविद्यायै स्वाहा। ७८२. ॐ हिरणमय्यै स्वाहा। ७८३. ॐ मह्यै स्वाहा। ७८४. ॐ शुद्धविधायै स्वाहा। ७८५. ॐ पृथ्व्यै स्वाहा। ७८६. ॐ शतानन्दायै स्वाहा। ७८७. ॐ अंशुमालिन्यै स्वाहा। ७८८. ॐ यज्ञाश्रयायै स्वाहा। ७८९. ॐ ख्यातिपरायै स्वाहा। ७९०. ॐ स्तव्यायै स्वाहा। ७९१. ॐ धृष्ट्यै स्वाहा। ७९२. ॐ त्रिकालगायै स्वाहा। ७९३. ॐ संबोधिन्यै स्वाहा। ७९४. ॐ शब्दपूर्णायै स्वाहा। ७९५. ॐ विजयायै स्वाहा। ७९६. ॐ अंशुमत्यै स्वाहा। ७९७. ॐ कलायै स्वाहा। ७९८. ॐ शिवायै स्वाहा। ७९९. ॐ स्तुतिप्रयायै स्वाहा। ८००. ॐ ख्यात्यै स्वाहा। ८०१. ॐ जीवयन्त्यै स्वाहा। ८०२. ॐ पुनर्वसवे स्वाहा। ८०३. ॐ दीक्षायै स्वाहा। ८०४. ॐ भक्तार्तिहायै स्वाहा। ८०५. ॐ रक्षायै स्वाहा। ८०६. ॐ परीक्षायै स्वाहा। ८०७. ॐ यज्ञसंभवायै स्वाहा। ८०८. ॐ आर्द्रायै स्वाहा। ८०९. ॐ पुष्करिण्यै स्वाहा। ८१०. ॐ पुण्यायै स्वाहा। ८११. ॐ गण्यायै स्वाहा। ८१२. ॐ दारिद्र्यभञ्जिन्यै स्वाहा। ८१३. ॐ धन्यायै स्वाहा। ८१४. ॐ मान्यायै स्वाहा। ८१५. ॐ पद्मनेम्यै स्वाहा। ८१६. ॐ भार्गव्यै स्वाहा। ८१७. ॐ वंशवर्धिन्यै स्वाहा। ८१८. ॐ तीक्ष्णप्रवृत्यै स्वाहा। ८१९. ॐ सत्कीर्त्यै स्वाहा। ८२०. ॐ निधिसेव्यायै स्वाहा। ८२१. ॐ अघनाशिन्यै स्वाहा। ८२२. ॐ संज्ञायै स्वाहा। ८२३. ॐ निःसंशयायै स्वाहा। ८२४. ॐ पूर्वायै स्वाहा। ८२५. ॐ वनमालायै स्वाहा। ८२६. ॐ वसुन्धरायै स्वाहा। ८२७. ॐ पृथ्व्यै स्वाहा। ८२८. ॐ महोत्कटायै स्वाहा। ८२९. ॐ अहल्यायै स्वाहा। ८३०. ॐ मण्डलायै स्वाहा। ८३१ ॐ आश्रितमानदायै स्वाहा। ८३२. ॐ सर्वस्यै स्वाहा। ८३३. ॐ नित्योदितायै स्वाहा। ८३४. ॐ उदारायै स्वाहा। ८३५. ॐ जृम्भमाणायै स्वाहा। ८३६. ॐ महोदयायै स्वाहा। ८३७. ॐ चन्द्रकान्तोदितायै स्वाहा। ८३८. ॐ सूर्यायै स्वाहा। ८३९. ॐ चतुरश्रायै स्वाहा। ८४०. ॐ मनोजवायै स्वाहा। ८४१. ॐ बालायै स्वाहा। ८४२. ॐ कुमार्यै स्वाहा। ८४३. ॐ युवत्यै स्वाहा। ८४४. ॐ करुणायै स्वाहा। ८४५. ॐ भक्तवत्सलायै स्वाहा। ८४६. ॐ मेदिन्यै स्वाहा। ८४७. ॐ उपनिषन्मिश्रायै स्वाहा। ८४८. ॐ सुमवीरवे स्वाहा। ८४९. ॐ धनेश्वर्यै स्वाहा। ८५०. ॐ दुर्मर्षण्यै स्वाहा। ८५१. ॐ सुचरितायै स्वाहा। ८५२. ॐ बोधायै स्वाहा। ८५३. ॐ शोभायै स्वाहा। ८५४. ॐ सुवर्चलायै स्वाहा। ८५५. ॐ यमुनायै

स्वाहा। ८५६. ॐ अक्षौहिण्यै स्वाहा। ८५७. ॐ गङ्गायै स्वाहा। ८५८. ॐ मन्दाकिन्यै स्वाहा। ८५९. ॐ अमलाशयायै स्वाहा। ८६०. ॐ गोदायै स्वाहा। ८६१. ॐ गोदावर्यै स्वाहा। ८६२. ॐ चन्द्रभागायै स्वाहा। ८६३. ॐ कावेर्यै स्वाहा। ८६४. ॐ उदन्वत्यै स्वाहा। ८६५. ॐ सिनी-वाल्यै स्वाहा। ८६६. ॐ कुह्वै स्वाहा। ८६७. ॐ राकायै स्वाहा। ८६८. ॐ वारणायै स्वाहा। ८६९. ॐ सिन्धुमत्यै स्वाहा। ८७०. ॐ अमायै स्वाहा। ८७१. ॐ पूर्तये स्वाहा। ८७२. ॐ मायात्मिकायै स्वाहा। ८७३. ॐ स्फूर्तये स्वाहा। ८७४. ॐ व्याख्यायै स्वाहा। ८७५. ॐ सूत्रायै स्वाहा। ८७६. ॐ प्रजावत्यै स्वाहा। ८७७. ॐ वृद्ध्यै स्वाहा। ८७८. ॐ स्थित्यै स्वाहा। ८७९. ॐ ध्रुवायै स्वाहा। ८८०. ॐ बुद्ध्यै स्वाहा। ८८१. ॐ त्रिगुणायै स्वाहा। ८८२. ॐ गुणगह्वरायै स्वाहा। ८८३. ॐ अमोघायै स्वाहा। ८८४. ॐ शान्तिदायै स्वाहा। ८८५. ॐ सत्यायै स्वाहा। ८८६. ॐ ज्ञानदायै स्वाहा। ८८७. ॐ उत्कर्षिण्यै स्वाहा। ८८८. ॐ शिवायै स्वाहा। ८८९. ॐ प्रकृत्यै स्वाहा। ८९०. ॐ भामिन्यै स्वाहा। ८९१. ॐ लोलायै स्वाहा। ८९२. ॐ कमलायै स्वाहा। ८९३. ॐ कामदुहे स्वाहा। ८९४. ॐ विद्ध्यै स्वाहा। ८९५. ॐ प्रज्ञायै स्वाहा। ८९६. ॐ रामायै स्वाहा। ८९७. ॐ परायै स्वाहा। ८९८. ॐ सन्ध्यायै स्वाहा। ८९९. ॐ सुभद्रायै स्वाहा। ९००. ॐ सर्वमङ्गलायै स्वाहा। ९०१. ॐ नन्दायै स्वाहा। ९०२. ॐ भद्रायै स्वाहा। ९०३. ॐ जयायै स्वाहा। ९०४. ॐ रिक्तायै स्वाहा। ९०५. ॐ तिथिपूर्णायै स्वाहा। ९०६. ॐ ऋतंभरायै स्वाहा। ९०७. ॐ काष्ठायै स्वाहा। ९०८. ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा। ९०९. ॐ निष्ठायै स्वाहा। ९१०. ॐ काम्यायै स्वाहा। ९११. ॐ राम्यायै स्वाहा। ९१२. ॐ धरायै स्वाहा। ९१३. ॐ स्मृत्यै स्वाहा। ९१४. ॐ शङ्खिन्यै स्वाहा। ९१५. ॐ चक्रिण्यै स्वाहा। ९१६. ॐ श्यामायै स्वाहा। ९१७. ॐ सामायै स्वाहा। ९१८. ॐ गोत्रायै स्वाहा। ९१९. ॐ रमायै स्वाहा। ९२०. ॐ द्युत्यै स्वाहा। ९२१. ॐ शान्तिदायै स्वाहा। ९२२. ॐ स्तुत्यै स्वाहा। ९२३. ॐ सिद्ध्यै स्वाहा। ९२४. ॐ विराजायै स्वाहा। ९२५. ॐ अत्युज्ज्वलायै स्वाहा। ९२६. ॐ अव्ययायै स्वाहा। ९२७. ॐ वाण्यै स्वाहा। ९२८. ॐ गौर्यै स्वाहा। ९२९. ॐ इन्दिरायै स्वाहा। ९३०. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ९३१. ॐ मेधायै स्वाहा। ९३२. ॐ श्रद्धायै स्वाहा। ९३३. ॐ अप्रमायै स्वाहा। ९३४. ॐ द्युतये स्वाहा। ९३५. ॐ

स्वधायै स्वाहा। ९३६. ॐ स्वाहायै स्वाहा। ९३७. ॐ रतिरुषायै स्वाहा। ९३८. ॐ वसवे स्वाहा। ९३९. ॐ विद्यायै स्वाहा। ९४०. ॐ धृत्यै स्वाहा। ९४१. ॐ सभायै स्वाहा। ९४२. ॐ शिष्टायै स्वाहा। ९४३. ॐ इष्टायै स्वाहा। ९४४. ॐ शुच्यै स्वाहा। ९४५. ॐ धात्र्यै स्वाहा। ९४६. ॐ सुधारायै स्वाहा। ९४७. ॐ अक्षोण्यजायै स्वाहा। ९४८. ॐ अमृतायै स्वाहा। ९४९. ॐ रमण्यै स्वाहा। ९५०. ॐ एकायै स्वाहा। ९५१. ॐ शारदाम्बायै स्वाहा। ९५२. ॐ समेधायै स्वाहा। ९५३. ॐ आद्यायै स्वाहा। ९५४. ॐ शुभाक्षरायै स्वाहा। ९५५. ॐ रत्नावल्यै स्वाहा। ९५६. ॐ भारात्यै स्वाहा। ९५७. ॐ ईडायै स्वाहा। ९५८. ॐ धीरायै स्वाहा। ९५९. ॐ धियै स्वाहा। ९६०. ॐ केवलायै स्वाहा। ९६१. ॐ आत्मदायै स्वाहा। ९६२. ॐ यस्यै स्वाहा। ९६३. ॐ तस्यै स्वाहा। ९६४. ॐ शुद्ध्यै स्वाहा। ९६५. ॐ सोस्मितायै स्वाहा। ९६६. ॐ कस्यै स्वाहा। ९६७. ॐ नीलायै स्वाहा। ९६८. ॐ राधायै स्वाहा। ९६९. ॐ अमृतोद्भवायै स्वाहा। ९७०. ॐ विभूत्यै स्वाहा। ९७१. ॐ निष्कलायै स्वाहा। ९७२. ॐ रम्यायै स्वाहा। ९७३. ॐ रक्षायै स्वाहा। ९७४. ॐ सुविमलायै स्वाहा। ९७५. ॐ क्षमायै स्वाहा। ९७६. ॐ प्राप्त्यै स्वाहा। ९७७. ॐ वासन्तिकालेखायै स्वाहा। ९७८. ॐ भूरिबीजायै स्वाहा। ९७९. ॐ महाङ्गदायै स्वाहा। ९८०. ॐ वरधुर्यायै स्वाहा। ९८१. ॐ स्वधायै स्वाहा। ९८२. ॐ ह्रियै स्वाहा। ९८३. ॐ भुवे स्वाहा। ९८४. ॐ कामिन्यै स्वाहा। ९८५. ॐ शोकनाशिन्यै स्वाहा। ९८६. ॐ मायायै स्वाहा। ९८७. ॐ प्रीत्यै स्वाहा। ९८८. ॐ असहनायै स्वाहा। ९८९. ॐ नर्मदायै स्वाहा। ९९०. ॐ गोकुलाश्रयायै स्वाहा। ९९१. ॐ अर्कप्रभायै स्वाहा। ९९२. ॐ रसेभायै स्वाहा। ९९३. ॐ श्रीनिलयायै स्वाहा। ९९४. ॐ इन्दुप्रभायै स्वाहा। ९९५. ॐ अद्भुतायै स्वाहा। ९९६. ॐ श्रियै स्वाहा। ९९७. ॐ कृशानुप्रभायै स्वाहा। ९९८. ॐ वज्रलम्बनायै स्वाहा। ९९९. ॐ सर्वभूमिदायै स्वाहा। १०००. ॐ भोगप्रियायै स्वाहा। १००१. ॐ भोगवत्यै स्वाहा। १००२. ॐ भोगीन्द्रशयनासनायै स्वाहा। १००३. ॐ अश्वपूर्वायै स्वाहा। १००४. ॐ रथमध्यायै स्वाहा। १००५. ॐ हस्तिनादप्रबोधिन्यै स्वाहा। १००६. ॐ सर्वलक्षणलक्षिण्यायै स्वाहा। १००७. ॐ सर्वलोकप्रियङ्कर्यै स्वाहा। १००८. ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यायै स्वाहा।

नवग्रहयागन्यासः

विनियोगः—आ कृष्णेनेति हिरण्यस्तूप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सविता देवता, इमन्देवा इति वरुण ऋषिः अत्यष्टिश्छन्दः सोमो देवता, अग्निर्मूर्धेति विरूपाक्ष ऋषिः गायत्रीछन्दः भौमो देवता, उद्बुध्यस्वेति परमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः बुधो देवता, बृहस्पत इति गृत्समद ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः बृहस्पतिर्देवता, अन्नात्परिस्त्रुत इति प्रजापत्यश्वि-सरस्वतीन्द्रा ऋषयः अतिजगतीछन्दः शुक्रो देवता, शन्नो देवीरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दः शनिर्देवता, कया नश्चित्र इति वामदेव ऋषिः गायत्रीछन्दः राहुर्देवता, केतुं कृण्वन्निति मधुच्छन्दा ऋषि गायत्रीछन्दः केतुर्देवता, सूर्यादिनवग्रहाणां जपे होमे च विनियोगः।

१. ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतञ्चमर्त्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथे ना देवो याति भुवनानि पश्यन्—हृदये। २. ॐ इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्या-येन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा—उदरे। ३. ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति—नाभौ। ४. ॐ उद्बुध्या-स्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तर-स्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत—कट्याम्। ५. ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतु-मज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्—ऊर्वोः। ६. ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धसऽइन्द्र स्येन्द्रियमिदपयोऽमृतं मधु—जान्वोः। ७. ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः—जङ्घयोः। ८. ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता—पादयोः। ९. ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः—सर्वाङ्गेषु।

पुनः—१. ॐ उद्बुध्यास्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत—हृदयाय नमः। २. ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीद-यच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्—शिरसे स्वाहा। ३. ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धसऽइन्द्र स्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु-शिखायै वषट्। ४. ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु

नः—कवचाय हुम्। ५. ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता—नेत्रत्रयाय वौषट्। ६. ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः—अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

नवग्रहयागस्वाहाकारमन्त्राः

नवग्रह महायज्ञ में निम्न मन्त्रों के द्वारा एक करोड़ अथवा एक लाख या दस हजार आहुति देने का विधान है। यह यज्ञ नौ दिन में सम्पन्न होता है। नवग्रह महायज्ञ में नवग्रह के आकार के नौ कुण्डों को बनाने का विधान है।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतञ्चमर्त्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथे ना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ १॥

इमं देवा असपत्नर्ठ० सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा स्वाहा॥ २॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपार्ठ०-रेतार्ठ०सि जिन्वति स्वाहा॥ ३॥

उद्‌बुध्यास्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा॥ ४॥

बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥ ५॥

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धसऽइन्द्र स्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा॥ ६॥

शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा॥ ७॥

कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा॥ ८॥

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भि रजायथाः स्वाहा॥ ९॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा॥ १॥

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण स्वाहा॥ २॥

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् स्वाहा॥ ३॥

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्त्वा स्वाहा॥ ४॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ ५॥

सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ१ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा॥ ६॥

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे स्वाहा॥ ७॥

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोष-धीभिरोषधीः स्वाहा॥ ८॥

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा॥ ९॥

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह॥ १॥

आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा॥ २॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः स्वाहा॥ ३॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पांꣳसुरे स्वाहा॥ ४॥

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ५॥

आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि धर्माय दीष्व स्वाहा॥ ६॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ ७॥

नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यो नमः स्वाहा॥ ८॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ ९॥

हनुमद्यागन्यासः

विनियोगः-नमस्त इति षोडशर्चस्य परमेष्ठी ऋषिः, नमस्त इत्यस्य गायत्रीछन्दः, यात इति त्रयाणामनुष्टुप्छन्दः, अध्यवोचदिति त्रयाणां पङ्क्तिश्छन्दः, नमोऽस्तु नीलग्रीवायेति सप्तानामनुष्टुप्छन्दः, मा नो महान्तमिति द्वयोः कुत्स ऋषिर्जगतीछन्दः, सर्वेषामेको रुद्रो (हनुमद्) देवता, न्यासे हवने च विनियोगः।

१. ॐ नमस्ते० वामकरे। २. ॐ याते रुद्र शिवा० दक्षिणकरे। ३. ॐ यामिषुं गिरिशन्त० वामपादे। ४. ॐ शिवेन वचसा० दक्षिणपादे। ५. ॐ अध्यवोचदधिवक्ता० वामजानौ। ६. ॐ असौ यस्ताम्रः० दक्षिणजानौ। ७. ॐ असौ योऽवसर्पति० वामकट्याम्। ८. ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय० दक्षिणकट्याम्। ९. ॐ प्रमुञ्च० नाभौ। १०. ॐ विज्यन्धनु० हृदये। ११. ॐ या ते हेतिः० वामबाहौ। १२. ॐ परि ते धन्वनः० दक्षिणबाहौ। १३. ॐ अवतत्त्यधनुष्ट्वम्० कण्ठे। १४. ॐ नमस्ते ऽआयुधाय० मुखे। १५. ॐ मा नो महान्तम्० नेत्रयोः। १६. ॐ मा नस्तोके० मूर्ध्नि।

पुनः—१. या ते हेतिः० हृदयाय नमः। २. परि ते धन्वनः० शिरसे स्वाहा। ३. अवतत्त्य धनुष्ट्वम्० शिखायै वषट्। ४. नमस्ते ऽआयुधाय० कवचाय हुम्। ५. मा नो महान्तम्० नेत्राभ्यां वौषट्। ६. मा नस्तोके० अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥
कर्णिकारसुवर्णाभं वर्णनीयं गुणोत्तमम्।
अर्णवोल्लङ्घनोद्युक्तं तूर्णं ध्यायामि मारुतिम्॥

हनुमद्यागस्वाहाकारमन्त्राः

हनुमद्याग में निम्न मन्त्रों के द्वारा उन्नीस हजार नौ सौ इक्कीस आहुति होती है। पूर्णाहुति के दिन हनुमद्सहस्रनामावली से भी हवन करने का विधान है। यह याग नौ दिनों में पूर्ण होता है।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः हनुमते स्वाहा॥ १॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि हनुमते स्वाहा॥ २॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंर्ठ०सीः पुरुषं जगत् हनुमते स्वाहा॥ ३॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिजगद-यक्ष्मर्ठ० सुमना असत् हनुमते स्वाहा॥ ४॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींर्ठ०श्च सर्वान् जम्भयन् सर्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव हनुमते स्वाहा॥ ५॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे हनुमते स्वाहा॥ ६॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नु-दहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः हनुमते स्वाहा॥ ७॥

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः हनुमते स्वाहा॥ ८॥

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्योंर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप हनुमते स्वाहा॥ ९॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः हनुमते स्वाहा॥ १०॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज हनुमते स्वाहा॥ ११॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् हनुमते स्वाहा॥ १२॥

अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव हनुमते स्वाहा॥ १३॥

नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने हनुमते स्वाहा॥ १४॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः हनुमते स्वाहा॥ १५॥

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे हनुमते स्वाहा॥ १६॥

मनो न्वाह्वामहे नाराशर्ठ०सेन स्तोमेन। पितृणां च मन्मभिः हनुमते स्वाहा॥ १७॥

मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता। आ यः शर्याभिस्तुविनृम्णो अस्याऽश्रीणीताऽऽदिशं गभस्तौ। एष ते योनिः प्रजाः पाह्यपमृष्टो मर्को देवास्त्वा मन्थिताः प्रणयन्त्वनाधृष्टासि हनुमते स्वाहा॥ १८॥

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वेदेवास आगत। दाश्वार्ठ०सो दाशुषः सुतम्। उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः हनुमते स्वाहा॥ १९॥

मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यर्ठ०शासमिन्द्रम। विश्वासाह-मवसे नूतनायोग्रर्ठ०सहोदामिह तर्ठ०हुवेम। उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते। उपयामगृहीतोऽसि मरुतां त्वौजसे हनुमते स्वाहा॥ २०॥

सोममनुष्वधम्मदाय। आसिञ्चस्वजठरेमद्ध्ऽऊर्मिन्त्वर्ठ० राजासिप्रति-पत्सुतानाम् हनुमते स्वाहा॥ २१॥

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमो जनः हनुमते स्वाहा॥ २२॥

हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वर-सद्दतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् हनुमते स्वाहा॥ २३॥

ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेङ्गानि च मेस्थीनि च मे परूर्ठ०षि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् हनुमते स्वाहा॥ २४॥

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ० सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व हनुमते स्वाहा॥ २५॥

आतिथ्यरूपं मासरं महावीरस्य नग्नहुः। रूपमुपसदामेतत्तिस्रो रात्रीः सुरासुता हनुमते स्वाहा॥ २६॥

मरुतार्ठ०स्कन्धा विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा रुद्राणां द्वितीयादित्यानां तृतीया वायोः पुच्छमग्नीषोमयोर्भासदौ क्रुञ्चौ श्रोणिभ्यामिन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यां मित्रावरुणा वल्गाभ्यामाक्रमणर्ठ० स्थूराभ्यां बलं कुष्ठाभ्याम् हनुमते स्वाहा॥ २७॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम हनुमते स्वाहा॥ २८॥

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रर्ठ० रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम हनुमते स्वाहा॥ २९॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम हनुमते स्वाहा॥ ३०॥

उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा हनुमते स्वाहा॥ ३१॥

ॐ अग्निर्ठ० हृदयेनाशनिर्ठ० हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् हनुमते स्वाहा॥ ३२॥

हनुमद्सहस्त्रनामावल्या हवनम्

१. ॐ हनुमते स्वाहा। २. ॐ श्रीप्रदाय स्वाहा। ३. ॐ वायुपुत्राय स्वाहा। ४. ॐ रुद्राय स्वाहा। ५. ॐ अनघाय स्वाहा। ६. ॐ अजराय स्वाहा। ७. ॐ अमृत्यवे स्वाहा। ८. ॐ वीरवीराय स्वाहा। ९. ॐ ग्रामवासाय स्वाहा। १०. ॐ जनाश्रयाय स्वाहा। ११. ॐ धनदाय स्वाहा। १२. ॐ निर्गुणाय स्वाहा। १३. ॐ अकायाय स्वाहा। १४. ॐ वीराय स्वाहा। १५. ॐ निधिपतये स्वाहा। १६. ॐ मुनये स्वाहा। १७. ॐ पिङ्गाक्षाय स्वाहा। १८. ॐ वरदाय स्वाहा। १९. ॐ वाग्मिने स्वाहा। २०. ॐ सीताशोकविनाशनाय स्वाहा। २१. ॐ शिवाय स्वाहा। २२. ॐ सर्वस्मै स्वाहा। २३. ॐ परस्मै स्वाहा। २४. ॐ अव्यक्ताय स्वाहा। २५. ॐ व्यक्ताव्यक्ताय स्वाहा। २६. ॐ रसाधराय स्वाहा। २७. ॐपिङ्गकेशाय स्वाहा। २८. ॐ पिङ्गरोम्णे स्वाहा। २९. ॐ श्रुतिगम्याय स्वाहा। ३०. ॐ सनातनाय स्वाहा। ३१. ॐ अनादये स्वाहा। ३२. ॐ भगवते स्वाहा। ३३. ॐ देवाय स्वाहा। ३४. ॐ विश्वहेतवे स्वाहा। ३५. ॐ निरामयाय स्वाहा। ३६. ॐ आरोग्यकर्त्रे स्वाहा। ३७. ॐ विश्वेशाय स्वाहा। ३८. ॐ विश्वनाथाय स्वाहा। ३९. ॐ हरीश्वराय स्वाहा। ४०. ॐ भर्गाय स्वाहा। ४१. ॐ रामाय स्वाहा। ४२. ॐ रामभक्ताय स्वाहा। ४३. ॐ कल्याणप्रकृतये स्वाहा। ४४. ॐ स्थिराय स्वाहा। ४५. ॐ विश्वम्भराय स्वाहा। ४६. ॐ विश्वमूर्तये स्वाहा। ४७. ॐ विश्वाकाराय स्वाहा। ४८. ॐ विश्वपाय स्वाहा। ४९. ॐ विश्वात्मने स्वाहा। ५०. ॐ विश्वसेव्याय स्वाहा। ५१. ॐ विश्वस्मै स्वाहा। ५२. ॐ विश्वहराय स्वाहा। ५३. ॐ रवये स्वाहा। ५४. ॐ विश्वचेष्टाय स्वाहा। ५५. ॐ विश्वगम्याय स्वाहा। ५६. ॐ विश्वध्येयाय स्वाहा। ५७. ॐ कलाधराय स्वाहा। ५८. ॐ प्लवङ्गमाय स्वाहा। ५९. ॐ कपिश्रेष्ठाय स्वाहा। ६०. ॐ ज्येष्ठाय स्वाहा। ६१. ॐ वैद्याय स्वाहा। ६२. ॐ वनेचराय स्वाहा। ६३. ॐ बालाय स्वाहा। ६४. ॐ वृद्धाय स्वाहा। ६५. ॐ यूने स्वाहा। ६६. ॐ तत्त्वाय स्वाहा। ६७. ॐ तत्त्वगम्याय स्वाहा। ६८. ॐ सख्ये स्वाहा। ६९. ॐ अजाय स्वाहा। ७०. ॐ अञ्जनासूनवे स्वाहा। ७१. ॐ अव्यग्राय स्वाहा। ७२. ॐ ग्रामख्याताय स्वाहा। ७३. ॐ धराधराय स्वाहा। ७४. ॐ भूर्लोकाय स्वाहा। ७५. ॐ भूवर्लोकाय स्वाहा। ७६. ॐ स्वर्लोकाय स्वाहा। ७७. ॐ महर्लोकाय स्वाहा। ७८. ॐ जनलोकाय स्वाहा। ७९. ॐ तपोलोकाय

स्वाहा। ८०. ॐ अव्ययाय स्वाहा। ८१. ॐ सत्याय स्वाहा। ८२. ॐ ओङ्कारगम्याय स्वाहा। ८३. ॐ प्रणवाय स्वाहा। ८४. ॐ व्यापकाय स्वाहा। ८५. ॐ अमलाय स्वाहा। ८६. ॐ शिवधर्मप्रतिष्ठात्रे स्वाहा। ८७. ॐ रामेष्टाय स्वाहा। ८८. ॐ फाल्गुनप्रियाय स्वाहा। ८९. ॐ गोष्पदीकृतवारीशाय स्वाहा। ९०. ॐ पूर्णकामाय स्वाहा। ९१. ॐ धरापतये स्वाहा। ९२. ॐ रक्षोघ्नाय स्वाहा। ९३. ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा। ९४. ॐ शरणागतवत्सलाय स्वाहा। ९५. ॐ जानकीप्राणदात्रे स्वाहा। ९६. ॐ रक्षःप्राणापहारकाय स्वाहा। ९७. ॐ पूर्णाय स्वाहा। ९८. ॐ सत्याय स्वाहा। ९९. ॐ पीतवाससे स्वाहा। १००. ॐ दीवाकरसमप्रभाय स्वाहा। १०१. ॐ देवोद्यानविहारिणे स्वाहा। १०२. ॐ देवताभयभञ्जनाय स्वाहा। १०३. ॐ भक्तोदयाय स्वाहा। १०४. ॐ भक्तलब्धाय स्वाहा। १०५. ॐ भक्तपालनतत्पराय स्वाहा। १०६. ॐ दद्रणहर्त्रे स्वाहा। १०७. ॐ शक्तिनेत्रे स्वाहा। १०८. ॐ शक्तिराक्षसमारकाय स्वाहा। १०९. ॐ अक्षघ्नाय स्वाहा। ११०. ॐ रामदूताय स्वाहा। १११. ॐ शाकिनीजीवहारकाय स्वाहा। ११२. ॐ बुबुकारहतारातये स्वाहा। ११३. ॐ गर्वपर्वतमर्दनाय स्वाहा। ११४. ॐ हेतवे स्वाहा। ११५. ॐ अहेतवे स्वाहा। ११६. ॐ प्रांशवे स्वाहा। ११७. ॐ विश्वभर्त्रे स्वाहा। ११८. ॐ जगद्गुरवे स्वाहा। ११९. ॐ जगन्नेत्रे स्वाहा। १२०. ॐ जगन्नाथाय स्वाहा। १२१. ॐ जगदीशाय स्वाहा। १२२. ॐ जनेश्वराय स्वाहा। १२३. ॐ जगद्धिताय स्वाहा। १२४. ॐ हरये स्वाहा। १२५. ॐ श्रीशाय स्वाहा। १२६. ॐ गरुडस्मयभञ्जनाय स्वाहा। १२७. ॐ पार्थध्वजाय स्वाहा। १२८. ॐ वायुपुत्राय स्वाहा। १२९. ॐ अमितपुच्छाय स्वाहा। १३०. ॐ अमितविक्रमाय स्वाहा। १३१. ॐ ब्रह्मपुच्छाय स्वाहा। १३२. ॐ परब्रह्मपुच्छाय स्वाहा। १३३. ॐ रामेष्टकारकाय स्वाहा। १३४. ॐ सुग्रीवादियुताय स्वाहा। १३५. ॐ ज्ञानिने स्वाहा। १३६. ॐ वानराय स्वाहा। १३७. ॐ वानरेश्वराय स्वाहा। १३८. ॐ कल्पस्थायिने स्वाहा। १३९. ॐ चिरञ्जीविने स्वाहा। १४०. ॐ तपनाय स्वाहा। १४१. ॐ सदाशिवाय स्वाहा। १४२. ॐ सन्नतये स्वाहा। १४३. ॐ सद्गतये स्वाहा। १४४. ॐ भुक्तिमुक्तिदार्य स्वाहा। १४५. ॐ कीर्तिदायकाय स्वाहा। १४६. ॐ कीर्तये स्वाहा। १४७. ॐ कीर्तिप्रदाय स्वाहा। १४८. ॐ समुद्राय स्वाहा। १४९. ॐ श्रीप्रदाय स्वाहा। १५०. ॐ शिवाय स्वाहा।

१५१. ॐ भक्तोदयाय स्वाहा। १५२. ॐ भक्तगम्याय स्वाहा। १५३. ॐ भक्तभाग्यप्रदायकाय स्वाहा। १५४. ॐ उदधिक्रमणाय स्वाहा। १५५. ॐ देवाय स्वाहा। १५६. ॐ संसारभयनाशनाय स्वाहा। १५७. ॐ वार्धिबन्धनकृते स्वाहा। १५८. ॐ विश्वजेत्रे स्वाहा। १५९. ॐ विश्वप्रतिष्ठिताय स्वाहा। १६०. ॐ लङ्कारये स्वाहा। १६१. ॐ कालपुरुषाय स्वाहा। १६२. ॐ लङ्केशगृहभञ्जनाय स्वाहा। १६३. ॐ भूतवासाय स्वाहा। १६४. ॐ वासुदेवाय स्वाहा। १६५. ॐ वसवे स्वाहा। १६६. ॐ त्रिभुवनेश्वराय स्वाहा। १६७. ॐ श्रीरामरूपाय स्वाहा। १६८. ॐ कृष्णाय स्वाहा। १६९. ॐ लङ्काप्रासादभञ्जकाय स्वाहा। १७०. ॐ कृष्णाय स्वाहा। १७१. ॐ कृष्णस्तुताय स्वाहा। १७२. ॐ शान्ताय स्वाहा। १७३. ॐ शान्तिदाय स्वाहा। १७४. ॐ विश्वपावनाय स्वाहा। १७५. ॐ विश्वभोक्त्रे स्वाहा। १७६. ॐ मारघ्नाय स्वाहा। १७७. ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा। १७८. ॐ जितेन्द्रियाय स्वाहा। १७९. ॐ ऊर्ध्वगाय स्वाहा। १८०. ॐ लाङ्गुलिने स्वाहा। १८१. ॐ मालिने स्वाहा। १८२. ॐ लाङ्गूलाहतराक्षसाय स्वाहा। १८३. ॐ समीरतनुजाय स्वाहा। १८४. ॐ वीराय स्वाहा। १८५. ॐ वीरताराय स्वाहा। १८६. ॐ जयप्रदाय स्वाहा। १८७. ॐ जगन्मङ्गलदाय स्वाहा। १८८. ॐ पुण्याय स्वाहा। १८९. ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय स्वाहा। १९०. ॐ पुण्यकीर्तये स्वाहा। १९१. ॐ पुण्यगतये स्वाहा। १९२. ॐ जगत्पावनपावनाय स्वाहा। १९३. ॐ देवेशाय स्वाहा। १९४. ॐ जितमाराय स्वाहा। १९५. ॐ रामभक्तिविधायकाय स्वाहा। १९६. ॐ ध्यात्रे स्वाहा। १९७. ॐ ध्येयाय स्वाहा। १९८. ॐ लयाय स्वाहा। १९९. ॐ साक्षिणे स्वाहा। २००. ॐ चेतसे स्वाहा। २०१. ॐ चैतन्यविग्रहाय स्वाहा। २०२. ॐ ज्ञानदाय स्वाहा। २०३. ॐ प्राणदाय स्वाहा। २०४. ॐ प्राणाय स्वाहा। २०५. ॐ जगत्प्राणाय स्वाहा। २०६. ॐ समीरणाय स्वाहा। २०७. ॐ विभीषणप्रियाय स्वाहा। २०८. ॐ शूराय स्वाहा। २०९. ॐ पिप्पलाश्रयसिद्धिदाय स्वाहा। २१०. ॐ सिद्धाय स्वाहा। २११. ॐ सिद्धाश्रयाय स्वाहा। २१२. ॐ कालाय स्वाहा। २१३. ॐ महोक्षाय स्वाहा। २१४. ॐ कालजान्तकाय स्वाहा। २१५. ॐ लङ्केशनिधनाय स्वाहा। २१६. ॐ स्थायिने स्वाहा। २१७. ॐ लङ्कादाहकाय स्वाहा। २१८. ॐ ईश्वराय स्वाहा। २१९. ॐ चन्द्रसूर्याग्निनेत्राय स्वाहा। २२०. ॐ कालाग्नये स्वाहा। २२१. ॐ प्रलयान्तकाय स्वाहा। २२२. ॐ कपिलाय स्वाहा।

स्वाहा। ८०. ॐ अव्ययाय स्वाहा। ८१. ॐ सत्याय स्वाहा। ८२. ॐ ओङ्कारगम्याय स्वाहा। ८३. ॐ प्रणवाय स्वाहा। ८४. ॐ व्यापकाय स्वाहा। ८५. ॐ अमलाय स्वाहा। ८६. ॐ शिवधर्मप्रतिष्ठात्रे स्वाहा। ८७. ॐ रामेष्टाय स्वाहा। ८८. ॐ फाल्गुनप्रियाय स्वाहा। ८९. ॐ गोष्पदीकृतवारीशाय स्वाहा। ९०. ॐ पूर्णकामाय स्वाहा। ९१. ॐ धरापतये स्वाहा। ९२. ॐ रक्षोघ्नाय स्वाहा। ९३. ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा। ९४. ॐ शरणागतवत्सलाय स्वाहा। ९५. ॐ जानकीप्राणदात्रे स्वाहा। ९६. ॐ रक्षःप्राणापहारकाय स्वाहा। ९७. ॐ पूर्णाय स्वाहा। ९८. ॐ सत्याय स्वाहा। ९९. ॐ पीतवाससे स्वाहा। १००. ॐ दीवाकरसमप्रभाय स्वाहा। १०१. ॐ देवोद्यानविहारिणे स्वाहा। १०२. ॐ देवताभयभञ्जनाय स्वाहा। १०३. ॐ भक्तोदयाय स्वाहा। १०४. ॐ भक्तलब्धाय स्वाहा। १०५. ॐ भक्तपालनतत्पराय स्वाहा। १०६. ॐ दद्रणहर्त्रे स्वाहा। १०७. ॐ शक्तिनेत्रे स्वाहा। १०८. ॐ शक्तिराक्षसमारकाय स्वाहा। १०९. ॐ अक्षघ्नाय स्वाहा। ११०. ॐ रामदूताय स्वाहा। १११. ॐ शाकिनीजीवहारकाय स्वाहा। ११२. ॐ बुबुकारहतारातये स्वाहा। ११३. ॐ गर्वपर्वतमर्दनाय स्वाहा। ११४. ॐ ह्रेतवे स्वाहा। ११५. ॐ अहेतवे स्वाहा। ११६. ॐ प्रांशवे स्वाहा। ११७. ॐ विश्वभर्त्रे स्वाहा। ११८. ॐ जगद्गुरवे स्वाहा। ११९. ॐ जगन्नेत्रे स्वाहा। १२०. ॐ जगन्नाथाय स्वाहा। १२१. ॐ जगदीशाय स्वाहा। १२२. ॐ जनेश्वराय स्वाहा। १२३. ॐ जगद्धिताय स्वाहा। १२४. ॐ हरये स्वाहा। १२५. ॐ श्रीशाय स्वाहा। १२६. ॐ गरुडस्मयभञ्जनाय स्वाहा। १२७. ॐ पार्थध्वजाय स्वाहा। १२८. ॐ वायुपुत्राय स्वाहा। १२९. ॐ अमितपुच्छाय स्वाहा। १३०. ॐ अमितविक्रमाय स्वाहा। १३१. ॐ ब्रह्मपुच्छाय स्वाहा। १३२. ॐ परब्रह्मपुच्छाय स्वाहा। १३३. ॐ रामेष्टकारकाय स्वाहा। १३४. ॐ सुग्रीवादियुताय स्वाहा। १३५. ॐ ज्ञानिने स्वाहा। १३६. ॐ वानराय स्वाहा। १३७. ॐ वानरेश्वराय स्वाहा। १३८. ॐ कल्पस्थायिने स्वाहा। १३९. ॐ चिरञ्जीविने स्वाहा। १४०. ॐ तपनाय स्वाहा। १४१. ॐ सदाशिवाय स्वाहा। १४२. ॐ सन्नतये स्वाहा। १४३. ॐ सद्गतये स्वाहा। १४४. ॐ भुक्तिमुक्तिदार्य स्वाहा। १४५. ॐ कीर्तिदायकाय स्वाहा। १४६. ॐ कीर्तये स्वाहा। १४७. ॐ कीर्तिप्रदाय स्वाहा। १४८. ॐ समुद्राय स्वाहा। १४९. ॐ श्रीप्रदाय स्वाहा। १५०. ॐ शिवाय स्वाहा।

स्वाहा। ८०. ॐ अव्ययाय स्वाहा। ८१. ॐ सत्याय स्वाहा। ८२. ॐ ओङ्कारगम्याय स्वाहा। ८३. ॐ प्रणवाय स्वाहा। ८४. ॐ व्यापकाय स्वाहा। ८५. ॐ अमलाय स्वाहा। ८६. ॐ शिवधर्मप्रतिष्ठात्रे स्वाहा। ८७. ॐ रामेष्टाय स्वाहा। ८८. ॐ फाल्गुनप्रियाय स्वाहा। ८९. ॐ गोष्पदीकृतवारीशाय स्वाहा। ९०. ॐ पूर्णकामाय स्वाहा। ९१. ॐ धरापतये स्वाहा। ९२. ॐ रक्षोघ्नाय स्वाहा। ९३. ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा। ९४. ॐ शरणागतवत्सलाय स्वाहा। ९५. ॐ जानकीप्राणदात्रे स्वाहा। ९६. ॐ रक्षःप्राणापहारकाय स्वाहा। ९७. ॐ पूर्णाय स्वाहा। ९८. ॐ सत्याय स्वाहा। ९९. ॐ पीतवाससे स्वाहा। १००. ॐ दीवाकरसमप्रभाय स्वाहा। १०१. ॐ देवोद्यानविहारिणे स्वाहा। १०२. ॐ देवताभयभञ्जनाय स्वाहा। १०३. ॐ भक्तोदयाय स्वाहा। १०४. ॐ भक्तलब्धाय स्वाहा। १०५. ॐ भक्तपालनतत्पराय स्वाहा। १०६. ॐ द्रणहर्त्रे स्वाहा। १०७. ॐ शक्तिनेत्रे स्वाहा। १०८. ॐ शक्तिराक्षसमारकाय स्वाहा। १०९. ॐ अक्षघ्नाय स्वाहा। ११०. ॐ रामदूताय स्वाहा। १११. ॐ शाकिनीजीवहारकाय स्वाहा। ११२. ॐ बुबुकारहतारातये स्वाहा। ११३. ॐ गर्वपर्वतमर्दनाय स्वाहा। ११४. ॐ हेतवे स्वाहा। ११५. ॐ अहेतवे स्वाहा। ११६. ॐ प्रांशवे स्वाहा। ११७. ॐ विश्वभर्त्रे स्वाहा। ११८. ॐ जगद्गुरवे स्वाहा। ११९. ॐ जगन्नेत्रे स्वाहा। १२०. ॐ जगन्नाथाय स्वाहा। १२१. ॐ जगदीशाय स्वाहा। १२२. ॐ जनेश्वराय स्वाहा। १२३. ॐ जगद्धिताय स्वाहा। १२४. ॐ हरये स्वाहा। १२५. ॐ श्रीशाय स्वाहा। १२६. ॐ गरुडस्मयभञ्जनाय स्वाहा। १२७. ॐ पार्थध्वजाय स्वाहा। १२८. ॐ वायुपुत्राय स्वाहा। १२९. ॐ अमितपुच्छाय स्वाहा। १३०. ॐ अमितविक्रमाय स्वाहा। १३१. ॐ ब्रह्मपुच्छाय स्वाहा। १३२. ॐ परब्रह्मपुच्छाय स्वाहा। १३३. ॐ रामेष्टकारकाय स्वाहा। १३४. ॐ सुग्रीवादियुताय स्वाहा। १३५. ॐ ज्ञानिने स्वाहा। १३६. ॐ वानराय स्वाहा। १३७. ॐ वानरेश्वराय स्वाहा। १३८. ॐ कल्पस्थायिने स्वाहा। १३९. ॐ चिरञ्जीविने स्वाहा। १४०. ॐ तपनाय स्वाहा। १४१. ॐ सदाशिवाय स्वाहा। १४२. ॐ सन्नतये स्वाहा। १४३. ॐ सद्गतये स्वाहा। १४४. ॐ भुक्तिमुक्तिदाय स्वाहा। १४५. ॐ कीर्तिदायकाय स्वाहा। १४६. ॐ कीर्तये स्वाहा। १४७. ॐ कीर्तिप्रदाय स्वाहा। १४८. ॐ समुद्राय स्वाहा। १४९. ॐ श्रीप्रदाय स्वाहा। १५०. ॐ शिवाय स्वाहा।

१५१. ॐ भक्तोदयाय स्वाहा। १५२. ॐ [illegible] स्वाहा। [illegible] [illegible]काय स्वाहा। १५४. ॐ [illegible] स्वाहा। [illegible] देवाय स्वाहा। १५६. ॐ संसारभयनाशनाय स्वाहा। [illegible] वार्धिबन्धनकृते स्वाहा। १५८. ॐ विश्वजेत्रे स्वाहा। [illegible] विश्वप्रतिष्ठिताय स्वाहा। १६०. ॐ लङ्कारये स्वाहा। १६१. ॐ कालपुरु[illegible] स्वाहा। १६२. ॐ लङ्केशगृहभञ्जनाय स्वाहा। १६३. ॐ भूतवासाय स्वाहा। १६४. ॐ वासुदेवाय स्वाहा। १६५. ॐ वसवे स्वाहा। १६६. ॐ त्रिभुवनेश्वराय स्वाहा। १६७. ॐ श्रीरामरूपाय स्वाहा। १६८. ॐ कृष्णाय स्वाहा। १६९. ॐ लङ्काप्रासादभञ्जकाय स्वाहा। १७०. ॐ कृष्णाय स्वाहा। १७१. ॐ कृष्णस्तुताय स्वाहा। १७२. ॐ शान्ताय स्वाहा। १७३. ॐ शान्तिदाय स्वाहा। १७४. ॐ विश्वपावनाय स्वाहा। १७५. ॐ विश्वभोक्त्रे स्वाहा। १७६. ॐ मारघ्नाय स्वाहा। १७७. ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा। १७८. ॐ जितेन्द्रियाय स्वाहा। १७९. ॐ ऊर्ध्वगाय स्वाहा। १८०. ॐ लाङ्गुलिने स्वाहा। १८१. ॐ मालिने स्वाहा। १८२. ॐ लाङ्गूलाहतराक्षसाय स्वाहा। १८३. ॐ समीरतनुजाय स्वाहा। १८४. ॐ वीराय स्वाहा। १८५. ॐ वीरताराय स्वाहा। १८६. ॐ जयप्रदाय स्वाहा। १८७. ॐ जगन्मङ्गलदाय स्वाहा। १८८. ॐ पुण्याय स्वाहा। १८९. ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय स्वाहा। १९०. ॐ पुण्यकीर्तये स्वाहा। १९१. ॐ पुण्यगतये स्वाहा। १९२. ॐ जगत्पावनपावनाय स्वाहा। १९३. ॐ देवेशाय स्वाहा। १९४. ॐ जितमाराय स्वाहा। १९५. ॐ रामभक्तिविधायकाय स्वाहा। १९६. ॐ ध्यात्रे स्वाहा। १९७. ॐ ध्येयाय स्वाहा। १९८. ॐ लयाय स्वाहा। १९९. ॐ साक्षिणे स्वाहा। २००. ॐ चेतसे स्वाहा। २०१. ॐ चैतन्यविग्रहाय स्वाहा। २०२. ॐ ज्ञानदाय स्वाहा। २०३. ॐ प्राणदाय स्वाहा। २०४. ॐ प्राणाय स्वाहा। २०५. ॐ जगत्प्राणाय स्वाहा। २०६. ॐ समीरणाय स्वाहा। २०७. ॐ विभीषणप्रियाय स्वाहा। २०८. ॐ शूराय स्वाहा। २०९. ॐ पिप्पलाश्रयसिद्धिदाय स्वाहा। २१०. ॐ सिद्धाय स्वाहा। २११. ॐ सिद्धाश्रयाय स्वाहा। २१२. ॐ कालाय स्वाहा। २१३. ॐ महोक्षाय स्वाहा। २१४. ॐ कालजान्तकाय स्वाहा। २१५. ॐ लङ्केशनिधनाय स्वाहा। २१६. ॐ स्थायिने स्वाहा। २१७. ॐ लङ्कादाहकाय स्वाहा। २१८. ॐ ईश्वराय स्वाहा। २१९. ॐ चन्द्रसूर्याग्निनेत्राय स्वाहा। २२०. ॐ कालाग्नये स्वाहा। २२१. ॐ प्रलयान्तकाय स्वाहा। २२२. ॐ कपिलाय स्वाहा।

२२३. ॐ कपिशाय स्वाहा। २२४. ॐ पुण्यराशये स्वाहा। २२५. ॐ द्वादशराशिगाय स्वाहा। २२६. ॐ सर्वाश्रयाय स्वाहा। २२७. ॐ अप्रमेयात्मने स्वाहा। २२८. ॐ रेवत्यादिनिवारकाय स्वाहा। २२९. ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे स्वाहा। २३०. ॐ सीताजीवनहेतुकाय स्वाहा। २३१. ॐ रामध्येयाय स्वाहा। २३२. ॐ हृषीकेशाय स्वाहा। २३३. ॐ विष्णुभक्ताय स्वाहा। २३४. ॐ जटिने स्वाहा। २३५. ॐ बलिने स्वाहा। २३६. ॐ देवारिदर्पघ्ने स्वाहा। २३७. ॐ होत्रे स्वाहा। २३८. ॐ धात्रे स्वाहा। २३९. ॐ कर्त्रे स्वाहा। २४०. ॐ जगत्प्रभवे स्वाहा। २४१. ॐ नगरग्रामपालाय स्वाहा। २४२. ॐ शुद्धाय स्वाहा। २४३. ॐ बुद्धाय स्वाहा। २४४. ॐ निरत्रपाय स्वाहा। २४५. ॐ निरञ्जनाय स्वाहा। २४६. ॐ निर्विकल्पाय स्वाहा। २४७. ॐ गुणातीताय स्वाहा। २४८. ॐ भयंकराय स्वाहा। २४९. ॐ हनुमते स्वाहा। २५०. ॐ दुराराध्याय स्वाहा। २५१. ॐ तपःसाध्याय स्वाहा। २५२. ॐ महेश्वराय स्वाहा। २५३. ॐ जानकीधनशोकोत्थतापहर्त्रे स्वाहा। २५४. ॐ परात्परस्मै स्वाहा। २५५. ॐ वाङ्मयाय स्वाहा। २५६. ॐ सदसद्रूपाय स्वाहा। २५७. ॐ कारणाय स्वाहा। २५८. ॐ प्रकृतेः परस्मै स्वाहा। २५९. ॐ भाग्यदाय स्वाहा। २६०. ॐ निर्मलाय स्वाहा। २६१. ॐ नेत्रे स्वाहा। २६२. ॐ पुच्छलङ्काविदाहकाय स्वाहा। २६३. ॐ पुच्छबद्धयातुधानाय स्वाहा। २६४. ॐ यातुधानरिपुप्रियाय स्वाहा। २६५. ॐ छायापहारिणे स्वाहा। २६६. ॐ भूतेशाय स्वाहा। २६७. ॐ लोकेश स्वाहा। २६८. ॐ सद्गतिप्रदाय स्वाहा। २६९. ॐ प्लवङ्गमेश्वराय स्वाहा। २७०. ॐ क्रोधाय स्वाहा। २७१. ॐ क्रोधसंरक्तलोचनाय स्वाहा। २७२. ॐ सौम्याय स्वाहा। २७३. ॐ गुरवे स्वाहा। २७४. ॐ काव्यकर्त्रे स्वाहा। २७५. ॐ भक्तानां वरप्रदाय स्वाहा। २७६. ॐ भक्तानुकम्पिने स्वाहा। २७७. ॐ विश्वेशाय स्वाहा। २७८. ॐ पुरुहूताय स्वाहा। २७९. ॐ पुरंदराय स्वाहा। २८०. ॐ क्रोधहर्त्रे स्वाहा। २८१. ॐ तमोहर्त्रे स्वाहा। २८२. ॐ भक्ताभयवरप्रदाय स्वाहा। २८३. ॐ अग्नये स्वाहा। २८४. ॐ विभावसवे स्वाहा। २८५. ॐ भास्वते स्वाहा। २८६. ॐ यमाय स्वाहा। २८७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। २८८. ॐ वरुणाय स्वाहा। २८९. ॐ वायुगतिमते स्वाहा। २९०. ॐ वायवे स्वाहा। २९१. ॐ कौबेराय स्वाहा। २९२. ॐ ईश्वराय स्वाहा। २९३. ॐ रवये स्वाहा। २९४. ॐ चन्द्राय स्वाहा। २९५. ॐ कुजाय

स्वाहा। २९६. ॐ सौम्याय स्वाहा। २९७. ॐ गुरवे स्वाहा। २९८. ॐ काव्याय स्वाहा। २९९. ॐ शनैश्चराय स्वाहा। ३००. ॐ राहवे स्वाहा। ३०१. ॐ केतवे स्वाहा। ३०२. ॐ मरुते स्वाहा। ३०३. ॐ होत्रे स्वाहा। ३०४. ॐ दात्रे स्वाहा। ३०५. ॐ हर्त्रे स्वाहा। ३०६. ॐ समीरजाय स्वाहा। ३०७. ॐ मशकीकृतदेवारये स्वाहा। ३०८. ॐ दैत्यारये स्वाहा। ३०९. ॐ मधुसूदनाय स्वाहा। ३१०. ॐ कामाय स्वाहा। ३११. ॐ कपये स्वाहा। ३१२. ॐ कामपालाय स्वाहा। ३१३. ॐ कपिलाय स्वाहा। ३१४. ॐ विश्वजीवनाय स्वाहा। ३१५. ॐ भागीरथीपदाम्भोजाय स्वाहा। ३१६. ॐ सेतुबन्धविशारदाय स्वाहा। ३१७. ॐ स्वाहायै स्वाहा। ३१८. ॐ स्वधायै स्वाहा। ३१९. ॐ हविषे स्वाहा। ३२०. ॐ कव्याय स्वाहा। ३२१. ॐ हव्यवाहप्रकाशकाय स्वाहा। ३२२. ॐ स्वप्रकाशाय स्वाहा। ३२३. ॐ महावीराय स्वाहा। ३२४. ॐ लघवे स्वाहा। ३२५. ॐ ऊर्जितविक्रमाय स्वाहा। ३२६. ॐ उड्डीनोड्डीनगतिमते स्वाहा। ३२७. ॐ सद्गतये स्वाहा। ३२८. ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा। ३२९. ॐ जगदात्मने स्वाहा। ३३०. ॐ जगद्योनये स्वाहा। ३३१. ॐ जगदन्ताय स्वाहा। ३३२. ॐ अनन्तकाय स्वाहा। ३३३. ॐ विपाप्मने स्वाहा। ३३४. ॐ निष्कलङ्काय स्वाहा। ३३५. ॐ महते स्वाहा। ३३६. ॐ महदहंकृतये स्वाहा। ३३७. ॐ खाय स्वाहा। ३३८. ॐ वायवे स्वाहा। ३३९. ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ३४०. ॐ अद्भ्यो स्वाहा। ३४१. ॐ वह्नये स्वाहा। ३४२. ॐ दिक्पालाय स्वाहा। ३४३. ॐ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा। ३४४. ॐ क्षेत्रहर्त्रे स्वाहा। ३४५. ॐ पल्वलीकृतसागराय स्वाहा। ३४६. ॐ हिरण्मयाय स्वाहा। ३४७. ॐ पुराणाय स्वाहा। ३४८. ॐ खेचराय स्वाहा। ३४९. ॐ भूचराय स्वाहा। ३५०. ॐ अमराय स्वाहा। ३५१. ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा। ३५२. ॐ सूत्रात्मने स्वाहा। ३५३. ॐ राजराजाय स्वाहा। ३५४. ॐ विशांपतये स्वाहा। ३५५. ॐ वेदान्तवेद्याय स्वाहा। ३५६. ॐ उद्गीथाय स्वाहा। ३५७. ॐ वेदवेदाङ्गपारगाय स्वाहा। ३५८. ॐ प्रतिग्रामस्थितये स्वाहा। ३५९. ॐ सद्यः स्फूर्तिदात्रे स्वाहा। ३६०. ॐ गुणाकराय स्वाहा। ३६१. ॐ नक्षत्रमालिने स्वाहा। ३६२. ॐ भूतात्मनै स्वाहा। ३६३. ॐ सुरभये स्वाहा। ३६४. ॐ कल्पपादपाय स्वाहा। ३६५. ॐ चिन्तामणये स्वाहा। ३६६. ॐ गुणनिधये स्वाहा। ३६७. ॐ प्रजाधाराय स्वाहा। ३६८. ॐ अनुत्तमाय स्वाहा। ३६९. ॐ पुण्यश्लोकाय स्वाहा। ३७०. ॐ पुरारातये स्वाहा।

३७१. ॐ ज्योतिष्मते स्वाहा। ३७२. ॐ शर्वरीपतये स्वाहा। ३७३. ॐ किल्किलारावसंत्रस्तभूतप्रेतपिशाचकाय स्वाहा। ३७४. ॐ ऋणत्रयहराय स्वाहा। ३७५. ॐ सूक्ष्माय स्वाहा। ३७६. ॐ स्थूलाय स्वाहा। ३७७. ॐ सर्वगतये स्वाहा। ३७८. ॐ पुंसे स्वाहा। ३७९. ॐ अपस्मारहराय स्वाहा। ३८०. ॐ स्मर्त्रे स्वाहा। ३८१. ॐ श्रुतये स्वाहा। ३८२. ॐ गाथायै स्वाहा। ३८३. ॐ स्मृतये स्वाहा। ३८४. ॐ मनवे स्वाहा। ३८५. ॐ स्वर्गद्वाराय स्वाहा। ३८६. ॐ प्रजाद्वाराय स्वाहा। ३८७. ॐ मोक्षद्वाराय स्वाहा। ३८८. ॐ यतीश्वराय स्वाहा। ३८९. ॐ नादरूपाय स्वाहा। ३९०. ॐ परस्मै स्वाहा। ३९१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ३९२. ॐ ब्रह्मपुरातनाय स्वाहा। ३९३. ॐ एकस्मै स्वाहा। ३९४. ॐ अनेकस्मै स्वाहा। ३९५. ॐ जनाय स्वाहा। ३९६. ॐ शुक्लाय स्वाहा। ३९७. ॐ स्वयंज्योतिषे स्वाहा। ३९८. ॐ अनाकुलाय स्वाहा। ३९९. ॐ ज्योतिर्ज्योतिषे स्वाहा। ४००. ॐ अनादये स्वाहा। ४०१. ॐ सात्त्विकाय स्वाहा। ४०२. ॐ राजसाय स्वाहा। ४०३. ॐ तमाय स्वाहा। ४०४. ॐ तमोहर्त्रे स्वाहा। ४०५. ॐ निरालम्बाय स्वाहा। ४०६. ॐ निराकाराय स्वाहा। ४०७. ॐ गुणाकराय स्वाहा। ४०८. ॐ गुणाश्रयाय स्वाहा। ४०९. ॐ गुणमयाय स्वाहा। ४१०. ॐ बृहत्कर्मणे स्वाहा। ४११. ॐ बृहद्यशसे स्वाहा। ४१२. ॐ बृहद्धनवे स्वाहा। ४१३. ॐ बृहत्पादाय स्वाहा। ४१४. ॐ बृहन्मूर्ध्ने स्वाहा। ४१५. ॐ बृहत्स्वनाय स्वाहा। ४१६. ॐ बृहत्कर्णाय स्वाहा। ४१७. ॐ बृहन्नासाय स्वाहा। ४१८. ॐ बृहद्बाहवे स्वाहा। ४१९. ॐ बृहत्तनवे स्वाहा। ४२०. ॐ बृहज्जानवे स्वाहा। ४२१. ॐ बृहत्कार्याय स्वाहा। ४२२. ॐ बृहत्पुच्छाय स्वाहा। ४२३. ॐ बृहत्कराय स्वाहा। ४२४. ॐ बृहद्गतये स्वाहा। ४२५. ॐ बृहत्ससव्याय स्वाहा। ४२६. ॐ बृहल्लोकफलप्रदाय स्वाहा। ४२७. ॐ बृहच्छक्तये स्वाहा। ४२८. ॐ बृहद्वाञ्छाफलदाय स्वाहा। ४२९. ॐ बृहदीश्वराय स्वाहा। ४३०. ॐ बृहल्लोकनुताय स्वाहा। ४३१. ॐ द्रष्ट्रे स्वाहा। ४३२. ॐ विद्यादात्रे स्वाहा। ४३३. ॐ जगद्गुरवे स्वाहा। ४३४. ॐ देवाचार्याय स्वाहा। ४३५. ॐ सत्यवादिने स्वाहा। ४३६. ॐ ब्रह्मवादिने स्वाहा। ४३७. ॐ कलाधराय स्वाहा। ४३८. ॐ सप्तपातालगामिने स्वाहा। ४३९. ॐ मलयाचलसंश्रयाय स्वाहा। ४४०. ॐ उत्तराशास्थिताय स्वाहा। ४४१. ॐ श्रीदाय स्वाहा। ४४२. ॐ दिव्यौषधिवशाय स्वाहा। ४४३. ॐ खगाय स्वाहा। ४४४. ॐ शाखामृगाय

स्वाहा। ४४५. ॐ कपीन्द्राय स्वाहा। ४४६. ॐ पुराणश्रुतिचञ्चुराय स्वाहा। ४४७. ॐ चतुरब्राह्मणाय स्वाहा। ४४८. ॐ योगिने स्वाहा। ४४९. ॐ योगगम्याय स्वाहा। ४५०. ॐ परस्मै स्वाहा। ४५१. ॐ अवरस्मै स्वाहा। ४५२. ॐ अनादिनिधनाय स्वाहा। ४५३. ॐ व्यासाय स्वाहा। ४५४. ॐ वैकुण्ठाय स्वाहा। ४५५. ॐ पृथिवीपतये स्वाहा। ४५६. ॐ अपराजिताय स्वाहा। ४५७. ॐ जितारातये स्वाहा। ४५८. ॐ सदानन्दाय स्वाहा। ४५९. ॐ दयायुताय स्वाहा। ४६०. ॐ गोपालाय स्वाहा। ४६१. ॐ गोपतये स्वाहा। ४६२. ॐ गोप्त्रे स्वाहा। ४६३. ॐ कलिकालपराशराय स्वाहा। ४६४. ॐ मनोवेगिने स्वाहा। ४६५. ॐ सदायोगिने स्वाहा। ४६६. ॐ संसारभयनाशनाय स्वाहा। ४६७. ॐ तत्त्वदात्रे स्वाहा। ४६८. ॐ तत्त्वज्ञाय स्वाहा। ४६९. ॐ तत्त्वाय स्वाहा। ४७०. ॐ तत्त्वप्रकाशकाय स्वाहा। ४७१. ॐ शुद्धाय स्वाहा। ४७२. ॐ बुद्धाय स्वाहा। ४७३. ॐ नित्यमुक्ताय स्वाहा। ४७४. ॐ भक्तराजाय स्वाहा। ४७५. ॐ जयद्रथाय स्वाहा। ४७६. ॐ प्रलयाय स्वाहा। ४७७. ॐ अमितमायाय स्वाहा। ४७८. ॐ मायातीताय स्वाहा। ४७९. ॐ विमत्सराय स्वाहा। ४८०. ॐ मायाभर्जितरक्षसे स्वाहा। ४८१. ॐ मायानिर्मितविष्टपाय स्वाहा। ४८२. ॐ मायाश्रयाय स्वाहा। ४८३. ॐ निर्लेपाय स्वाहा। ४८४. ॐ मायानिर्वर्तकाय स्वाहा। ४८५. ॐ सुखाय स्वाहा। ४८६. ॐ सुखिने स्वाहा। ४८७. ॐ सुखप्रदाय स्वाहा। ४८८. ॐ नागाय स्वाहा। ४८९. ॐ महेशकृतसंस्तवाय स्वाहा। ४९०. ॐ महेश्वराय स्वाहा। ४९१. ॐ सत्यसंधाय स्वाहा। ४९२. ॐ शरभाय स्वाहा। ४९३. ॐ कलिपावनाय स्वाहा। ४९४. ॐ सहस्रकन्धरबलविध्वंसनविचक्षणाय स्वाहा। ४९५. ॐ सहस्रबाहवे स्वाहा। ४९६. ॐ सहजाय स्वाहा। ४९७. ॐ द्विबाहवे स्वाहा। ४९८. ॐ द्विभुजाय स्वाहा। ४९९. ॐ अमराय स्वाहा। ५००. ॐ चतुर्भुजाय स्वाहा। ५०१. ॐ दशभुजाय स्वाहा। ५०२. ॐ हयग्रीवाय स्वाहा। ५०३. ॐ खगाननाय स्वाहा। ५०४. ॐ कपिवक्त्राय स्वाहा। ५०५. ॐ कपिपतये स्वाहा। ५०६. ॐ नरसिंहाय स्वाहा। ५०७. ॐ महाद्युतये स्वाहा। ५०८. ॐ भीषणाय स्वाहा। ५०९. ॐ भावगाय स्वाहा। ५१०. ॐ वन्द्याय स्वाहा। ५११. ॐ वराहाय स्वाहा। ५१२. ॐ वायुरूपधृषे स्वाहा। ५१३. ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे स्वाहा। ५१४. ॐ पराजितदशाननाय स्वाहा। ५१५. ॐ पारिजातनिवासिने स्वाहा।

५१६. ॐ वटवे स्वाहा। ५१७. ॐ वचनकोविदाय स्वाहा। ५१८. ॐ सुरसास्यविनिर्मुक्ताय स्वाहा। ५१९. ॐ सिंहिकाप्प्रणहारकाय स्वाहा। ५२०. ॐ लङ्कालङ्कारविध्वंसिने स्वाहा। ५२१. ॐ वृषदंशकरूपृषे स्वाहा। ५२२. ॐ रात्रिसंचारकुशलाय स्वाहा। ५२३. ॐ रात्रिंचरगृहाग्निदाय स्वाहा। ५२४. ॐ किङ्करान्तकराय स्वाहा। ५२५. ॐ जम्बुमालिहन्त्रे स्वाहा। ५२६. ॐ उग्ररूपधृषे स्वाहा। ५२७. ॐ आकाशचारिणे स्वाहा। ५२८. ॐ हरिगाय स्वाहा। ५२९. ॐ मेघनादरणोत्सुकाय स्वाहा। ५३०. ॐ मेघगम्भीरनिनदाय स्वाहा। ५३१. ॐ महारावणकुलान्तकाय स्वाहा। ५३२. ॐ कालनेमिप्प्रणहारिणे स्वाहा। ५३३. ॐ मकरीशापमोक्षदाय स्वाहा। ५३४. ॐ रसाय स्वाहा। ५३५. ॐ रसज्ञाय स्वाहा। ५३६. ॐ सम्मानाय स्वाहा। ५३७. ॐ रूपाय स्वाहा। ५३८. ॐ चक्षुषे स्वाहा। ५३९. ॐ श्रुतये स्वाहा। ५४०. ॐ वचसे स्वाहा। ५४१. ॐ घ्राणाय स्वाहा। ५४२. ॐ गन्धाय स्वाहा। ५४३. ॐ स्पर्शनाय स्वाहा। ५४४. ॐ स्पर्शाय स्वाहा। ५४५. ॐ अहंकारमानगाय स्वाहा। ५४६. ॐ नेतिनेतीतिगम्याय स्वाहा। ५४७. ॐ वैकुण्ठभजनप्रियाय स्वाहा। ५४८. ॐ गिरीशाय स्वाहा। ५४९. ॐ गिरिजाकान्ताय स्वाहा। ५५०. ॐ दुर्वाससे स्वाहा। ५५१. ॐ कवये स्वाहा। ५५२. ॐ अङ्गिरसे स्वाहा। ५५३. ॐ भृगवे स्वाहा। ५५४. ॐ वसिष्ठाय स्वाहा। ५५५. ॐ च्यवनाय स्वाहा। ५५६. ॐ नारदाय स्वाहा। ५५७. ॐ तुम्बराय स्वाहा। ५५८. ॐ अमलाय स्वाहा। ५५९. ॐ विश्वक्षेत्राय स्वाहा। ५६०. ॐ विश्वबीजाय स्वाहा। ५६१. ॐ विश्वनेत्राय स्वाहा। ५६२. ॐ विश्वपाय स्वाहा। ५६३. ॐ याजकाय स्वाहा। ५६४. ॐ यजमानाय स्वाहा। ५६५. ॐ पावकाय स्वाहा। ५६६. ॐ पितृभ्यो स्वाहा। ५६७. ॐ श्रद्धायै स्वाहा। ५६८. ॐ बुद्ध्यै स्वाहा। ५६९. ॐ क्षमायै स्वाहा। ५७०. ॐ तन्द्रायै स्वाहा। ५७१. ॐ मन्त्राय स्वाहा। ५७२. ॐ मन्त्रयित्रे स्वाहा। ५७३. ॐ स्वराय स्वाहा। ५७४. ॐ राजेन्द्रयाय स्वाहा। ५७५. ॐ भूपतये स्वाहा। ५७६. ॐ रुण्डमालिने स्वाहा। ५७७. ॐ संसारसारथये स्वाहा। ५७८. ॐ नित्यसम्पूर्णकामाय स्वाहा। ५७९. ॐ भक्तकामदुहे स्वाहा। ५८०. ॐ उत्तमाय स्वाहा। ५८१. ॐ गणपाय स्वाहा। ५८२. ॐ केशवाय स्वाहा। ५८३. ॐ भ्रात्रे स्वाहा। ५८४. ॐ पित्रे स्वाहा। ५८५. ॐ मात्रे स्वाहा। ५८६. ॐ मारुतये स्वाहा। ५८७. ॐ सहस्त्रमूर्ध्ने स्वाहा। ५८८. ॐ

अनेकास्याय स्वाहा। ५८[illegible] ॐ सहस्राक्षाय स्वाहा। ५९०. ॐ सहस्रपादे स्वाहा। ५९१. ॐ कामजिते स्वाहा। ५९२. ॐ कामदहनाय स्वाहा। ५९३. ॐ कामाय स्वाहा। ५९४. ॐ कामफलप्रदाय स्वाहा। ५९५. ॐ मुद्रापहारिणे स्वाहा। ५९६. ॐ रक्षोघ्नाय स्वाहा। ५९७. ॐ क्षितिभारहराय स्वाहा। ५९८. ॐ बलाय स्वाहा। ५९९. ॐ नखदंष्ट्रायुधाय स्वाहा। ६००. ॐ विष्णवे स्वाहा। ६०१. ॐ भक्ताभयवरप्रदाय स्वाहा। ६०२. ॐ दर्पघ्ने स्वाहा। ६०३. ॐ दर्पदाय स्वाहा। ६०४. ॐ दंष्ट्राशतमूर्तये स्वाहा। ६०५. ॐ अमूर्तिमते स्वाहा। ६०६. ॐ महानिधये स्वाहा। ६०७. ॐ महाभागाय स्वाहा। ६०८. ॐ महाभर्गाय स्वाहा। ६०९. ॐ महर्द्धिदाय स्वाहा। ६१०. ॐ महाकाराय स्वाहा। ६११. ॐ महायोगिने स्वाहा। ६१२. ॐ महातेजसे स्वाहा। ६१३. ॐ महाद्युतये स्वाहा। ६१४. ॐ महासनाय स्वाहा। ६१५. ॐ महानादाय स्वाहा। ६१६. ॐ महामन्त्राय स्वाहा। ६१७. ॐ महामतये स्वाहा। ६१८. ॐ महागमाय स्वाहा। ६१९. ॐ महोदाराय स्वाहा। ६२०. ॐ महादेवात्मकाय स्वाहा। ६२१. ॐ विभवे स्वाहा। ६२२. ॐ रौद्रकर्मणे स्वाहा। ६२३. ॐ क्रूरकर्मणे स्वाहा। ६२४. ॐ रत्ननाभाय स्वाहा। ६२५. ॐ कृतागमाय स्वाहा। ६२६. ॐ अम्भोधिलङ्घनाय स्वाहा। ६२७. ॐ सिंहाय स्वाहा। ६२८. ॐ सत्यधर्मप्रमोदनाय स्वाहा। ६२९. ॐ जितामित्राय स्वाहा। ६३०. ॐ जयाय स्वाहा। ६३१. ॐ सोमाय स्वाहा। ६३२. ॐ विजयाय स्वाहा। ६३३. ॐ वायुनन्दनाय स्वाहा। ६३४. ॐ जीवदात्रे स्वाहा। ६३५. ॐ सहस्रांशवे स्वाहा। ६३६. ॐ मुकुन्दाय स्वाहा। ६३७. ॐ भूरिदक्षिणाय स्वाहा। ६३८. ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा। ६३९. ॐ सिद्धिदाय स्वाहा। ६४०. ॐ सिद्धसङ्कल्पाय स्वाहा। ६४१. ॐ सिद्धिहेतुकाय स्वाहा। ६४२. ॐ सप्तपातालचरणाय स्वाहा। ६४३. ॐ सप्तर्षिगणवन्दिताय स्वाहा। ६४४. ॐ सप्ताब्धिलङ्घनाय स्वाहा। ६४५. ॐ वीराय स्वाहा। ६४६. ॐ सप्तद्वीपोरुमण्डलाय स्वाहा। ६४७. ॐ सप्ताङ्गराज्यसुखदाय स्वाहा। ६४८. ॐ सप्तमातृनिषेविताय स्वाहा। ६४९. ॐ सप्तस्वर्लोकमुकुटाय स्वाहा। ६५०. ॐ सप्तहोत्रे स्वाहा। ६५१. ॐ स्वराश्रयाय स्वाहा। ६५२. ॐ सप्तच्छन्दोनिधये स्वाहा। ६५३. ॐ सप्तच्छन्दसे स्वाहा। ६५४. ॐ सप्तजनाश्रयाय स्वाहा। ६५५. ॐ सप्तसामोपगीताय स्वाहा। ६५६. ॐ सप्तपातालसंश्रयाय स्वाहा। ६५७. ॐ मेधादाय स्वाहा।

६५८. ॐ कीर्तिदाय स्वाहा। ६५९. ॐ शोकहारिणे स्वाहा। ६६०. ॐ दौर्भाग्यनाशनाय स्वाहा। ६६१. ॐ सर्वरक्षाकराय स्वाहा। ६६२. ॐ गर्भदोषघ्ने स्वाहा। ६६३. ॐ पुत्रपौत्रदाय स्वाहा। ६६४. ॐ प्रतिवादिमुखस्तम्भाय स्वाहा। ६६५. ॐ रुष्टचित्तप्रसादनाय स्वाहा। ६६६. ॐ पराभिचारशमनाय स्वाहा। ६६७. ॐ दुःखघ्ने स्वाहा। ६६८. ॐ बन्धमोक्षदाय स्वाहा। ६६९. ॐ नवद्वारपुराधाराय स्वाहा। ६७०. ॐ नवद्वारनिकेतनाय स्वाहा। ६७१. ॐ नरनारायणस्तुत्याय स्वाहा। ६७२. ॐ नवनाथमहेश्वराय स्वाहा। ६७३. ॐ मेखलिने स्वाहा। ६७४. ॐ कवचिने स्वाहा। ६७५. ॐ खड्गिने स्वाहा। ६७६. ॐ भ्राजिष्णवे स्वाहा। ६७७. ॐ जिष्णुसारथये स्वाहा। ६७८. ॐ बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छाय स्वाहा। ६७९. ॐ पुच्छहतासुराय स्वाहा। ६८०. ॐ दुष्टग्रहनिहन्त्रे स्वाहा। ६८१. ॐ पिशाचग्रहघातकाय स्वाहा। ६८२. ॐ बालग्रहविनाशिने स्वाहा। ६८३. ॐ धर्मनेत्रे स्वाहा। ६८४. ॐ कृपाकराय स्वाहा। ६८५. ॐ उग्रकृत्याय स्वाहा। ६८६. ॐ उग्रवेगाय स्वाहा। ६८७. ॐ उग्रनेत्राय स्वाहा। ६८८. ॐ शतक्रतवे स्वाहा। ६८९. ॐ शतमन्युनुताय स्वाहा। ६९०. ॐ स्तुत्याय स्वाहा। ६९१. ॐ स्तुतये स्वाहा। ६९२. ॐ स्तोत्रे स्वाहा। ६९३. ॐ महाबलाय स्वाहा। ६९४. ॐ समग्रगुणशालिने स्वाहा। ६९५. ॐ व्यग्राय स्वाहा। ६९६. ॐ रक्षोविनाशकाय स्वाहा। ६९७. ॐ रक्षोऽग्निदाहाय स्वाहा। ६९८. ॐ ब्रह्मेशायै स्वाहा। ६९९. ॐ श्रीधराय स्वाहा। ७००. ॐ भक्तवत्सलाय स्वाहा। ७०१. ॐ मेघनादाय स्वाहा। ७०२. ॐ मेघरूपाय स्वाहा। ७०३. ॐ मेघवृष्टिनिवारकाय स्वाहा। ७०४. ॐ मेघजीवनहेतवे स्वाहा। ७०५. ॐ मेघश्यामाय स्वाहा। ७०६. ॐ परात्मकाय स्वाहा। ७०७. ॐ समीरतनयाय स्वाहा। ७०८. ॐ योद्ध्रे स्वाहा। ७०९. ॐ नृत्यविद्याविशारदाय स्वाहा। ७१०. ॐ अमोघाय स्वाहा। ७११. ॐ अमोघदृष्टये स्वाहा। ७१२. ॐ इष्टदाय स्वाहा। ७१३. ॐ अरिष्टनाशनाय स्वाहा। ७१४. ॐ अर्थाय स्वाहा। ७१५. ॐ अनर्थपहारिणे स्वाहा। ७१६. ॐ समर्थाय स्वाहा। ७१७. ॐ रामसेवकाय स्वाहा। ७१८. ॐ अर्थिवन्द्याय स्वाहा। ७१९. ॐ असुरारातयै स्वांहा। ७२०. ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा। ७२१. ॐ आत्मभुवे स्वाहा। ७२२. ॐ संकर्षणाय स्वाहा। ७२३. ॐ विशुद्धात्मने स्वाहा। ७२४. ॐ विद्याराशये स्वाहा। ७२५. ॐ सुरेश्वराय स्वाहा। ७२६. ॐ अचलोद्धारकाय स्वाहा। ७२७. ॐ

नित्याय स्वाहा। ७२८. ॐ सेतुकृते स्वाहा। ७२९. ॐ रामसारथये स्वाहा। ७३०. ॐ आनन्दाय स्वाहा। ७३१. ॐ परमानन्दाय स्वाहा। ७३२. ॐ मत्स्याय स्वाहा। ७३३. ॐ कूर्माय स्वाहा। ७३४. ॐ निराश्रयाय स्वाहा। ७३५. ॐ वाराहाय स्वाहा। ७३६. ॐ नारसिंहाय स्वाहा। ७३७. ॐ वामनाय स्वाहा। ७३८. ॐ जमदग्निजाय स्वाहा। ७३९. ॐ रामाय स्वाहा। ७४०. ॐ कृष्णाय स्वाहा। ७४१. ॐ शिवाय स्वाहा। ७४२. ॐ बुद्धाय स्वाहा। ७४३. ॐ कल्किने स्वाहा। ७४४. ॐ रामाश्रयाय स्वाहा। ७४५. ॐ हरये स्वाहा। ७४६. ॐ नन्दिने स्वाहा। ७४७. ॐ भृङ्गिणे स्वाहा। ७४८. ॐ चण्डिने स्वाहा। ७४९. ॐ गणेशाय स्वाहा। ७५०. ॐ गणसेविताय स्वाहा। ७५१. ॐ कर्माध्यक्षाय स्वाहा। ७५२. ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा। ७५३. ॐ विश्रामाय स्वाहा। ७५४. ॐ जगतीपतये स्वाहा। ७५५. ॐ जगन्नाथाय स्वाहा। ७५६. ॐ कपीशाय स्वाहा। ७५७. ॐ सर्वावासाय स्वाहा। ७५८. ॐ सदाश्रयाय स्वाहा। ७५९. ॐ सुग्रीवादिस्तुताय स्वाहा। ७६०. ॐ दान्ताय स्वाहा। ७६१. ॐ सर्वकर्मणे स्वाहा। ७६२. ॐ प्लवङ्गमाय स्वाहा। ७६३. ॐ नखदारितरक्षसे स्वाहा। ७६४. ॐ नखयुद्धविशारदाय स्वाहा। ७६५. ॐ कुशलाय स्वाहा। ७६६. ॐ सुधनाय स्वाहा। ७६७. ॐ शेषाय स्वाहा। ७६८. ॐ वासुकये स्वाहा। ७६९. ॐ तक्षकाय स्वाहा। ७७०. ॐ स्वर्णवर्णाय स्वाहा। ७७१. ॐ बलाढ्याय स्वाहा। ७७२. ॐ पुरुजेत्रे स्वाहा। ७७३. ॐ अघनाशनाय स्वाहा। ७७४. ॐ कैवल्यरूपाय स्वाहा। ७७५. ॐ कैवल्याय स्वाहा। ७७६. ॐ गरुडाय स्वाहा। ७७७. ॐ पन्नगोरगाय स्वाहा। ७७८. ॐ किल्किल्रावहतारातये स्वाहा। ७७९. ॐ गर्वपर्वतभेदनाय स्वाहा। ७८०. ॐ वज्राङ्गाय स्वाहा। ७८१. ॐ वज्रदंष्ट्राय स्वाहा। ७८२. ॐ भक्तवज्रनिवारकाय स्वाहा। ७८३. ॐ नखायुधायै स्वाहा। ७८४. ॐ मणिग्रीवाय स्वाहा। ७८५. ॐ ज्वालामालिने स्वाहा। ७८६. ॐ भास्कराय स्वाहा। ७८७. ॐ प्रौढप्रतापाय स्वाहा। ७८८. ॐ तपनाय स्वाहा। ७८९. ॐ भक्ततापनिवारकाय स्वाहा। ७९०. ॐ शरणाय स्वाहा। ७९१. ॐ जीवनाय स्वाहा। ७९२. ॐ भोक्त्रे स्वाहा। ७९३. ॐ नानाचेष्टाय स्वाहा। ७९४. ॐ अचञ्चलाय स्वाहा। ७९५. ॐ स्वस्तिमते स्वाहा। ७९६. ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा। ७९७. ॐ दुःखशातनाय स्वाहा। ७९८. ॐ पवनात्मजाय स्वाहा। ७९९. ॐ पावनाय स्वाहा। ८००. ॐ

पवनाय स्वाहा। ८०१. ॐ कान्ताय स्वाहा। ८०२. ॐ भक्तागः सहनाय स्वाहा। ८०३. ॐ बलिने स्वाहा। ८०४. ॐ मेघनादरिपवे स्वाहा। ८०५. ॐ मेघनादसंहतराक्षसाय स्वाहा। ८०६. ॐ क्षराय स्वाहा। ८०७. ॐ अक्षराय स्वाहा। ८०८. ॐ विनीतात्मने स्वाहा। ८०९. ॐ वानरेशाय स्वाहा। ८१०. ॐ सतां गतये स्वाहा। ८११. ॐ श्रीकण्ठाय स्वाहा। ८१२. ॐ शितिकण्ठाय स्वाहा। ८१३. ॐ सहायाय स्वाहा। ८१४. ॐ सहनायकाय स्वाहा। ८१५. ॐ अस्थूलाय स्वाहा। ८१६. ॐ अनणवे स्वाहा। ८१७. ॐ भर्गाय स्वाहा। ८१८. ॐ दिव्याय स्वाहा। ८१९. ॐ संसृतिनाशनार्य स्वाहा। ८२०. ॐ अध्यात्मविद्यासाराय स्वाहा। ८२१. ॐ अध्यात्मकुशलाय स्वाहा। ८२२. ॐ सुधिये स्वाहा। ८२३. ॐ अकल्मषाय स्वाहा। ८२४. ॐ सत्यहेतवे स्वाहा। ८२५. ॐ सत्यदाय स्वाहा। ८२६. ॐ सत्यगोचराय स्वाहा। ८२७. ॐ सत्यगर्भाय स्वाहा। ८२८. ॐ सत्यरूपाय स्वाहा। ८२९. ॐ सत्याय स्वाहा। ८३०. ॐ सत्यपराक्रमाय स्वाहा। ८३१. ॐ अञ्जनाप्राणलिङ्गाय स्वाहा। ८३२. ॐ वायुवंशोद्भवाय स्वाहा। ८३३. ॐ शुभाय स्वाहा। ८३४. ॐ भद्ररूपाय स्वाहा। ८३५. ॐ रुद्ररूपाय स्वाहा। ८३६. ॐ सुरूपाय स्वाहा। ८३७. ॐ चित्ररूपधृषे स्वाहा। ८३८. ॐ मैनाकवन्दिताय स्वाहा। ८३९. ॐ सूक्ष्मदर्शनाय स्वाहा। ८४०. ॐ विजयाय स्वाहा। ८४१. ॐ जयाय स्वाहा। ८४२. ॐ क्रान्तदिङ्मण्डलाय स्वाहा। ८४३. ॐ रुद्राय स्वाहा। ८४४. ॐ प्रकटीकृतविक्रमाय स्वाहा। ८४५. ॐ कम्बुकण्ठाय स्वाहा। ८४६. ॐ प्रसन्नात्मने स्वाहा। ८४७. ॐ ह्रस्वनासाय स्वाहा। ८४८. ॐ वृकोदराय स्वाहा। ८४९. ॐ लम्बौष्ठाय स्वाहा। ८५०. ॐ कुण्डलिने स्वाहा। ८५१. ॐ चित्रमालिने स्वाहा। ८५२. ॐ योगविदां वराय स्वाहा। ८५३. ॐ विपश्चिते स्वाहा। ८५४. ॐ कवये स्वाहा। ८५५. ॐ आनन्दविग्रहाय स्वाहा। ८५६. ॐ अनल्पशासनाय स्वाहा। ८५७. ॐ फाल्गुनीसूनवे स्वाहा। ८५८. ॐ अव्यग्राय स्वाहा। ८५९. ॐ योगात्मने स्वाहा। ८६०. ॐ योगतत्पराय स्वाहा। ८६१. ॐ योगविदे स्वाहा। ८६२. ॐ योगकर्त्रे स्वाहा। ८६३. ॐ योगयोनये स्वाहा। ८६४. ॐ दिगम्बराय स्वाहा। ८६५. ॐ अकारादिहकारान्तवर्णनिर्मितविग्रहाय स्वाहा। ८६६. ॐ उलूखलमुखाय स्वाहा। ८६७. ॐ सिद्धसंस्तुताय स्वाहा। ८६८. ॐ प्रमथेश्वराय स्वाहा। ८६९. ॐ श्लिष्टजङ्घाय स्वाहा। ८७०. ॐ

श्लिष्टजानवे स्वाहा। ८७१. ॐ श्लिष्टपाणये स्वाहा। ८७२. ॐ शिखाधराय स्वाहा। ८७३. ॐ सुशर्मणे स्वाहा। ८७४. ॐ अमितशर्मणे स्वाहा। ८७५. ॐ नारायणपरायणाय स्वाहा। ८७६. ॐ जिष्णवे स्वाहा। ८७७. ॐ भविष्णवे स्वाहा। ८७८. ॐ रोचिष्णवे स्वाहा। ८७९. ॐ ग्रसिष्णवे स्वाहा। ८८०. ॐ स्थाणवे स्वाहा। ८८१. ॐ हरिरुद्रानुसेकाय स्वाहा। ८८२. ॐ कम्पनाय स्वाहा। ८८३. ॐ भूमिकम्पनाय स्वाहा। ८८४. ॐ गुणप्रवाहाय स्वाहा। ८८५. ॐ सूत्रात्मने स्वाहा। ८८६. ॐ वीतरागस्तुतिप्रियाय स्वाहा। ८८७. ॐ नागकन्याभयध्वंसिने स्वाहा। ८८८. ॐ रुक्मवर्णाय स्वाहा। ८८९. ॐ कपालभृते स्वाहा। ८९०. ॐ अनाकुलाय स्वाहा। ८९१. ॐ भवोपायाय स्वाहा। ८९२. ॐ अनपायाय स्वाहा। ८९३. ॐ वेदपारगाय स्वाहा। ८९४. ॐ अक्षराय स्वाहा। ८९५. ॐ पुरुषाय स्वाहा। ८९६. ॐ लोकनाथाय स्वाहा। ८९७. ॐ ऋक्षप्रभवे स्वाहा। ८९८. ॐ दृढाय स्वाहा। ८९९. ॐ अष्टाङ्गयोगफलभुजे स्वाहा। ९००. ॐ सत्यसंधाय स्वाहा। ९०१. ॐ पुरुष्टुताय स्वाहा। ९०२. ॐ श्मशानस्थाननिलयाय स्वाहा। ९०३. ॐ प्रेतविद्रावणक्षमाय स्वाहा। ९०४. ॐ पञ्चाक्षरपराय स्वाहा। ९०५. ॐ पञ्चमातृकाय स्वाहा। ९०६. ॐ रञ्जनधध्जाय स्वाहा। ९०७. ॐ योगिनीवृन्दवन्द्यश्रियै स्वाहा। ९०८. ॐ शत्रुघ्नाय स्वाहा। ९०९. ॐ अनन्तविक्रमाय स्वाहा। ९१०. ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा। ९११. ॐ इन्द्रियरिपवे स्वाहा। ९१२. ॐ धृतदण्डाय स्वाहा। ९१३. ॐ दशात्मकाय स्वाहा। ९१४. ॐ अप्रपञ्चाय स्वाहा। ९१५. ॐ सदाचाराय स्वाहा। ९१६. ॐ शूरसेनाविदारकाय स्वाहा। ९१७. ॐ वृद्धाय स्वाहा। ९१८. ॐ प्रमोदाय स्वाहा। ९१९. ॐ आनन्दाय स्वाहा। ९२०. ॐ सप्तद्वीपपतिन्धराय स्वाहा। ९२१. ॐ नवद्वारपुराधाराय स्वाहा। ९२२. ॐ प्रत्यग्राय स्वाहा। ९२३. ॐ सामगायकाय स्वाहा। ९२४. ॐ षट्चक्रधाम्ने स्वाहा। ९२५. ॐ स्वर्लोकाभयकृते स्वाहा। ९२६. ॐ मानदाय स्वाहा। ९२७. ॐ मदाय स्वाहा। ९२८. ॐ सर्ववश्यकराय स्वाहा। ९२९. ॐ शक्तये स्वाहा। ९३०. ॐ अनन्ताय स्वाहा। ९३१. ॐ अनन्तमङ्गलाय स्वाहा। ९३२. ॐ अष्टमूर्तये स्वाहा। ९३३. ॐ नयोपेताय स्वाहा। ९३४. ॐ विरूपाय स्वाहा। ९३५. ॐ सुरसुन्दराय स्वाहा। ९३६. ॐ धूमकेतवे स्वाहा। ९३७. ॐ महाकेतवे स्वाहा। ९३८. ॐ सत्यकेतवे स्वाहा। ९३९. ॐ महारथाय स्वाहा। ९४०. ॐ नन्दिप्रियाय स्वाहा। ९४१. ॐ स्वतन्त्राय स्वाहा।

९४२. ॐ मेखलिने स्वाहा। ९४३. ॐ डमरुप्रियाय स्वाहा। ९४४. ॐ लौहाङ्गाय स्वाहा। ९४५. ॐ सर्वविदे स्वाहा। ९४६. ॐ धन्विने स्वाहा। ९४७. ॐ खण्डलाय स्वाहा। ९४८. ॐ शर्वाय स्वाहा। ९४९. ॐ ईश्वराय स्वाहा। ९५०. ॐ फलभुजे स्वाहा। ९५१. ॐ फलहस्ताय स्वाहा। ९५२. ॐ सर्वकर्मफरप्रदाय स्वाहा। ९५३. ॐ धर्माध्यक्षाय स्वाहा। ९५४. ॐ धर्मपालाय स्वाहा। ९५५. ॐ धर्माय स्वाहा। ९५६. ॐ धर्मप्रदाय स्वाहा। ९५७. ॐ अर्थदाय स्वाहा। ९५८. ॐ पञ्चविंशतितत्त्वज्ञाय स्वाहा। ९५९. ॐ तारकाय स्वाहा। ९६०. ॐ ब्रह्मतत्पराय स्वाहा। ९६१. ॐ त्रिमार्गवसतये स्वाहा। ९६२. ॐ भीमाय स्वाहा। ९६३. ॐ सर्वदुःखनिबर्हणाय स्वाहा। ९६४. ॐ ऊर्जस्वते स्वाहा। ९६५. ॐ निष्कलाय स्वाहा। ९६६. ॐ शूलिने स्वाहा। ९६७. ॐ मौलिने स्वाहा। ९६८. ॐ गर्जन्निशाचराय स्वाहा। ९६९. ॐ रक्ताम्बरधराय स्वाहा। ९७०. ॐ रक्ताय स्वाहा। ९७१. ॐ रक्तमाल्याय स्वाहा। ९७२. ॐ विभूषणाय स्वाहा। ९७३. ॐ वनमालिने स्वाहा। ९७४. ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा। ९७५. ॐ श्वेताय स्वाहा। ९७६. ॐ श्वेताम्बराय स्वाहा। ९७७. ॐ यूने स्वाहा। ९७८. ॐ जयाय स्वाहा। ९७९. ॐ अजयपरीवाराय स्वाहा। ९८०. ॐ सहस्रवदनाय स्वाहा। ९८१. ॐ कपये स्वाहा। ९८२. ॐ शाकिनीडाकिनीयक्षरक्षोभूतप्रभञ्जकाय स्वाहा। ९८३. ॐ सद्योजाताय स्वाहा। ९८४. ॐ कामगतये स्वाहा। ९८५. ॐ ज्ञानमूर्तये स्वाहा। ९८६. ॐ यशस्कराय स्वाहा। ९८७. ॐ शम्भुतेजसे स्वाहा। ९८८. ॐ सार्वभौमाय स्वाहा। ९८९. ॐ विष्णुभक्ताय स्वाहा। ९९०. ॐ प्लवङ्गमाय स्वाहा। ९९१. ॐ चतुर्नवतिमन्त्रज्ञाय स्वाहा। ९९२. ॐ पौलस्त्यबलदर्पघ्ने स्वाहा। ९९३. ॐ सर्वलक्ष्मीप्रदाय स्वाहा। ९९४. ॐ श्रीमते स्वाहा। ९९५. ॐ अङ्गदप्रियाय स्वाहा। ९९६. ॐ ईडिताय स्वाहा। ९९७. ॐ स्मृतिबीजाय स्वाहा। ९९८. ॐ सुरेशानाय स्वाहा। ९९९. ॐ संसारभयनाशनाय स्वाहा। १०००. ॐ उत्ताय स्वाहा। १००१. ॐ श्रीपरीवाराय स्वाहा। १००२. ॐ श्रिताय स्वाहा। १००३. ॐ रुद्राय स्वाहा। १००४. ॐ कामदुहे स्वाहा।

विश्वशान्तियागन्यास:

विनियोग:—ऋचं वाचमिति चतुर्विंशतिमन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः विष्णुर्देवता, शान्त्यर्थं होमे विनियोगः।

१. ॐ दृते दृर्ठं० ह मा ज्योक्ते० हृदयाय नमः। २. ॐ नमस्ते हरसे शोचिवे० शिरसे स्वाहा। ३. ॐ नमस्तेऽ अस्तु विद्युते० शिखायै वषट्। ४. ॐ यतोयतः० कवचाय हुम्। ५. ॐ सुमित्रिया नः० नेत्रत्रयाय वौषट्। ६. ॐ तच्चक्षुः० अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

विश्वशान्तियागस्वाहाकारमन्त्राः

विश्वशान्ति महायज्ञ में निम्न मन्त्रों के द्वारा एक लाख पच्चीस हजार आहुति होती है। यह महायज्ञ नौ या ग्यारह दिन में पूर्ण होता है।

ॐ ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ स्वाहा॥ १॥

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृणं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः स्वाहा॥ २॥

भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥ ३॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा॥ ४॥

कस्त्वा सत्यो मदानां मर्ठं० हिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढ़ा चिदारुजे वसु स्वाहा॥ ५॥

अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं भवास्यूतिभिः स्वाहा॥ ६॥

कया त्वं नऽ ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आ भर स्वाहा॥ ७॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नोऽ अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥ ८॥

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा। शं नऽ इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः स्वाहा॥ ९॥

शं नो वातः पवतार्ठ० शं नस्तपतु सूर्यः। शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु स्वाहा॥ १०॥

अहानि शं भवन्तु नः शर्ठ० रात्रीः प्रति धीयताम् । शं नऽ इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं नऽ इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं नऽ इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः स्वाहा॥ ११॥

शं नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः स्वाहा॥ १२॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म स प्रथाः स्वाहा॥ १३॥

आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊ र्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे स्वाहा॥ १४॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः स्वाहा॥ १५॥

तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः स्वाहा॥ १६॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरे वं शान्तिः सा मा शान्तिरेधि स्वाहा॥ १७॥

दृते दृर्ठ० ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे स्वाहा॥ १८॥

दृते दृर्ठ०ह मा । ज्योके सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् स्वाहा॥ १९॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव स्वाहा॥ २०॥

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे स्वाहा॥ २१॥ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योभयं नः पशुभ्यः स्वाहा॥ २२॥ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽयस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः स्वाहा॥ २३॥ तच्चक्षु-र्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतर्ठ० शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् स्वाहा॥ २४॥

वास्तुहवनम्

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमी वो भवा नः।
यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

१. ॐ शिखिने स्वाहा।
२. ॐ पर्जन्याय स्वाहा।
३. ॐ जयन्ताय स्वाहा।
४. ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा।
५. ॐ सूर्याय स्वाहा।
६. ॐ सत्याय स्वाहा।
७. ॐ भृशाय स्वाहा।
८. ॐ आकाशाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा।
१०. ॐ पूषणे स्वाहा।
११. ॐ वितथाय स्वाहा।
१२. ॐ गृहक्षताय स्वाहा।
१३. ॐ यमाय स्वाहा।
१४. ॐ गन्धर्वाय स्वाहा।
१५. ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा।
१६. ॐ मृगाय स्वाहा।
१७. ॐ पितृभ्यो स्वाहा।
१८. ॐ दौवारिका स्वाहा।
१९. ॐ सुग्रीवाय स्वाहा।
२०. ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा।
२१. ॐ वरुणाय स्वाहा।
२२. ॐ असुराय स्वाहा।
२३. ॐ शेषाय स्वाहा।
२४. ॐ पापाय स्वाहा।
२५. ॐ रोगाय स्वाहा।
२६. ॐ अहये स्वाहा।
२७. ॐ मुख्याय स्वाहा।
२८. ॐ भल्लाटाय स्वाहा।
२९. ॐ सोमाय स्वाहा।
३०. ॐ सर्पेभ्यो स्वाहा।
३१. ॐ आदित्यै स्वाहा।
३२. ॐ दित्यै स्वाहा।
३३. ॐ अद्भ्यो स्वाहा।
३४. ॐ आपवत्साय स्वाहा।
३५. ॐ अर्य्यमणे स्वाहा।
३६. ॐ सावित्राय स्वाहा।
३७. ॐ सवित्रे स्वाहा।
३८. ॐ विवस्वते स्वाहा।
३९. ॐ वबुधाधिपाय स्वाहा।
४०. ॐ जयन्ताय स्वाहा।
४१. ॐ मित्राय स्वाहा।
४२. ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा।
४३. ॐ रुद्राय स्वाहा।
४४. ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा।
४५. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
४६. ॐ चरक्यै स्वाहा।
४७. ॐ विदार्य्यै स्वाहा।
४८. ॐ पूतनायै स्वाहा।
४९. ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा।
५०. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
५१. ॐ अर्य्यमणे स्वाहा।
५२. ॐ जृम्भकाय स्वाहा।
५३. ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा।
५४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५५. ॐ अग्नये स्वाहा।
५६. ॐ यमाय स्वाहा।
५७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा।
५८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
५९. ॐ वायवे स्वाहा।
६०. ॐ सोमाय स्वाहा।
६१. ॐ ईश्वराय स्वाहा।
६२. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
६३. ॐ अनन्ताय स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण सर्वतोभद्रदेवताहोमः

आचार्य ॐ ब्रह्मणे स्वाहा से ॐ वैनायक्यै स्वाहा तक के निम्न सत्तावन नाम मंत्रों का उच्चारण करते हुए कर्ता से सर्वतोभद्र देवताओं के लिए हवन करावें—

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ अष्टवसुभ्यो स्वाहा। ॐ एकादश-रुद्रेभ्यः स्वाहा। ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा। ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा। ॐ नागेभ्यः स्वाहा। ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। ॐ शूलाय स्वाहा। ॐ महाकालाय स्वाहा। ॐ दक्षादिभ्यः स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। स्वधायै स्वाहा। ॐ मृत्युरोगेभ्य स्वाहा। ॐ गणपतये स्वाहा। ॐ अद्भ्य स्वाहा। ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा। ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ॐ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा। ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ॐ मेरवे स्वाहा। ॐ गदायै स्वाहा। ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ॐ व्रजाय स्वाहा। ॐ शक्तये स्वाहा। ॐ दण्डाय स्वाहा। ॐ खड्गाय स्वाहा। ॐ पाशाय स्वाहा। ॐ अङ्कुशाय स्वाहा। ॐ गौतमाय स्वाहा। ॐ भरद्वाजाय स्वाहा। ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ॐ कश्यपाय स्वाहा। ॐ जमदग्नये स्वाहा। ॐ वसिष्ठाय स्वाहा। ॐ अत्रये स्वाहा। ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ॐ ऐन्द्रयै स्वाहा। ॐ कौमार्यै स्वाहा। ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। ॐ वाराह्यै स्वाहा। ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ वैनायक्यै स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण लिङ्गतोभद्रहोमः

ॐ असिताङ्गभैरवाय स्वाहा। ॐ रुरुभैरवाय स्वाहा। ॐ चण्डभैरवाय स्वाहा। ॐ क्रोधभैरवाय स्वाहा। ॐ उन्मत्तभैरवाय स्वाहा। ॐ कपाल-भैरवाय स्वाहा। ॐ भीषणभैरवाय स्वाहा। ॐ संहारभैरवाय स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण योगिनीहोमः

आचार्य आगे दिए हुए ॐ गजाननायै स्वाहा से ॐ मृगलोचनायै स्वाहा तक के चौसठ नाम मन्त्रों का उच्चारण करते हुए कर्ता से योगिनीहोम करावें—

ॐ गजाननायै स्वाहा। ॐ सिंहमुख्यै स्वाहा। ॐ गृध्रास्यायै स्वाहा। ॐ काकतुण्डिकायै स्वाहा। ॐ उष्ट्रग्रीवायै स्वाहा। ॐ हयग्रीवायै स्वाहा। ॐ वाराह्यै स्वाहा। ॐ शरभाननायै स्वाहा। ॐ उलूकिकायै स्वाहा। ॐ शिवारावायै स्वाहा। ॐ मयूरायै स्वाहा। ॐ विकटाननायै स्वाहा। ॐ अष्टवक्त्रायै स्वाहा। ॐ कोटराक्ष्यै स्वाहा। ॐ कुब्जायै स्वाहा। ॐ विकटलोचनायै स्वाहा। ॐ शुष्कोदर्यै स्वाहा। ॐ ललजिह्वायै स्वाहा। ॐ

श्वदष्ट्रायै स्वाहा। ॐ वानराननायै स्वाहा। ॐ ऋक्षाभ्यै स्वाहा। ॐ केकराक्ष्यै स्वाहा। ॐ बृहत्तुण्डायै स्वाहा। ॐ सुराप्रियायै स्वाहा। ॐ कपालहस्तायै स्वाहा। ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा। ॐ शुक्यै स्वाहा। ॐ श्येन्यै स्वाहा। ॐ कपोतिकायै स्वाहा। ॐ पाशहस्तायै स्वाहा। ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा। ॐ प्रचण्डायै स्वाहा। ॐ चण्डविक्रमायै स्वाहा। ॐ शिशुघ्न्यै स्वाहा। ॐ पापहन्त्र्यै स्वाहा। ॐ काल्यै स्वाहा। ॐ रुधिरपायिन्यै स्वाहा। ॐ वसाधयायै स्वाहा। ॐ गर्भभक्षायै स्वाहा। ॐ शवहस्तायै स्वाहा। ॐ आन्त्रमालिन्यै स्वाहा। ॐ स्थूलकेश्यै स्वाहा। ॐ बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा। ॐ सर्पास्यायै स्वाहा। ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा। ॐ दन्दशूकरायै स्वाहा। ॐ क्रौञ्च्यै स्वाहा। ॐ मृगशीर्षायै स्वाहा। ॐ वृषाननायै स्वाहा। ॐ व्यात्तास्यायै स्वाहा। ॐ धूम्रनिश्वासायै स्वाहा। ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा। ॐ तापिन्यै स्वाहा। ॐ शोषिणीदृष्ट्यै स्वाहा। ॐ कोटर्यै स्वाहा। ॐ स्थूल-नासिकायै स्वाहा। ॐ विद्युत्प्रभायै स्वाहा। ॐ बलाकास्यायै स्वाहा। ॐ मार्जायै स्वाहा। ॐ कटपूतनायै स्वाहा। ॐ अट्टाट्टहासायै स्वाहा। ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगलोचनायै स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण क्षेत्रपालहोमः

आचार्य ॐ अजराय स्वाहा से ॐ शुक्रांय स्वाहा तक के पचास नाम मन्त्रों का उच्चारण करते हुए कर्ता से क्षेत्रपालहोम करावें।

ॐ अजराय स्वाहा। ॐ व्यापकाय स्वाहा। ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा। ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा। ॐ उक्ष्णे स्वाहा। ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वटुकाय स्वाहा। ॐ विमुक्ताय स्वाहा। ॐ लिप्तकाय स्वाहा। ॐ नीललोकाय स्वाहा। ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा। ॐ ऐरावताय स्वाहा। ॐ ओषधीघ्नाय स्वाहा। ॐ बन्धनाय स्वाहा। ॐ दिव्यकरणाय स्वाहा। ॐ कम्बलाय स्वाहा। ॐ भीषणाय स्वाहा। ॐ गवयाय स्वाहा। ॐ घंटाय स्वाहा। ॐ व्यालाय स्वाहा। ॐ अंशवे स्वाहा। ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा। ॐ घटाटोपाय स्वाहा। ॐ जटिलाय स्वाहा। ॐ क्रतवे स्वाहा। ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। ॐ विकटाय स्वाहा। ॐ मणिमाणाय स्वाहा। ॐ गणबन्धाय स्वाहा। ॐ मुण्डाय स्वाहा। ॐ बर्बूकराय स्वाहा। ॐ सुधापाय स्वाहा। ॐ वैनाय स्वाहा। ॐ पवनाय स्वाहा। ॐ ढुण्ढकरणाय स्वाहा। ॐ स्थविराय स्वाहा। ॐ दन्तुराय स्वाहा। ॐ धनदाय स्वाहा। ॐ नागकर्णाय स्वाहा। ॐ महाबलाय स्वाहा। ॐ फेत्काराय स्वाहा। ॐ वीरकाय स्वाहा। ॐ सिंहाय स्वाहा। ॐ मृगाय स्वाहा। ॐ यक्षाय स्वाहा। ॐ मेघवाहनाय स्वाहा। ॐ तीक्ष्णाय स्वाहा। ॐ अमराय स्वाहा। ॐ शुक्राय स्वाहा।

अग्निपूजनम्

सङ्कल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—कृतस्य अमुकयागहवनफलसाफल्यतासिद्ध्यर्थं स्वाहास्वधायुत-मग्निपूजनं करिष्ये।

तदुपरान्त आचार्य **ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम॥** मन्त्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से अग्निदेवता की पूजा करावें।

स्विष्टकृद्धवनञ्च

कर्ता अपनी पत्नी के साथ खड़े होकर बड़े पात्र में तिल को लेवें, फिर दाहिने हाथ से स्रुवे में घी भरकर ब्रह्मा से स्पर्श कर निम्न मन्त्र द्वारा हवन कुण्ड में करे—

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

नवाहुतिः

आचार्य और ब्राह्मण निम्न नाममन्त्रों व वैदिकमन्त्रों तथा वाक्यों का उच्चारण करते हुए कर्ता से कुण्ड में नवाहुति प्रदान करावें, प्रत्येक आहुति के उपरान्त स्रुवे में जो घृत बचे, उसे कर्ता प्रोक्षणीपात्र में छोड़ता जावे—

ॐ भूः स्वाहा — इदमग्नये न मम।
ॐ भुवः स्वाहा — इदं वायवे न मम।
ॐ स्वः स्वाहा — इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नी-वरुणाभ्यां न मम॥

ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। ते भिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यादितये न मम॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

बलयः

कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य अमुकयागसाङ्गतासिद्ध्यर्थं बलिदानं करिष्ये।

कर्ता अलग-अलग पात्रों में पके हुए उड़द और भात को मिलाकर पत्तल आदि में रखकर उसमें दही मिलाकर, आग्नेयकोण से आरम्भ कर दसों दिशाओं में दस पात्रों में दस बलियों और दस दीपों को स्थापित करें। तदुपरान्त ग्रहवेदी के सामने एक ग्रहबलि जिसके चारों ओर चौंतीस अथवा एक छिपक रखे। इसके उपरान्त निम्न क्रम से आगे की क्रिया करें।

अधिदेवता—प्रत्यधिदेवता के सहित नव गणपति आदि की सात, पाँच या दस बलि आचार्य को कर्ता से प्रदान करवानी चाहिये। पुनः प्रधान वेदी के आगे एक बड़े पात्र में पायस, माष (उड़द) और भात बलि और तीन दीप स्थापित करके वास्तुवेदी के आगे दीप के साथ एक बलि और योगिनी वेदी के आगे तीन दीप और एक बलि स्थापित करके क्षेत्रपाल की वेदी के आगे दीप के साथ एक बलि स्थापित करे। इसके उपरान्त अग्नि के आगे बाँस आदि से बनाये हुए एक बड़े पात्र में माष और भात की बलि दधि के साथ स्थापित करके उसके ऊपर मध्य में चतुर्मुख दीप प्रज्वलित करके रखें। यदि वहाँ सम्भव हो तो कूष्माण्ड जल से भरा हुआ एक मिट्टी का घड़ा रख करके सौभाग्य परिमल द्रव्य से और पुष्प-माला आदि से बलि को अलंकृत करके संकल्प करके क्रम से सभी बलियों का त्याग करें।

बलिदानम्

ॐ प्राच्यैदिशे स्वाहा र्वाच्यैदिशे स्वाहा दक्षिणायैदिशे स्वाहा र्वाच्यैदिशे स्वाहा प्रतीच्यैदिशे स्वाहा र्वाच्यैदिशे स्वाहो दीच्यैदिशे स्वाहा र्वाच्यैदिशे स्वाहा र्ध्वायैदिशे स्वाहा र्वाच्यैदिशे स्वाहा॥ इन्द्रादिभ्यो दशभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः।

इन्द्रादिभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि। भो इन्द्रादयः स्वां स्वां दिशं रक्षत

बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन इन्द्रादयो दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।

ततः—ॐ ग्रहाऽउर्जा हुतयोवयन्तो विप्रायमतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोहमिषमूर्जंठ० समग्ग्रभमुपयामगृहीतोसीद्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रा-यत्वाजुष्टतमम्॥

ग्रहपीठस्थेभ्यः सूर्यादिभ्य अधिदेवताप्रत्यधिदेवतापञ्चलोकपालक्रतु-संरक्षकदिक्पालसहितेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सूर्यादिभ्यः साङ्गेभ्यः सपरि-वारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्य इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भोः सूर्यादयो देवाः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सूर्यादयो ग्रहाः प्रीयन्ताम्।

आचार्य प्रधानवेदी के पास सपत्नीक कर्ता को ले जाकर जिस देवता का यज्ञ हो रहा हो उस देवता के मंत्र का उच्चारण कर उसकी बलि कर्ता से प्रदान करावें।

आचार्य निम्न मन्त्र और वाक्य का उच्चारण वास्तुपीठ में करें—

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यस्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ॐ वास्तोष्पतये नमः॥

शिख्यादिभ्यश्च साङ्गेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भोः वास्तोष्पते शिख्यादिदेवताश्च इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्य स्तुष्टिकर्त्र्यो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन वास्तोष्पतिः शिख्यादयश्च प्रीयन्ताम्।

आचार्य योगिनीवेदी के पास जाकर निम्न मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए कर्ता से बलि प्रदत्त करावें—

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ महाकाल्यै नमः।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥

ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ॐ महासरस्वत्यै नमः॥

ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यश्च साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भोः भोः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यः चतुःषष्टियोगिन्यश्च देवताः अमुं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यस्तुष्टिकर्त्र्यो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो योगिन्यश्च प्रीयन्ताम्॥

क्षेत्रपालबलिदानम्

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः, अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालादिप्रीत्यर्थं भूत-प्रेत-पिशाचादि-निवृत्यर्थं च सार्वभौतिकबलिदानं करिष्ये।

आचार्य भूमि में सूर्यादि देवताओं की महाबलि निम्न दो वाक्यों का उच्चारण करवाके कर्ता से प्रदत्त करावे—

ॐ सर्वभूतेभ्यो नमः। ॐ क्षेत्रपालादिभ्यो नमः।

कर्ता के दाहिने हाथ में जल, अक्षत और पुष्प देकर आचार्य निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करें—

ॐ अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नीपरिवाराश्च परिगृह्णन्तु मे बलिम्॥ १॥
ईशानोत्तरयोर्मध्ये क्षेत्रपालो महाबलः।
भीमनामा महादंष्ट्रः स च गृह्णातु मे बलिम्॥ २॥
ये केचित्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः॥ ३॥

आचार्य निम्न मन्त्र एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए वैतालादि परिवार सहित, क्षेत्रपालादि सभी परिवारभूतों के लिये कर्ता से इस बलि को समर्पित करावें—

ॐ नहि स्पशपविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः॥

वेतालादिपरिवारयुतक्षेत्रपालादिसर्वभूतेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्येः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः भूतप्रेतपिशाचराक्षसशाकिनी-डाकिनीसहितेभ्य इमं बलिं समपर्यामि।

भो!भो! क्षेत्रपालादयः अमुं बलिं गृह्णीत मम यजमानस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तार, निर्विघ्नकर्तारः वरदा भवत अनेन सार्वभौतिकबलिप्रदानेन क्षेत्रपालादयः प्रीयन्ताम्।

ॐ बलिं गृहणन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णः पन्नगा ग्रहाः॥ १॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगरक्षसाः।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतना शिवा॥ २॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नानाविद्याधरानगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥ ३॥
जगतः शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्ना मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः॥ ४॥
भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र॥ ५॥

आचार्य ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहो पविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहासर्ठ० हानायस्वाहोपस्थिताय स्वाहा ऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ इस मन्त्र का उच्चारण करें—

कर्ता के सिर पर से इस बलि को नापित घुमाकर नैर्ऋत्यकोण में पड़ने वाले चौराहे पर जाकर इस बलि को रख दे। फिर पीछे मुड़कर कदापि न देखें। वापस आकर अपने हाथ और पैरों को जल से धो लें। आचार्य बलि की पूर्णता के बाद सपत्नीक कर्ता के सिर पर दूर्वा के द्वारा जल का सिंचन करें।

पूर्णाहुतिः

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि।

इति सङ्कल्प्य चतुः-षट्-द्वादशस्त्रुवेण च गृहीतमाज्यं स्त्रुच्यां कृत्वा तस्या उपरि रक्तवस्त्रवेष्टितं श्रीफलं (नारिकेलफलं) संस्थाप्य—ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो॥ इति मन्त्रेण 'ॐ पूर्णाहुत्यै नमः' इति षोडशोपचारैः श्रीफलसहितं पूर्णाहुतिं सम्पूजयेत्। पश्चादधोमुखस्त्रुवच्छन्नां श्रीफलसहितां स्त्रुचिमादाय उत्थाय पूर्णाहुतिं कुर्यात्।

पूर्णाहुतिमन्त्राः

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ२॥ उदारदुपाꣳशुना सममृतत्व-मानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां मृतस्य नाभिः॥ १॥

वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्॥ २॥

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २॥ आविवेश॥ ३॥

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्र एकꣳ सूर्य एकं जजान वेनादेकꣳ स्वधया निष्टतक्षुः॥ ४॥

एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धाराअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्॥ ५॥

सम्यक् स्त्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः॥ ६॥

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥ ७॥

अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोअग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः॥ ८॥

कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते॥ ९॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ १०॥

धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्॥ ११॥

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ १२॥

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ १३॥

पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठ० शतक्रतो॥ १४॥

वसोर्धाराहवनम्

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वसोर्द्धारां होष्यामि।

इति सङ्कल्प्य कुण्डोपरि वसोर्द्धारां प्रागग्रां निधाय तदुपरि घृतपूरितेन ताम्रादिपात्रधृतेनाधोयवमात्रछिद्रेणाज्यं विमुञ्चतोऽग्नेरुपरि वसोर्द्धारां पातयेत्। वसोर्द्धारायाः मुखं सुवर्णनिर्मितजिह्वां बध्नीयात्। तस्यां च घृतधारायां पतन्त्यां स्रुक्प्रणालिकयाऽग्नौ पतन्त्यां इमान् मन्त्रान् पठेत्।

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा॥ १॥

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्चा शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यर्ठ० हाः॥ २॥

ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ्। मितश्च संमितश्च सभराः॥ ३॥

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च विधर्ता च विधारयः॥ ४॥

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरेअमित्रश्च गणः॥ ५॥

ईदृक्षास एतादृक्षासऽऊषणुः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतन। मितासश्च संमितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन्॥ ६॥

स्वतवांश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी॥ ७॥

इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्। एवमिमं यजमानं दैविश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु॥ ८॥

इमर्ठ० स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्समुद्रियर्ठ० सदनमाविशस्व॥ ९॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥ १०॥

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा॥

कर्ता हवन के उपरान्त जो घृतादि शेष हो उसे प्रोक्षणीपात्र में इस वाक्य का उच्चारण करके छोड़ दें—'ॐ इदमग्नये वैश्वानराय न मम।' आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करके कर्ता से अग्निदेवता की प्रार्थना करावें—

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन!॥ १॥
भो भो अग्ने! महाशक्ते! सर्वकर्मप्रसाधन!।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा॥ २॥

अथाग्नेःप्रदक्षिणम्

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से अग्निदेवता की प्रदक्षिणा करावें—

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम्॥

इत्यनेन मन्त्रेणाग्निं परिक्रम्य अग्नेः पश्चिमदिशि प्राङ्मुख उपविशेत्।

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

आचार्य हवनकुण्ड से स्रुव के द्वारा भस्म निकाले अपने शरीर में लगाने के उपरान्त निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए अनामिका अंगुली से कर्ता के शरीर के अंगों में इस प्रकार भस्म लगावे—ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः-ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्-ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्-दक्षिण बाहुमूले। ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्-हृदि। तदुपरान्त प्रोक्षणीपात्र में स्थित घृत को कर्ता सूँघे और दो बार आचमन करके प्रणीतापात्र में रक्खी हुई पवित्री से प्रणीता जल को अपने मस्तक पर छिड़के और उन दोनो कुशाओं का अग्नि में परित्याग कर दे।

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्

कर्ता इस संकल्प का उच्चारण करके ब्रह्मा को दक्षिणा सहित पूर्णपात्र प्रदान करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्तये च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।** कर्ता संकल्प करके ब्रह्मा को पूर्णपात्र प्रदान करे और ब्रह्मा इस वाक्य का उच्चारण करे—**ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।** अग्नि के पीछे जलयुक्त पात्र को कर्ता उलट दे। पुनः आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करे—**ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।** इसके पश्चात् कर्ता प्रणीतापात्र के जल से मार्जन करे, पुनः अग्नि में पवित्री को छोड़ देवे। इसके उपरान्त आचार्य अवभृथस्नान कर्म कर्ता से करावें।

श्रेयोदानम्

आचार्य और कर्ता दोनों ही श्रेयोदान निम्न क्रम से करें—

कृतस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च कर्त्रे श्रेयोदानं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य 'शिवा आपः सन्तु' इति कर्तृदक्षिणहस्ते जलं दद्यात्। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पं दद्यात्। अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति अक्षतान् दद्यात्। तत आचार्यः हस्ते जलाक्षतपूगीफलमादाय भवन्नियोगेन मया अस्मिन् अमुकयागहवनकर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्राह्मगाणपत्यसदस्योपद्रष्टृजापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं जपहवनादिकं तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे, तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वान् भव। आचार्य यह कहकर कर्ता को फल आदि दे और कर्ता '**भवामि**' इस वाक्य का उच्चारण कर उसे ग्रहण करे।

आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम्

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। संकल्प के पश्चात् मण्डप में ही कर्ता आचार्य और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे।

गोदानादिसंकल्पः

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम्, अमुकदासोऽहम्) कृतस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। एवमेव ब्रह्म-गाणपत्य-सदस्योपद्रष्ट-ऋत्विजेभ्यः वृषरथाश्व-गन्धी-सुवर्णादिनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् पृथक्-पृथक् दद्यात्।

भूयसीदक्षिणासंकल्पः

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतेऽस्मिन् अमुकयागहवनकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो नट-नर्तकगायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातु-महमुत्सृज्ये।

ब्राह्मणभोजनसंकल्पः

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। (भोजयिष्यामि)

उत्तरपूजनम्

कर्ता उत्तरपूजन के लिए निम्न संकल्प को करे—

कृतस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं चावाहितदेवानामुत्तरपूजनं करिष्ये।

कर्ता से संकल्प करवाके ही आचार्य गणपत्यादिआवाहित देवताओं की पूजा उससे करावें।

प्रधानपीठादिदानसंकल्पः

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिमानि सोपस्करसहितानि प्रधान-पीठादीनि आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति सङ्कल्प्य प्रधानपीठादिकमाचार्य दद्यात।

अथाभिषेकः

कर्ता और उसकी पत्नी के अभिषेक के लिये भद्रासन बिछावें। उस आसन पर कर्ता पूर्व की ओर मुख करके बैठे और उसकी पत्नी उसके बायें भाग में बैठे। उस समय आचार्य सहित सभी ब्राह्मण पूर्वस्थापित सभी कलशों के जल को शुद्ध ताँबे के चौड़े मुख के पात्र में थोड़ा-थोड़ा लेकर 'दूर्वा और पंचपल्लवादि' से निम्न वैदिक मंत्रों का उच्चारण करके अभिषेक करें—

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ १॥ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥ २॥ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनौर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीयर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि॥ ३॥ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणो अमृतर्ठ० सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्॥ ४॥ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः॥ ५॥ बाहू मे बलमिन्द्रियर्ठ० हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम॥ ६॥ पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरमर्ठ०सौ ग्रीवाश्च श्रोणी। ऊरू अरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः॥ ७॥ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः॥ ८॥ प्रति क्षत्रे प्रतितिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु। प्रत्यङ्गेषु प्रतितिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रतितिष्ठामि पुष्टे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रतितिष्ठामि यज्ञे॥ ९॥ त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिर्ठ० शाः सुराधसः। बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा॥ १०॥ प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूर्ठ०षि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोनुवाक्याभिः पुरोऽनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा आहुतिभिराहुतयो मे कामान्त्समर्धयन्तु भूः स्वाहा॥ ११॥ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्राप्तु नः शुभे॥ १२॥ त्वं यविष्ठ दाशुष नॄँः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना॥ १३॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ १४॥ यो वः

शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ १५॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ १६॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ १७॥ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ १८॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ १९॥ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ २०॥ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥ २१॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव॥ २२॥

पौराणिकमन्त्रैरभिषेकः

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥ १॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥ २॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥ ३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥ ४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजा॥ ५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः॥ ६॥
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः॥ ७॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये॥ ८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामाऽर्थसिद्धये॥ ९॥

घृतच्छायापात्रदानम्

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य अमुकयागहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाज्यावेक्षणं करिष्ये।

कर्ता एक कांसे के चौड़े मुख के पात्र में घृत भरकर उसमें दक्षिणा सहित सुवर्ण छोड़कर अपने मुख की छाया को देखकर ब्राह्मण को प्रदान करें।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करे और कर्ता उसमें अपना मुख देखे—**ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागा तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यत्तस्व सदस्यैः॥**

छायापात्र में मुख देखने के पश्चात् कर्ता निम्न संकल्प का उच्चारण कर उस चौड़े मुख के पात्र को ब्राह्मण को दे—**देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) इदमवलोकितमाज्यं कांस्यपात्रस्थितं स-सुवर्णं श्रीविष्णुदेवतं विष्णुदेवताप्रीतये सर्वारिष्ट-विनाशार्थं चामुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।** ब्राह्मण आज्यपात्र को ग्रहण करके 'स्वस्ति' यह कहकर कर्ता को आशीर्वाद प्रदान करे।

क्षमापनम्

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वर॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥
कर्मणा मनसा वाचा पूजनं यन्मया कृतम्।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरः॥

विसर्जनम्

संकल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्,

गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अमुकहवनात्मकयागकर्माङ्गत्वेन देवविसर्जनं कर्म करिष्ये। इति सङ्कल्पय स्थापितदेवानग्निं च सानुनयं पुष्पाक्षतैर्विश्रीजेत्।

विसर्जनमन्त्राः—ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥ ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनि गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा॥ ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहान्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवꣳसवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहा होरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्या वा पृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा। मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमौ गच्छ तु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ १॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन॥ २॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ ३॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ४॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां स्मै यज्ञात्मने नमः॥ ५॥

कर्ता उच्चारण करे—अनेन यथाशक्तिकृतेन अमुकयागकर्मणा श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्।

कर्ता तीन बार ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः। कहे।

कर्तृरक्षाबन्धनमन्त्रः

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम्॥

कर्तृपत्नीरक्षाबन्धनमन्त्रः

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः॥

कर्तृतिलककरणम्

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर यजमान के मस्तक पर रोली से तिलक करें—

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर तिलक के मध्य में अक्षत लगावें—

येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्।
ताँस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत्॥

कर्त्रेआशीर्वादमन्त्राः—ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ १॥ ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ २॥ ॐ दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्॥ ३॥

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ १॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥ २॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥ ३॥

कर्तृपत्न्या आशीर्वादमन्त्राः—ॐ यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे। तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम्॥ १॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ २॥

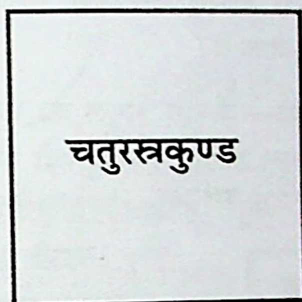
आचार्य और ब्राह्मणों को भोजन करवाने के पश्चात् कर्ता अपनी धर्मपत्नी पुत्र-पौत्रों व पारिवारिकजनों और इष्टमित्रों के साथ जिस यज्ञ को उसने सम्पन्न किया हो उस यज्ञ के महाप्रसाद को प्रसन्नचित्त होकर ग्रहण करें।

॥ इति हवनविधिः॥

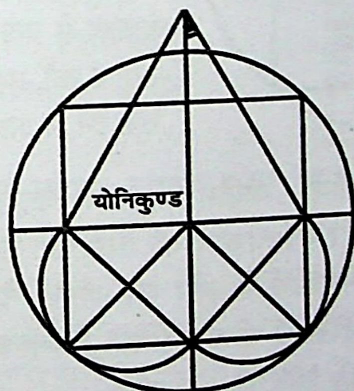
द्वितीयः परिच्छेदः

विविध प्रकार के कुण्डों के निर्माण की विधि

चतुरस्त्रकुण्डनिर्माण—चौबीस अङ्गुल का गज लेकर चारों तरफ (पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर) एक सा नाप द्वारा नापने से मय लेपन द्वारा चतुरस्त्र कुण्ड एक हाथ का बन जायेगा।



योनिकुण्डनिर्माण—चौबीस अङ्गुल का चतुरस्त्र बनाकर उस चतुरस्त्र में दक्षिणोत्तर आधे पर एक लम्बी रेखा दे। तदनन्तर पश्चिम भाग के आधे भाग का



दो हिस्सा पूर्व और पश्चिम की ओर करें। फिर उसके आधे में अर्थात् कोने से एक रेखा दे, जो टेढ़ी दूसरी कोने में जाकर मिले। इस तरह फिर दूसरे कोने से रेखा दे। इसी तरह दूसरे कोने में दे। इस प्रकार दोनों आधों में चार रेखा टेढ़ी होगी। फिर उस पूर्व निर्मित चतुरस्त्र के ठीक पूर्व दिशा की तरफ के मध्य से पाँच अङ्गुल, एक यव और दो यूका बढ़ा दें। फिर चतुरस्त्र के किये हुए ठीक मध्य से अर्थात् दक्षिण दिशा से सटी एक रेखा टेढ़ी दे, जो पूर्व के ठीक मध्य में बढ़ी हुई पाँच अङ्गुल एक यव और यूका वाली रेखा के ऊपरी हिस्से में मिल जाय।

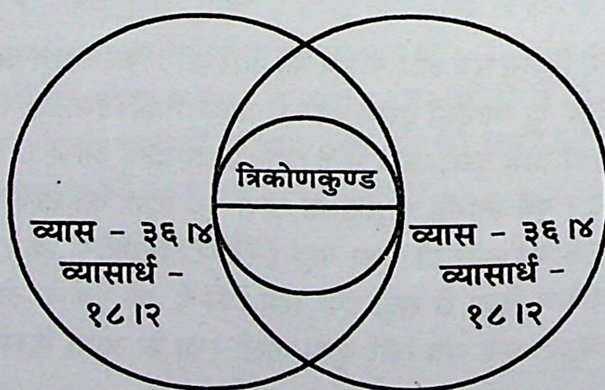
इसी प्रकार उत्तर दिशा से एक रेखा दे। अर्थात्—दक्षिणोत्तर रेखा बढ़े हुए पाँच अङ्गुल, एक यव और दो यूका की रेखा में मिला दे। तदनन्तर नीचे प्रकाल को दक्षिण की तरफ और उत्तर की तरफ बने हुए दोनों हिस्सों के ठीक मध्य से अर्थात्—अलग-अलग घुमाकर पश्चिम भाग के ठीक मध्य की तरफ मिला दे। इसी तरह उत्तर की तरफ से प्रकाल द्वारा रेखा पश्चिम दिशा के ठीक मध्य में मिलाने से योनि कुण्ड बन जाता है।

अर्धचन्द्रकुण्डनिर्माण—चौबीस अंगुल का चतुरस्र बनाकर उस चतुरस्र के पूर्व दिशा से अढ़ाई अंगुल हटाकर (पञ्चकुण्डी पक्ष में उत्तर दिशा के ठीक मध्य की तरफ से अढ़ाई अंगुल हटाकर) दक्षिणोत्तर एक रेखा लम्बी दे।



उसी रेखा के मध्य से उन्नीस अंगुल, एक यव, एक यूका, पाँच लिक्षा और सात बालाग्र (१९ अंगुल, १ यव, १ यूका, ५ लिक्षा, ७ बालाग्र) प्रकाल से नाप कर अर्थात् साढ़े उन्नीस अंगुल को प्रकाल से नाप कर, टेढ़ी रेखा देने से अर्धचन्द्र कुण्ड बन जाता है।

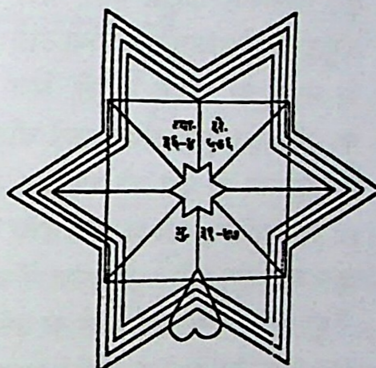
त्रिकोणकुण्डनिर्माण—चौबीस अंगुल के चतुरस्र के बाहर पश्चिम की तरफ से वायव्यकोण और नैर्ऋत्यकोण की तरफ छः छः अंगुल और बढ़ा दें। अर्थात् छः अंगुल वायव्यकोण में और छः अंगुल नैर्ऋत्यकोण में बढ़ा दें। तदनन्तर निर्मित उस चतुरस्र के ठीक पूर्वदिशा के मध्य से आठ अंगुल लम्बी सीधी रेखा पूर्वदिशा की तरफ बढ़ा दें। फिर वायव्य-कोण में बढ़ी हुई रेखा के अन्तिम हिस्से से एक रेखा टेढ़ी दे, जो पूर्वदिशा में बढ़ी हुई रेखा में मिले। उसी प्रकार नैर्ऋत्यकोण से रेखा देने से त्रिकोण कुण्ड बन जाता है।





वृत्तकुण्डनिर्माण-चौबीस अंगुल के चतुरस्त्र के ठीक मध्य से साढ़े तेरह अंगुल (तेरह अंगुल, चार यव, दो यूका, पाँच लिक्षा और तीन बालाग्र) का प्रकाल लेकर गोलाकार घुमाने से वृत्तकुण्ड बन जाता है।

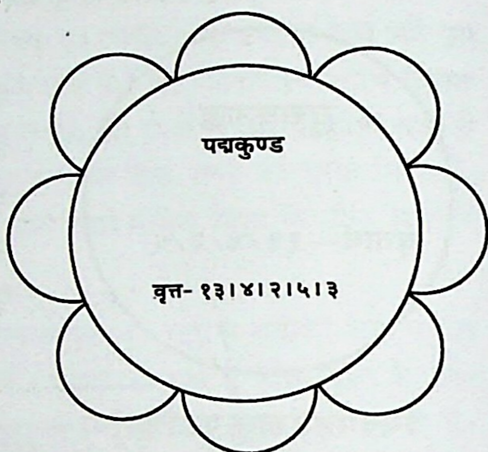
विषमषडस्त्रकुण्डनिर्माण—चौबीस अंगुल का चतुरस्त्र बनाकर उस चतुरस्त्र के ऊपर अठारह अंगुल और दो यव का एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस वृत्त में छः निशान बराबर-बराबर के लगा दे। तदनन्तर उन निशानों पर रेखा देने से विषम षडस्त्र कुण्ड बन जाता है।



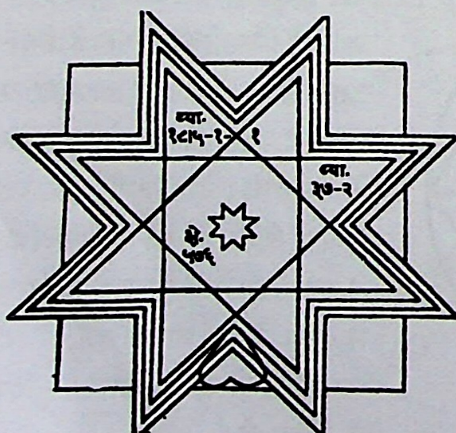
समषडस्त्रकुण्डनिर्माण—चौबीस अंगुल का चतुरस्त्र बनाकर उस चतुरस्त्र के ऊपर १४ अंगुल, ७ यव और २ यूका का एक गोलवृत्त बना दे। तदनन्तर उस वृत्त में बराबर के छः चिह्न कर देने से समषडस्त्रकुण्ड बन जाता है। स्पष्टीकरण यह है कि—उत्तर दिशा से टेढ़ी रेखा मुख पर मिला दे, मुख से एक रेखा दक्षांस में मिला दे। दक्षांश से एक रेखा दक्षिण दिशा में दे। दक्षिण दिशा से एक रेखा टेढ़ी पुच्छ में दे। पुच्छ से एक रेखा वामश्रोणी में दे। वामश्रोणी से एक रेखा और दिशा में मिला दे।



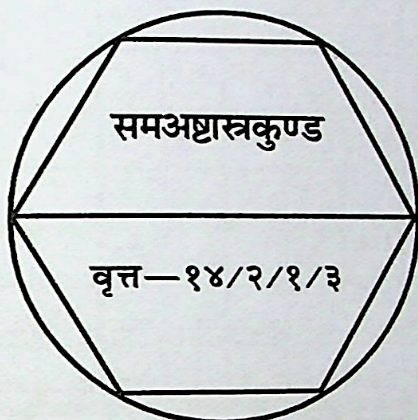
पद्मकुण्डनिर्माण—चौबीस अंगुल का चतुरस्त्र बनाकर उस चतुरस्त्र के ठीक मध्य से एक गोलाकार प्रकाल द्वारा तीन अंगुल का वृत्त बनावे। तदनन्तर छः अंगुल का गोलाकार दूसरा वृत्त उसी के ऊपर बनावे। फिर नौ अंगुल का वृत्त गोलाकार तीसरा और बारह अंगुल का गोलाकार वृत्त चौथा उसी पर बनाने पर चौदह अंगुल, सात यव और तीन यूका अर्थात् साढ़े चौदह अंगुल का वृत्त गोल पाँचवा उसी पर बना दे। तदनन्तर दो वृत्त को छोड़कर अर्थात् प्रारम्भ के दो वृत्त तीन और छः को छोड़कर पश्चिम, दक्षिण ओर उत्तर दिशा में एक-एक चिह्न करे। फिर नैऋत्य, वायव्य, ईशान और अग्निकोण में एक-एक चिह्न करे। इस तरह आठ चिह्न वृत्त में हुए—ऐसा निश्चय हो जाने पर उन दिशा और विदिशाओं के मध्य-मध्य में पुनः एक चिह्न दे। ये चिह्न सोलह बराबर-बराबर के होंगे। इस तरह सोलह चिह्न (रेखा) हो जाने पर उत्तर दिशा से एक चिह्न (रेखा) को छोड़ता हुआ पद्माकार रेखा देने से पद्म कुण्ड का निर्माण हो जाता है।



विषमअष्टास्त्रकुण्डनिर्माण—चौबीस अंगुल के चतुरस्त्र के ठीक मध्य से अठारह अंगुल, पाँच यव और एक यूका अर्थात् साढ़े अठ्ठारह अंगुल का एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस निर्मित गोलाकार वृत्त में सोलह चिह्न एक बराबर करे। तदनन्तर दिशा और विदिशा के मध्य की रेखा से (अर्थात् दिशाओं की ओर विदिशाओं की रेखाओं को छोड़कर) बनाने से विषम अष्टास्त्र कुण्ड बन जाता है।

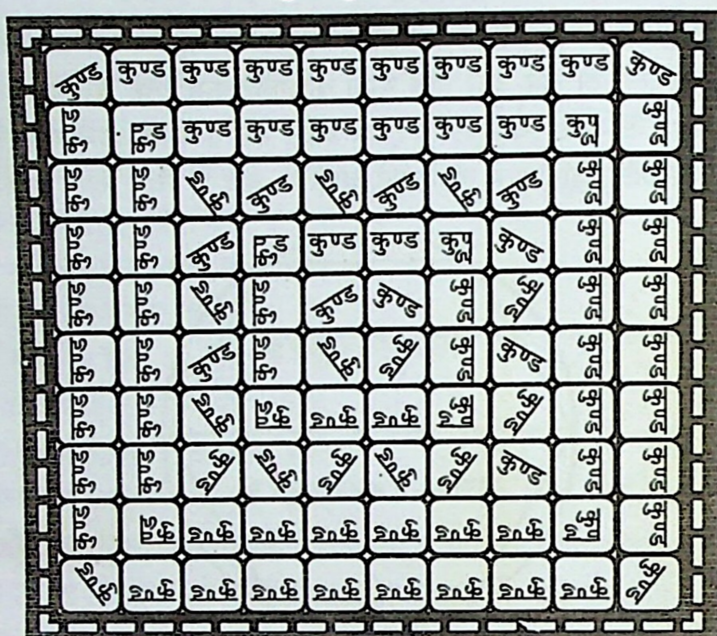


समअष्टास्रकुण्डनिर्माण—चौबीस अंगुल का चतुरस्र बनाकर उस चतुरस्र पर चौदह अंगुल, दो यव और तीन यूका का गोलाकार एक वृत्त बनाकर उसमें बराबर बराबर के आठ चिह्न कर दे। यह ध्यान रखना अति आवश्यक है कि—ये चिह्न दिशा और विदिशा में नहीं होने चाहिये। यदि ये चिह्न दिशा और विदिशा



में पड़े तो कुण्ड निर्माण में विघ्न आ सकता है। एक रेखा टेढ़ी (क) उसका क्रम यह है—मुख से प्रारम्भ कर वामांश में मिलावे। (ख) वामांश से सीधी रेखा प्रारम्भ कर वामपार्श्व में मिला दे। (ग) वामपार्श्व से एक टेढ़ी रेखा प्रारम्भ कर वामश्रोणी में मिला दे। (घ) वामश्रोणी से एक सीधी रेखा पुच्छ में मिला दे। (ङ) पुच्छ से एक टेढ़ी रेखा दक्षश्रोणी में मिला दे। (च) दक्षश्रोणी से एक सीधी रेखा दक्षपार्श्व में मिला दे। (छ) दक्षपार्श्व से एक टेढ़ी रेखा दक्षांश में मिला दे। (ज) दक्षांश से एक सीधी रेखा सीधी मुख में मिला दे। इस तरह आठ चिह्न वाला सम अष्टास्र कुण्ड बन जाता है।

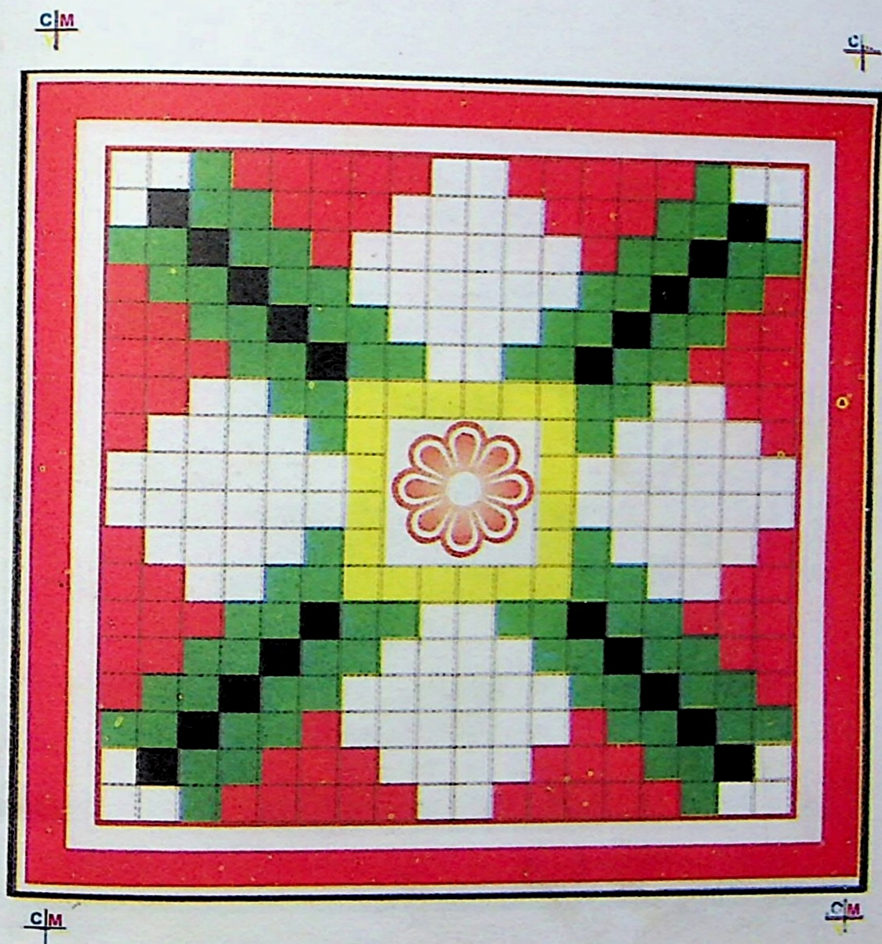
शतमुखकुण्डनिर्माण



शतमुख में अर्थात् सौ हाथ के समचतुरस्र मण्डप के तीन भाग पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशा से करे। फी भाग (हिस्सा) तैतीस हाथ, आठ अंगुल करे। इस तरह हो जाने पर मण्डप के मध्य नवमांश में दक्षिणोत्तर लम्बी तैतीस हाथ आठ अंगुल की चार रेखा बराबर की दे। प्रत्येक रेखा में पाँच-पाँच कुण्ड निर्मित होंगे। प्रत्येक कुण्ड का अन्तराल (मध्य) साढ़े चार हाथ, सात अंगुल होगा। अर्थात् एक कुण्ड के बन जाने के बाद दूसरा कुण्ड साढ़े चार हाथ, सात अंगुल जमीन छोड़कर बनेगा। इस तरह चार दक्षिणोत्तर लम्बी रेखा में सब बीस कुण्ड बनेंगे। उन रेखाओं का अन्तराल सात हाथ आठ अंगुल का ही होगा।

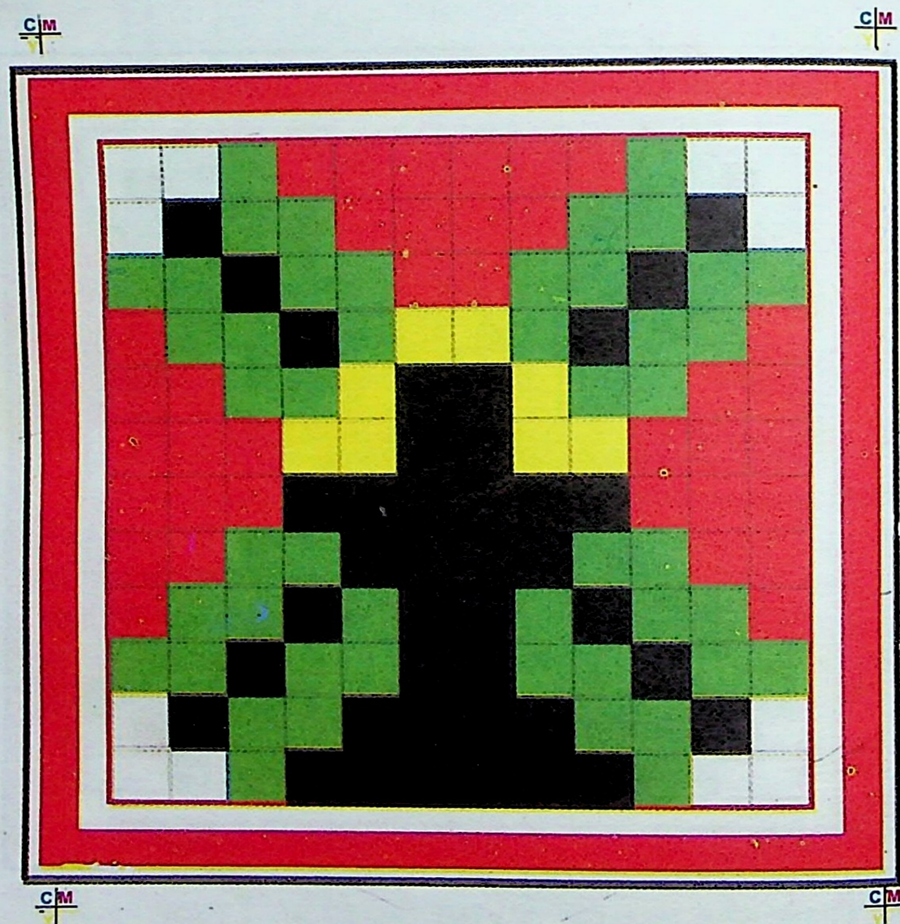
सारांश यह है कि—एक रेखा दक्षिणोत्तर लम्बी देने पर दूसरी रेखा देते समय सात हाथ, आठ अंगुल होगा। सारांश यह भी है कि—एक रेखा दक्षिणोत्तर लम्बी देने पर दूसरी रेखा देते समय सात हाथ, आठ अंगुल जमीन छोड़कर रेखा दे। इस तरह तीन और चार रेखा में व्यवस्था कर लेनी चाहिये। अब बचे हुए अस्सी कुण्डों का अवशिष्ट आठ नवमांशों में विभक्त करे। उसका प्रकार यह है कि—प्रत्येक नवमांश में दो-दो कुण्ड बनेंगे। इस तरह आठ नवमांशों में कुल सोलह कुण्ड हुए। फिर उन्हीं आठ नवमांशों में क्रम से दिशा और विदिशा में आठ-आठ कुण्ड बन जाने से सौ कुण्डों का निर्माण सुगमतया से हो जायगा।

सर्वतोभद्रचक्रम्



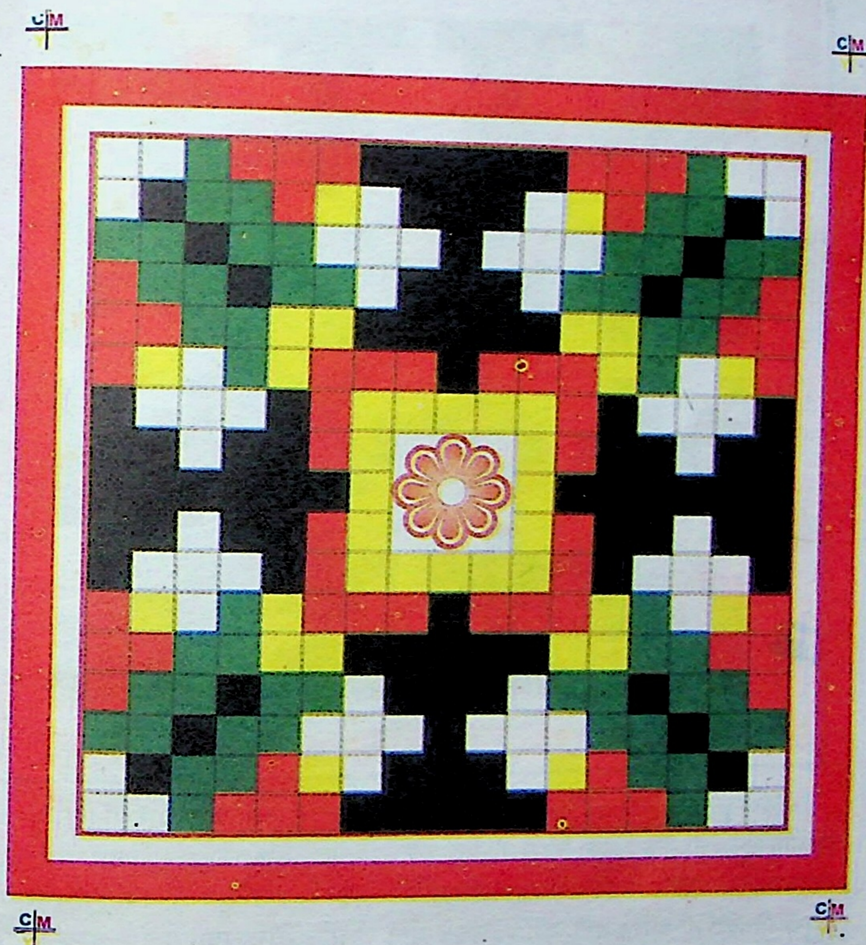
आचार्य—एक काष्ठ के पीढ़े पर सफेद वस्त्र बिछाकर लाल, हरे, पीले रंग से अक्षतों को रँगें। फिर उपरोक्त चित्र के अनुसार उनका उपयोग करें। जिस स्थान पर सादा दिया गया है, उस स्थान पर बिना रँगे हुए अक्षत का उपयोग करें। अष्टदल कमल बिना रँगे हुए अक्षत को बिछाकर उसी पर अक्षत अथवा रोली से लाल रंग का कमल बनावें। चक्र के बाहर चारो ओर लाल, काले और श्वेत अक्षत से लाइन बना दें।

एकलिङ्गतोभद्रचक्रम्



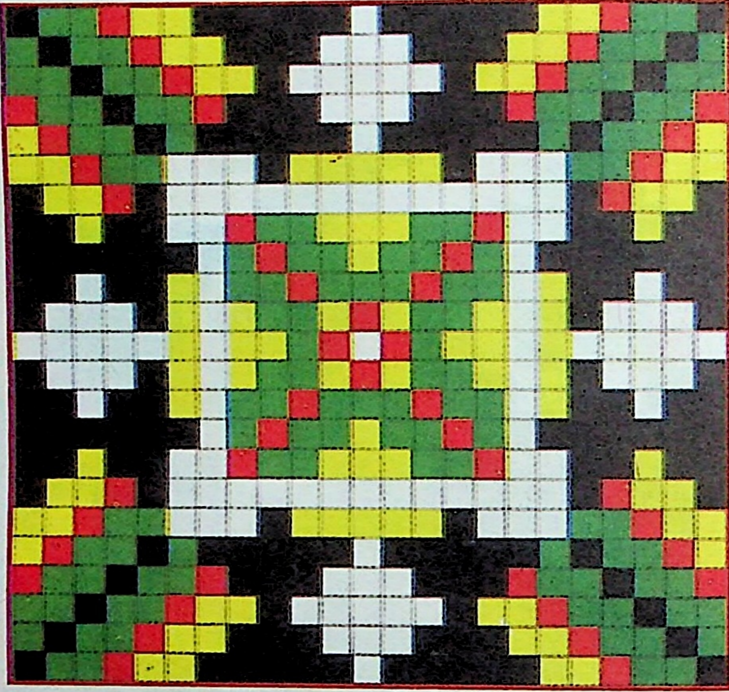
आचार्य—एक काष्ठ के पीढ़े पर सफेद वस्त्र बिछाकर तेरह खड़ी लाइनें, तेरह आड़ी लाइनों से कुल १९४ चौकोर खानों का निर्माण करें। इसमें लाल रंग के खाने में मसूर की दाल, हरे रंग के खाने में हरा मूँग, पीले रंग के खाने में चने की दाल, सफेद रंग के खाने में अक्षत और काले रंग के खाने में उड़द की दाल भरकर एकलिङ्गतोभद्र का निर्माण करें।

चतुर्लिंगतोभद्रचक्रम्



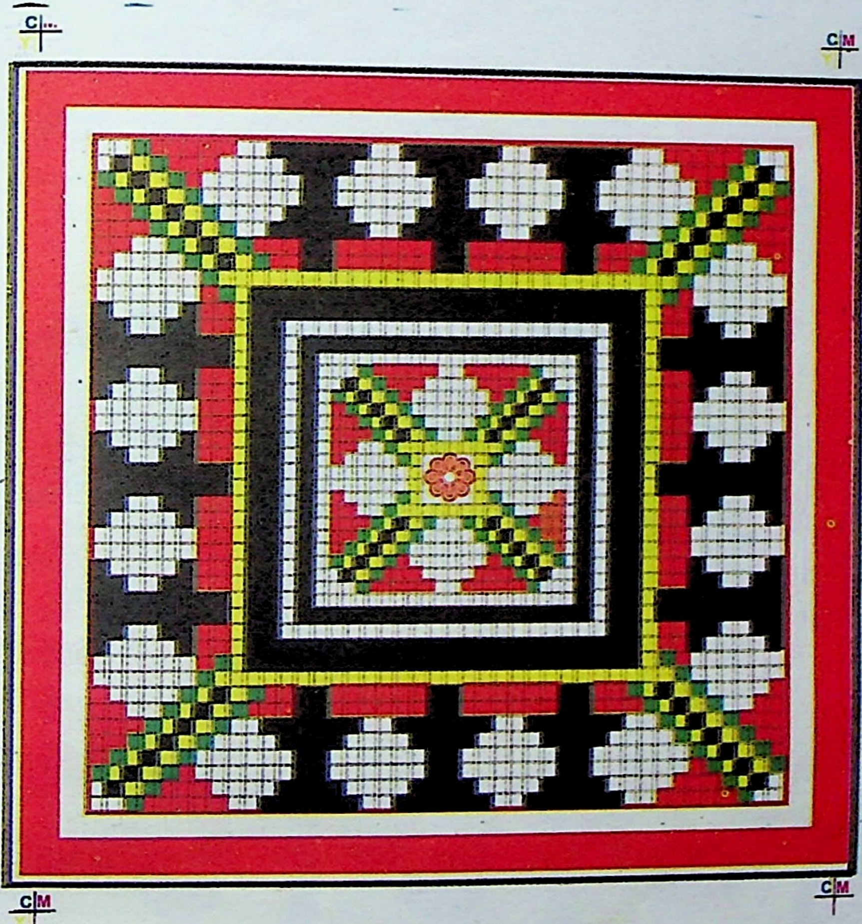
उक्त च लैङ्गे आनन्दरामायणे मण्डलसंग्रहे च— रेखास्त्वष्टादश प्रोक्ताश्चतुर्लिङ्ग-समुद्भवे। कोणेन्दुस्त्रिपदः श्वेतस्त्रिपदैः कृष्णमेखलाः ॥ १ ॥ वल्ली सप्तपदा नीला भद्रं रक्तं चतुष्पदम्। भद्रपार्श्वे महारुद्रं कृष्णमष्टादशैः पदैः ॥ २ ॥ शिवस्य पर्श्वतो वापीं कुर्यात् पञ्च पदां सिताम्। पदमेकं तथा पीतं भद्रवाप्योऽस्तु मध्यतः ॥ ३ ॥ शिरसि शृंखलायाश्च कुर्यात् पीतं पदत्रयम्। लिङ्गानां स्कन्धतः कोष्ठा विंशती रक्तवर्णकाः ॥ ४ ॥ परिधिः पीतवर्णैस्तु पदैः षोडशभिः स्मृतः पदैस्तु नवभिः पश्चाद् रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥ ५ ॥

अष्टलिंगतोभद्रचक्रम्



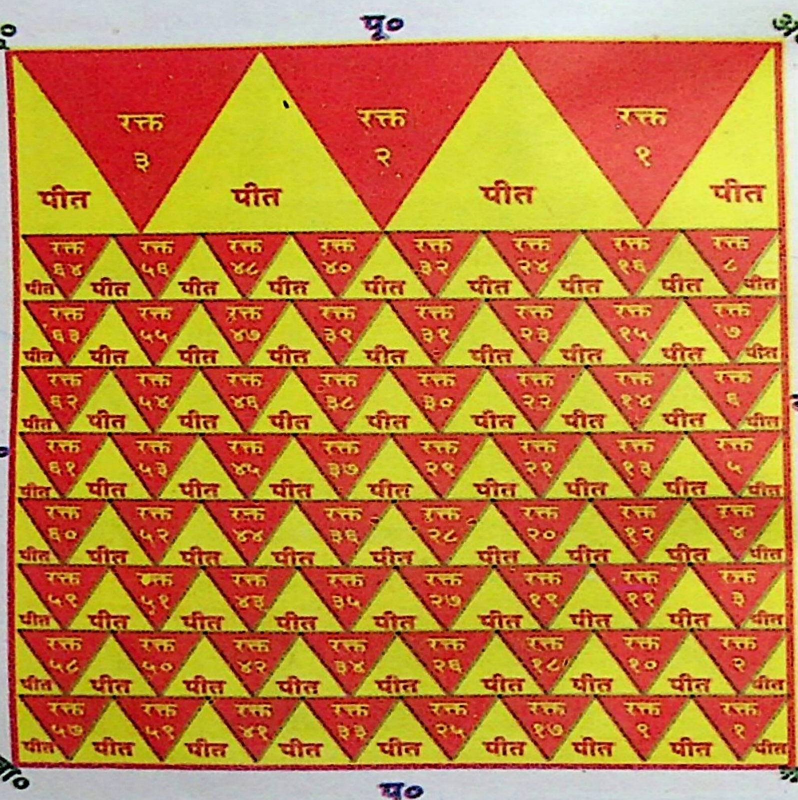
उक्तं व्रतराजे कौमुद्यां रामायणे च— चतुर्विंशतिरालेख्या रेखाः प्राग्दक्षिणायताः। कोणेषु शृंखलाः पंच पदावल्ल्यश्च पार्श्वतः ॥ १ ॥ पदैर्नवभिरालेख्याश्चतुर्भिर्लघु शृंखलाः। लघुवल्ल्यः पदैः षड्भिस्ततोऽष्टादशभिः पदैः॥ २ ॥ कृत्वा लिङ्गानिवाप्यः स्युस्त्रयोदशभिरन्तरा। ततो वीथिद्वयेनैव पीठं कुर्याद् विचक्षणः॥ ३ ॥ तस्य पादाः पञ्च पदा द्वाराण्यपि तथैव च। एकाशीति पदं मध्ये पद्मं स्वस्तिकमिष्यते ॥ ४ ॥ कोणेषु शृंखलाः कार्याः पदैस्त्रिभिरतः परम्। पदैश्चतुर्भिर्दिक्षु स्युः भद्राण्येषां समन्ततः ॥ ५ ॥ एकादश पदा वल्ल्यौर्मध्येऽष्ट दलमालिखेत्। पद्मं नव पदं ह्येवं लिङ्गतोभद्रमुच्यते ॥ ६ ॥ शृंखलाः कृष्णचूर्णेन वल्लीर्नीलेन पूरयेत्। रक्तेन शृंखला लघ्वीर्वल्लीं पीतेन पूरयेत् ॥ ७ ॥ लिङ्गनि कृष्णवर्णानि श्वेतेनाप्यथ वापिकाः। पीठं स पादं श्वेतेन पीतेन द्वारपूरणम् ॥ ८ ॥ मध्ये स्युः शृंखला रक्ता वल्लीर्नीलेन पूरयेत्। भद्राणि पीतवर्णानि पीता पंकजकर्णिका ॥ ९ ॥ दलानि श्वेतवर्णानि यद्वा चित्राणि कल्पयेत्। तिस्रो रेखा बहिः कार्याःसिता रक्ताऽसिताःक्रमात् ॥ १० ॥

हरिहरात्मकमण्डलचक्रम्



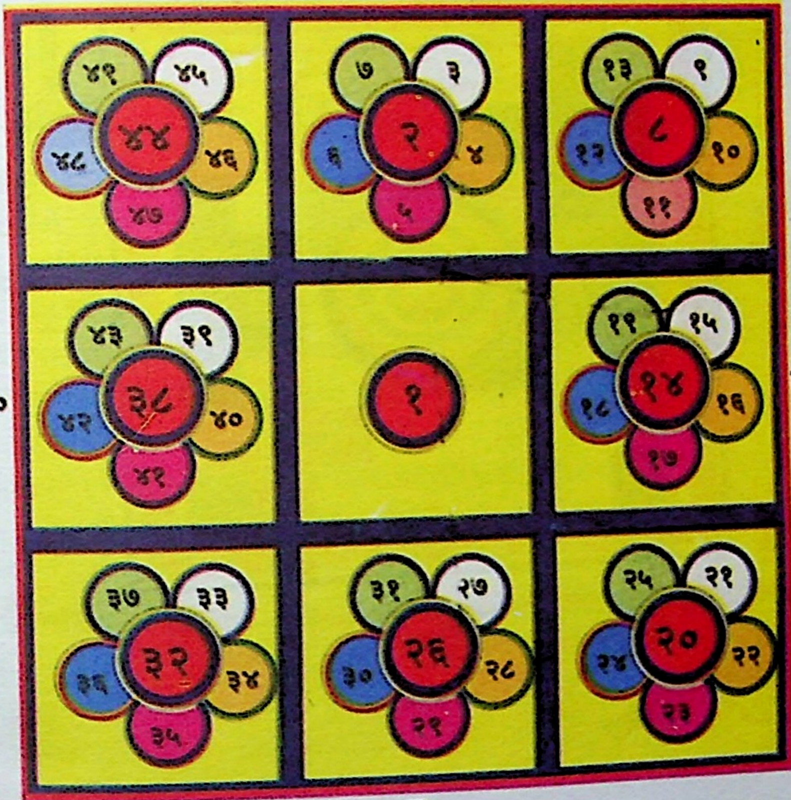
उक्त च मण्डल संग्रहे—त्रिचत्वाशिंती रेखाः प्रागुदीचीः करोत्यथ। खण्डेन्दुस्त्रिपदः कोणे श्रृंखला सप्तभिः पदैः॥ १॥ लिङ्गं स्यात् तत्र ईशस्य अष्टाविंशतिभिः पदैः। लिङ्गस्य पार्श्वतो वापी वाप्या लिङ्गं ततः परम्॥ २॥ एवं वाप्यश्चतस्त्रः स्युर्लिङ्गानां मध्यतस्त्रिकम्। मध्ये स्यात् सर्वतोभद्रं सत्व-रज-तमोवृतम्॥ ३॥ श्रृंखला पिंगला वाप्या ऊर्ध्वं पीतेन पूरयेत्। वापी पीतान्तराले तु रक्तवर्णेन पूरयेत्॥ ४॥ एवं द्वादशभिर्लिङ्गैः स्याद् हरिहरमण्डलम्। वैष्णवे च तथा शैवे व्रते कुर्यात् सुशोभनम्॥ ५॥

योगिनीचक्रम्



इस योगिनी चक्र में लाल खानों में लाल चावल और पीले खाने में पीला चावल ही भरना चाहिये। जिस स्थान पर एक-दो-तीन अंक लिखे हैं, वहाँ पर अंक नहीं लिखे जाते हैं। अंक लिखने का एकमात्र प्रयोजन यह है कि उस खाने में ही योगिनीदेवी का पूजन होता है। जिस खाने में कोई अंक नहीं लिखा है, वह खाना खाली रहेगा, उसमें किसी भी प्रकार की पूजा नहीं होती है। जिस खाने में जो अंक लिखा है उस खाने में उसी अंक की योगिनी का आवाहन उसी क्रम से करना चाहिये।

क्षेत्रपालचक्रम्



पू०
द०
प०
उ०
४४
४१
४५
४८
४६
४७
२
७
३
६
४
५
८
१३
९
१२
१०
११
३८
४३
३९
४२
४०
४१
१
१४
१९
१५
१८
१६
१७
३२
३७
३३
३६
३४
३५
२६
३१
२७
३०
२८
२९
२०
२५
२१
२४
२२
२३

वारुणमण्डलचक्रम्









आचार्य वारुणमण्डल चक्र का निर्माण करने के लिए एक चौकी या लकड़ी के पीढ़े पर सफेद वस्त्र बिछाकर नौ खड़ी रेखा, नौ आड़ी रेखा का निर्माण कर मात्र चौसठ खानों का निर्माण करें। इन खानों में लाल रंग की जगह मसूर की दाल, हरे रंग की जगह हरा मूँग, पीले रंग की जगह चने की दाल और सफेद रंग की जगह अक्षत तथा काले रंग की जगह उड़द की दाल भरकर वारुण मण्डल चक्र का मण्डल का निर्माण करें।

कामनापरक कुण्डों का निर्माण

१. चतुरस्त्रकुण्ड—शान्ति, विजय लक्ष्मी सिद्धि, स्तंभन कार्य के लिए बनवाना चाहिये। **२. अर्धचन्द्रकुण्ड**—वशीकरण, प्रजा वृद्धि, संताप, शान्तिकामना, मंगलकामना और मारणकामना के लिए बनवाना चाहिये। **३. त्रिकोणकुण्ड**—आकर्षण, शत्रुनाश और द्वेष कामना के लिए बनवाना चाहिये। **४. षट्कोणकुण्ड**—मारण, स्तंभन और उच्चाटन कार्य के लिए बनवाना चाहिये। **५. वृत्तकुण्ड**—अभिचार, सुख-संपत्ति, मंगलकामना, और शान्तिकामना के लिए बनवाना चाहिये। **६. पद्मकुण्ड**—मानसिद्धि, धन कामना, आरोग्यकामना, वृष्टिकामना प्रजनन, पौष्टि कार्य तथा सब कामनाओं के लिए बनवावे। **७. योनिकुण्ड**—पुत्र, ऐश्वर्य और आकर्षण कामना के लिए बनवावे। **८. अष्टास्त्रकुण्ड**—मुक्तिकामना, शुभकामना और सिद्धिकामना के लिए बनवावे। **९. पञ्चास्त्रकुण्ड**—भूत-प्रेतादि को हटाने के लिए बनवाना चाहिये। **१०. सप्तास्त्रकुण्ड**—अभिचार के हटाने के लिए होता है। **११. आचार्य कुण्ड**—सम्पत्ति और ऐश्वर्य को देने वाला होता है। **१२. पद्मकुण्ड**—सब कामना के लिए बनवा सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण कुण्डों के विषय में नित्यषोडशिकार्णवतन्त्र का मत—१. योनिकुण्ड से बोलने में चपलता और आकृति उत्तम होती है। २. वर्तुल से लक्ष्मी प्राप्ति होती है। ३. अर्धचन्द्र कुण्ड से उपरोक्त तीनों बातें मिलती हैं। ४. षडस्त्र और त्रिकोण कुण्ड से खेचरत्व की प्राप्ति होती है। ५. चतुरस्त्र से शान्ति, लक्ष्मी, पुष्टि और आरोग्यता की प्राप्त होती है। ६. पद्मकुण्ड से सब प्रकार की सम्पत्ति शीघ्र मिलती है। ७. अष्टकोण कुण्ड से अच्छा फल प्राप्त होता है।

कुण्डों की मेखला—बारह अंगुल मेखलापक्ष में योनि की ऊँचाई पन्द्रह अंगुल और चौड़ाई तेरह अंगुल की होगी। **कुण्डकारिका के मतानुसार**—१. मेखला कुण्ड के बाहर बनेगी कुण्ड के भीतर नहीं। २. कुण्ड के चारो तरफ पृथ्वी को छोड़कर बाहर-बाहर मेखला बनेंगी। ३. नव अंगुल ऊँची, तीन अंगुल ऊँची और विस्तार-चार अंगुल, तीन अंगुल और दो अंगुल अलग होगा। ४: कुण्डोदधि-मेखला कण्ठ के बाहर रहती है।

नाभिविषये विशेषविचार—१. कुण्ड कौमुदी और कुण्ड रामवाजपेयी मत से पद्म कुण्ड के छोड़कर बाकी के कुण्डों में कुण्ड के आकार की या पद्माकार नाभि बनावे। कुण्डकौमुदी के अनुसार—नाभि दो अंगुल ऊँची और चार अंगुल चौड़ी होती है। **कुण्डकारिका**—चार अंगुल चौड़ी, दो अंगुल ऊँची नाभि होती है। नाभि ठीक कुण्ड के मध्य में रहती है। नाभि पक्षकुण्ड में नाभि छः अंगुल लम्बी और उतनी ही ऊँची होती है और वर्तुल होती है। उसके चारो तरफ केसर लगते हैं।

योनि एवं कुण्डों पर आवश्यक विचार—१. योनि के न रहने से यजमान की स्त्री और किसी के मत से पुत्र का मरण होता है। २. कुण्ड के बन जाने पर मण्डप के चौतरे के ऊपर लम्बालम्ब आ जाने पर योनि बनाना चाहिये। ३. योनि के एक दम ऊपर आ जाने पर मध्य में कुछ ऊँची रखे। प्रयोग सारमत से मध्य में निम्न हो। क्योंकि मध्य में उच्चता रखने पर योनि के एक दम आगे जो छिद्र रहेगा, उससे आज्य का जाना असम्भव होगा। यह कोटिहोमकार का मत है। ४. योनि के ऊपर चारो तरफ परिधि पर मेखला एक अंगुल या दो अंगुल की रखे। ५. कुण्ड की मेखला के पश्चिमदिशा से या दक्षिण के ठीक मध्य से योनि बनाना चाहिए। ६. रामवाजपेयी मत से—पुरुष का पाँचवां अंश (भाग) कर (हाथ) होता है। ७. कात्यायन मत से—एड़ी और बाहुओं को ऊपर दीवाल के सहारे उठाकर या बिना एड़ी उठाए खड़े होकर नाप करावे। उसका जो पाँचवां अंश हो। उसे हस्त को कुण्ड और मण्डप के कार्य में लेवे। यह पक्ष श्येनादि चिति मात्र विषय परक है। अन्य ग्रन्थकारों ने भी अपनी यही स्वीकृति दी है। ८. कुण्ड कार्य में मध्यङ्गुल और देहांगुल का ग्रहण करे। पंचरात्र मत से वैकल्पिक है। ९. द्विमुख, त्रिमुख, चतुर्मुख, पंचमुख, षष्ठमुख में दो कुण्ड होंगे दक्षिणोत्तर। १०. इसमें आचार्य कुण्ड दक्षिण दिशावाला होगा। ११. एक मुख में आच्चार्य कुण्ड मध्य का होगा। पाँच कुण्डी में ईशान का, सात कुण्डी में ईशान और पूर्व का होगा। १२. शतमुख में नैर्ऋत्य का होगा। १३. नवग्रह में सूर्य प्रधान होने से आचार्य कुण्ड सूर्य का ही होगा। १३. दस मुख में आचार्य कुण्ड नैर्ऋत्य का ही होगा।

विविध कामनाओं के लिए कुण्डनिर्माण प्रकार—जय पृच्छाधिकार का मत है—शान्ति कामना के लिए उत्तर दिशा में कुण्ड, स्तम्भन कामना के लिए पूर्व दिशा में, मारण कामना के लिए दक्षिण दिशा में, वशीकरण कामना के लिए पश्चिम दिशा में, विविध कामनाओं के लिए अग्निकोण में, विद्वेष कामना के लिए नैर्ऋत्य कोण में, उच्चाटन कामना के लिए वायव्य कोण में, अनेक कार्यों की सिद्धि के लिए ईशान कोण में कुण्ड बनवाना चाहिए।

सिद्धान्त शेखर मत से—स्तम्भन कार्य के लिए पूर्व दिशा में चतुरस्त्र कुण्ड, ऐश्वर्य के लिए अग्निकोण में योनि कुण्ड, मारण कार्य के लिए अर्धचन्द्र कुण्ड पश्चिम दिशा में और द्वेष कामना के लिए नैर्ऋत्य कोण में त्रिकोण कुण्ड, शान्ति कामना के लिए पश्चिम दिशा में वृत्त कुण्ड, उच्चाटन कार्य के लिए वायव्यकोण में षडस्त्र कुण्ड, पौष्टिक कार्य के लिए उत्तर दिशा में पद्मकुण्ड और मुक्ति कामना के लिए अष्टास्त्र कुण्ड बनवाना चाहिए।

यज्ञमण्डपविषये विशेषविचारः

मण्डप की आवश्यकता—समस्त विघ्नों के विनाश के लिए और समस्त प्राणियों की चित्तशुद्धि के लिए विवाह, उत्सव और यज्ञ में बुद्धिमान् पुरुषों को मण्डप का निर्माण अवश्य करवाना चाहिए।

यज्ञमण्डप के नाम—पुष्पक, पुष्पभद्र, सुव्रत, अमृतनन्दन, कौशल्य, विजय, बुद्धि संकीर्ण, गजभद्र, जयावह, श्रीवत्स, वास्तुकीर्त्ति, श्रुतिञ्जय, यज्ञभद्र, विशाल, सुश्लिष्ट, शत्रुमर्दन, भगपञ्च, नन्दन, मानव, मानभद्रक, सुग्रीव, हरित्, कर्णिकार, शतार्धिक, सिंह, श्यामभद्र और सुभद्र ये यज्ञमण्डप के नाम मत्स्यपुराण के अनुसार वर्णित किये गये हैं।

यज्ञमण्डप के सोलह स्तम्भों के नाम—शुभद, विजय, कृष्ण, श्रीमान्, मंगल, गुरु, जय, धनद, कल्याणी, शुभ, शान्त, मनोहर, ऋद्धि, सिद्धि, विचित्र और दिव्यरूप—ये यज्ञमण्डप के सोलह स्तम्भों के नाम कहे गये हैं।

यज्ञमण्डप के सोलह स्तम्भों के देवता—ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र, सूर्य, गणेश, यम, सर्प (नाग), सेनानी (स्कन्द), पृषदश्व (वायु), चन्द्रमा, प्रचेता, अष्ट वसु, धनद (कुबेर), बृहस्पति और विश्वकर्मा—ये यज्ञमण्डप के सोलह स्तम्भों के देवता कहे गये हैं।

यज्ञमण्डप में ध्वजा की आवश्यकता—हयशीर्ष पञ्चरात्र के अनुसार ध्वजा से विहीन देवालय को सुरालय ही समझना चाहिए, क्योंकि ध्वज से रहित मण्डप व्यर्थ हो जाते हैं। विद्वानों के द्वारा पूजा, होम, जप आदि जो कुछ वहाँ होता है, वहाँ सब कुछ व्यर्थ हो जाता है। ध्वज के बिना देवमन्दिर और यज्ञमण्डप पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं। जब मण्डप में अग्नि के तुल्य चमकने वाले देवताओं के ध्वज नहीं होते हैं, तो वह यज्ञ पूर्णतः विनष्ट हो जाता है। जिस प्रकार से सूर्य की किरणों से अन्धकार पलायित हो जाता है, उसी प्रकार यज्ञमण्डप के ध्वजों से सभी आपत्तियाँ स्वयं विनष्ट हो जाती हैं।

ध्वजाओं के देवता—कुमुद, कुमुदाक्ष, पुण्डरीक, वामन, शंकुकर्ण, सर्वनेत्र, सुमुख व सुप्रतिष्ठित ये आठ ध्वजाओं के देवता हैं और ये सभी क्रमशः पूज्यनीय हैं।

ध्वज की प्रदक्षिणा का फल—ध्वज के जितने तन्तु रहते हैं, उतने हजार वर्षों तक ध्वज (मन्दिर) का कर्ता स्वर्गलोक में पूजित होता है। प्राणी ध्वज की जितने पैर प्रदक्षिणा करता है, उतने हजार वर्षों तक उत्तम भोग भोगने वाला निर्माता को फल प्राप्त होता है।

यज्ञमण्डप में तोरण द्वार से लाभ—यज्ञमण्डप में देवता तोरण रूप में विघ्नों के निवारण के लिए और यज्ञ की रक्षा के लिए रहते हैं। वे यज्ञ में सभी विघ्नों का विनाश करते हुए यज्ञ की रक्षा करते हैं।

मण्डपपूजनमन्त्राः

सङ्कल्पः—कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) सपत्नीकोऽहं अमुकयागाङ्गभूतं मण्डपदेवानां स्थापनं पूजनं करिष्ये।

किसी भी यज्ञादि में मण्डपपूजन होना अति आवश्यक है, इसलिए आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण कराते हुए कर्ता से मण्डपपूजन करावें—

प्रथम-ब्रह्मा—ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता॥ ऊद्ध्र्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्क्रमोद-सदन्मातरं पुरः॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥ ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु॥ शन्नः कुरु प्रजाब्भ्योऽभयं नः पशुब्भ्यः॥

द्वितीय-विष्णु—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाठं॰सुरे स्वाहा॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण॰॥ ॐ आयङ्गौः॰॥ ॐ यतोयतः॰॥

तृतीय-रुद्र—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण॰॥ ॐ आयङ्गौः॰॥ ॐ यतोयतः॰॥

चतुर्थ-इन्द्र—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रठं॰ हवे हवे सुहवठं॰ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रठं॰ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण॰॥ ॐ आयङ्गौः॰॥ ॐ यतोयतः॰॥

पञ्चम्-सूर्य—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेश-यन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण॰॥ ॐ आयङ्गौः॰॥ ॐ यतोयतः॰॥

षष्ठम्-गणेश—ॐ गणानां त्वा गणपतिठं॰ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिठं॰ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिठं॰ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण॰॥ ॐ आयङ्गौः॰॥ ॐ यतोयतः॰॥

सप्तम्-यम—ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सठं॰ स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण॰॥ ॐ आयङ्गौः॰॥ ॐ यतोयतः॰॥

अष्टम्-सर्प—नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

नवम्-स्कन्द—ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त् समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

दशम-वायु—ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

एकादश-चन्द्र—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

द्वादश-वरुण—ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

त्रयोदश-अष्टवसु—ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्ज्ञानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। वयन्तु वयोऽक्तर्ठ० रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशापृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

चतुर्दश-कुबेर—ॐ सोमो धेनुर्ठ० सोमो अर्वन्तमाशुर्ठ० सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यर्ठ० सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

पञ्चदश-बृहस्पति—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

षोडश-विश्वकर्मा—ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

आहुतिविषये विशेषविचार

आहुति शब्द का अर्थ—इस संसार में आहुति शब्द ही प्रचलित है। देवताओं के उद्देश्य से वेदमन्त्रोच्चारणपूर्वक अग्नि में एक बार हविर्द्रव्य का जितना अंश स्वाहा कहकर समर्पित किया जाय, उसे आहुति कहते हैं।

आहुति के प्रक्षेप का समय—ॐकार से पवित्र तथा स्वाहान्त मन्त्र से स्वाहा के अवसान में मन्त्र एवं देवता का ध्यान करते हुए विद्वान् अग्निकुण्ड में आहुति प्रदान करें। होता को स्वाहा के अन्त में हवन करना चाहिए। मन्त्र के अन्त में स्वाहा न करें और न ही हविष् का हवन करें। स्वाहाकार से अग्नि में हवन करके तदुपरान्त मन्त्र को समाप्त करें।

आहुति देने का विचार—हाथ में पवित्री और जल लेकर कर्ता अग्नि की प्रदक्षिणा करे। हव्यवाहन जल को देखकर डर जाता है और हवनकर्ता के सम्मुख हो जाता है, इसलिए सामने होम करना चाहिए।

होम शब्द का अर्थ—जिस कर्म विशेष में बैठकर स्वाहाकारपूर्वक हविर्द्रव्य का त्याग किया जाय, उसे कात्यायनश्रौसूत्र ने होम शब्द की संज्ञा से विभूषित किया है।

हवन के मन्त्र का विचार—जो होम जिस देवता के उद्देश्य से हो, उसका उसी के मन्त्र से हवन करना चाहिए।

हवन करने की विधि—सीधे हाथ से अँगूठे के अग्रभाग से हविर्द्रव्य को दबाकर हाथ की अंगुलियों को सटाकर मौन होकर हवन करना चाहिए।

प्रज्वलित अग्नि में हवन—जो मनुष्य तेजहीन अग्नि और अंगारहीन अग्नि में आहुति देता है। वह मन्दाग्नि इत्यादि रोगों से दुःखी व दरिद्रता को प्राप्त होता है। इसलिए प्रज्वलित अग्नि में हवन करना चाहिए।

जब अग्नि भलीभाँति प्रज्वलित हो जाय और उसमें ज्वाला उठने लगे, तब उसमें घृत और हवन-सामग्री आदि की आहुतियाँ श्रद्धापूर्वक देनी चाहिए।

अग्नि में हवनार्थ स्थान का विचार—समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए अग्नि की जिह्वा में हवन करना चाहिए। श्रेष्ठ आचार्य चक्षु (नेत्र), कर्ण, नासिका, सिर आदि की पहचान कर हवन करे। यदि अग्नि के कान में हवन किया जाय, तो व्याधि का भय होता है। नासिका में हवन करें, तो महान् दुःख होता है। नेत्रों में हवन करें, तो विनाश होता है। केशों में यदि हवन करें, तो दरिद्रता का वास होता है। इसलिए अपना सुख चाहनेवाले को जिह्वाओं में ही हवन करना चाहिए। जहाँ काष्ठ है, वहाँ अग्नि के कान कहे गये हैं। जहाँ धुआँ है, वहाँ अग्नि की

नासिका कही गई है। जहाँ अग्नि कम जलती है, वहाँ अग्नि के नेत्र कहे गये हैं। जहाँ भस्म है, वहाँ अग्नि का सिर कहा गया है और जहाँ अग्नि ज्वालायुक्त है, वहाँ अग्नि की जिह्वा कही गई है।

स्वाहा के साथ आहुति न देने पर कर्तव्य—स्वाहा के साथ जो आहुति न देकर स्वाहा के पूर्व या पश्चात् में आहुति देते हैं, उन्हें नि:सन्देह दोष होता है। उस दोष के परिहार के लिए 'ॐ मनो जूति:०' इस मन्त्र से आहुति देनी चाहिए।

हवनादि में विनियोग का विचार—प्रात:काल पूजा के समय में, होम के समय में, जप के समय में या समस्त कर्मों में विनियोग अलग-अलग करना चाहिए।

आहुति की अनुक्त संख्या में निर्णय—जिस कार्य के लिए आहुति की संख्या का निर्देश न किया गया हो, वहाँ एक सौ आठ या अट्ठाइस अथवा आठ बार यथाशक्ति आहुति देनी चाहिए।

हवन के लिए समय का विचार—सूर्योदय हो जाने पर और सूर्योदय होने के पूर्व तथा नक्षत्र सूर्यादि के अदर्शन काल में भी हवन करना चाहिए। ऐसा वेद का वचन है। जब तक आकाश में चारो ओर तारे भलीभाँति नहीं जगमगाते और संध्या की लालिमा नहीं हटती, तब तक सायंकाल का हवन करना चाहिए। सूर्य के अन्तरित होने पर सन्ध्याकाल का हवन करना चाहिए। इस प्रकार हवन करनेवाले का हवन नष्ट नहीं होता है।

हवनमुद्रा के भेद—होम में मृगी, हंसी और सूकरी यह तीन प्रकार की मुद्रा कही गई है। मुद्रा के बिना किया हुआ सब हवन निष्फल होता है। शान्तिकर्म में मृगीमुद्रा, पौष्टिककर्म में हंसीमुद्रा तथा मारणात्मककर्म में सूकरीमुद्रा से होम करना चाहिए। होम में मृगी, हंसी और सूकरी यह तीन प्रकार की मुद्रा कही गई है। यज्ञ और शान्तिक कल्याण कार्यों में मृगी मुद्रा से हवन करना चाहिए तथा हंसी एवं अभिचारादि कृत्यों में सूकरी मुद्रा से हवन कार्य करना चाहिए। आहुति के प्रदान में तीन मुद्राएँ कही गई हैं—मृगी, हंसी और सूकरी। हाथ के संकोच से सूकरीमुद्रा होती है। कनिष्ठिका अंगुली हटा देने से हंसीमुद्रा होती है। कनिष्ठिका और तर्जनीरहित जो मुद्रा है, उसे शास्त्रकारों ने मृगीमुद्रा कहा है। सभी शान्तिककर्मों में मृगी और हंसी दोनों मुद्राएँ शुभ हैं। समस्त आभिचारिककर्मों में सूकरीमुद्रा प्रशस्त कही गई है। यज्ञ में और समस्त शान्तिकर्म में मृगी और हंसीमुद्रा ही करनी चाहिए।

होममुद्रा का लक्षण—हाथ के संकोच से सूकरीमुद्रा, कनिष्ठिका अंगुली हटा देने से हंसीमुद्रा और कनिष्ठिका और तर्जनीरहित मृगीमुद्रा कहलाती हैं।

हवन में स्रुवा के धारण का क्रम—कनिष्ठिका अंगुली के नाप से चौबीस अंगुल का स्रुव होता है। उसके आगे के चार अंगुल तथा पीछे मूल की ओर सोलह अंगुल छोड़कर चार अंगुल का उसका जो मध्य भाग शेष रहता है, उसे शंखमुद्रा से पकड़ें। स्रुवे के मूल के दर्शन से यजमान की हानि होती है। इसलिए होमकाल में स्रुव के मूल को भलीभाँति छिपाये रक्खें। होमादिकर्म में यदि स्रुवा अगले भाग में पकड़ा जाय, तो धन का नाश होता है। यदि बीच में पकड़ा जाय, तो मृतसन्तान होती है और यदि पिछले भाग में पकड़ा जाय, तो होता की मृत्यु होती है। स्रुव को अगले भाग में पकड़नें से हवनकर्ता की स्त्री को वैधव्य होता है। मध्य में पकड़ने से सन्तान का नाश होता है और मूल भाग में पकड़ने से होता की मृत्यु होती है। इसलिंए अपना शुभ चाहनेवाले को स्रुव के अगले भाग का मध्य और पिछले भाग का जो मध्य है, उस स्थान से स्रुवा को धारण करें। ऐसा जो करता है, वह दीर्घायु और आरोग्यता को प्राप्त करता है। शास्त्रोक्त दृष्टिकोण से स्रुव को मध्य भाग की ओर चार अंगुल छोड़कर, पंचम भाग को शंख की मुद्रा से पकड़ना चाहिए। स्रुव के पञ्चम भाग में ब्रह्मा निवास करते हैं, जो कि संतति की वृद्धि करते हैं, इसलिए स्रुव का पञ्चम भाग उत्तम कहा गया है। स्रुव का पाँच भाग करने पर उसका जो दूसरा भाग निकले, वहीं से स्रुवा को पकड़कर हवन करना चाहिए।

स्रुव में रहनेवाले देवताओं के नाम—अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, रुद्र, ब्रह्मा और यम ये छः देवता स्रुव में सर्वदा निवास करते हैं।

स्रुव के भेद और उनका विभिन्न फल—स्रुवा स्वर्ण का, रजत का, ताम्र का, ताँबे का और खैर का होता है। सोने का स्रुवा ऐश्वर्यसिद्धि के लिए, चाँदी का स्रुवा कीर्तिवृद्धि के लिए, ताँबे का स्रुवा शान्तिकारी और खैर का स्रुवा धनवर्द्धक कहा गया है।

स्रुव की उपयोगिता का विचार—जहाँ पर हवनपात्र का निर्देश न हो, वहाँ पर यदि तरल द्रव्य से हवन करना हो, तो हवनपात्र को ही स्रुवा कहा गया है। यदि हवनीय द्रव्य तरल पदार्थ न हो तो हाथ से ही हवन होता है। ऐसी जगह स्रवे का प्रयोग नहीं होता है।

स्रुव के धारण का विभिन्न फल—स्रुव के अग्नि के स्थान को पकड़ने से ताप, चन्द्रमा के स्थान को पकड़ने से क्लेश, सूर्य के स्थान को पकड़ने से पशुओं का नाश, शिव के स्थान को पकड़ने से अतिभयंकर भय, ब्रह्मा के स्थान को पकड़ने से सन्तति की वृद्धि और यम के स्थान को पकड़ने से मृत्यु होती है।

जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी।
रुद्र-यज्ञ! सुखकारी, जन-मन-अघ-हारी॥
जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी।
तुम हो सबके स्वामी, पाप-ताप-हारी। प्रभु, पाप-ताप-हारी।
नित नव सौख्य-विधाता, जटा-गङ्ग-धारी॥
जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी।
प्रलयङ्कर शङ्कर हो, भय हरते भारी। प्रभु, भय हरते भारी।
इन्द्रादिक देवों के दुःख-द्वन्द्व-हारी॥
जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी।
चन्द्रभाल हो प्रभवर! विश्व-ताप हरते। प्रभु, विश्व-ताप हरते।
रोग-शोक हर सबके, हर! मङ्गल करते॥
जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी।
रूप, सौख्य, पशु, धन, जन, स्वर्ग-मोक्ष-दाता। प्रभु स्वर्ग-मोक्ष-दाता।
आशुतोष! तुम सन्तत हो जन के त्राता॥
जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी।
मृत्युञ्जय! निज जन के मृत्यु-पाश-हर्ता। प्रभु, मृत्यु-पाश-हर्ता।
निखिल ज्ञान के आकर, सुख-सम्पति भर्ता॥
जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी।
यज्ञरूप घर सबका हित करते स्वामी। प्रभु, हित करते स्वामी।
भूतनाथ होकर भी हो अन्तर्यामी॥
जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी।
श्रद्धा-भक्ति सहित जो जन-सेवा करते। प्रभु, जन-सेवा करते।
रुद्रदेव सदा ही सुख उनमें भरते॥
जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी।
''विष्णु-यज्ञ'' की आरति, जो मन से गाते। प्रभु, जो मन से गाते।
रुद्रदेव सदा ही उनके घर आते॥
जय शिव शशिधारी, प्रभु जय शिव शशिधारी॥

विष्णुयज्ञ की आरती

जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे।
सेवक-जन के सङ्कट निशि-दिन दूर करे॥
जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे।
देवों के सुख-कारण नाना रूप धरे। प्रभु, नाना रूप धरे।
मत्स्य तथा कच्छप वन, जन-परिताप हरे॥
जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे।
तुम हो जग-उत्पादक, पालक, संहर्ता। प्रभु, पालक संहर्ता।
सब उर-अन्तर्यामी, सिन्धु-सुता-भर्ता॥
जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे।
आदिदेव हो, सबके बन्धु पिता माता। प्रभु, बन्धु पिता माता।
सुखमय-जीवन साधन, अन्न द्रविण-दाता॥
जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे।
ऋग, यजु, साम सदा ही, तुम्हरे गुण गाते। प्रभु तुम्हरे गुण गाते।
ऋषि-मुनि ध्यान-निरत हो, सौख्य सुधा पाते॥
जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे।
कमलापति होकर भी, वामन बन आते। प्रभु, वामन बन आते।
बलि को छलने के हित, वेद-मन्त्र गाते॥
जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे।
सौम्य-प्रजा, पशु, धन-जन सब तुमसे पाते। प्रभु, सब तुमसे पाते।
लौकिक और अलौकिक सब सुख घर आते॥
जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे।
श्रद्धा-भक्ति-सहित जो जन-सेवा करते। प्रभु, जन-सेवा करते।
विष्णुदेव सदा ही सुख उनमें भरते॥
जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे।
"विष्णु-यज्ञ" की आरति, जो मन से गाते। प्रभु, जो मन से गाते।
विष्णुदेव सदा ही उनके घर आते॥
जय यज्ञेश हरे, प्रभु जय यज्ञेश हरे॥

लक्ष्मीयज्ञ की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
दुर्गारूप निरञ्जनि, सुख-सम्पति-दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ-दाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
जिस घर तुम रहती, तहँ, सब सद्‌गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहिं घबराता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुम विन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो राता।
खान-पान का वैभव सब तुमसे आता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम विन कोई नहिं पाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
आरति लक्ष्मीजी की, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता॥

गणेशयज्ञ की आरती

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
हार चढ़ै, फूल चढ़ै और चढ़ै मेवा।
लड्डुवन की भोग लगे, सन्त करें सेवा॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

श्रीरामयज्ञ की आरती

जगमग जगमग जोत जली है। राम आरती होन लगी है॥
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती। आरति संत करें दिन राती॥
आनन्द की सरिता उभरी है। जगमग जगमग जोत जली है॥
कनक सिंहासन सिया समेता। बैठ हिं राम होई चित चेता॥
वाम भाग में जनक लली हैं। जगमग जगमग जोत जली है॥
आरति हनुमत के मन भावे। राम कथा नित शंकर गावे॥
सन्तो की ये भीड़ लगी है। जगमग जगमग जोत जली है॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

स्मार्तयज्ञहवनसामग्री

रुद्रयाग

तिल ६ मन
चावल ३ मन
यव १।। मन
चीनी १ मन
घृत २ मन
कमलगट्टा १ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
गुग्गुल १ सेर
पञ्चमेवा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
आम की लकड़ी २० मन

महारुद्रयाग

तिल १५ मन
चावल ७॥ मन
यव ३॥ मन
चीनी १॥ मन
घृत ३ मन
कमलगट्टा २ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
गुग्गुल १ सेर
पञ्चमेवा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
आम की लकड़ी २५ मन

अतिरुद्रयाग

तिल ३० मन
चावल १५ मन
यव ७।। मन
चीनी ३ मन
घृत ५ मन
कमलगट्टा ४ सेर
चन्दन का चूरा ५ सेर
गुग्गुल ३ सेर
पंचमेवा ४ सेर
भोजपत्र १ सेर
आम की लकड़ी ४० मन

विष्णुयाग

तिल ६ मन
चावल ३ मन
यव १।। मन
चीनी १ मन
घृत २ मन
कमलगट्टा १ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
गुग्गुल १ सेर
पंचमेवा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
आम की लकड़ी २० मन

महाविष्णुयाग

तिल १२ मन
चावल ६ मन
यव ३ मन
चीनी १।। मन
घृत ३ मन
कमलगट्टा २ सेर
चन्दन का चूर १ सेर
गुग्गुल १ सेर
पंचमेवा २ सेर
भोजपत्र २ पाव
आम की लकड़ी २५ मन

अतिविष्णुयाग

तिल ३० मन
चावल १५ मन
यव ७।। मन
चीनी ३ मन
घृत ५ मन
कमलगट्टा ४ सेर
चन्दन का चूरा ५ सेर
गुग्गुल ३ सेर
पंचमेवा ४ सेर
भोजपत्र १ सेर
आम की लकड़ी ४० मन

हनुमद्याग

तिल ३ मन
चावल १॥ मन
यव ३० सेर
चीनी १५ सेर
घृत १ टीन
कमलगट्टा १ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
पंचमेवा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
गुग्गुल १ सेर
आम की लकड़ी २० मन

सूर्ययज्ञ

तिल ६ मन
चावल ३ मन
यव १॥ मन
चीनी १ मन
घृत २ टीन
पंचमेवा १ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
कमलगट्टा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
गुग्गुल १ सेर
आम की लकड़ी २० मन

दुर्गायज्ञ

तिल ८ मन
चावल ४ मन
यव २ मन
चीनी १ मन
घृत २ टीन
पंचमेवा १ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
कमलगट्टा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
गुग्गुल १ सेर
आम की लकड़ी २० मन

लक्ष्मीयाग

तिल ८ मन
चावल ४ मन
यव २ मन
चीनी १ मन
घृत २ टीन
पंचमेवा १ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
कमलगट्टा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
गुग्गुल १ सेर
आम की लकड़ी २० मन

गायत्रीमहायज्ञ

तिल ३० मन
चावल १५ मन
यव ७।। मन
चीनी ४ मन
घृत २ टीन
पंचमेवा २।। सेर
चन्दन का चूरा ५ सेर
कमलगट्टा २।। सेर
भोजपत्र १ सेर
गुग्गुल २।। सेर
आम की लकड़ी ३० मन

गणेशयज्ञ

तिल ११ मन
चावल ५।। मन
यव २।।। मन
चीनी १। मन
घृत २ टीन
पंचमेवा १ सेर
चन्दन का चूर २ सेर
कमलगट्टा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
गुग्गुल १ सेर
आम की लकड़ी २५ मन

लक्ष्मीनारायणयज्ञ

तिल ११ मन
चावल ५।। मन
यव २।। मन
चीनी १ मन
घृत २ टीन
पंचमेवा १ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
कमलगट्टा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
गुग्गुल १ सेर
आम की लकड़ी २० मन

नवग्रहमहायज्ञ

तिल ७ मन
चावल ३।। मन
यव १।। मन
चीनी ३० सेर
घृत २ टीन
पंचमेवा १ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
कमलगट्टा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
गुग्गुल १ सेर
आम की लकड़ी २० मन

विश्वशान्तिमहायज्ञ

तिल ८ मन
चावल ४ मन
यव २ मन
चीनी १ मन
घृत २ टीन
पंचमेवा १ सेर
चन्दन का चूरा २ सेर
कमलगट्टा १ सेर
भोजपत्र २ पाव
गुग्गुल १ सेर
आम की लकड़ी २० मन

स्मार्तयज्ञ-सामग्री

रोली एक पाव, मौली एक बड़ी लच्छी, अबीर (गुलाब), बुक्का (अभ्रक), धूपबत्ती पाँच पैकेट, केसर छह मासा, कर्पूर चार तोला, सिन्दूर दो तोला, पीसी हलदी एक पाव, यज्ञोपवीत पचास, रूई एक पाव, चावल पाँच किलो, पान पचास प्रतिदिन, सुपारी पाँच किलो, विविध मिष्ठान्न प्रतिदिन, ऋतुफल एक दर्जन प्रतिदिन, बतासा डेढ़ किलो, पंचमेवा डेढ़ किलो, मिश्री डेढ़ किलो, छोटी इलायची दो तोला, जावित्री दो तोला, लवंग दो तोला, जागफल पन्द्रह, अतर की शीशी एक, गुलाबजल की शीशी एक, कस्तूरी की शीशी एक, शक्कर एक पाव प्रतिदिन, दूध आधा लीटर प्रतिदिन, दही एक पाव प्रतिदिन, गो घृत दो टिन, शहद एक पाव, गाय का गोबर, गोमूत्र, पीली सरसों, कच्चा सूत एक बड़ी लच्छी

पुष्पमाला एक दर्जन, पुष्प फुटकर, दूर्वा, तुलसीपत्र, सुगन्धित पुष्पों की माला प्रतिदिन, कुशा, गंगाजल प्रतिदिन, नारियल जटादार पच्चीस, गिरि के गोले ग्यारह, चन्दन का मुट्ठा, हरसा एक, रुद्राक्ष की माला एक, लाल रंग, हरा रंग, पीला रंग, काला रंग दो-दो रुपये का, पंचरत्न की पुड़िया सात।

पंचपल्लव—आम्रपत्र, गूलरपत्र, पाकरपत्र वटपत्र, पीपलपत्र।

सप्तमृत्तिका—हाथी के स्थान की मिट्टी, घोड़े के स्थान की मिट्टी, बिल (दीमक) की मिट्टी, नदी संगम की मिट्टी, तालाब की मिट्टी, राजद्वार (चतुष्पथ) की मिट्टी, गोशाला की मिट्टी।

सप्तधान्य—यव, गेहूँ, धान, चना, तिल डेढ़-डेढ़ किलो, ककुनी एक पाव, सावाँ आधा किलो।

सर्वौषधि—५ रुपये का मुरा, ५ रुपये का जटामासी, ५ रुपये का वच, ५ रुपये का कूट, ५ रुपये का शिलाजीत, ५ रुपये का आंवाहलदी और दारूहलदी, ५ रुपये का सठी (कचूर), ५ रुपये का चंपा, ५ रुपये का नागरमोथा।

नवग्रहकाष्ठ—मदार की लकड़ी १०८, पलाश की लकड़ी १०८, खैर की लकड़ी १०८, अपामार्ग की लकड़ी १०८, पीपल की लकड़ी १०८, गूलर की लकड़ी १०८, शमी की लकड़ी १०८, दूर्वा १०८, कुशा १०८।

मृगचर्म १, कम्बल १, सूत की डोरी १० हाथ की, लोहे की कटिया ४, ताँबे का तार २५ हाथ, काष्ठ की चौकी २, काष्ठ का पीढ़ा ४, काला उड़द १॥ सेर।

यज्ञपात्र— प्रणीता, प्रोक्षणी, स्रुवा, स्रुचि, स्फय, वसोर्धारा, अरणी-मन्था।

प्रधान कलश १, वास्तुकलश ताम्र का १, क्षेत्रपाल कलश ताम्र का १, योगिनीकलश ताम्र का ३, रुद्रकलश ताम्र का १, प्रवेशकलश ताम्र का १, कलश ताम्र के १८, पूर्णपात्र १, प्रधानकुण्ड का कलश ताम्र का १, आज्यस्थाली बड़ी १, चरुस्थाली १, अभिषेकपात्र १, कांसे की थाली १, कलछुल १, सड़सी १, छायापात्र कांसे का २, कटोरी पूजन के लिए ११, बाल्टी १, गंगासागर १।

देवताओं को चढ़ाने के वस्त्र—भगवान के लिए रेशमी पीताम्वर एक, रेशमी जनानी साड़ी एक, कब्जा जनाना एक, रेशमी चुंदड़ी एक, सौभाग्य पिटारी एक, शृंङ्गारदान एक, दुशाला अथवा ऊनी चादर एक, धोती पन्द्रह या ग्यारह, दुपट्टा पन्द्रह अथवा ग्यारह, अँगोछा पन्द्रह अथवा ग्यारह।

ध्वजा-पताका तथा वेदी के लिये वस्त्र

सफेद कपड़ा पचीस मीटर

लाल कपड़ा पन्द्रह मीटर

हरा कपड़ा पन्द्रह मीटर

काला कपड़ा पन्द्रह मीटर

पीला कपड़ा पन्द्रह मीटर

चंदवा पचरंगा बड़ा एक

मण्डपाच्छादनार्थ वस्त्र सफेद थान दो।

प्रधान देवता की सुवर्ण प्रतिमा, वास्तुकी प्रतिमा सुवर्ण की छह, क्षेत्रपाल, योगिनी, नवग्रह की प्रतिमा सुवर्ण की, स्वर्ण की शलाका एक, स्वर्ण की जिह्वा एक, सुवर्ण खण्ड इक्यावन; चाँदी का सिंहासन एक, चाँदी

का छत्र एक, चाँदी का चंवर एक, चाँदी के सभी भोजन पात्र, चाँदी का पंचपात्र एक, चाँदी की धूपदानी एक, चाँदी की आरतीदानी एक, चाँदी का चौकोरपत्र एक।

आचार्यवरण-सामग्री—
पीताम्बर रेशमी एक, दुशाला एक, सिल्क रेशमी एक, एक स्वर्ण की अंगूठी, अंगोछा एक, लोटा एल़, गिलास एक, पंचपात्र एक, आचमनी एक, अर्घा एक, तष्टा एक, रुद्राक्ष की माला एक, ऊनी आसन एक, गोमुखी माला एक, खड़ाऊँ-एक, यज्ञोपवीत एक।

ब्राह्मणों की वरण-सामग्री—
धोती रेशमी तथा सूती, डुपट्टा ऊनी, रेशमी अथवा सूती, अंगोछा एक, लोटा एक, गिलास एक, पंचपात्र एक, आचमनी एक, गोमुखीमाला एक, खड़ाऊँ एक, यज्ञोपवीत एक, आसन एक (जितने ब्राह्मणों का वरण किया जाय उन सभी को उपरोक्त सामग्री देनी चाहिए)।

शय्यादानसामग्री—
पलंग नेवार का एक, दरी एक, गद्दा एक, चांदनी एक, चदरा एक, सुजनी एक, रजाई एक, कम्वल एक, तकिया एक, धोती एक, दुशाला एक, पीताम्वर एक, भोजन के सभी पात्र, सौभाग्य-पिटारी एक, शृंगारदान एक, गीता की पुस्तक एक, वेद और पुराण की पुस्तकें, घृत टीन एक, सौभाग्यपिटारी एक, स्वर्ण के आभूषण (शक्ति के अनुसार)।

प्रकाशक
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी-१